।। पूर्ण परमात्मने नमः ।।

ज्ञान गंगा

–: प्रचार प्रसार समिति :–

सतलोक आश्रम, हिसार-टोहाना रोड़, बरवाला

जिला-हिसार (हरियाणा)।

जगतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के सत्संगों का संग्रह अनमोल पुस्तक

''ज्ञान गंगा''

–: प्रकाशक :–

–: प्रचार प्रसार समिति :–

सतलोक आश्रम, हिसार-टोहाना रोड़, बरवाला
जिला-हिसार (हरियाणा)।

धर्मार्थ मूल्य केवल - 15/-

"भक्ति सौदागर को संदेश" पुस्तक का विकल्प "ज्ञान गंगा"

सतलोक आश्रम

सतलोक आश्रम, हिसार-टोहाना रोड़, बरवाला, जिला-हिसार (हरियाणा)।

☎ **8222880541, 8222880542, 8222880543, 8222880544, 8222880545**

Visit us at: www.jagatgururampalji.org
e-mail: jagatgururampalji@yahoo.com

--: विषय सूची :--

❑❑❑

''भूमिका''

अनादि काल से ही मानव परम शांति, सुख व अमृत्व की खोज में लगा हुआ है। वह अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न करता आ रहा है लेकिन उसकी यह चाहत कभी पूर्ण नहीं हो पा रही है। ऐसा इसलिए है कि उसे इस चाहत को प्राप्त करने के मार्ग का पूर्ण ज्ञान नहीं है। सभी प्राणी चाहते हैं कि कोई कार्य न करना पड़े, खाने को स्वादिष्ट भोजन मिले, पहनने को सुन्दर वस्त्र मिलें, रहने को आलीशान भवन हों, घूमने के लिए सुन्दर पार्क हों, मनोरंजन करने के लिए मधुर-२ संगीत हों, नांचे-गांए, खेलें-कूदें, मौज-मस्ती मनांए और कभी बीमार न हों, कभी बूढ़े न हों और कभी मृत्यु न होवे आदि-२, परंतु जिस संसार में हम रह रहे हैं यहां न तो ऐसा कहीं पर नजर आता है और न ही ऐसा संभव है। क्योंकि यह लोक नाशवान है, इस लोक की हर वस्तु भी नाशवान है और इस लोक का राजा ब्रह्म काल है जो एक लाख मानव सूक्ष्म शरीर खाता है। उसने सब प्राणियों को कर्म-भर्म व पाप-पुण्य रूपी जाल में उलझा कर तीन लोक के पिंजरे में कैद किए हुए है। कबीर साहेब कहते हैं कि :--

कबीर, तीन लोक पिंजरा भया, पाप पुण्य दो जाल। सभी जीव भोजन भये, एक खाने वाला काल।।

गरीब, एक पापी एक पुन्यी आया, एक है सूम दलेल रे।
बिना भजन कोई काम नहीं आवै, सब है जम की जेल रे।।

वह नहीं चाहता कि कोई प्राणी इस पिंजरे रूपी कैद से बाहर निकल जाए। वह यह भी नहीं चाहता कि जीव आत्मा को अपने निज घर सतलोक का पता चले। इसलिए वह अपनी त्रिगुणी माया से हर जीव को भ्रमित किए हुए है। फिर मानव को ये उपरोक्त चाहत कहां से उत्पन्न हुई है ? यहां ऐसा कुछ भी नहीं है। यहां हम सबने मरना है, सब दुःखी व अशांत हैं। जिस स्थिति को हम यहां प्राप्त करना चाहते हैं ऐसी स्थिति में हम अपने निज घर सतलोक में रहते थे। काल ब्रह्म के लोक में स्व इच्छा से आकर फंस गए और अपने निज घर का रास्ता भूल गए। कबीर साहेब कहते हैं कि --

इच्छा रूपी खेलन आया, तातैं सुख सागर नहीं पाया।

इस काल ब्रह्म के लोक में शांति व सुख का नामोनिशान भी नहीं है। त्रिगुणी माया से उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, राग-द्वेष, हर्ष-शोक, लाभ-हानि, मान-बड़ाई रूपी अवगुण हर जीव को परेशान किए हुए हैं। यहां एक जीव दूसरे जीव को मार कर खा जाता है, शोषण करता है, ईज्जत लूट लेता है, धन लूट लेता है, शांति छीन लेता है। यहां पर चारों तरफ आग लगी है। यदि आप शांति से रहना चाहोगे तो दूसरे आपको नहीं रहने देंगे। आपके न चाहते हुए भी चोर चोरी कर ले जाता है, डाकू डाका डाल ले जाता है, दुर्घटना घट जाती है, किसान की फसल खराब हो जाती है, व्यापारी का व्यापार ठप्प हो जाता है, राजा का राज छीन लिया जाता है, स्वस्थ शरीर में बीमारी लग जाती है अर्थात् यहां पर कोई भी वस्तु सुरक्षित नहीं। राजाओं के राज, ईज्जतदार की ईज्जत, धनवान का धन, ताकतवर की ताकत और यहां तक की हम सभी के शरीर भी अचानक छीन लिए जाते हैं। माता-पिता के सामने जवान बेटा-बेटी मर जाते हैं, दूध पीते बच्चों को रोते-बिलखते छोड़ कर मात-पिता मर जाते हैं, जवान बहनें विधवा हो जाती हैं और पहाड़ से दुःखों को भोगने को मजबूर होते हैं। विचार करें कि क्या यह स्थान रहने के लायक है ? लेकिन हम मजबूरी वश

यहां रह रहे हैं क्योंकि इस काल के पिंजरे से बाहर निकलने का कोई रास्ता नजर नहीं आता और हमें दूसरों को दुःखी करने की व दुःख सहने की आदत सी बन गई। यदि आप जी को इस लोक में होने वाले दुःखों से बचाव करना है तो यहां के प्रभु काल से परम शक्ति युक्त परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) की शरण लेनी पड़ेगी। जिस परमेश्वर का खौफ काल प्रभु को भी है। जिस के डर से यह उपरोक्त कष्ट उस जीव को नहीं दे सकता जो पूर्ण परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) की शरण पूर्ण सन्त के बताए मार्ग से ग्रहण करता है। वह जब तक संसार में भक्ति करता रहेगा, उसको उपरोक्त कष्ट आजीवन नहीं होते। जो व्यक्ति इस पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' को पढ़ेगा उसको ज्ञान हो जाएगा कि हम अपने निज घर को भूल गए हैं। वह परम शांति व सुख यहां न होकर निज घर सतलोक में है जहां पर न जन्म है, न मृत्यु है, न बुढ़ापा, न दुःख, न कोई लड़ाई-झगड़ा है, न कोई बिमारी है, न पैसे का कोई लेन-देन है, न मनोरंजन के साधन खरीदना है। वहां पर सब परमात्मा द्वारा निःशुल्क व अखण्ड है। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी में प्रमाण है कि :--

बिन ही मुख सारंग राग सुन, बिन ही तंती तार। बिना सुर अलगोजे बजैं, नगर नांच घुमार।।
घण्टा बाजै ताल नग, मंजीरे डफ झांझ। मूरली मधुर सुहावनी, निसबासर और सांझ।।
बीन बिहंगम बाजहिं, तरक तम्बूरे तीर। राग खण्ड नहीं होत है, बंध्या रहत समीर।।
तरक नहीं तोरा नहीं, नांही कशीस कबाब। अमृत प्याले मध पीवैं, ज्यों भाटी चवैं शराब।।
मतवाले मस्तानपुर, गली–२ गुलजार। संख शराबी फिरत हैं, चलो तास बजार।।
संख–संख पत्नी नाचैं, गावैं शब्द सुभान। चंद्र बदन सूरजमुखी, नांही मान गुमान।।
संख हिंडोले नूर नग, झूलैं संत हजूर। तख्त धनी के पास कर, ऐसा मुलक जहूर।।
नदी नाव नाले बगैं, छूटैं फुहारे सुन्न। भरे होद सरवर सदा, नहीं पाप नहीं पुण्य।।
ना कोई भिक्षुक दान दे, ना कोई हार व्यवहार। ना कोई जन्मे मरे, ऐसा देश हमार।।

जहां संखों लहर मेहर की उपजैं, कहर जहां नहीं कोई।
दासगरीब अचल अविनाशी, सुख का सागर सोई।।

सतलोक में केवल एक रस परम शांति व सुख है। जब तक हम सतलोक में नहीं जाएंगे तब तक हम परमशांति, सुख व अमृत्व को प्राप्त नहीं कर सकते। सतलोक में जाना तभी संभव है जब हम पूर्ण संत से उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की आजीवन भक्ति करते रहें। इस पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' के माध्यम से जो हम संदेश देना चाहते हैं उसमें किसी देवी-देवता व धर्म की बुराई न करके सर्व पवित्र धर्म ग्रंथों में छुपे गूढ रहस्य को उजागर करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताना चाहा है जो कि वर्तमान के सर्व संत, महंत व आचार्य गुरु साहेबान शास्त्रों में छिपे गूढ रहस्य को समझ नहीं पाए। परम पूज्य कबीर साहेब अपनी वाणी में कहते हैं कि - 'वेद कतेब झूठे ना भाई, झूठे हैं सो समझे नांही।

जिस कारण भक्त समाज को अपार हानि हो रही है। सब अपने अनुमान से व झूठे गुरुओं द्वारा बताई गई शास्त्र विरूद्ध साधना करते हैं। जिससे न मानसिक शांति मिलती है और न ही शारीरिक सुख, न ही घर व कारोबार में लाभ होता है और न ही परमेश्वर का साक्षात्कार होता है और न ही मोक्ष प्राप्ति होती है। यह सब सुख कैसे मिले तथा यह जानने के लिए कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं, क्यों जन्म लेता हूं, क्यों मरता हूं और क्यों दुःख भोगता हूं ? आखिर यह सब कौन करवा रहा है और परमेश्वर कौन है, कैसा है, कहां है तथा कैसे मिलेगा और ब्रह्मा, विष्णु और शिव के माता-पिता कौन हैं और किस प्रकार से काल ब्रह्म की जेल से छुटकारा पाकर अपने निज घर

(सतलोक) में वापिस जा सकते हैं। यह सब इस पुस्तक के माध्यम से दर्शाया गया है ताकि इसे पढ़कर आम भक्तात्मा का कल्याण संभव हो सके। यह पुस्तक सतगुरु रामपाल जी महाराज के प्रवचनों का संग्रह है जो कि सद्ग्रन्थों में लिखे तथ्यों पर आधारित है। हमें पूर्ण विश्वास है कि जो पाठकजन रूची व निष्पक्ष भाव से पढ़ कर अनुसरण करेगा। उसका कल्याण संभव है :-

"आत्म प्राण उद्धार ही, ऐसा धर्म नहीं और। कोटि अश्वमेघ यज्ञ, सकल समाना भौर।।"

जीव उद्धार परम पुण्य, ऐसा कर्म नहीं और। मरूस्थल के मृग ज्यों, सब मर गये दौर–दौर।।

भावार्थ :-- यदि एक आत्मा को सतभक्ति मार्ग पर लगाकर उसका आत्म कल्याण करवा दिया जाए तो करोड़ अवश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है और उसके बराबर कोई भी धर्म नहीं है। जीवात्मा के उद्धार के लिए किए गए कार्य अर्थात् सेवा से श्रेष्ठ कोई भी कार्य नहीं है। अपने पेट भरने के लिए तो पशु-पक्षी भी सारा दिन भ्रमते हैं। उसी तरह वह व्यक्ति है, जो परमार्थी कार्य नहीं करता, परमार्थी कर्म सर्वश्रेष्ठ सेवा जीव कल्याण के लिए किया कर्म है। जीव कल्याण का कार्य न करके सर्व मानव मरूस्थल के हिरण की तरह दौड़-2 कर मर जाते हैं। जिसे कुछ दूरी पर जल ही जल दिखाई देता है और वहां दौड़ कर जाने पर थल ही प्राप्त होता है। फिर कुछ दूरी पर थल का जल दिखाई देता है अन्त में उस हिरण की प्यास से ही मृत्यु हो जाती है। ठीक इसी प्रकार जो प्राणी इस काल लोक में जहां हम रह रहे है। वे उस हिरण के समान सुख की आशा करते हैं जैसे निःसन्तान सोचता है सन्तान होने पर सुखी हो जाऊँगा। सन्तान वालों से पूछें तो उनकी अनेकों समस्याऐं सुनने को मिलेंगी। निर्धन व्यक्ति सोचता है कि धन हो जाए तो में सुखी हो जाऊं। जब धनवानों की कुशल जानने के लिए प्रश्न करोगे तो ढेर सारी परेशानियाँ सुनने को मिलेंगी। कोई राज्य प्राप्ति से सुख मानता है, यह उसकी महाभूल है। राजा (मन्त्री, मुख्यमन्त्री, प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति) को स्वपन में भी सुख नहीं होता। जैसे चार-पांच सदस्यों के परिवार का मुखिया अपने परिवार के प्रबन्ध में कितना परेशान रहता है। राजा तो एक क्षेत्र का मुखिया होता है। उसके प्रबन्ध में सुख स्वपन में भी नहीं होता। राजा लोग शराब पीकर कुछ गम भुलाते हैं। माया इकट्ठा करने के लिए जनता से कर लेते हैं फिर अगले जन्मों में जो राजा सत्यभक्ति नहीं करते, पशु योनियों को प्राप्त होकर प्रत्येक व्यक्ति से वसूले कर को उनके पशु बनकर लौटाते हैं। जो व्यक्ति मनमुखी होकर तथा झूठे गुरुओं से दिक्षित होकर भक्ति तथा धर्म करते हैं। वे सोचते हैं कि भविष्य में सुख होगा लेकिन इसके विपरित दुःख ही प्राप्त होता है। कबीर साहेब कहते हैं कि मेरा यह ज्ञान ऐसा है कि यदि ज्ञानी पुरुष होगा तो इसे सुनकर हृदय में बसा लेगा और यदि मूर्ख होगा तो उसकी समझ से बाहर है।

"कबीर, ज्ञानी हो तो हृदय लगाई, मूर्ख हो तो गम ना पाई"

अधिक जानकारी के लिए कृप्या प्रवेश करें इस पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में। इस पुस्तक को पढ़कर सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ट अधिवक्ता श्री सुरेश चन्द्र ने कहा ''इस पुस्तक का नाम तो ''ज्ञान सागर'' होना चाहिए।।

''कलयुग में सत्ययुग''

(सन्त रामपाल जी के सत्संग वचनों से उद्धृत)

सत्ययुग उस समय को कहते हैं जिस युग में अधर्म नहीं होता। शांति होती

है। पिता से पहले पुत्र की मृत्यु नहीं होती, स्त्री विधवा नहीं होती। रोग रहित शरीर होता हैं। सर्व मानव भक्ति करते हैं। परमात्मा से डरने वाले होते हैं क्योंकि वे आध्यात्मिक ज्ञान के सर्व कर्मों से परिचित होते हैं। मन, कर्म, वचन से किसी को पीड़ा नहीं देते तथा दुराचारी नहीं होते। जति-सति, स्त्री पुरूष होते हैं। वृक्षों की अधिकता होती हैं। सर्व मनुष्य वेदों के आधार से भक्ति करते हैं। वर्तमान में कलयुग है। इसमें अधर्म बढ़ चुका है। कलयुग में मानव की भक्ति के प्रति आस्था कम हो जाती है या तो भक्ति करते ही नहीं यदि करते हैं तो शास्त्र विधि त्याग कर मनमानी भक्ति करते हैं। जो श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में वर्जित हैं। जिस कारण से परमात्मा से जो लाभ वांछित होता है वह प्राप्त नहीं होता। इसलिए अधिकतर मनुष्य नास्तिक हो जाते हैं। धनी बनने के लिए रिश्वत, चोरी, डाके डालने को माध्यम बनाते हैं। परन्तु यह विधि धन लाभ की न होने के कारण परमात्मा के दोषी हो जाते हैं तथा प्राकृतिक कष्टों को झेलते हैं। परमेश्वर के विधान को मानव भूल जाता है कि किस्मत से अधिक प्राप्त नहीं हो सकता। यदि अन्य अवैध विधि से धन प्राप्त कर लिया तो वह रहेगा नहीं। जैसे एक व्यक्ति अपने पुत्र को सुखी देखने के लिए अवैध विधि से धन प्राप्ति करता था। कुछ दिनों पश्चात् उस के पुत्र के दोनों गुर्दे खराब हो गए। जैसे तैसे करके गुर्दे बदलवाए, तीन लाख रूपये खर्च हुआ। जो धन अवैध विधि से जोड़ा था वह सर्व खर्च हो गया तथा कुछ रूपये कर्जा भी हो गया। फिर लड़के का विवाह किया। छः महिने के पश्चात् बस दुर्घटना में इकलौता पुत्र मृत्यु को प्राप्त हुआ। अब न तो पुत्र रहा और न ही अवैध विधि से अर्जित किया गया धन। शेष क्या रहा? अवैध विधि से धन संग्रह करने में किए हुए पाप, जो अभी शेष हैं, उनको भोगने के लिए जिस-२ से पैसे ऐंठे थे, उनका पशु (गधा, बैल, गाय) बनकर पूरे करेगा। परन्तु परम अक्षर ब्रह्म की शास्त्रानुकूल साधना करने वाले भक्त की किस्मत को परमेश्वर बदल देता है। क्योंकि परमेश्वर के गुणों में लिखा है कि परमात्मा निर्धन को धनवान बना देता है।

सत्ययुग में कोई भी प्राणी मांस-तम्बाखु, मदिरा सेवन नहीं करता। क्योंकि वे इनसे होने वाले पापों से परिचित होते हैं।

❑ *<u>मांस खाना पाप है :-</u> एक समय एक संत अपने शिष्य के साथ कहीं जा रहा था। वहाँ पर एक मछियारा तालाब से मच्छलियाँ पकड़ रहा था। मच्छलियाँ जल से बाहर तड़फ-२ कर प्राण त्याग रही थी। शिष्य ने पूछा हे गुरुदेव! इस अपराधी प्राणी को क्या दण्ड मिलेगा ? गुरुजी ने कहा बेटा! समय आने पर बताऊँगा। चार-पांच वर्ष के पश्चात् दोनों गुरु शिष्य कहीं जाने के लिए जंगल से गुजर रहे थे। वहां पर एक हाथी का बच्चा चिल्ला रहा था। उछल कूद करते समय हाथी का बच्चा दो निकट-२ उगे वृक्षों के बीच में फंस गया वह निकल तो गया परन्तु निकलने के प्रयत्न में उसका सर्व शरीर छिल गया था तथा उसके शरीर में जख्म हो गए थे। उसके सारे शरीर में कीड़े चल रहे थे। जो उसको नोच रहे थे। वह हाथी का बच्चा बुरी तरह चिल्ला रहा था। शिष्य ने गुरु जी से पूछा कि हे गुरुदेव! यह प्राणी कौन से पाप का दण्ड भोग रहा है। गुरुदेव ने कहा पुत्र यह वही मच्छियारा है जो उस शहर के बाहर जलास्य से मच्छलियाँ निकाल रहा था।*

❑ *<u>मदिरा (शराब) पीना कितना पाप है :-</u> शराब पीने वाले को सत्तर जन्म कुत्ते*

के भोगने पड़ते है। मल-मूत्र खाता-पीता फिरता है। अन्य कष्ट भी बहुत सारे भोगने पड़ते हैं तथा शराब शरीर में भी बहुत हानि करती है। शरीर के चार महत्वपूर्ण अंग होते हैं। फेफड़े, लीवर, गुर्दे तथा हृदय। शराब इन चारों को क्षति पहुँचाती है। शराब पीकर मानव, मानव न रह कर पशु तुल्य गतिविधि करने लगता है। कीचड़ में गिर जाना, कपड़ों में मलमूत्र तथा वमन कर देना।

धन हानि, मान हानि, घर में अशांति आदि मदिरा पान के कारण होते है। मदिरा सत्ययुग में प्रयोग नहीं होती। सत्ययुग में सर्व मानव परमात्मा के विद्यान से परिचित होते हैं। जिस कारण सुख का जीवन व्यतीत करते हैं।

गरीब : मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म स्वान के जानी।

❑ ***<u>दुराचार करना कितना पाप है :-</u>***

परद्वारा स्त्री का खोलै, सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।

पूज्य कबीर परमेश्वर जी ने बताया है कि जो व्यक्ति किसी परस्त्री के साथ दुष्कर्म करता है तो वह सत्तर जन्म अन्धे का जीवन भोगता है। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसी आफत कभी मोल नहीं लेता। मूर्ख ही ऐसा कार्य करता है। जैसे आग में हाथ डालने का अर्थ मौत मोल लेना है। जैसे कोई व्यक्ति किसी अन्य के खेत में बीज डालता है तो वह महा मूर्ख है। बुद्धिमान व्यक्ति ऐसा कभी नहीं कर सकता। वैश्यागमन को ऐसा जानो जैसे कुरड़ियों पर गेहूं का बहुमूल्य बीज का थैला भर कर डाल आए। यह क्रिया बुद्धिमान व्यक्ति नहीं कर सकता या तो महामूर्ख या शराबी निरलज्ज अर्थात् घंड व्यक्ति ही किया करता है। विचारणीय विषय है कि जो पदार्थ शरीर से नाश होते हुए आनन्द का अनुभव कराता है यदि वह शरीर में सुरक्षित रखा जाए तो कितना आनन्द देगा ? दीर्घायु, स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मस्तिष्क, शूरवीरता तथा स्फूर्ति प्रदान करता है। जिस पदार्थ से अनमोल बच्चा प्राप्त होता है। उसका नाश करना बच्चे की हत्या करने तुल्य है। इसलिए दुराचार तथा अनावश्यक भोग विलास वर्जित है।

❑ ***<u>तम्बाकू सेवन कितना पाप है ?</u> परमेश्वर कबीर जी ने बताया है :--***

सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करै भोगै पर नारी।
सत्तर जन्म कटत हैं शिशम्, साक्षी साहिब है जगदीशम्।।
पर द्वारा स्त्री का खोलै, सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।
सौ नारी जारी करै, सुरापान सौ बार। एक चिलम हुक्का भरे, डूबै काली धार।।

जैसे कि ऊपर वर्णन किया है कि एक बार शराब पीने वाला सत्तर जन्म कुत्ते का जीवन भोगता है। फिर मल-मूत्र खाता-पीता फिरता है। परस्त्री गमन करने वाला सत्तर जन्म अन्धे के भोगता है। मांस खाने वाला भी महाकष्ट का भागी होता है। उपरोक्त सर्व पाप सौ-२ बार करने वाले को जो पाप होता है। वह एक बार हुक्का पीने वाले अर्थात् तम्बाखु सेवन करने वाले को सहयोग देने वाले को होता है। तम्बाखु सेवन करने वाले हुक्का, सिगरेट, बीड़ी या अन्य विधि से सेवन करने वाले तम्बाखु खाने वालों को क्या पाप लगेगा? घोर पाप का भागी होगा। एक व्यक्ति जो तम्बाखु सेवन करता है। जब वह हुक्का या बीड़ी-सिगरेट पी कर धुआं छोड़ता है तो वह धुआं उस के छोटे-छोटे बच्चों के शरीर में प्रवेश करके हानि करता है। वे बच्चें फिर शीघ्र बुराई को ग्रहण करते हैं तथा उनका स्वास्थय भी बिगड़ जाता है।

''अवतार की परिभाषा''

'अवतार' का अर्थ है ऊँचे स्थान से नीचे स्थान पर उतरना। विशेषकर यह शुभ शब्द उन उत्तम आत्माओं के लिए प्रयोग किया जाता है, जो धरती पर कुछ अद्भुत कार्य करते हैं। जिनको परमात्मा की ओर से भेजा हुआ मानते हैं या स्वयं परमात्मा ही का पृथ्वी पर आगमन मानते हैं।

श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में तीन पुरूषों (प्रभुओं) का ज्ञान है।

❑ *1. क्षर पुरूष जिसे ब्रह्म भी कहते हैं। जिसका ॐ नाम साधना का है। जिसका प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में है।*

❑ *2. अक्षर पुरूष जिसको परब्रह्म भी कहते हैं। जिसकी साधना का मंत्र तत् जो सांकेतिक है। प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है।*

❑ *3. उत्तम पुरूष तूः अन्यः = श्रेष्ठ पुरूष परमात्मा तो उपरोक्त दोनों पुरूषों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से अन्य है। वह परम अक्षर पुरूष है जिसे गीता अध्याय 8 श्लोक 1 के उत्तर में अध्याय 8 के श्लोक 3 में कहा है कि वह परम अक्षर ब्रह्म है। इसका जाप सत् है जो सांकेतिक है। इसी परमेश्वर की प्राप्ति से साधक को परम शांति तथा सनातन परमधाम प्राप्त होगा। प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में यह परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। अधिक ज्ञान प्राप्ति के लिए कृप्या पुस्तक ''धरती पर अवतार'' सतलोक आश्रम बरवाला से प्राप्त करें। अवतार दो प्रकार के होते हैं। जैसे ऊपर कहा गया है। अब आप जी को पता चला कि मुख्य रूप से तीन पुरूष (प्रभु) है। जिनका उल्लेख ऊपर कर दिया गया है। हमारे लिए मुख्य रूप से दो प्रभुओं की भूमिका रहती है।*

1. क्षर पुरूष (ब्रह्म) :- जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में अपने आप को काल कहता है।

2. परम अक्षर पुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) :- जिसके विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 3 तथा 8,9,10 में तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 17 में कहा है।

''ब्रह्म (काल) के अवतारों की जानकारी''

गीता अध्याय 4 का श्लोक 7

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्। ७ ।

यदा, यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिः, भवति, भारत,
अभ्युत्थानम्, अधर्मस्य, तदा, आत्मानम्, सृजामि, अहम्।।7।।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! (यदा,यदा) जब-जब (धर्मस्य) धर्मकी (ग्लानिः) हानि और (अधर्मस्य) अधर्मकी (अभ्युत्थानम्) वृद्धि (भवति) होती है (तदा) तब-तब (हि) ही (अहम्) मैं (आत्मानम्) अपना अंश अवतार (सृजामि) रचता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ। (7)

जैसे श्री मद्भगवत् गीता अध्याय 4 श्लोक 7 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है

कि जब-जब धर्म में घृणा उत्पन्न होती है। धर्म की हानि होती है तथा अधर्म की वृद्धि होती है तो मैं (काल = ब्रह्म = क्षर पुरूष) अपने अंश अवतार सृजन करता हूँ अर्थात् उत्पन्न करता हूँ।

जैसे श्री रामचन्द्र जी तथा श्री कृष्ण चन्द्र जी को काल ब्रह्म ने ही पृथ्वी पर उत्पन्न किया था। जो स्वयं श्री विष्णु जी ही माने जाते हैं।

इनके अतिरिक्त 8 अवतार और कहे गये हैं। जो श्री विष्णु जी स्वयं नहीं आते अपितु अपने लोक से अपने कृपा पात्र पवित्र आत्मा को भेजते हैं। वे भी अवतार कहलाते हैं। कहीं-2 पर 25 अवतारों का भी उल्लेख पुराणों में आता है। काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) के भेजे हुए अवतार पृथ्वी पर बढ़े अधर्म का नाश कत्लेआम अर्थात् संहार करके करते हैं।

उदाहरण के रूप में :- श्री रामचंद्र जी तथा श्री कृष्णचंद्र जी, श्री परशुराम जी तथा श्री निःकलंक जी (जो अभी आना शेष है, जो कलयुग के अन्त में आएगा)। ये सर्व अवतार घोर संहार करके ही अधर्म का नाश करते हैं। अधर्मियों को मारकर शांति स्थापित करने की चेष्टा करते हैं। परन्तु शांन्ति की अपेक्षा अशांति ही बढ़ती है। जैसे श्री रामचंद्र जी ने रावण को मारने के लिए युद्ध किया। युद्ध में करोड़ों पुरूष मारे गए। जिन में धर्मी तथा अधर्मी दोनों ही मारे गए। फिर उनकी पत्नियाँ तथा छोटे-बड़े बच्चे शेष रहे उनका जीवन नरक बन गया। विधवाओं को अन्य व्यक्तियों ने अपनी हवस का शिकार बनाया। निर्वाह की समस्या उत्पन्न हुई आदि-२ अनेकों अशांति के कारण खड़े हो गए। यही विधि श्री कृष्ण जी ने अपनाई थी, यही विधि श्री परशुराम जी ने अपनाई थी। इसी विधि से दशवां अवतार काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) द्वारा उत्पन्न किया जाएगा। उसका नाम ''निःकलंक'' होगा। वह कलयुग के अन्तिम समय में उत्पन्न होगा। जो राजा हरिशचन्द्र वाली आत्मा होगी। संभल नगर में श्री विष्णु दत्त शर्मा के घर में जन्म लेगा। उस समय सर्व मानव अत्याचारी - अन्यायी हो जाऐंगे। उन सर्व को मारेगा। उस समय जिन-२ मनुष्यों में परमात्मा का डर होगा। कुछ सदाचारी होंगे उनको छोड़ जाएगा अन्य सर्व को मार डालेगा। यह विधि है ब्रह्म (काल-क्षर पुरूष) के अवतारों की अधर्म का नाश करने तथा शांति स्थापना करने की।

''परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् सत्यपुरूष के अवतारों की जानकारी''

❑ *1. परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होता है। वह सशरीर आता है। सशरीर लौट जाता है :- यह लीला वह परमेश्वर दो प्रकार से करता है।*

❑ *क = प्रत्येक युग में शिशु रूप में किसी सरोवर में कमल के फूल पर वन में प्रकट होता है। वहां से निःसन्तान दम्पति उसे उठा ले जाते हैं। फिर लीला करता हुआ बड़ा होता है तथा आध्यात्मिक ज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश करता है। सरोवर के जल में कमल के फूल पर अवतरित होने के कारण परमेश्वर नारायण कहलाता है (नार=जल, आयण=आने वाला अर्थात् जल पर निवास करने वाला नारायण कहलाता है।)*

❑ *ख = जब चाहे साधु सन्त जिन्दा के रूप में अपने सत्यलोक से पृथ्वी पर आ जाते हैं तथा अच्छी आत्माओं को ज्ञान देते हैं। फिर वे पुण्यात्माऐं भी ज्ञान*

प्रचार करके अधर्म का नाश करते हैं। वे भी परमेश्वर के भेजे हुए अवतार होते हैं।

कलयुग में ज्येष्ठ शुदि पूर्णमासी संवत् 1455 (सन् 1398) को कबीर परमेश्वर सत्यलोक से चलकर आए तथा काशी शहर के लहर तारा नामक सरोवर में कमल के फूल पर शिशु रूप में विराजमान हुए। वहां से नीरू तथा नीमा जो जुलाहा (धाणक) दम्पति थे, उन्हें उठा लाए। शिशु रूपधारी परमेश्वर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया। नीरू तथा नीमा उसी जन्म में ब्राह्मण थे। श्री शिव जी के पुजारी थे। मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक मुसलमान बनाए जाने के कारण जुलाहे का कार्य करके निर्वाह करते थे। बच्चे की नाजुक हालत देखकर नीमा ने अपने ईष्ट शिव जी को याद किया। शिव जी साधु वेश में वहां आए तथा बालक रूप में विराजमान कबीर परमेश्वर को देखा। बालक रूप में कबीर साहेब जी ने कहा हे शिव जी इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाऐं वह आप के आशीर्वाद से दूध देगी। ऐसा ही किया गया। कबीर परमेश्वर के आदेशानुसार भगवान शिव जी ने कुँवारी गाय की कमर पर थपकी लगाई। उसी समय बछिया के थनों से दूध की धार बहने लगी। एक कोरा मिट्टी का छोटा घड़ा नीचे रखा। पात्र भर जाने पर दूध बन्द हो गया। फिर प्रतिदिन पात्र थनों के नीचे करते ही बछिया के थनों से दूध निकलता। उसको परमेश्वर कबीर जी पीया करते थे। जुलाहे के घर परवरिश होने के कारण बड़े होकर परमेश्वर कबीर जी भी जुलाहे का कार्य करने लगे तथा अपनी अच्छी आत्माओं को मिले, उनको तत्वज्ञान समझाया तथा स्वयं भी तत्वज्ञान प्रचार करके अधर्म का नाश किया तथा जिन-२ को परमेश्वर जिन्दा महात्मा के रूप में मिले, उनको सच्चखण्ड (सत्यलोक) में ले गए तथा फिर वापिस छोड़ा, उनको आध्यात्मिक ज्ञान दिया तथा अपने से परिचित कराया। वे उस परमेश्वर (सत्य पुरूष) के अवतार थे। उन्होंने भी परमेश्वर से प्राप्त ज्ञान के आधार से अधर्म का नाश किया। वे अवतार कौन-२ हुऐ हैं।

(1.) आदरणीय धर्मदास जी (2.) आदरणीय मलुकदास जी (3.) आदरणीय नानक देव साहेब जी (सिख धर्म के प्रवर्तक)(4.) आदरणीय दादू साहेब जी (5.) आदरणीय गरीबदास साहेब जी गांव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) वाले तथा (6.) आदरणीय घीसा दास साहेब जी गांव खेखड़ा जि. मेरठ (उत्तर प्रदेश) वाले ये उपरोक्त सर्व अवतार परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) के थे। अपना कार्य करके चले गए। अधर्म का नाश किया। जिस कारण से जनता में बहुत समय तक बुराई नहीं समाई। वर्तमान में सन्तों की कमी नहीं परन्तु शांति का नाम नहीं, कारण यह है कि इन संतों की साधना शास्त्रों के विरूद्ध है। जिस कारण से समाज में अधर्म बढ़ता जा रहा है। इन पंथों और सन्तों को सैकड़ों वर्ष हो गए ज्ञान प्रचार करते हुए परन्तु अधर्म बढ़ता ही जा रहा है।

''सत्यपुरूष का वर्तमान अवतार''

जो सत्य साधना तथा तत्वज्ञान का प्रचार परमेश्वर के पूर्वोक्त परमेश्वर के अवतार सन्त किया करते थे। जिससे आपसी प्रेम था, एक दूसरे के दुःख में दुःखी होते थे, असहाय व्यक्ति की मदद करते थे, वही शास्त्रविधि अनुसार साधना तथा

वही आध्यात्मिक यथार्थ ज्ञान संत रामपाल दास जी महाराज को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने प्रदान किया है। मार्च 1997 को फाल्गुन मास की शुक्ल प्रथमा को दिन के दस बजे जिन्दा महात्मा के रूप में सत्यलोक से आकर सन्त रामपाल दास जी महाराज को सतनाम तथा सारनाम दान करने का आदेश देकर अन्तर्ध्यान हो गए।

सन्त रामपाल दास जी महाराज भी परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म) के उन अवतारों में से एक हैं जो आध्यात्मिक ज्ञान के द्वारा अधर्म का नाश करते हैं। अब विश्व में शांति होगी। सर्व धर्म तथा पंथों के व्यक्ति एक होकर आपस में प्रेम से रहा करेंगे। राजनेता भी निर्भिमानी, न्यायकारी तथा परमात्मा से डर कर कार्य करने वाले होंगे। जनता के सेवक बनकर निष्पक्ष कार्य किया करेंगे। धरती पर पुनः सत्ययुग जैसी स्थिति होगी। वर्तमान में धरती पर वह अवतार सन्त रामपाल दास जी हैं। अब घर-२ में परमेश्वर के ज्ञान की चर्चा होगी। जहां गांव व शहरों में तथा पार्कों में बैठकर ताश खेलते है, कोई राजनीतिक बातें करता है, कोई अपने पुत्रों तथा पुत्र वधुओं की अच्छे या निकम्में होने की चर्चा करते हैं वहां परमेश्वर की महिमा की चर्चा होगी तथा ''ज्ञान गंगा'' पुस्तक में लिखे ज्ञान पर विचार हुआ करेगा। परमात्मा की महिमा करने मात्र से भी जीव पुण्य का भागी बनता है। फिर शास्त्रविधि अनुसार साधना करके जीवन सुखी बनाऐंगे तथा आत्म कल्याण करायेंगे। धरती पर कलयुग में सत्ययुग जैसा समय आयेगा। सन्त रामपाल दास जी महाराज ही वर्तमान में वास्तव में धरती पर अवतार हैं अधिक जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें पुस्तक ''धरती पर अवतार'' (सम्पूर्ण)।

'अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता फ्लोरेंस की महत्वपूर्ण भविष्यवाणी।'

अमेरिका की विश्व विख्यात भविष्यवक्ता फ्लोरेंस ने अपनी भविष्यवाणीयों में कई बार भारत का जिक्र किया है। 'द फाल ऑफ सेंशेसनल कल्चर' नाम की अपनी पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि सन् 2000 आते-आते प्राकृतिक संतुलन भयावह रूप से बिगड़ेगा। लोगों में आक्रोश की प्रबल भावना होगा। दुराचार पराकाष्ठा पर होगा। पश्चिमी देशों के विलासितापूर्ण जीवन जीने वालों में निराशा, बैचेनी और अशांति होगी। अतृप्त अभिलाषाएं और जोर पकड़ेगी। जिससे उनमें आपसी कटुता बढ़ेगी। चारों ओर हिंसा और बर्बरता का वातावरण होगा। ऐसा वातावरण होगा की चारों ओर हाहाकार मच जाएगा। लेकिन भारत से उठने वाली एक नई विचारधारा इस घातक वातावरण को समाप्त कर देगी। वह विचारधारा वैज्ञानिक दृष्टि से सामंजस्य और भाई चारे का महत्व समझाएगी, वह यह भी समझाएगी कि धर्म और विज्ञान में आपस में विरोध नहीं है। आध्यात्मिकता की उच्चता और भौतिकता का खोखलापन सबके सामने उजागर करेगी। मध्यमवर्ग उस विचारधारा से बहुत अधिक प्रभावित होगा। यह वर्ग समाज के सभी वर्गों को अच्छे समाज के निर्माण के लिए उत्प्रेरित करेगा। यह विचारधारा पूरे विश्व में चमत्कारी परिवर्तन लाएगी।

मुझे अपनी छठी अतींद्रिय शक्ति से यह एहसास हो रहा है कि इस

विचारधारा को जन्म देने वाला वह महान संत भारत में जन्म ले चुका है। उस संत के ओजस्वी व्यक्तित्व का प्रभाव सब को चमत्कृत करेगा। उसकी विचारधारा अध्यात्म के कम होते जा रहे प्रभाव को फिर से नई स्फूर्ति देगी। चारों ओर आध्यात्मिक वातावरण होगा।

संत की विचारधारा से प्रभावित लोग विश्व के कल्याण के लिए पश्चिम की ओर चलेंगे। धीरे-धीरे एशिया, यूरोप और अमेरिका पर पूरी तरह छा जाएगें। उस संत की विचारधारा से पूरा विश्व प्रभावित होगा और उनके चरण चिन्हों पर चलेगा। पश्चिमी देश के लोग उन्हें ईसा, मुसलमान उन्हें एक सच्चा रहनुमा और एशिया के लोग उन्हें भगवान का अवतार मानेंगे।

उस महान संत की विचारधारा से बौद्धिक क्रांति होगी। बुद्धिजीवियों की मान्यताएं बदलेंगी। उनमें ईश्वर के प्रति श्रद्धा और विश्वास की कोंपले फूटेंगी।

फ्लोरेंस के अनुसार वह संत भारत में जन्म ले चुकें हैं। वह इस संत से काफी प्रभावित थी। अपनी एक दूसरी पुस्तक 'गोल्डन लाइट ऑफ न्यू एरा' में भी उन्होंने लिखा है। ''जब मैं ध्यान लगाती हूँ तो अक्सर एक संत को देखती हूँ। गौर वर्ण का है। सफेद बाल हैं। उसके मुख पर न दाढ़ी है, न मूछ है। उस संत के ललाट पर गजब का तेज होता है। उनके ललाट पर आकाश से एक नक्षत्र के प्रकाश की किरणें निरंतर बरसती रहती हैं। मैं देखती हूँ कि वह संत अपनी कल्याणकारी विचारधारा तथा अपने सत् चरित्र प्रबल अनुयायियों की शक्ति से सम्पूर्ण विश्व में नए ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं।

वह संत अपनी शक्ति निरंतर बढ़ा रहे हैं। उनमें इतनी शक्ति है कि वह प्राकृतिक परिवर्तन भी कर सकते हैं। वह अपना कार्य वैज्ञानिक ढंग से करेंगे। उनकी कृपा और प्रयत्नों से मानवीय सभ्यता में नई जागृति आएगी। विश्व के समस्त जनसमूह में नई चेतना का संचार होगा। लोकशक्ति का एक नया रूप उभर कर सामने आएगा जो सत्ताधारियों की मनमानियों पर अंकुश लगा देगा।''

मनोचिकित्सक तथा सम्मोहन कला के विश्व प्रसिद्धज्ञाता डॉ. मोरे बर्सटीन की फ्लोरेंस से अच्छी दोस्ती थी। एक बार फ्लोरेंस ने उनसे भी कहा था। ''डॉक्टर वह समय बड़ी तेजी से नजदीक आ रहा है जब सत्ता लोलुप राजनेताओं की अपेक्षा आप जैसे समाजसेवकों की बातें समाज अधिक ध्यान से सुनेगा। 21 वीं सदी के आते आते एक नई विचारधारा पूरे विश्व को प्रभावित करेगी। हर राष्ट्र में सच्चरित्र धार्मिक लोगों का संगठन लोगों के दिमाग में बैठी गलत मान्यताओं को बदल देगा। यह विचारधारा भारत से प्रस्फुटित होंगी। वहीं से पूरे विश्व में फैलेगी। मैं उस पवित्र स्थान पर एक प्रचंड तपस्वी को देख रही हूँ। जिसका तेज बड़ी तेजी से फैल रहा है। मनुष्य में सोए देवत्व को जगाने तथा धरती का स्वर्ग जैसा बनाने के लिए वह संत दिन रात प्रयत्न कर रहे हैं।

एक पत्रकार ने 1964 में फ्लोरेंस से पूछा था कि क्या वह दुनिया का भविष्य बता सकती है। फ्लोरेंस ने इसके जवाब में कहा था 1970 की शुरूवात व्यापक उथल-पुथल के साथ होगी। 1979-80 के बाद ऐसे-ऐसे भूकंप आऐंगे की न्यूजर्सी का कुछ हिस्सा तथा यूरोप का और एशिया के कई देशों के स्थान भूकंप से विदीर्ण हो जाएंगे। कुछ जलमग्न भी हो जाऐंगे। तृतीय विश्वयुद्ध का आतंक सबके दिमाग में बैठ जाएगा और वे इस युद्ध की तैयारी करेंगे, लेकिन भारतीय राजनेता अपने

प्रभाव और बुद्धि से तीसरे विश्वयुद्ध को टालने में सफल हो जाऐंगे। तीसरे विश्वयुद्ध के शुरू होने तक भारत के शासन की बागडोर आध्यात्मिक प्रवृत्ति के लोगों के हाथ में होगी, इसलिए उनके प्रभाव से विश्वयुद्ध टलेगा। वे शासक एक महान संत के ओजस्वी तथा क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित होंगे। वे उस संत के प्रति उसी तरह समर्पित होंगे जैसे वाशिंगटन स्वतंत्रता एवं मानवता के प्रति समर्पित थे।''

अमेरिका के शहर न्यूजर्सी की रहने वाली फ्लोरेंस सचमुच एक विलक्षण महिला थी। एक बार नेबेल नाम के व्यक्ति ने टी.वी. कार्यक्रम के दौरान उनसे बोला, ''आप भारत में जन्म ले चुके संत के बारे में तो अक्सर बताती रहती हैं। मैं अपने बारे में कुछ जानना चाहता हूँ बताइए।''

फ्लोरेंस ने उसके दाहिने हाथ को थाम लिया और बोली, ''आप बहुत जल्द किसी दूसरे राज्य से प्रसारण करेंगे।'' नेबेल एक प्रसारण सेवा के कर्मचारी थे। फ्लोरेंस की इस बात पर वह हंसने लगे। कुछ क्षण बाद बोले ''आपने मुझसे यह अच्छा मजाक किया। यदि हमारी कंपनी के अधिकारी इस कार्यक्रम को देख रहे होंगे तो मैं दूसरे राज्य में जाऊ या नहीं, फिलहाल अपनी कंपनी से तुरंत निकाल दिया जाऊंगा।''

कुछ ही मिनटों के बाद टी.वी. के कंट्रोल रूम का फोन घनघना उठा। फोन नेबेल के लिए था। उनकी कंपनी के जनरल मैनेजर उनसे बात करना चाहते थे। नेबेल ने जब फोन उठाया तो उन्होंने कहा हमने न्यूयार्क से प्रसारण करने का काम शुरू करने का निर्णय लिया है वहां तुम्हें ही भेजा जाएगा। अभी यह बात गुप्त रखना इसकी घोषणा कल की जाएगी। मैं टी.वी. पर फ्लोरेंस के साथ तुम्हारी बातचीत देख रहा था। फ्लोरेंस ने तुम्हारे विषय में जो बताया है वह पूरी तरह सच है। आश्चर्य है कि उन्हें यह बात कैसे मालूम हो गई ?'' नेबेल फ्लोरेंस का चेहरा देखता रह गया।

कुछ पत्रकारों ने उनसे एक बार पूछा था कि वह भविष्य को कैसे देख लेती हैं तथा गायब व्यक्ति या वस्तुओं का पता कैसे लगा लेती हैं, तो फ्लोरेंस ने बताया,''मुझे स्वयं नहीं मालूम कि ऐसा कैसे सम्भव हो जाता है। मैं भविष्य के विषय में एक बहुत महत्वपूर्ण बात बता रहीं हूँ। 20 वीं शताब्दी के अंत में भारतवर्ष से एक प्रकाश निकलेगा। यह प्रकाश पूरी दुनिया को उन दैवी शक्तियों के विषय में जानकारी देगा, जो अब तक हम सभी के लिए रहस्यमय बनी हुई हैं। (देवी शक्तियों की जानकारी जो सन्त रामपाल दास जी महाराज द्वारा बताई गई हैं। कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 20 पर ''सृष्टि रचना'') एक दिव्य महापुरूष द्वारा यह प्रकाश पूरे विश्व में फैलेगा। वह सभी को सत् मार्ग पर चलने की प्रेरणा देगा। समस्त दुनिया में एक नयी सोच की ज्योति फैलेगी। जब मैं ध्यानावस्था में होती हूँ तो अक्सर यह दिव्य महापुरूष मुझे दिखाई देते हैं।''

फ्लोरेंस ने बार-बार इस संत या दिव्य महापुरूष का जिक्र किया है। साथ ही यह भी बताया है कि उत्तरी भारतवर्ष के एक पवित्र स्थान पर वह मौजूद हैं।

सज्जनों उपरोक्त भविष्यवाणी तथा वर्तमान वाणी है जो परम सन्त रामपाल महाराज जी पर खरी उतरती है तथा इसी का समर्थन अन्य भविष्यवाणीयाँ भी करती है। जो आगे लिखी हैं।

''भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रमाण''

''एक महापुरूष के विषय में भाई बाले वाली जन्म साखी में प्रह्लाद भक्त की भविष्यवाणी''

भाई बाले वाली जन्म साखी में लिखा गया विवरण स्पष्ट करता है कि संत रामपाल दास जी महाराज ही वह अवतार है जिन्हें परमेश्वर कबीर जी तथा संत नानक जी के पश्चात् पंजाब की धरती पर अवतरित होना था। सन्त रामपाल दास जी महाराज 8 सितम्बर सन् 1951 को गांव धनाना, जिला सोनीपत, हरियाणा प्रान्त (उस समय पंजाब प्रान्त) भारत की पवित्र धरती पर श्री नन्द राम जाट के घर जाट वर्ण में श्रीमति इन्द्रा देवी की कोख से जन्में।

इस विषय में ''जन्म साखी भाई बाले वाली'' हिन्दी वाली में जिसके प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह एण्ड कम्पनी पुस्तकां वाले, बाजार माई सेवां, अमृतसर (पंजाब) तथा पंजाबी वाली के प्रकाशक है :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह पुस्तकां वाले गली-8 बाग रामानन्द अमृतसर (पंजाब)।

इसमें लिखा अमर लेख इस प्रकार है :- एक समय भाई बाला तथा मरदाना को साथ लेकर सतगुरु नानक देव जी भक्त प्रह्लाद जी के लोक में गए। जो पृथ्वी से कई लाख कोस दूर अन्तरिक्ष में है। प्रह्लाद ने कहा कि हे नानक जी! आप को परमात्मा ने दिव्य दृष्टि दी तथा कलयुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप का कलयुग में बहुत प्रताप होगा। यहां पर (प्रह्लाद के लोक में) पहले कबीर जी आये थे या आज आप आये हो एक और आयेगा जो आप दोनों जैसा ही महापुरूष होगा। इन तीनों के अतिरिक्त यहां मेरे लोक में कोई नहीं आ सकता। भक्त बहुत हो चुके हैं आगे भी होगें परन्तु यहां मेरे लोक में वही पहुँच सकता है, जो इन जैसी महिमा वाला होगा और कोई नहीं। इसलिए इन तीनों के अतिरिक्त यहां कोई नहीं आ सकता। मरदाने ने पूछा कि हे प्रह्लाद जी! कबीर जी जुलाहा थे, नानक जी खत्री हैं, वह तीसरा किस वर्ण (जाति) से तथा किस धरती पर अवतरित होगा।

प्रह्लाद भक्त ने कहा भाई सुन :- नानक जी के सच्चखण्ड जाने के सैकड़ों वर्ष पश्चात् पंजाब की धरती पर जाट वर्ण में जन्म लेगा तथा उसका प्रचार क्षेत्र शहर बरवाला होगा। (लेख समाप्त)

विवेचन :- संत रामपाल दास जी महाराज वही अवतार हैं जो अन्य प्रमाणों के साथ-२ जन्म साखी में लिखे वर्णन पर खरे उतरते हैं। जन्म साखी में ''सौ वर्ष के पश्चात्'' लिखा है। यहां पर सैकड़ों वर्ष पश्चात् कहा गया था जिसको पंजाबी भाषा में लिखते समय सौ वर्ष ही लिख दिया। क्योंकि मर्दाना ने पूछा था कि वह कौन से युग में नजदीक ही आयेगा? तब भक्त प्रह्लाद ने कहा कि श्री नानक जी के सैकड़ों वर्ष पश्चात् कलयुग में ही वह संत जाट वर्ण में जन्म लेगा। इसी लिए यहां सौ वर्ष के स्थान पर सैकड़ों वर्षों ही न्यायोचित है तथा प्रचार क्षेत्र बरवाला के स्थान पर बटाला लिखा गया है। इसके दो कारण हो सकते हैं कि ''शहर बरवाला'' जिला हिसार हरियाणा (उस समय पंजाब) प्रान्त में सुप्रसिद्ध नहीं था तथा बटाला शहर पंजाब प्रान्त में प्रसिद्ध था। लेखनकर्ता ने इस कारण से ''बरवाला'' के स्थान पर ''बटाला'' लिख दिया दूसरा प्रिन्ट करते समय ''ਵਰਵਾਲੇ'' की जगह ''ਵਟਾਲੇ'' प्रिंट हो गया है। एक और विशेष विचारणीय पहलू है कि पंजाब

के बटाला शहर में कोई भी जाट संत नहीं हुआ है। जो इन महापुरूषों (परमेश्वर कबीर देव जी व श्री नानक देव जी) के समान महिमावान तथा इनके समान ज्ञानवान हुआ हो। इस आधार से तथा अन्य प्रमाणों के आधार से तथा इस जन्म साखी के आधार से स्पष्ट है कि वह तीसरे महापुरूष संत रामपाल दास जी महाराज हैं तथा इनका आध्यात्मिक ज्ञान भी इन दोनों महापुरूषों (परमेश्वर कबीर जी तथा श्री नानक देव जी) से मेल खाता है। आप देखेंगे दोनों फोटो कापी जो जन्म साखी भाई बाले वाली जो कि एक पंजाबी भाषा में है तथा दूसरी हिन्दी में है जो कि पंजाबी भाषा से ही अनुवादित है। इसमें कुछ प्रकरण ठीक नहीं लिखा है। जैसे पंजाबी भाषा में लिखा है कि ''जो इस जीहा कोई होवेगा तां एथे पहुँचेगा होर दा एथे पहुँचण दा कम नही''*** परन्तु हिन्दी वाली जन्म साखी में यह विवरण नहीं है जो बहुत महत्वपूर्ण है। इससे सिद्ध है कि लिखते समय कुछ प्रकरण बदल जाता है। फिर भी ढेर सारे प्रमाण जो इस पुस्तक में अन्य महापुरूषों के द्वारा सन्त रामपाल दास जी के विषय में कहे हैं वे भी इसी को प्रमाणित करते हैं।***

विशेष :- यदि कोई यह कहे कि जन्म साखी में लिखी व्याख्या सन्त गरीबदास जी गांव छुड़ानी वाले के लिए हैं। क्योंकि वे भी जाट जाति से थे तथा छुड़ानी गांव भी पहले पंजाब प्रांत के अन्तर्गत आता था। यह भी उचित नहीं लगती क्योंकि संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरनी सूम जगायसी'' भावार्थ है कि संत गरीबदास जी के सतगुरु पूज्य कबीर साहेब जी थे। पुराना रोहतक जिला (सोनीपत, रोहतक तथा झज्जर को मिला कर एक जिला रोहतक था) दिल्ली मण्डल में लगता था। यह किसी राजा के आधीन नहीं था। अग्रेंजो के शासन काल में दिल्ली के आधीन था। सन्त गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरु (परमेश्वर कबीर जी) दिल्ली मण्डल में आऐंगे भक्तिहीन प्राणियों को जगाऐंगे सत्यभक्ति कराऐंगे। (ध्यान रहे कबीर सागर में काल के दूतों ने मिलावट करके सत्य को न जानकर अपनी अटकल बाजी से असत्य प्रमाण दिए हैं। उसका नाश करने के लिए परमेश्वर कबीर जी ने अपने अंश अवतार सन्त गरीब दास जी द्वारा यथार्थ ज्ञान प्रचार करवाया है। जो सन्त गरीब दास जी की अमृतवाणी रूप में है। इसी बात की पुष्टि ''कबीर सागर के सम्पादक कबीर पंथी श्री युगलानन्द बिहारी जी की उस टिप्पणी से होती है जो उन्होंने अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की भूमिका में की है कहा है कि कबीर पंथियों ने ही कबीर पंथ के ग्रन्थों का नाश कर रखा है। अपने-२ मते अनुसार फेर बदल करके अपने मत को जोड़ा है। मेरे पास अनुराग सागर तथा ज्ञान सागर की कई-२ प्रतियाँ रखी हैं। जिनमें से एक दूसरे से मेल नहीं खा रही हैं।)

सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म श्री नन्द राम जाट के घर 8 सितम्बर 1951 को गांव-धनाना जिला सोनीपत (उस समय जिला रोहतक) में हुआ था। जो वर्तमान हरियाणा तथा पंजाब प्रांत मिलकर, उस समय एक ही 'पंजाब' प्रांत था। परमेश्वर कबीर जी ने भी कहा था कि जिस समय कलयुग 5500 वर्ष बीत चुका होगा मैं गरीबदास वाले बारहवें पंथ में आगे स्वयं आऊँगा। सन्त गरीबदास जी द्वारा मेरी (कबीर परमेश्वर की) महिमा की वाणी प्रकट होगी तथा गरीबदास वाले बारहवें पंथ तक के साधक मुझे आधार बनाकर वाणी को समझने की कोशिश करेंगे परन्तु वाणी को न समझ कर सतनाम तथा सारनाम से वंचित

रहने के कारण असंख्य जन्म तक सत्यलोक प्राप्ति नहीं कर सकते। उसी बारहवें पंथ (गरीबदास जी वाले पंथ) में मैं (परमेश्वर कबीर जी) ही स्वयं चलकर आऊँगा। तब सन्त गरीबदास जी द्वारा प्रकट की गई वाणी को मैं (कबीर परमेश्वर) प्रकट होकर समझाऊँगा। इस से सिद्ध हुआ कि जन्म साखी में जिस जाट सन्त के विषय में कहा है निरविवाद रूप से वह संत रामपाल दास जी महाराज जी ही हैं। फिर भी हम संत गरीबदास जी का विशेष आदर करते हैं। क्योंकि उन्होंने परमेश्वर कबीर जी का अमर संदेश सुनाया है।

यदि कोई भ्रम उत्पन्न करे की दस गुरु साहिबानों में से भी किसी की ओर संकेत हो सकता है। इसके लिए स्मरण रहे कि दस सिख गुरु साहिबानों में से कोई भी जाट वर्ण से नहीं थे। दूसरे सिख गुरु श्री अंगद देव जी खत्री थे। तीसरे गुरु जी श्री अमर दास जी भी खत्री थे। चौथे गुरु जी श्री रामदास जी खत्री थे तथा पांचवें गुरु जी श्री अर्जुन देव जी से लेकर दसवें तथा अन्तिम श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी तक श्री गुरु रामदास जी की सन्तान अर्थात् खत्री थे। फिर भी हम सभी सिख गुरु साहिबानों का विशेष आदर करते हैं।

संत रामपाल दास जी महाराज कहते हैं :-

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा, हिन्दु मुसलिम, सिख, ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है :-

जाति ना पूछो संत की, पूछ लीजिए ज्ञान। मोल करो तलवार का, पड़ी रहन दो म्यान।।

कृप्या प्रमाण के लिए देखें फोटो कापी जन्म साखी पंजाबी गुरुमुखी (पंजाबी भाषा) वाली तथा हिन्दी वाली दोनों में आप जी सहज में समझ सकते हो कि वास्तविक्ता क्या है। जन्म साखियों के प्रकाशक हैं :- भाई जवाहर सिंह कृपाल सिंह अमृतसर (पंजाब)। कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 272 की।

(੨੭੨) ਸਾਖੀ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨਾਲ ਹੋਈ

ਕਾਜ ਸਵਾਰਿਆ ॥੪॥ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਜੀ ਤੇਨੂੰ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡਾ ਭਗਤ ਕੀਤਾ ਹੈ ਔਰ ਆਪਕੇ ਸੰਜੋਗ ਬਹੁਤਿਆਂ ਕਾ ਉਧਾਰ ਹੋਵੇਗਾ ਤੇਰੀ ਸ੍ਰੀ ਰਾਮ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲੀ ਹੈ ਤੇਰਾ ਵਡਾ ਪ੍ਰਤਾਪ ਹੋਵੇਗਾ ਇਸ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਭਗਤ ਏਥੇ ਆਯਾ ਹੈ ਅਤੇ ਜਾਂ ਆਪਕੋ ਕਰਤਾ ਨੇ ਆਂਦਾ ਹੈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੂੰ ਪੁਛਿਆ ਹੇ ਭਗਤ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਭੀ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਤੇ ਤੁਸਾਡੇ ਪਿਛੇ ਰਾਮ ਜੀ ਵਡਾ ਬਲਤ ਦਿਖਾਇਆ ਹੈ ਤੇਰੀ ਰਾਮ ਜੀ ਨੇ ਵਡੀ ਨਦਰ ਖੋਲ੍ਹੀ ਹੈ ਭਗਤ ਜੀ ਏਥੇ ਹੋਰ ਕੋਈ ਵੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਕਿ ਕਬੀਰ ਅਤੇ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੀ ਪਹੁੰਚਿਆ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਬੋਲਿਆ ਭਾਈ ਨਾਨਕ ਤਪੇ ਪਾਸੋਂ ਪੁਛ ਲੇ ਹੋਰ ਭੀ ਆਵਸੀ ਕਿ ਨਾ ਆਵਸੀ ਕੋਈ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਕਹਿਆ ਜੀ ਤੁਸੀਂ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋ ਅਗਲੀ ਤੇ ਪਿਛਲੀ ਸਭ ਆਪ ਨੂੰ ਸਤਿ ਜੁਗ ਥੀਂ ਆਦਿ ਲੇਕੇ ਮਾਲੂਮ ਹੈ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਨੇ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਇਸ ਜਿਹਾ ਕੋਈ ਹੋਵੇਗਾ ਤਾਂ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚੇਗਾ ਹੋਰਸ ਦਾ ਏਥੇ ਪਹੁੰਚਣਾ ਕੰਮ ਨਾਹੀਂ ਹੋਰ ਅਗੇ ਵਡੇ ਵਡੇ ਭਗਤ ਹੋਏ ਹੈਨ ਅਤੇ ਹੋਵਨਗੇ ਪਰ ਪਹੁੰਚਿਆ ਕੋਈ ਨਾਹੀਂ ਤਾਂ ਫੇਰ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਓਹ ਕਦ ਹੋਸੀ ਕਿਤੇ ਨੇੜੇ ਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਸੁਣ ਭਾਈ ਕਲਜੁਗ ਵਿਚ ਹੋਵੇਗਾ ਜਟ ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਸਚਖੰਡ ਜਾਵੇਗਾ ਤਾਂ ਇਸ ਤੋਂ ਪਿਛੇ ਸਉ ਵਰ੍ਹੇ ਹੋਸੀ ਅਤੇ ਏਹਨਾਂ ਤੇਹਾਂ ਤੋਂ ਬਗੈਰ ਹੋਰ ਕੋਈ ਨਾ ਆਵਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਤਿੰਨ ਕੇਹੜੇ ਹੈਨ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਹਿਆ ਭਾਈ ਅਗੇ ਕਬੀਰ ਹੋਇਆ ਹੈ ਤੇ ਹੁਣ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली पंजाबी भाषा वाली के पृष्ठ 273 की।

ਸਾਖੀ ਇਕ ਪਹਾੜ ਦੀ ਚਲੀ (੨੭੩)

ਨਾਨਕ ਤਪਾ ਹੂਆ ਹੈ ਅਤੇ ਫੇਰ ਉਹ ਹੋਸੀ ਤਾਂ ਮਰਦਾਨੇ ਪੁਛਿਆ ਜੀ ਕਬੀਰ ਜੁਲਾਹਾ ਹੋਯਾ ਤੇ ਨਾਨਕ ਖਤਰੀ ਹੋਏ ਅਤੇ ਜੀ ਉਹ ਕਿਸ ਵਰਨ ਹੋਵੇਗਾ ਜੀ ਤੇ ਕਿਸ ਧਰਤੀ ਤੇ ਹੋਸੀ ਕੇਹੜੇ ਸ਼ਹਿਰ ਤਾਂ ਪ੍ਰਹਿਲਾਦ ਭਗਤ ਕਿਹਾ ਭਾਈ ਪੰਜਾਬ ਧਰਤੀ ਤੇ ਵਰਨ ਜਟ ਤੇ ਸ਼ਹਿਰ ਵਟਾਲੇ ਵਿਚ ਹੋਸੀਂ। ਤਾਂ ਮਰਦਾਨਾ ਸ੍ਰੀ ਗੁਰੂ ਜੀ ਦੇ ਚਰਨਾਂ ਤੇ ਢਹਿ ਪਿਆ ਗੁਰੂ

कृप्या देखें फोटो कापी जन्म साखी भाई बाले वाली हिन्दी वाली के पृष्ठ 305 की

जन्म साखी (३०५) भाई बाले वाली

तब भक्त प्रह्लाद ने कहा—हे नानक देव। आप को इस कलियुग में बड़ा भक्त बनाया है। आप की ही संगति से अनेकों प्राणियों का भला होगा। और आप का अनंत प्रताप होगा। तब मरदाने ने कहा—हे प्रह्लाद जी। आप भी तो परम भक्त हैं तथा भगवान ने आप के लिये ही अवतार धारन किया था। प्रह्लाद जी ने कहा—हे भाई मरदाना। इस स्थान पर या तो कबीर पहुंचा है, और या यह गुरु नानक आया है। यहां आना कोई सुगम कार्य नहीं है। एक और महा पुरुष होगा जो पहुंच सकेगा। मरदाने ने कहा—हे भक्त वर। वह पुरुष कौन और कब होगा। प्रह्लाद ने उत्तर दिया, कि जब गुरु नानक देव यहां आयेंगे तो इन के सौ वर्ष पश्चात आयेगा। अर्थात यहां केवल तीन आदमी ही आने हैं। एक तो भक्त कबीर और दूसरे श्री गुरु नानक देव जी इन के पश्चात वह तीसरा आयेगा। तब मर्दाने ने कहा हे प्रह्लाद जी। कबीर तो जुलाहा था, और नानक देव—खत्री हैं। परंतु वह तीसरा किस जाती का होगा, उत्तर में प्रह्लाद जी ने कहा—हे मर्दाना। पंजाब की धरती और वर्ण उस का जाट होगा। तथा नगर बटाला में होगा। उस समय मर्दाना गुरु जी के चर्णों

प्रश्न : एक संस्कृत के विद्वान शास्त्री ने कहा कि आप के गुरु संत रामपाल दास जी महाराज संस्कृत नहीं पढ़े हैं। आप कहते हो कि उन्होंने श्री मद्भगवत् गीता का यथार्थ अनुवाद करके भक्तों को बताते हैं। यह कभी नहीं हो सकता।

उत्तर : सन्त रामपाल दास जी महाराज के भक्त ने उत्तर दिया शास्त्री जी उसी को परमेश्वर का अवतार कहते हैं। जो भाषा का ज्ञान न होते हुए यथार्थ अनुवाद कर दें। क्योंकि परमेश्वर सर्वज्ञ है। उन्हीं गुणों से युक्त उसका भेजा हुआ अवतार होता है। वह अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज जी हैं। आप तो केवल वेदों और गीता के अनुवाद से अचम्भित हैं। सन्त रामपाल दास जी महाराज ने तो बाईबल तथा कुरान को यथार्थ रूप में बताया है। जिसे ईसाई धर्म के वर्तमान के फादर व पादरी तथा मुसलमान धर्म के मुल्ला व काजी भी नहीं समझ सके।

भक्ति मर्यादा

"जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा ।
हिन्दु मुसलिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा ।।"

प्रिय भक्तजनों !

आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पहले कोई भी धर्म या अन्य सम्प्रदाय नहीं था। न हिन्दु, न मुसलिम, न सिक्ख और न ईसाई थे। केवल मानव धर्म था। सभी का एक ही मानव धर्म था और है। लेकिन जैसे-२ कलयुग का प्रभाव बढ़ता गया वैसे-2 हमारे में मत-भेद होता गया। कारण सिर्फ यही रहा कि धार्मिक कुल गुरुओं द्वारा शास्त्रों में लिखी हुई सच्चाई को दबा दिया गया। कारण चाहे स्वार्थ हो या ऊपरी दिखावा। जिसके परिणाम स्वरूप आज एक मानव धर्म के चार धर्म और अन्य अनेक सम्प्रदाएँ बन चुकी हैं। जिसके कारण आपस में मतभेद होना स्वाभाविक ही है। सभी का प्रभु/भगवान/राम/अल्लाह/रब/गोड/खुदा/परमेश्वर एक ही है। ये भाषा भिन्न पर्यायवाची शब्द हैं। सभी मानते हैं कि सबका मालिक एक है लेकिन फिर भी ये अलग-2 धर्म सम्प्रदाएँ क्यों ?

यह बात बिल्कुल ठीक है कि सबका मालिक/रब/खुदा/अल्लाह/गोड/राम/परमेश्वर एक ही है जिसका वास्तविक नाम कबीर है और वह अपने सतलोक/सतधाम/सच्चखण्ड में मानव सदृश स्वरूप में आकार में रहता है। लेकिन अब हिन्दु तो कहते हैं कि हमारा राम बड़ा है, मुसलिम कहते हैं कि हमारा अल्लाह बड़ा है, ईसाई कहते हैं कि हमारा ईसामसीह बड़ा और सिक्ख कहते हैं कि हमारे गुरु नानक साहेब जी बड़े हैं। ऐसे कहते हैं जैसे चार नादान बच्चे कहते हैं कि यह मेरा पापा, दूसरा कहेगा यह मेरा पापा है तेरा नहीं है, तीसरा कहेगा यह तो मेरा पिता जी है जो सबसे बड़ा है और फिर चौथा कहेगा कि अरे नहीं नादानों! यह मेरा डैडी है, तुम्हारा नहीं है। जबकि उन चारों का पिता वही एक ही है। इन्हीं नादान बच्चों की तरह आज हमारा मानव समाज लड़ रहा है।

''कोई कहै हमारा राम बड़ा है, कोई कहे खुदाई रे।
कोई कहे हमारा ईसामसीह बड़ा, ये बाटा रहे लगाई रे।।''

जबकि हमारे सभी धार्मिक ग्रन्थों व शास्त्रों में उस एक प्रभु/मालिक/रब/खुदा/अल्लाह/राम/साहेब/गोड/परमेश्वर की प्रत्यक्ष नाम लिख कर महिमा गाई है कि वह एक मालिक/प्रभु कबीर साहेब है जो सतलोक में मानव सदृश स्वरूप में आकार में रहता है।

वेद, गीता, कुरान और गुरु ग्रन्थ साहेब ये सब लगभग मिलते जुलते ही हैं। यजुर्वेद के अ. 5 के श्लोक नं. 32 में, सामवेद के संख्या नं. 1400, 822 में, अथर्ववेद के काण्ड नं. 4 के अनुवाक 1 के श्लोक नं. 7, ऋग्वेद के म. 1 अ. 1 के सुक्त 11 के

श्लोक नं. 4 में कबीर नाम लिख कर बताया है कि पूर्ण ब्रह्म कबीर है जो सतलोक में आकार में रहता है। गीता जी चारों वेदों का संक्षिप्त सार है। गीता जी भी उसी सतपुरुष पूर्ण ब्रह्म कबीर की तरफ इशारा करती है। गीता जी के अ. 15 के श्लोक नं. 16-17, अ. 18 के श्लोक नं. 46, 62 अ. 8 के श्लोक नं. 8 से 10 तथा 22 में, अ. 15 के श्लोक नं. 1,2,4 में उसी पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने का इशारा किया है। श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ट नं. 24 पर और पृष्ट नं. 721 पर नाम लिख कर कबीर साहेब की महिमा गाई है। इसी प्रकार कुरान और बाईबल एक ही शास्त्र समझो। दोनों लगभग एक ही संदेश देते हैं कि उस कबीर अल्लाह की महिमा ब्यान करो जिसकी शक्ति से ये सब सृष्टी चलायमान हैं। कुरान शरीफ में सूरत फूर्कानि नं. 25 की आयत नं. 52 से 59 तक में कबीरन्, खबीरा, कबीरू आदि शब्द लिख कर उसी एक कबीर अल्लाह की पाकि ब्यान की हुई है कि ऐ पैगम्बर (मुहम्मद)! उस कबीर अल्लाह की पाकि ब्यान करो जो छः दिन में अपनी शक्ति से सृष्टी रच कर सातवें दिन तख्त पर जा बिराजा अर्थात् सतलोक में जा कर विश्राम किया। वह अल्लाह (प्रभु) कबीर है। इसी का प्रमाण बाईबल के अन्दर उत्पत्ति ग्रन्थ में सृष्टी क्रम में बाईबल के प्रारम्भ में ही सात दिन की रचना में 1:20-2:5 में है।

सभी संतों व ग्रथों का सार यही है कि पूर्ण गुरु जिसके पास तीनों नाम हों और नाम देने का अधिकार भी हो से नाम ले कर जीव को जन्म-मृत्यु रूपी रोग से छुटकारा पाना चाहिए। क्योंकि हमारा उद्देश्य आपको काल की कारागार से छुटवा कर अपने मूल मालिक कविर्देव (कबीर साहेब) के सतलोक को प्राप्त करवाना है। कविर्देव ने अपनी वाणी में कहा है कि एक जीव को काल साधना से हटा कर पूर्ण गुरू के पास लाकर सत उपदेश दिलाने का पुण्य इतना होता है कि जितना करोड़ गाय-बकरें आदि प्राणियों को कसाई से छुटवाने का होता है। क्योंकि यह अबोध मानव शरीर धारी प्राणी गलत गुरुओं द्वारा बताई गई शास्त्र विरूद्ध साधना से काल के जाल में फंसा रह कर न जाने कितने दुःखदाई चौरासी लाख योनियों के कष्ट को झेलता रहता है। जब यह जीवात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) की शरण में पूरे गुरू के माध्यम से आ जाती है, नाम से जुड़ जाती है तो फिर इसका जन्म तथा मृत्यु का कष्ट सदा के लिए समाप्त हो जाता है और सतलोक में वास्तविक परम शांति को प्राप्त करता है।

अब प्रश्न आता है कि आजकल गुरु ज्यादा से ज्यादा शिष्य बना कर अपनी योग्यता का प्रमाण दिखाते हैं अर्थात् हर कोई चार कथा सीख लेता है और कहता कि मैं भी नाम दे देता हूँ और भोली आत्माओं को काल के जाल में डाल देता है। चूंकि शास्त्रों के विरूद्ध नाम उपदेश देने वाले और जपने वाले सभी निश्चित ही नरक के अधिकारी होंगे और उनको नरक में उल्टा लटकाया जाएगा। यह कथन शास्त्र (गीता, वेद व सर्व ग्रन्थ) ही बताते हैं। इसी कथन को सिद्ध करने के लिए एक संक्षिप्त कथा बताता हूँ।

एक समय की बात है कि सभी को पता चला कि राजा परिक्षित को सातवें

दिन सर्प डसेगा और उसकी मृत्यु होगी। इस बात का पता लगने पर सभी ने सोचा कि सात दिनों तक राजा परिक्षित को भागवत् की कथा सुनाई जाए ताकि इसका यहाँ से मोह हट जाए और प्रभु के चिंतन में लग जाए। क्योंकि मरते समय जिसकी जैसी भावना होती है वह उसी को प्राप्त होता है। सभी ने कहा कि अति उत्तम है। लेकिन अब कथा करे कौन? इस प्रश्न पर प्रश्नवाचक चिन्ह लग जाता है। इस समय वहाँ उपस्थित सभी महर्षियों ने यहाँ तक कि श्रीमद् भागवत् सुधा सागर के रचयिता महर्षि वेद व्यास जी ने भी अपने आपको कथा सुनाने के योग्य नहीं समझा। क्योंकि उनको पता था कि हमारे अन्दर यह समर्थता नहीं है। इसलिए क्यों एक जीव के जीवन को नष्ट करके पाप के भागीदार बनें। चूंकि साँतवें दिन परिणाम आना था। इसलिए सात दिन तक कथा सुनाने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ी। चूंकि सभी को अपनी औकात का पता होता है। स्वर्ग से सुखेदव जी को भागवद् की कथा करने के लिए बुलाया गया और तब राजा परिक्षित का मोह यहाँ से हटा और स्वर्ग की प्राप्ति हुई। स्वर्ग में सुख भोगने के पश्चात् वापिस नरक में और फिर लख चौरासी में चक्कर काटेगा। ये यहाँ का हार्ड एण्ड फास्ट रूल है अर्थात् अटल नियम है। यह उपलब्धि भी तीन लोक के पूर्ण गुरु बिना प्राप्त नहीं हो सकती।

ठीक इसी प्रकार जब किसी स्थान पर प्रधान मन्त्री आ रहा हो तो उनके आने से पहले दो-तीन बहुत अच्छे वक्ता/गायक व तबले-बैंजू बजाने वाले होते हैं जो बहुत सुरीली और आकर्षक आवाज से दर्शकों को प्रभावित करते हैं। लेकिन वे जो कह रहे हैं उनमें से एक बात भी करने में सक्षम नहीं हैं। लेकिन जब प्रधान मन्त्री आता है तो वह कम से कम शब्दों में कहता है कि आगरा में इन्टरनैशनल कॉलेज बनवा दो, चण्डीगढ़ में इन्टरनैशनल युनिवर्सिटी बनवा दो आदि-२। सिर्फ इतना कह कर पी. एम. साहब चले जाते हैं। उनके कहने से अगले दिन ही वह कार्य प्रारम्भ हो जाता है क्योंकि उनके वचन में शक्ति है और यदि यही बात आप और मेरे जैसा आम व्यक्ति कहे तो हमारी बड़ी मूर्खता होगी क्योंकि हमारे वचन में इतनी शक्ति नहीं है। जबकि प्रधान मन्त्री के लिए ये सब साधारण बात है।

इन तथ्यों को प्रमाणित करने के लिए कुछ निम्नलिखित वाणियाँ अवश्य पढ़ें और गहन विचार करें तथा अति शीघ्र गुरु मंत्र प्राप्त करें।

कबीर, पंडित और मशालची, दोनों सूझैं नाहिं। औरों ने करैं चांदना, आप अंधेरे माहिं।।
कबीर, करणी तज कथनी कथैं, अज्ञानी दिन रात। कुकर ज्यों भौंकत फिरैं, सुनी सुनाई बात।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहिं हाथ। पृथ्वी डोबन उतरे, कहै–कहै मीठी बात।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहिं पास। औरों को प्रमोध हीं, आपन चले निराश।।
गरीब, कथनी के शूरे घने, कथैं अटम्बर ज्ञान। बाहर ज्वाब आवै नहीं, लीद करैं मैदान।।

कथा करना व नाम उपदेश देना कोई बच्चों का खेल नहीं है कि ली काख में पोथी चलो मैं भी कथा कर देता हूँ, चलो मैं भी रामायण का पाठ कर देता हूँ, गीता जी का पाठ कर देता हूँ, ग्रन्थ साहेब का पाठ कर देता हूँ अर्थात् सतसंग कर देता

हूँ और नाम भी दे देता हूँ आदि-२ । पूर्ण संत को ही कथा करने व उपदेश देने का अधिकार होता है और उस कथा का समापन भी वही कर सकता है। चूंकि पूर्ण संत के शब्द में शक्ति होती है। जैसे सुखदेव के शब्द में थी। जैसे कोई सतसंग करे और मान लो उसमें आम की महिमा बताए कि आम बहुत मीठा होता है, फलों का राजा होता है, उसका रंग पीला होता है आदि-२ और यदि कोई आ कर कहे कि ला भाई आम दो। तो वह सतसंग करने वाला कहे कि मेरे पास तो आम नहीं है। फिर लेने वाला कहे कि कहाँ मिलेगा? उसको जवाब मिले कि पता नहीं। आम तो निराकार है वह दिखाई थोड़े ही देता है। फिर लेने वाला कहेगा कि अरे नादान! जब तेरे पास आम है ही नहीं और न ही तेरे को ये पता कि आम कहाँ से मिलेगा, साथ में कह रहा है कि वह निराकार है तो व्यर्थ में शोर मचाता क्यों फिर रहा है? कहने का अभिप्राय यह है कि तत्वज्ञान रहित व बिना अधिकारी कथा करने वाले और उसके मुख से सुनने वाले सभी नरक के अधिकारी होते हैं।

यदि कोई व्यक्ति अपने आप ही गुरु बन कर शिष्य बना लेता है तो समझो अपने सिर पर भार चढ़ा लेता है। क्योंकि परमेश्वर का नियम है कि जब तक शिष्य पार नहीं होगा तब तक गुरु को बार-२ जन्म लेते रहना पड़ता है। पूर्ण गुरु अधूरे शिष्यों से छुटकारा पाने के लिए ऐसी लीला किया करते हैं जिससे अज्ञानी शिष्यों को गुरु के प्रति नफरत हो जाती है। जैसे कबीर साहेब जब काशी में प्रकट हुए थे। उस समय कबीर साहेब के चौसठ लाख शिष्य बन गए थे। उनकी परीक्षा लेने के लिए कबीर साहेब ने काशी शहर की एक मशहूर वैश्या को सतसंग ज्ञान समझाने के लिए उसके घर पर जाना शुरु कर दिया। जिसको देख व सुन कर चेलों के दिल में गुरु के प्रति घृणा पैदा हो गई और सभी का अपने गुरु के प्रति विश्वास टूट गया। केवल दो को छोड़ कर सभी शिष्य गुरु विहीन हो गए। सतगुरु गरीबदास जी महाराज की वाणी में प्रमाण है :--

गरीब, चंडाली के चौंक में, सतगुरु बैठे जाय। चौसठ लाख गारत गए, दो रहे सतगुरु पाय।।
भड़वा भड़वा सब कहैं, जानत नाहिं खोज। दास गरीब कबीर करम से, बांटत सिर का बोझ।।

हम आपसे यही प्रार्थना करना चाहते हैं कि सोच विचार कर सौदा करो।

सामवेद के श्लोक नं. 822 में बताया गया है कि जीव की मुक्ति तीन नामों से होगी। प्रथम ऊँ, दूसरा सतनाम (तत्) और तीसरा सारनाम (सत्)। यही गीता जी भी प्रमाण देती है कि - ऊँ-तत्-सत् और श्री गुरु ग्रन्थ साहेब भी इसी सतनाम जपने का इशारा कर रहा है। सतनाम-सतनाम कोई जपने का नाम नहीं है। यह तो उस नाम की तरफ इशारा कर रहा है जो एक सच्चा नाम है। इसी तरह यह सारनाम भी। अकेला ऊँ मन्त्र किसी काम का नहीं है। ये तीनों नाम व नाम देने की आज्ञा मुझे मेरे गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज द्वारा बकसीस है जो कबीर साहेब से पीढी दर पीढी चलती आ रही है। पहले आप सतसंग सुनो, सेवा करो जिससे आपका भक्ति रूपी खेत संवर जाएगा।

कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं रटैं हरि नाम। जैसे कुआँ जल बिना, खुदवाया किस काम।।
कबीर, एक हरि के नाम बिना, ये राजा ऋषभ हो। माटी ढोवै कुम्हार की, घास न डालेको।।

इसके पश्चात् अपने संवरे हुए खेत में बीज बोना होगा। शास्त्रों (कबीर साहेब की वाणी, वेद, गीता, पुराण, कुराण, धर्मदास साहेब आदि संतों की वाणी) के अध्ययन से मुक्ति नहीं होगी। इन सभी शास्त्रों का एक ही सार (निचोड़) है कि पूर्ण मुक्ति के लिए पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के प्रतिनिधि संत(जिनको उनके गुरु द्वारा नाम देने की आज्ञा भी हो) से नाम उपदेश ले कर आत्म कल्याण करवाना चाहिए। यदि नाम नहीं लिया तो -

नाम बिना सूना नगर, पड़या सकल में शोर।
लूट न लूटी बंदगी, हो गया हंसा भोर।।
अदली आरती अदल अजूनी, नाम बिना है काया सूनी।
झूठी काया खाल लुहारा, इंगला पिंगला सुषमन द्वारा।।
कृतघ्नी भूले नर लोई, जा घट निश्चय नाम न होई।
सो नर कीट पतंग भुजंगा, चौरासी में धर है अंगा।

यदि बीज नहीं बीजा तो आत्मा रूपी खेत की गुड़ाई अर्थात् तैयारी करना व्यर्थ हुआ। कहने का अभिप्राय यह है कि इनसे आपको ज्ञान होगा जो कि आवश्यक है। परंतु पूर्ण गुरू द्वारा नाम उपदेश लेना अर्थात् बीज बीजना भी अति आवश्यक है। नाम भी वही जपना होगा जो कि गुरु नानक साहेब ने जपा, गरीबदास साहेब ने जपा, धर्मदास साहेब आदि संतों ने जपा। इसके अतिरिक्त अन्य नामों से जीव की मुक्ति नहीं होगी।

इसलिए आप सभी ने नाम उपदेश लेकर अपना भक्ति रूपी धन जोड़ना प्रारम्भ करना चाहिए और अन्य सभी को भी बताना चाहिए। जितना जल्दी हो सके उतना जल्दी। चूंकि न जाने कब और किस समय इस शरीर का पूरा होने का समय आ जाए। गुरु नानक देव जी भी कहते हैं कि -

ना जाने ये काल की कर डारै, किस विधि ढल जा पासा वे।
जिन्हादे सिर ते मौत खुड़गदी, उन्हानूं केड़ा हांसा वे।।

कबीर साहेब कहते हैं कि -

कबीर, स्वांस–स्वांस में नाम जपो, व्यर्था स्वांस मत खोए।
न जाने इस स्वांस का, आवन हो के ना होए।।
सतगुरू सोई जो सारनाम दृढ़ावै, और गुरू कोई काम न आवै।
''सार नाम बिन पुरुष (भगवान) द्रोही''

अर्थात् जो गुरू सारनाम व सारशब्द नहीं देता है या उसको अपने गुरू द्वारा नाम देने का अधिकार (आज्ञा) नहीं है अर्थात् शास्त्रों के अध्ययन से यदि कोई मनमुखी गुरु ये नाम भी दे देता हो तो भी वह गुरु और उनके शिष्यों को नरक में डाला जाएगा। वह गुरु भगवान का दुश्मन है, विद्रोही है। उसे भगवान के दरबार में उल्टा लटकाया जाएगा।

अब भक्त समाज में नकली गुरुओं (संतों) द्वारा एक गलत धारणा फैला रखी है कि एक बार गुरु धारण करने के पश्चात दूसरा गुरु नहीं बदलना चाहिए। जरा

विचार करके देखो कि गुरु हमारे जन्म-मृत्यु रूपी रोग को काटने वाला वैद्य होता है। यदि एक वैद्य से हमारा रोग नहीं कटता है तो हम दूसरे अच्छे वैद्य(डॉक्टर) के पास जाएंगे जिससे हमारा जानलेवा रोग ठीक हो सके। जैसे धर्मदास साहेब के पहले गुरु श्री रूपदास जी थे। लेकिन जब धर्मदास जी को पता लगा कि यह गुरु पूर्ण मुक्ति दाता नहीं है तो तुरंत त्याग कर पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर सतपुरुष कबीर साहेब को अपना गुरु बनाया और पूर्ण मोक्ष सत्य लोक में प्राप्त किया। ठीक इसी प्रकार अधूरे गुरु को तुरंत त्याग देना चाहिए।

''झूठे गुरु के पक्ष को, तजत न कीजै वारि''

(गुरु व नाम महिमा की वाणी)

गरीब, बिन उपदेश अचंभ है, क्यों जीवत हैं प्राण। बिन भक्ति कहाँ ठौर है, नर नाहिं पाषाण।।1।।
गरीब, एक हरि के नाम बिना, नारि कुतिया हो। गली–२ भौंकत फिरै, टूक ना डालै को।।2।।
गरीब, बीबी पड़दे रहैं थी, डयोढी लगती बार। गात उघाड़े फिरती हैं, बन कुतिया बाजार।।3।।
गरीब, नकबेसर नक से बनी, पहरत हार हमेल। सुन्दरी से सुनही (कुत्तिया) बनी, सुनि साहिब के खेल।4।
कबीर, हरि के नाम बिना, राजा ऋषभ होए। माटी लदै कुम्हार कै, घास ना डाले कोए।।5।।
कबीर, राम कृष्ण से कौन बड़ा, उन्हों भी गुरु कीन्ह। तीन लोक के वे धनी, गुरु आगे आधीन।।6।।
कबीर, गर्भ योगेश्वर गुरु बिना, लागा हरि की सेव। कहै कबीर स्वर्ग से, फेर दिया सुखदेव।।7।।
कबीर, राजा जनक से नाम ले, किन्हीं हरी की सेव (पूजा)। कहै कबीर बैकुण्ठ में, उल्ट मिले सुखदेव।।8।।
कबीर, सतगुरु के उपदेश का, लाया एक विचार। जै सतगुरु मिलते नहीं, जाता नरक द्वार।।9।।
कबीर, नरक द्वार में दूत सब, करते खैंचा तान। उनतें कबहु ना छुटता, फिर फिरता चारों खान।।10।।
कबीर, चार खानी में भ्रमता, कबहु ना लगता पार। सो फेरा सब मिट गया, सतगुरु के उपकार।।11।।
कबीर, सात समुन्द्र मसि करूं, लेखनी करूं बनराय। धरती का कागद करूं, गुरु गुण लिखा न जाए।12।
कबीर, गुरु बड़े गोविन्द से, मन में देख विचार। हरि सुमरे सो रह गए, गुरु भजे हुए पार।।13।।
कबीर, गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागुं पाय। बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दिया मिलाय।।14।।
कबीर, हरि के रूठतां, गुरु की शरण में जाय। कबीर गुरु जै रूठजां, हरि नहीं होत सहाय।।15।।

नाम कौन से राम का जपना है ?

गीता जी के अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च, क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : इस संसारमें दो प्रकारके भगवान हैं नाशवान और अविनाशी और ये सम्पूर्ण भूतप्राणियोंके शरीर तो नाशवान और जीवात्मा अविनाशी कहा जाता है।

गीता जी के अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उतमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः, यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : उत्तम भगवान तो अन्य ही है जो तीनों लोकोंमें प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है एवं अविनाशी परमेश्वर परमात्मा इस प्रकार कहा गया है।

कबीर, अक्षर पुरुष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार।

त्रिदेवा (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) शाखा भये, पात भया संसार।।
कबीर, तीन देवको सब कोई ध्यावै, चौथा देवका मरम न पावै।
चौथा छांडि पँचम ध्यावै, कहै कबीर सो हमरे आवै।।
कबीर, तीन गुणन की भक्ति में, भूलि पर्‌यौ संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरै पार।।
कबीर, ओंकार नाम ब्रह्म (काल) का, यह कर्ता मति जानि।
सांचा शब्द कबीर का, परदा माहिं पहिचानि।।
कबीर, तीन लोक सब राम जपत है, जान मुक्ति को धाम।
रामचन्द्र वसिष्ठ गुरु किया, तिन कहि सुनायो नाम।।
कबीर, राम कृष्ण अवतार हैं, इनका नाहीं संसार।
जिन साहब संसार किया, सो किनहु न जनम्यां नारि।।
कबीर, चार भुजाके भजनमें, भूलि परे सब संत।
कबिरा सुमिरै तासु को, जाके भुजा अनंत।।
कबीर, वाशिष्ट मुनि से तत्वेता ज्ञानी, शोध कर लग्न धरै।
सीता हरण मरण दशरथ को, बन बन राम फिरै।।
कबीर, समुद्र पाटि लंका गये, सीता को भरतार।
ताहि अगस्त मुनि पीय गयो, इनमें को करतार।।
कबीर, गोवर्धन कृष्ण जी उठाया, द्रोणागिरि हनुमंत।
शेष नाग सब सृष्टी उठाई, इनमें को भगवंत।।
गरीब, दुर्वासा कोपे तहां, समझ न आई नीच।
छप्पन कोटि यादव कटे, मची रूधिर की कीच।।
कबीर, काटे बंधन विपति में, कठिन किया संग्राम।
चीन्हों रे नर प्राणियां, गरुड बडो की राम।।
कबीर, कह कबीर चित चेतहू, शब्द करौ निरुवार।
श्री रामचन्द्र को कर्ता कहत हैं, भूलि पर्‌यो संसार।।
कबीर, जिन राम कृष्ण निरंजन किया, सो तो करता न्यार।
अंधा ज्ञान न बूझई, कहै कबीर बिचार।।
कबीर, तीन गुणन (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की भक्ति में, भूल पड़यो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिना, कैसे उतरो पार।।

।।शब्द।। (संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा रचित)

युद्ध जीत कर पांडव, खुशी हुए अपार। इन्द्रप्रस्थ की गद्दी पर, युधिष्ठिर की सरकार।।1।।
एक दिन अर्जुन पूछता, सुन कृष्ण भगवान। एक बार फिर सुना दियो, वो निर्मल गीता ज्ञान।।2।।
घमाशान युद्ध के कारण, भूल पड़ी है मोहें। ज्यों का त्यों कहना भगवन्, तनिक न अन्तर होए।।3।।
ऋषि मुनि और देवता, सबको रहे तुम खाय। इनको भी नहीं छोड़ा आपने, रहे तुम्हारा ही गुण गाय।।4।।
कृष्ण बोले अर्जुन से, यह गलती क्यों किन्ह। ऐसे निर्मल ज्ञान को भूल गया बुद्धिहीन।।5।।
अब मुझे भी कुछ याद नहीं, भूल पड़ी नीदान। ज्यों का त्यों उस गीता का मैं, नहीं कर सकता गुणगान।।6।।

स्वयं श्री कृष्ण को याद नहीं और अर्जुन को धमकावे। बुद्धि काल के हाथ है, चाहे त्रिलोकी नाथ कहलावे।7।
ज्ञान हीन प्रचारका, ज्ञान कथें दिन रात। जो सर्व को खाने वाला, कहें उसी की बात।।8।।
सब कहें भगवान कृपालु है, कृपा करें दयाल। जिसकी सब पूजा करें, वह स्वयं कहै मैं काल।।9।।
मारै खावै सब को, वह कैसा कृपाल। कुत्ते गधे सुअर बनावै है, फिर भी दीन दयाल।।10।।
बाईबल वेद कुरान है, जैसे चांद प्रकास। सूरज ज्ञान कबीर का, करै तिमर का नाश।।11।।
रामपाल साची कहै, करो विवेक विचार। सतनाम व सारनाम, यही मन्त्र है सार।।12।।
कबीर हमारा राम है, वो है दीन दयाल। संकट मोचन कष्ट हरण, गुण गावै रामपाल।।13।।

।।शब्द।। (संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा रचित)

ब्रह्मा विष्णु शिव, हैं तीन लोक प्रधान। अष्टंगी इनकी माता है, और पिता काल भगवान।।1।।
एक लाख को काल, नित खावै सीना ताण। ब्रह्मा बनावै विष्णु पालै, शिव कर दे कल्याण।।2।।
अर्जुन डर के पूछता है, यह कौन रूप भगवान। कहै निरंजन मैं काल हूँ, सबको आया खान।।3।।
ब्रह्म नाम इसी का है, वेद करें गुणगान। जन्म मरण चौरासी, यह इसका संविधान।।4।।
चार राम की भक्ति में, लग रहा संसार। पाँचवें राम का ज्ञान नहीं, जो पार उतारनहार।।5।।
ब्रह्मा–विष्णु–शिव तीनों गुण हैं, दूसरा प्रकृति का जाल। लाख जीव नित भक्षण करें, राम तीसरा काल।।6।।
अक्षर पुरूष है राम चौथा, जैसे चन्द्रमा जान। पाँचवा राम कबीर है, जैसे उदय हुआ भान।।7।।
रामदेवानन्द गुरु जी, कर गए नजर निहाल। सतनाम का दिया खजाना, बरतै रामपाल।।8।।

नाम (दीक्षा) लेने वाले व्यक्तियों के लिए आवश्यक जानकारी

1. पूर्ण गुरु की पहचान : -- ***आज कलियुग में भक्त समाज के सामने पूर्ण गुरु की पहचान करना सबसे जटिल प्रश्न बना हुआ है। लेकिन इसका बहुत ही लघु और साधारण-सा उत्तर है कि जो गुरु शास्त्रों के अनुसार भक्ति करता है और अपने अनुयाइयों अर्थात शिष्यों द्वारा करवाता है वही पूर्ण संत है। चूंकि भक्ति मार्ग का संविधान धार्मिक शास्त्र जैसे - कबीर साहेब की वाणी, नानक साहेब की वाणी, संत गरीबदास जी महाराज की वाणी, संत धर्मदास जी साहेब की वाणी, वेद, गीता, पुराण, कुरआन, पवित्र बाईबल आदि हैं। जो भी संत शास्त्रों के अनुसार भक्ति साधना बताता है और भक्त समाज को मार्ग दर्शन करता है तो वह पूर्ण संत है अन्यथा वह भक्त समाज का घोर दुश्मन है जो शास्त्रों के विरूद्ध साधना करवा रहा है। इस अनमोल मानव जन्म के साथ खिलवाड़ कर रहा है। ऐसे गुरु या संत को भगवान के दरबार में घोर नरक में उल्टा लटकाया जाएगा।***

उदाहरण के तौर पर जैसे कोई अध्यापक सलेबस (पाठयक्रम) से बाहर की शिक्षा देता है तो वह उन विद्यार्थियों का दुश्मन है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः।।

अनुवाद : माया के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको

धारण किये हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं। यजुर्वेद अध्याय न. 40 श्लोक न. 10 (संत रामपाल दास जी द्वारा भाषा-भाष्य) अन्यदेवाहुःसम्भवादन्यदाहुरसम्भवात्, इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।10।।

हिन्दी अनुवाद :- परमात्मा के बारे में सामान्यत निराकार अर्थात् कभी न जन्मने वाला कहते हैं। दूसरे आकार में अर्थात् जन्म लेकर अवतार रूप में आने वाला कहते हैं। जो टिकाऊ अर्थात् पूर्णज्ञानी अच्छी प्रकार सुनाते हैं उसको इस प्रकार सही तौर पर वही समरूप अर्थात् यथार्थ रूप में भिन्न-भिन्न रूप से प्रत्यक्ष ज्ञान कराते हैं।

गीता अध्याय नं. 4 का श्लोक नं. 34

तत्, विद्धि, प्रणिपातेन, परिप्रश्नेन, सेवया,
उपदेक्ष्यन्ति, ते, ज्ञानम्, ज्ञानिनः, तत्वदर्शिनः।।

अनुवाद : उसको समझ उन पूर्ण परमात्मा के ज्ञान व समाधान को जानने वाले संतोंको भलीभाँति दण्डवत् प्रणाम करनेसे उनकी सेवा करनेसे और कपट छोड़कर सरलतापूर्वक प्रश्न करनेसे वे परमात्म तत्व को भली भाँति जाननेवाले ज्ञानी महात्मा तुझे उस तत्वज्ञानका उपदेश करेंगे।

2. नशीली वस्तुओं का सेवन निषेध :-- हुक्का, शराब, बीयर, तम्बाखु, बीड़ी, सिगरेट, हुलास सुंघना, गुटखा, मांस, अण्डा, सुल्फा, अफीम, गांजा और अन्य नशीली चीजों का सेवन तो दूर रहा किसी को नशीली वस्तु लाकर भी नहीं देनी है। बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज इन सभी नशीली वस्तुओं को बहुत बुरा बताते हुए अपनी वाणी में कहते हैं कि -

सुरापान मद्य मांसाहारी, गमन करै भोगैं पर नारी। सतर जन्म कटत हैं शीशं, साक्षी साहिब है जगदीशं।।
पर द्वारा स्त्री का खोलै, सतर जन्म अंधा होवै डोलै। मदिरा पीवै कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।।
गरीब, हुक्का हरदम पिवते, लाल मिलावैं धूर। इसमें संशय है नहीं, जन्म पिछले सूर।।1।।
गरीब, सो नारी जारी करै, सुरा पान सौ बार। एक चिलम हुक्का भरै, डुबै काली धार।।2।।
गरीब, सूर गऊ कुं खात है, भक्ति बिहुनें राड। भांग तम्बाखू खा गए, सो चाबत हैं हाड।।3।।
गरीब, भांग तम्बाखू पीव हीं, सुरा पान सैं हेत। गौस्त मट्टी खाय कर, जंगली बनें प्रेत।।4।।
गरीब, पान तम्बाखू चाब हीं, नास नाक में देत। सो तो इरानै गए, ज्यूं भड़भूजे का रेत।।5।।
गरीब, भांग तम्बाखू पीव हीं, गोस्त गला कबाब। मोर मृग कूं भखत हैं, देगें कहां जवाब।।6।।

3. तीर्थ स्थानों पर जाना निषेध :-- किसी प्रकार का कोई व्रत नहीं रखना है। कोई तीर्थ यात्रा नहीं करनी, न कोई गंगा स्नान आदि करना, न किसी अन्य धार्मिक स्थल पर स्नानार्थ व दर्शनार्थ जाना है। किसी मन्दिर व ईष्ट धाम में पूजा व भक्ति के भाव से नहीं जाना कि इस मन्दिर में भगवान है। भगवान कोई पशु तो है नहीं कि उसको पुजारी जी ने मन्दिर में बांध रखा है। भगवान तो कण-कण में व्यापक है। ये सभी साधनाएँ शास्त्रों के विरुद्ध हैं।

जरा विचार करके देखो कि ये सभी तीर्थ स्थल (जैसे जगन्नाथ का मन्दिर, बदरीनाथ, हरिद्वार,मक्का-मदीना, अमर नाथ, वैष्णो देवी, वृन्दावन, मथुरा, बरसाना, अयोध्या राम मन्दिर, काशी धाम, छुड़ानी धाम आदि), मन्दिर, मस्जिद, गुरु द्वारा, चर्च व ईष्ट धाम आदि ऐसे स्थल हैं जहाँ पर कोई संत रहते थे। वे वहाँ पर अपनी भक्ति साधना करके अपना भक्ति रूपी धन जोड़ करके शरीर छोड़ कर अपने ईष्ट देव के लोक में चले गए। तत्पश्चात उनकी यादगार को प्रमाणित रखने के लिए वहाँ पर किसी ने मन्दिर, किसी ने मस्जिद, किसी ने गुरु द्वारा, किसी ने चर्च या किसी ने धर्मशाला आदि बनवा दी। ताकि उनकी याद बनी रहे और हमारे जैसे तुच्छ प्राणियों को प्रमाण मिलता रहे कि हमें ऐसे ही कर्म करने चाहिए जैसे कि इन महान आत्माओं ने किये हैं। ये सभी धार्मिक स्थल हम सभी को यही संदेश देते हैं कि जैसे भक्ति साधना इन नामी संतों ने की है ऐसी ही आप करो। इसके लिए आप इसी तरीके से साधना करने वाले व बताने वाले संतों को तलाश करो और फिर जैसा वे कहें वैसा ही करो। लेकिन बाद में इन स्थानों की ही पूजा प्रारम्भ हो गई जो कि बिल्कुल व्यर्थ है और शास्त्रों के विरुद्ध है।

ये सभी स्थान तो एक ऐसे स्थान की भांति हैं जहाँ पर किसी हलवाई ने भट्ठी बना कर जलेबी, लड्डु आदि बना कर स्वयं खा कर और अपने सगे-साथियों को खिला कर चले गए। उसके बाद में उस स्थान पर न तो वह हलवाई है और न ही मिठाई। फिर तो वहाँ केवल भट्ठी ही है। वह न तो हमारे को मिठाई बनाना सिखला सकती है और न ही हमारा पेट (उदर) भर सकती है। अब कोई कहे कि आओ भईया! आपको वह भट्ठी दिखा कर लाऊँगा जहाँ पर एक हलवाई ने मिठाई बनाई थी। चलो चलते हैं। वहाँ जा कर उस भट्ठी को देख लिया और सात चक्कर भी काट आए। क्या आपको मिठाई मिली? क्या आपको मिठाई बनाने की विधि बताने वाला हलवाई मिला? इसके लिए आपने वैसा ही हलवाई खोजना होगा जो सबसे पहले आपको मिठाई खिलाए और बनाने की विधि भी बताए। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अन्य नहीं।

ठीक इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की पूजा न करके वैसे ही संतों की तलाश करो जो शास्त्रों के अनुसार पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की भक्ति करते व बताते हों। फिर जैसे वे कहे केवल वही करना, अपनी मन मानी नहीं करना।

सामवेद संख्या नं. 1400 उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।5।।

हिन्दी :- चतुर व्यक्तियों ने अपने वचनों द्वारा पूर्ण परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) की पूजा का सत्यमार्ग दर्शन न करके अमृत के स्थान पर आन उपासना (जैसे भूत पूजा, पितर पूजा, श्राद्ध निकालना, तीनों गुणों की पूजा (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शंकर) तथा ब्रह्म-काल की पूजा मन्दिर-मसजिद-गुरूद्वारों-चर्चो व तीर्थ-उपवास

तक की उपासना) रूपी फोड़े व घाव से निकले मवाद को आदर के साथ आचमन करा रहे होते हैं। उसको परमसुखदायक पूर्ण ब्रह्म कबीर सहशरीर साधारण वेशभूषा में (''वस्त्र का अर्थ है वेशभूषा-संत भाषा में इसे चोला भी कहते हैं। जैसे कोई संत शरीर त्याग जाता है तो कहते हैं कि महात्मा तो चोला छोड़ गए।'') सत्यलोक वाले शरीर के समान दूसरा तेजपुंज का शरीर धारण करके आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर कुछ दिन संसार में रह कर अपनी शब्द-साखियों के माध्यम से सत्यज्ञान को वर्णन करके पूर्ण परमात्मा के छुपे हुए वास्तविक सत्यज्ञान तथा भक्ति को जाग्रत करते हैं।

गीता अध्याय नं. 16 का श्लोक नं. 23

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः, न, सः,
सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम्।।

अनुवाद : जो पुरुष शास्त्र विधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है वह न सिद्धि को प्राप्त होता है न परम गति को और न सुख को ही।

गीता अध्याय नं. 6 का श्लोक नं. 16

न, अति, अश्नतः, तु, योगः, अस्ति, न, च, एकान्तम्,
अनश्नतः, न, च, अति, स्वप्नशीलस्य, जाग्रतः, न, एव, च, अर्जुन।।

अनुवाद : हे अर्जुन! यह योग अर्थात् भक्ति न तो बहुत खाने वाले का और न बिल्कुल न खाने वाले का न एकान्त स्थान पर आसन लगाकर साधना करने वाले का तथा न बहुत शयन करने के स्वभाव वाले का और न सदा जागने वाले का ही सिद्ध होता है।

पूजैं देई धाम को, शीश हलावै जो। गरीबदास साची कहै, हद काफिर है सो।।
कबीर, गंगा काठै घर करै, पीवै निर्मल नीर। मुक्ति नहीं हरि नाम बिन, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, तीर्थ कर–कर जग मूवा, उडै पानी न्हाय। राम ही नाम ना जपा, काल घसीटे जाय।।
गरीब, पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा। जड़ मूरत को पूजतें, आवैगा टोटा।।
गरीब, पीतल चमच्चा पूजिये, जो थाल परोसै। जड़ मूरत किस काम की, मति रहो भरोसै।।
कबीर, पर्वत पर्वत मैं फिर्या, कारण अपने राम। राम सरीखे जन मिले, जिन सारे सब काम।।

4. पितर पूजा निषेध :-- किसी प्रकार की पितर पूजा, श्राद्ध निकालना आदि कुछ नहीं करना है। भगवान श्री कृष्ण जी ने भी इन पितरों की व भूतों की पूजा करने से साफ मना किया है। गीता जी के अध्याय नं. 9 के श्लोक नं. 25 में कहा है कि -

यान्ति, देवव्रताः, देवान्, पितृऋन्, यान्ति, पितृव्रताः।
भूतानि, यान्ति, भूतेज्याः, मद्याजिनः, अपि, माम्।

अनुवाद : देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं भूतों को पूजने वाले भूतों को प्राप्त होते हैं और मतानुसार पूजन करने वाले भक्त मुझसे ही लाभान्वित होते हैं।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज और कबीर साहिब जी महाराज भी कहते हैं -

'गरीब, भूत रमै सो भूत है, देव रमै सो देव। राम रमै सो राम है, सुनो सकल सुर भेव।।''

इसलिए उस (पूर्ण परमात्मा) परमेश्वर की भक्ति करो जिससे पूर्ण मुक्ति होवे। वह परमात्मा पूर्ण ब्रह्म सतपुरुष (सत कबीर) है। इसी का प्रमाण गीता जी के अध्याय नं. 18 के श्लोक नं. 46 में है।

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।46।।

अनुवाद : जिस परमेश्वरसे सम्पूर्ण प्राणियोंकी उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वरकी अपने स्वाभाविक कर्मोंद्वारा पूजा करके मनुष्य परमसिद्धिको प्राप्त हो जाता है।।63।।

गीता अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62 :--

तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।62।।

अनुवाद : हे भरतवंशोभ्द्रव अर्जुन! तू सर्वभावसे उस ईश्वरकी ही शरणमें चला जा। उसकी कृपासे तू परम शान्ति (संसारसे सर्वथा उपरति) को और अविनाशी परमपदको प्राप्त हो जायगा।

सर्वभाव का तात्पर्य है कि कोई अन्य पूजा न करके मन-कर्म-वचन से एक परमेश्वर में आस्था रखना।

गीता अध्याय नं. 8 का श्लोक नं. 22 :--

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया।
यस्यान्तः स्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम्।।22।।

अनुवाद : हे पृथानन्दन अर्जुन! सम्पूर्ण प्राणी जिसके अन्तर्गत हैं और जिससे यह सम्पूर्ण संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष परमात्मा तो अनन्यभक्तिसे प्राप्त होनेयोग्य है।

अनन्य भक्ति का तात्पर्य है एक परमेश्वर (पूर्ण ब्रह्म) की भक्ति करना, दूसरे देवी-देवताओं अर्थात् तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की नहीं। गीता जी के अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1 से 4 :--

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।1।।

अनुवाद : ऊपर को जड़ वाला नीचे को शाखा वाला अविनाशी विस्तृत संसार रूपी पीपल का वृक्ष है, जिसके छोटे-छोटे हिस्से या टहनियाँ, पत्ते कहे हैं, उस संसार रूप वृक्ष को जो इस प्रकार जानता है। वह पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः, विषयप्रवालाः,
अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।2।।

अनुवाद : उस वृक्षकी नीचे और ऊपर तीनों गुणों ब्रह्मा-रजगुण, विष्णु-सतगुण, शिव-तमगुण रूपी फैली हुई विकार काम क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी कोपल

डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव ही जीवको कर्मोंमें बाँधने की भी जड़ें अर्थात् मूल कारण हैं तथा मनुष्यलोक, स्वर्ग, नरक लोक पृथ्वी लोक में नीचे (चौरासी लाख जूनियों में) ऊपर व्यस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असङ्गशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।3।।

अनुवाद : इस रचना का न शुरूवात तथा न अन्त है न वैसा स्वरूप पाया जाता है तथा यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी नहीं है क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है इस अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला मजबूत स्वरूपवाले निर्लेप तत्वज्ञान रूपी दृढ़ शस्त्र से अर्थात् निर्मल तत्वज्ञान के द्वारा काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक जानकर। (3)

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यतः प्रतृत्ति प्रसृता पुराणी।।4।।

अनुवाद : उसके बाद उस परमपद परमात्मा की खोज करनी चाहिये। जिसको प्राप्त हुए मनुष्य फिर लौटकर संसारमें नहीं आते और जिससे अनादिकालसे चली आनेवाली यह सृष्टी विस्तारको प्राप्त हुई है, उस आदि पुरुष परमात्माके ही मैं शरण हूँ।

इस प्रकार स्वयं भगवान श्री कृष्ण ने इन्द्र जो देवी-देवताओं का राजा है कि पूजा भी छुड़वा कर उस परमात्मा की भक्ति करने के लिए ही प्रेरणा दी थी। जिस कारण उन्होंने गोवर्धन पर्वत को उठा कर इन्द्र के कोप से ब्रज वासियों की रक्षा की।

गरीब, इन्द्र चढ़ा ब्रिज डुबोवन, भीगा भीत न लेव।
इन्द्र कढाई होत जगत में, पूजा खा गए देव।।
कबीर, इस संसार को, समझाऊँ कै बार।
पूँछ जो पकड़ै भेढ की, उतरा चाहै पार।।

5. गुरु आज्ञा का पालन :-- गुरुदेव जी की आज्ञा के बिना घर में किसी भी प्रकार का धार्मिक अनुष्ठान नहीं करवाना है। जैसे बन्दी छोड़ अपनी वाणी में कहते हैं कि :- "गुरु बिन यज्ञ हवन जो करहीं, मिथ्या जावे कबहु नहीं फलहीं।"

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान।
गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुराण।।

6. माता मसानी पूजना निषेध :-- आपने खेत में बनी मंढी या किसी खेड़े आदि की या किसी अन्य देवता की समाध नहीं पूजनी है। समाध चाहे किसी की भी हो बिल्कुल नहीं पूजनी है। अन्य कोई उपासना नहीं करनी है। यहाँ तक कि तीनों गुणों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की पूजा भी नहीं करनी है। केवल गुरु जी के बताए अनुसार ही करना है।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 15

न, माम्, दुष्कृतिनः, मूढाः, प्रपद्यन्ते, नराधमाः,
मायया, अपहृतज्ञानाः, आसुरम्, भावम्, आश्रिताः ।।

अनुवाद : मायाके द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे आसुर स्वभावको धारण किये हुए मनुष्य नीच दुषित कर्म करनेवाले मूर्ख मुझको नहीं भजते अर्थात् वे तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की साधना ही करते रहते हैं।

कबीर, माई मसानी शेढ शीतला, भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा उनसे दूर है, जो इनको पूजंत।।
कबीर, सौ वर्ष तो गुरु की सेवा, एक दिन आन उपासी। वो अपराधी आत्मा, परै काल की फांसी।।
गुरु को तजै भजै जो आना। ता पसुवा को फोकट ज्ञाना।।

7. संकट मोचन कबीर साहेब हैं :-- कर्म कष्ट (संकट) होने पर कोई अन्य ईष्ट देवता की या माता मसानी आदि की पूजा कभी नहीं करनी है। न किसी प्रकार की बुझा पड़वानी है। केवल बन्दी छोड़ कबीर साहिब को पूजना है जो सभी दुःखों को हरने वाले संकट मोचन हैं।

सामवेद संख्या न. 822 उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8 (संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

हिन्दी :-सनातन अर्थात् अविनाशी कबीर परमेश्वर हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले भक्तात्मा को तीन मन्त्र उपेदश देकर पवित्र करके जन्म व मृत्यु से रहित करता है तथा उसके प्राण अर्थात् जीवन-स्वांसों को जो संस्कारवश अपने मित्र अर्थात् भक्त के गिनती के डाले हुए होते हैं को अपने भण्डार से पूर्ण रूप से बढ़ाता है। जिस कारण से परमेश्वर के वास्तविक आनन्द को अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

कबीर, देवी देव ठाढे भये, हमको ठौर बताओ। जो मुझ(कबीर) को पूजैं नहीं, उनको लूटो खाओ।।
कबीर, काल जो पीसै पीसना, जोरा है पनिहार। ये दो असल मजूर हैं, सतगुरु के दरबार।।

8. अनावश्यक दान निषेध :-- कहीं पर और किसी को दान रूप में कुछ नहीं देना है। न पैसे, न बिना सिला हुआ कपड़ा आदि कुछ नहीं देना है। यदि कोई दान रूप में कुछ मांगने आए तो उसे खाना खिला दो, चाय, दूध, लस्सी, पानी आदि पिला दो परंतु देना कुछ भी नहीं है। न जाने वह भिक्षुक उस पैसे का क्या दुरूपयोग करे। जैसे एक व्यक्ति ने किसी भिखारी को उसकी झूठी कहानी जिसमें वह बता रहा था कि मेरे बच्चे ईलाज बिना तड़फ रहे हैं। कुछ पैसे देने की कृपा करें को सुनकर भावनावस होकर 100 रु दे दिए। वह भिखारी पहले पाव शराब पीता था उस दिन उसने आधा बोतल शराब पीया और अपनी पत्नी को पीट डाला। उसकी पत्नी ने बच्चों सहित आत्म हत्या कर ली। आप द्वारा किया हुआ वह दान उस परिवार के नाश का कारण बना। यदि आप चाहते हो कि ऐसे दुःखी व्यक्ति की मदद करें तो उसके बच्चों को डॉक्टर से दवाई दिलवा दें, पैसा न दें।

कबीर, गुरु बिन माला फेरते, गुरु बिन देते दान। गुरु बिन दोनों निष्फल हैं, पूछो वेद पुरान।।

9. झूठा खाना निषेध :-- ऐसे व्यक्ति का झूठा नहीं खाना है जो शराब, मांस, तम्बाखु, अण्डा, बीयर, अफीम, गांजा आदि का सेवन करता हो।

10. सत्यलोक गमन (देहान्त) के बाद क्रिया-कर्म निषेध :-- यदि परिवार में किसी की मौत हो जाती है, चिता में अग्नि कोई भी दे सकता है, घर का या अन्य तथा अग्नि प्रज्वलित करते समय मंगलाचरण बोल दें। तो उसके फूल आदि कुछ नहीं उठाने हैं, यदि उस स्थान को साफ करना अनिवार्य है तो उन अस्थियों को उठाकर स्वयं ही किसी स्थान पर चलते पानी में बहा दें। उस समय मंगलाचरण उच्चारण कर दें। न पिंड आदि भरवाने हैं, न तेराहमी, छः माही, बरसोधी, पिंड भी नहीं भरवाने हैं तथा श्राद्ध आदि कुछ नहीं करना है। किसी भी अन्य व्यक्ति से हवन आदि नहीं करवाना है। सम्बन्धी तथा रिश्तेदारों आदि जो शोक व्यक्त करने आए उनके लिए कोई भी एक दिन नियुक्त करें। उस दिन प्रतिदिन करने वाला नित्य नियम करें, ज्योति जागृत करें, फिर सर्व को खाना खिलाऐं। यदि आपने उसके (मरने वाले के) नाम पर कुछ धर्म करना है तो अपने गुरुदेव जी की आज्ञा ले कर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी का अखण्ड पाठ करवाना चाहिए। यदि पाठ करने की आज्ञा न मिले तो परिवार के उपदेशी भक्त चार दिन या सात दिन घर में एक अखण्ड जोत देशी घी की जलाऐ तथा ब्रह्म गायत्री मन्त्र प्रतिदिन चार बार करें तथा तीन या एक बार के मन्त्र का दान संकल्प सतलोक वासी को करें। जैसा उचित समझे एक, दो, तीन तक मन्त्र के जाप का फल उसे दान करें। प्रतिदिन की तरह ज्योति व आरती, नाम स्मरण करते रहना है, यह याद रखते हुए कि:-

कबीर, साथी हमारे चले गए, हम भी चालन हार। कोए कागज में बाकी रह रही, ताते लाग रही वार।।
कबीर, देह पड़ी तो क्या हुआ, झूठा सभी पटीट। पक्षी उड़या आकाश कूं, चलता कर गया बीट।।

''कर्म काण्ड के विषय में सत्य कथा''

मेरे (संत रामपाल दास के) पूज्य गुरूदेव स्वामी राम देवानन्द जी महाराज को सोलह वर्ष की आयु में किसी महात्मा के सत्संग सुनने से वैराग हो गया था। एक दिन वे खेतों में गये हुए थे। पास में ही वन था। वे वन में जाकर किसी मृत जानवर की हड्डियों के पास अपने कपड़े फाड़कर फैंक जाते हैं और स्वयं महात्मा जी के साथ चले जाते हैं।

जब उनकी खोज हुई तो उनके घर वालों ने देखा कि वन में हड्डियों के पास फटे हुए कपड़े पड़े हैं तो उन्होंने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने उन्हें खा लिया है। उन कपड़ों तथा हड्डियों को उठा कर घर पर ले आते हैं और अंतिम संस्कार कर देते हैं। उसके बाद तेरहवीं तथा छःमाही करते हैं और फिर श्राद्ध शुरू हो जाते हैं।

जब मेरे पूज्य गुरूदेव बहुत वृद्ध हो चुके थे तो वे एक बार घर पर गये। तब उन घर वालों को यह पता चला कि ये जीवित हैं और घर छोड़कर चले गये थे। उन्होंने बताया कि जब ये घर छोड़कर चले गये थे तो इनकी खोज हुई। वन में इनके कपड़े मिले। उनके पास कुछ हड्डियाँ पड़ी थी। तो हमने सोचा कि किसी जंगली जानवर ने

इनको खा लिया है और उन कपड़ों तथा हड्डियों को घर पर लाकर अंतिम संस्कार कर दिया।

फिर मैंने (संत रामपाल दास ने) मेरे पूज्य गुरूदेव के छोटे भाई की पत्नी से पूछा कि जब हमारे पूज्य गुरूदेव घर छोड़कर चले गये थे तो तुमने पीछे से क्या किया? उसने बताया कि जब मैं ब्याही आई थी तो उस समय मुझे इनके श्राद्ध निकलते मिले थे। मैं अपने हाथों से इनके लगभग 70 श्राद्ध निकाल चुकी हूँ। उसने बताया कि जब घर में कोई नुकसान हो जाता था जैसे कि भैंस का दूध न देना, थन में खराबी आ जाना, कोई और नुकसान हो जाना आदि तो हम स्यानों के पास बूझा पड़वाने के लिए जाते थे तो वे कहते थे कि तुम्हारें घर में कोई निःसन्तान (अनमैरिड) मरा हुआ है। तुम्हारे को वह दुःखी कर रहा है। फिर हम उसके कपड़े आदि देते हैं।

तब मैंने कहा कि ये तो दुनिया का उद्धार कर रहे हैं। ये किसको दुःख दे रहे थे। ये तो अब सुख दाता हैं। फिर मैंने (सन्त रामपाल जी महाराज ने) उस वृद्धा से कहा कि अब तो ये आपके सामने हैं, अब तो ये व्यर्थ की साधना जैसे श्राद्ध निकालने बंद कर दो। तब उसने कहा कि यह तो पुरानी रिवाज है, यह कैसे छोड़ दूं? अर्थात् हम अपनी पुरानी रिवाजों में इतने लीन हो चुके हैं कि प्रत्यक्ष प्रमाण होने पर कि वह गलत कर रहे हैं छोड़ नहीं सकते। इससे प्रमाणित होता है कि श्राद्ध निकालना, पितर पूजा करना आदि सब व्यर्थ हैं।

11. बच्चे के जन्म पर शास्त्र विरूद्ध पूजा निषेध :-- *बच्चे के जन्म पर कोई छटी आदि नहीं मनानी है। सुतक के कारण प्रतिदिन की तरह करने वाली पूजा, भक्ति, आरती, ज्योति जगाना आदि बंद नहीं करनी है।*

इसी संदर्भ में एक संक्षिप्त कथा बताता हूँ कि एक व्यक्ति की शादी के दस वर्ष पश्चात् पुत्र हुआ था। पुत्र की खुशी में उसने बहुत ही खुशी मनाई। बीस-पच्चीस गाँवों को भोजन के लिए आमन्त्रित किया और बहुत ही गाना-बजाना हुआ अर्थात् काफी पैसा खर्च किया। फिर एक वर्ष के बाद उस पुत्र का देहान्त हो जाता है। फिर वही परिवार टक्कर मार कर रोता है और अपने दुर्भाग्य को कोसता है। इसलिए कबीर साहेब हमें बताते हैं कि :-

कबीर, बेटा जाया खुशी हुई, बहुत बजाये थाल। आना जाना लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।
कबीर, पतझड़ आवत देख कर, बन रोवै मन माहिं। ऊंची डाली पात थे, अब पीले हो हो जाहिं।।
कबीर, पात झड़ंता यूं कहै, सुन भई तरूवर राय। अब के बिछुड़े नहीं मिला, न जाने कहां गिरेंगे जाय।
कबीर, तरूवर कहता पात से, सुनों पात एक बात। यहाँ की याहे रीति है, एक आवत एक जात।।

12. देई धाम पर बाल उतरवाने जाना निषेध :-- *बच्चे के किसी देई धाम पर बाल उतरवाने नहीं जाना है। जब देखो बाल बड़े हो गए, कटवा कर फैंक दो। एक मन्दिर में देखा कि श्रद्धालु भक्त अपने लड़के या लड़कियों के बाल उतरवाने आए। वहाँ पर उपस्थित नाई ने बाहर के रेट से तीन गुना पैसे लीये और एक कैंची भर बाल काट कर मात-पिता को दे दिए। उन्होंने श्रद्धा से मन्दिर में चढ़ाए। पुजारी ने एक थैले में डाल लिए। रात्री को उठा कर दूर एकांत स्थान पर फैंक दिए। यह केवल नाटक बाजी है।*

क्यों न पहले की तरह स्वाभाविक तरीके से बाल उतरवाते रहें तथा बाहर डाल दें। परमात्मा नाम से प्रसन्न होता है पाखण्ड से नहीं।

13. नाम जाप से सुख :-- नाम (उपदेश) को केवल दुःख निवारण की दृष्टि कोण से नहीं लेना चाहिए बल्कि आत्म कल्याण के लिए लेना चाहिए। फिर सुमिरण से सर्व सुख अपने आप आ जाते हैं।

''कबीर, सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुःख जाए।
कहैं कबीर सुमिरण किए, सांई माहिं समाय।।''

14. व्याभीचार निषेध :-- पराई स्त्री को माँ-बेटी-बहन की दृष्टि से देखना चाहिए। व्याभीचार महापाप है। जैसे :--

गरीब, पर द्वारा स्त्री का खोलै। सत्तर जन्म अन्धा हो डोलै।।सुरापान मद्य मांसाहारी। गवन करें भोगैं पर नारी।। सत्तर जन्म कटत हैं शीशं। साक्षी साहिब है जगदीशं।। पर नारी ना परसियों, मानो वचन हमार। भवन चर्तुदश तास सिर, त्रिलोकी का भार।। पर नारी ना परसियो, सुनो शब्द सलतंत। धर्मराय के खंभ से, अर्धमुखी लटकंत।।

15. निन्दा सुनना व करना निषेध :-- अपने गुरु की निंदा भूल कर भी न करें और न ही सुनें। सुनने से अभिप्राय है यदि कोई आपके गुरु जी के बारे में मिथ्या बातें करें तो आपने लड़ना नहीं है बल्कि यह समझना चाहिए कि यह बिना विचारे बोल रहा है अर्थात् झूठ कह रहा है।

गुरु की निंदा सुनै जो काना। ताको निश्चय नरक निदाना।।
अपने मुख निंदा जो करहीं। शुकर श्वान गर्भ में परहीं।।

निन्दा तो किसी की भी नहीं करनी है और न ही सुननी है। चाहे वह आम व्यक्ति ही क्यों न हो। कबीर साहेब कहते हैं कि -

"तिनका कबहू न निन्दीये, जो पांव तले हो। कबहु उठ आखिन पड़े, पीर घनेरी हो।।"

16. गुरु दर्श की महिमा :-- सतसंग में समय मिलते ही आने की कोशिश करे तथा सतसंग में नखरे (मान-बड़ाई) करने नहीं आवे। अपितु अपने आपको एक बीमार समझ कर आवे। जैसे बीमार व्यक्ति चाहे कितने ही पैसे वाला हो, चाहे उच्च पदवी वाला हो जब हस्पताल में जाता है तो उस समय उसका उद्देश्य केवल रोग मुक्त होना होता है। जहाँ डॉक्टर लेटने को कहे लेट जाता है, बैठने को कहे बैठ जाता है, बाहर जाने का निर्देश मिले बाहर चला जाता है। फिर अन्दर आने के लिए आवाज आए चुपके से अन्दर आ जाता है। ठीक इसी प्रकार यदि आप सतसंग में आते हो तो आपको सतसंग में आने का लाभ मिलेगा अन्यथा आपका आना निष्फल है। सतसंग में जहाँ बैठने को मिल जाए वहीं बैठ जाए, जो खाने को मिल जाए उसे परमात्मा कबीर साहिब की रजा से प्रसाद समझ कर खा कर प्रसन्न चित्त रहे।

कबीर, संत मिलन कूं चालिए, तज माया अभिमान। जो–जो कदम आगे रखे, वो ही यज्ञ समान।।
कबीर, संत मिलन कूं जाईए, दिन में कई–कई बार। आसोज के मेह ज्यों, घना करे उपकार।।
कबीर, दर्शन साधु का, परमात्मा आवै याद। लेखे में वोहे घड़ी, बाकी के दिन बाद।।
कबीर, दर्शन साधु का, मुख पर बसै सुहाग। दर्श उन्हीं को होत हैं, जिनके पूर्ण भाग।।

17. गुरु महिमा :-- यदि कहीं पर पाठ या सतसंग चल रहा हो या वैसे गुरु जी के दर्शनार्थ जाते हों तो सर्व प्रथम गुरु जी को दण्डवत्(लम्बा लेट कर) प्रणाम करना चाहिए बाद में सत ग्रन्थ साहिब व तसवीरें जैसे साहिब कबीर की मूर्ति - गरीबदास जी की व स्वामी राम देवानन्द जी व गुरु जी की मूर्ति को प्रणाम करें जिससे सिर्फ भावना बनी रहेगी। मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल प्रणाम करना पूजा में नहीं आता यह तो भक्त की श्रद्धा को बनाए रखने में सहयोग देता है। पूजा तो वक्त गुरु व नाम मन्त्र की करनी है जो पार लगाएगा।

कबीर, गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागुं पाय।
बलिहारी गुरु आपने, जिन गोविन्द दियो मिलाय।।

कबीर, गुरु बड़े हैं गोविन्द से, मन में देख विचार। हरि सुमरे सो रह गए, गुरु भजे होय पार।।
कबीर, हरि के रूठतां, गुरु की शरण में जाय।कबीर गुरु जै रूठजां, हरि नहीं होत सहाय।।

कबीर, सात समुन्द्र की मसि करूं, लेखनि करूं बनिराय।
धरती का कागज करूं, तो गुरु गुन लिखा न जाय।।

18. मांस भक्षण निषेध :--अण्डा व मांस भक्षण व जीव हिंसा नहीं करनी है। यह महा पाप होता है। जैसे साहेब कबीर जी महाराज व गरीबदास जी महाराज ने बताया है :-

कबीर, जीव हने हिंसा करे, प्रकट पाप सिर होय। निगम पुनि ऐसे पाप तें, भिस्त गया नहिं कोय।।1।।
कबीर, तिलभर मछली खायके, कोटि गऊ दे दान। काशी करौंत ले मरे, तो भी नरक निदान।।2।।
कबीर, बकरी पाती खात है, ताकी काढी खाल। जो बकरीको खात है, तिनका कौन हवाल।।3।।
कबीर, गला काटि कलमा भरे, कीया कहै हलाल। साहब लेखा मांगसी, तब होसी कौन हवाल।।4।।
कबीर, दिनको रोजा रहत हैं, रात हनत हैं गाय। यह खून वह वंदगी, कहुं क्यों खुशी खुदाय।।5।।
कबीर, कबिरा तेई पीर हैं, जो जानै पर पीर। जो पर पीर न जानि है, सो काफिर बेपीर।।6।।
कबीर, खूब खाना है खीचडी, मांहीं परी टुक लौन। मांस पराया खायकै, गला कटावै कौन।।7।।
कबीर, मुसलमान मारैं करदसो, हिंदू मारैं तरवार। कहै कबीर दोनूं मिलि, जैहैं यमके द्वार।।8।।
कबीर, मांस अहारी मानव, प्रत्यक्ष राक्षस जानि। ताकी संगति मति करै, होइ भक्ति में हानि।।9।।
कबीर, मांस खांय ते ढेड़ सब, मद पीवैं सो नीच। कुलकी दुरमति पर हरै, राम कहै सो ऊंच।।10।।
कबीर, मांस मछलिया खात हैं, सुरापान से हेत। ते नर नरकै जाहिंगे, माता पिता समेत।।11।।
गरीब, जीव हिंसा जो करते हैं, या आगे क्या पाप। कंटक जुनी जिहान में, सिंह भेड़िया और सांप।।
झोटे बकरे मुरगे ताई। लेखा सब ही लेत गुसाईं।। मृग मोर मारे महमंता। अचरा चर हैं जीव अनंता।।

जिह्वा स्वाद हिते प्राना। नीमा नाश गया हम जाना।।
तीतर लवा बुटेरी चिड़िया। खूनी मारे बड़े अगड़िया।।
अदले बदले लेखे लेखा। समझ देख सुन ज्ञान विवेका।।

गरीब, शब्द हमारा मानियो, और सुनते हो नर नारि।
जीव दया बिन कुफर है, चले जमाना हारि।।

अनजाने में हुई हिंसा का पाप नहीं लगता। बन्दी छोड़ कबीर साहिब कहते हैं :

"इच्छा कर मारै नहीं, बिन इच्छा मर जाए। कहैं कबीर तास का, पाप नहीं लगाए।।"

19. गुरु द्रोही का सम्पर्क निषेध :-- यदि कोई भक्त गुरु जी से द्रोह (गुरु जी से

विमुख हो जाता है) करता है वह महापाप का भागी हो जाता है। यदि किसी को मार्ग अच्छा न लगे तो अपना गुरु बदल सकता है। यदि वह पूर्व गुरु के साथ बैर व निन्दा करता है तो वह गुरु द्रोही कहलाता है। ऐसे व्यक्ति से भक्ति चर्चा करने में उपदेशी को दोष लगता है। उसकी भक्ति समाप्त हो जाती है।

गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जे पग आवै बीर। चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहैं कबीर।।
कबीर, जान बुझ साची तजै, करै झूठे से नेह। जाकी संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

अर्थात् गुरु द्रोही के पास जाने वाला भक्ति रहित होकर नरक व लख चौरासी जूनियों में चला जाएगा।

20. जुआ निषेध :-- जुआ-ताश कभी नहीं खेलना चाहिए।

कबीर, मांस भखै और मद पिये, धन वेश्या सों खाय। जूआ खेलि चोरी करै, अंत समूला जाय।।

21. नाच-गान निषेध :-- किसी भी प्रकार के खुशी के अवसर पर नाचना व अश्लील गाने गाना भक्ति भाव के विरूद्ध है। जैसे एक समय एक विधवा बहन किसी खुशी के अवसर पर अपने रिश्तेदार के घर पर गई हुई थी। सभी खुशी के साथ नाच-गा रहे थे परंतु वह बहन एक तरफ बैठ कर प्रभु चिंतन में लगी हुई थी। फिर उनके रिश्तेदारों ने उससे पूछा कि आप ऐसे क्यों निराश बैठे हो? आप भी हमारे की तरह नाचों, गाओ और खुशी मनाओ। इस पर वह बहन कहती है कि किस की खुशी मनाऊँ? मुझ विधवा का एक ही पुत्र था वह भी भगवान को प्यारा हो चुका है। अब क्या खुशी है मेरे लिए? ठीक इसी प्रकार इस काल के लोक में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति है। यहाँ पर गुरु नानक देव जी की वाणी है कि :-

ना जाने काल की कर डारै, किस विधि ढल पासा वे।
जिन्हादे सिर ते मौत खुड़गदी, उन्हानूं केड़ा हांसा वे।।
साध मिलें साडी शादी (खुशी) होंदी, बिछड़ दां दिल गिरि (दुःख) वे।
अखदे नानक सुनो जिहाना, मुश्किल हाल फकीरी वे।।

कबीर साहेब जी महाराज भी कहते हैं कि :--

कबीर, झूठे सुख को सुख कहै, मान रहा मन मोद।
सकल चबीना काल का, कुछ मुख में कुछ गोद।।
कबीर, बेटा जाया खुशी हई, बहुत बजाये थाल।
आवण जाणा लग रहा, ज्यों कीड़ी का नाल।।

विशेष :- स्त्री तथा पुरूष दोनों ही परमात्मा प्राप्ति के अधिकारी हैं। स्त्रियों को मासिक धर्म (Mainces) के दिनों में भी अपनी दैनिक पूजा, ज्योति लगाना आदि बन्द नहीं करना चाहिए, न ही किसी के देहान्त या जन्म पर भी दैनिक पूजा कर्म बन्द नहीं करना है।

नोट :-- जो भक्तजन इन इक्कीस सुत्रीय आदेशों का पालन नहीं करेगा उसका नाम समाप्त हो जाएगा। यदि अनजाने में कोई गलती हो भी जाती है तो वह माफ हो जाती है और यदि जान बुझकर कोई गलती की है तो वह भक्त नाम रहित हो जाता है। इसका समाधान यही है कि गुरुदेव जी से क्षमा याचना करके दोबारा नाम उपदेश लेना होगा।

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में आत्मा और परमात्मा एक रूप होकर कबीर साहेब ही अनामी रूप में है। जैसे मिट्टी के ढले (छोटे–छोटे टुकड़े) हो जाते हैं। फिर वर्षा होने पर एक पृथ्वी बन जाती है, अलग आस्तित्व नहीं रहता।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।
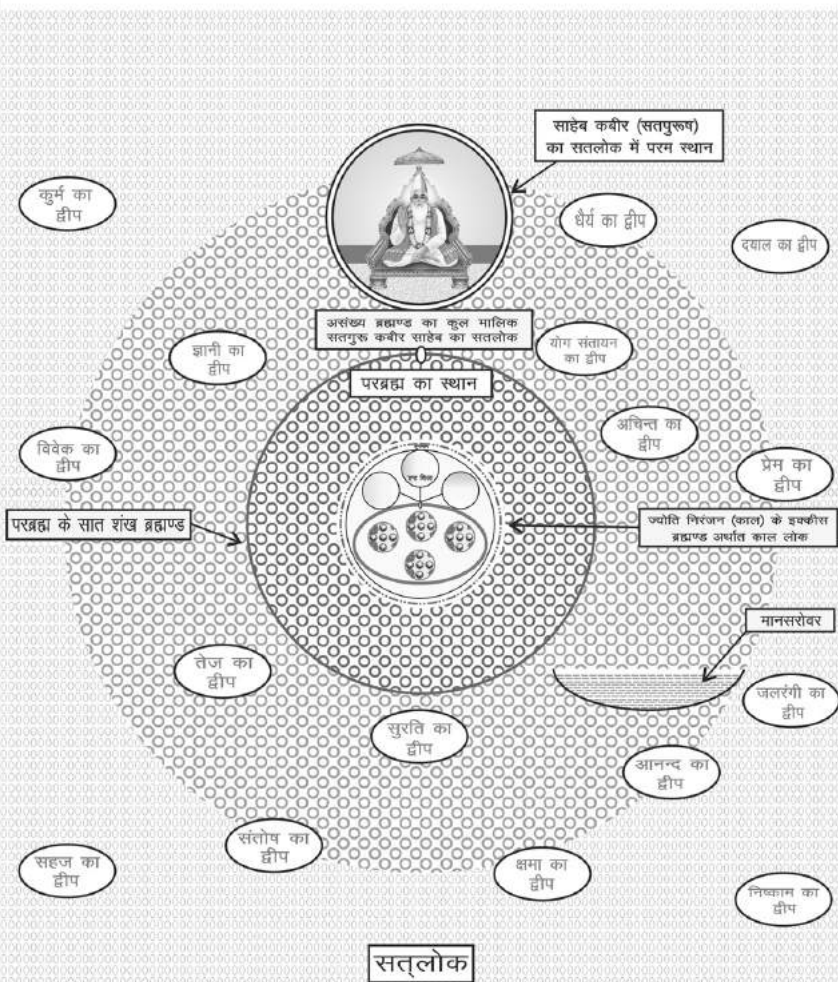
सृष्टी रचना

(सुक्ष्म वेद से निष्कर्ष रूप सृष्टी रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टी की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टी रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टी रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्मण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टी रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सुक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई

बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृहमंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर)

ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा अन्तरात्मा से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल सृष्टी में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता—पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक—छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्माण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी

चाहिए। खाली ब्रह्मण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्मण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्मण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्मण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्मण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्मण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्मण्ड सतलोक में ही थे।

तत् पश्चात पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकृति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन

एक ब्रह्माण्ड का लघु चित्र
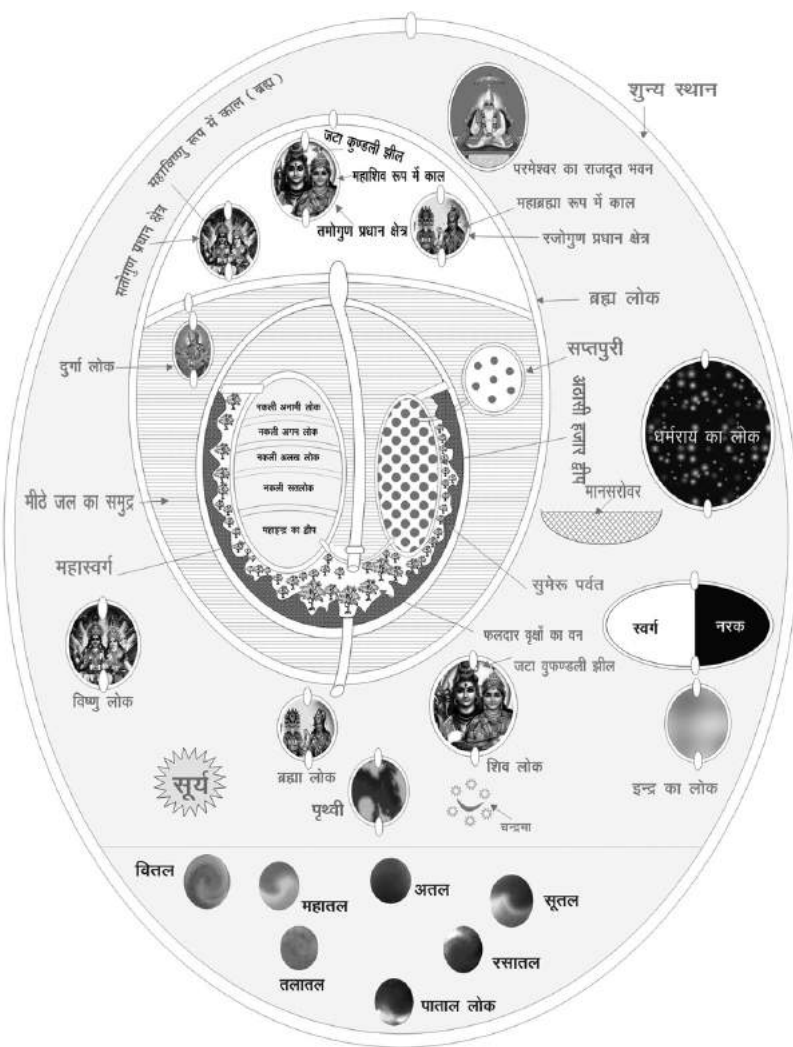
शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्मण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्मण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्मण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्मण्डों का स्वामी है।

3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टी के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्मण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक

ब्रह्मण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पृष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति"

काल (ब्रह्म) ने प्रकृति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूंगा प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकृति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकृति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान

सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पृष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पृष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पृष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा

शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टी-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्म, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सुक्ष्म वेद से शेष सृष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं

दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपिरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढे।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकृति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई

और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्मण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्) आकार में कृष्ण अवतार (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको अवतार रूप में आया समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

"ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निरंजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूंगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा ? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊंगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि दुर्गा सृष्टी रचना क्यों नहीं की ? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की

तलाश में गया है। ब्रह्म (काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पति का सब कार्य असम्भव है। तब दुर्गा (प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूंगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा ने पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

"माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शाप देना"

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ है तब दानों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है

कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।

ब्रह्मा को शाप : -- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

गायत्री को शाप : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।

पुहपवति को शाप : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। (हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।)

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

"विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले।

तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से आपको तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जग में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जग में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे

लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकृति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए : --

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया।

भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया।

क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहां पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तोनों अपने-२ लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पृथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है।

उपरोक्त विवरण एक ब्रह्मण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्मण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार

जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओ३म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त जाना करेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ३म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खाए तो सर्व को ब्रह्म से घृणा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाएं। इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति

ब्रह्म लोक का लघु चित्र
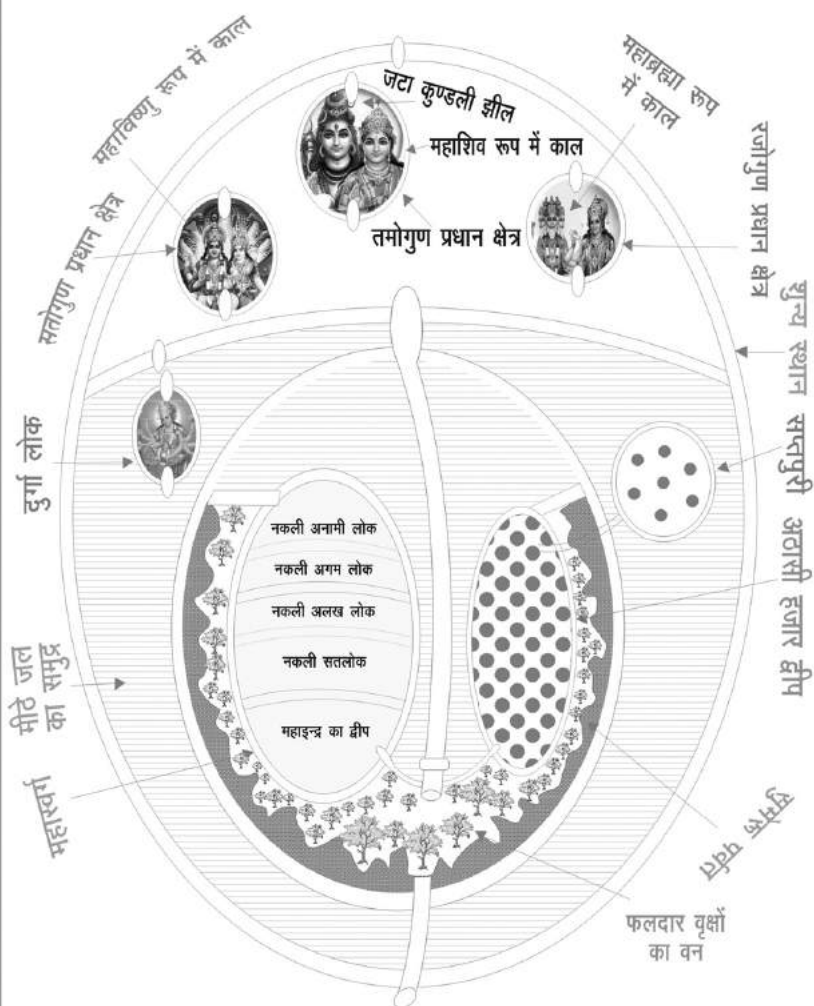
ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र
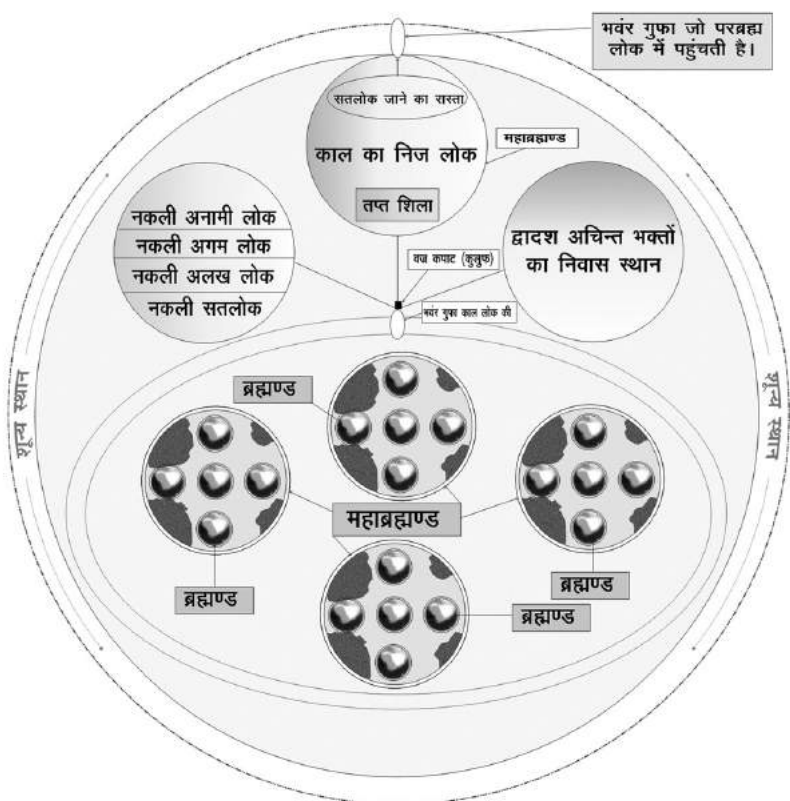
(गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

प्रत्येक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि 'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है। माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है। आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई, अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्मण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्मण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्मण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्मण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधी पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्मण्डों को चार महाब्रह्मण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्मण्ड में पाँच ब्रह्मण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्मण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड की रचना एक महाब्रह्मण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों

(भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

"परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों की स्थापना"

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात संख ब्रह्मण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। दूसरा कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग

नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं उसके वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्मण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्मण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्मण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्मण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्मण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकृति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्मण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों सहित असंख्य ब्रह्मण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी.

वी. पर बाहर का सर्व दृश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

"पवित्र अथर्ववेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्त्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म–ज–ज्ञानम्–प्रथमम्–पुरस्त्तात्–विसिमतः–सुरुचः–वेनः–आवः–सः–बुध्न्याः –उपमा–अस्य–विष्ठाः–सतः–च–योनिम्–असतः–च–वि वः

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्त्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :–

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्–पित्र्या–राष्ट्रि–एतु–अग्रे–प्रथमाय–जनुषे–भुवनेष्ठाः–तस्मा–एतम्–सुरुचम् – हवारमह्यम्–धर्मम्–श्रीणान्तु–प्रथमाय–धास्यवे

अनुवाद :– (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना

की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात् पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः—उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :- (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्मण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा सृजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक-ठीक विस्त्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म-क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्मण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्मण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

सः—हि—दिवः—स—पृथिव्या—ऋतस्था—मही—क्षेमम्—रोदसी—अकस्भायत्—महान् —मही—अस्कभायद्—विजातः—धाम्—सदम्—पार्थिवम्—च—रजः
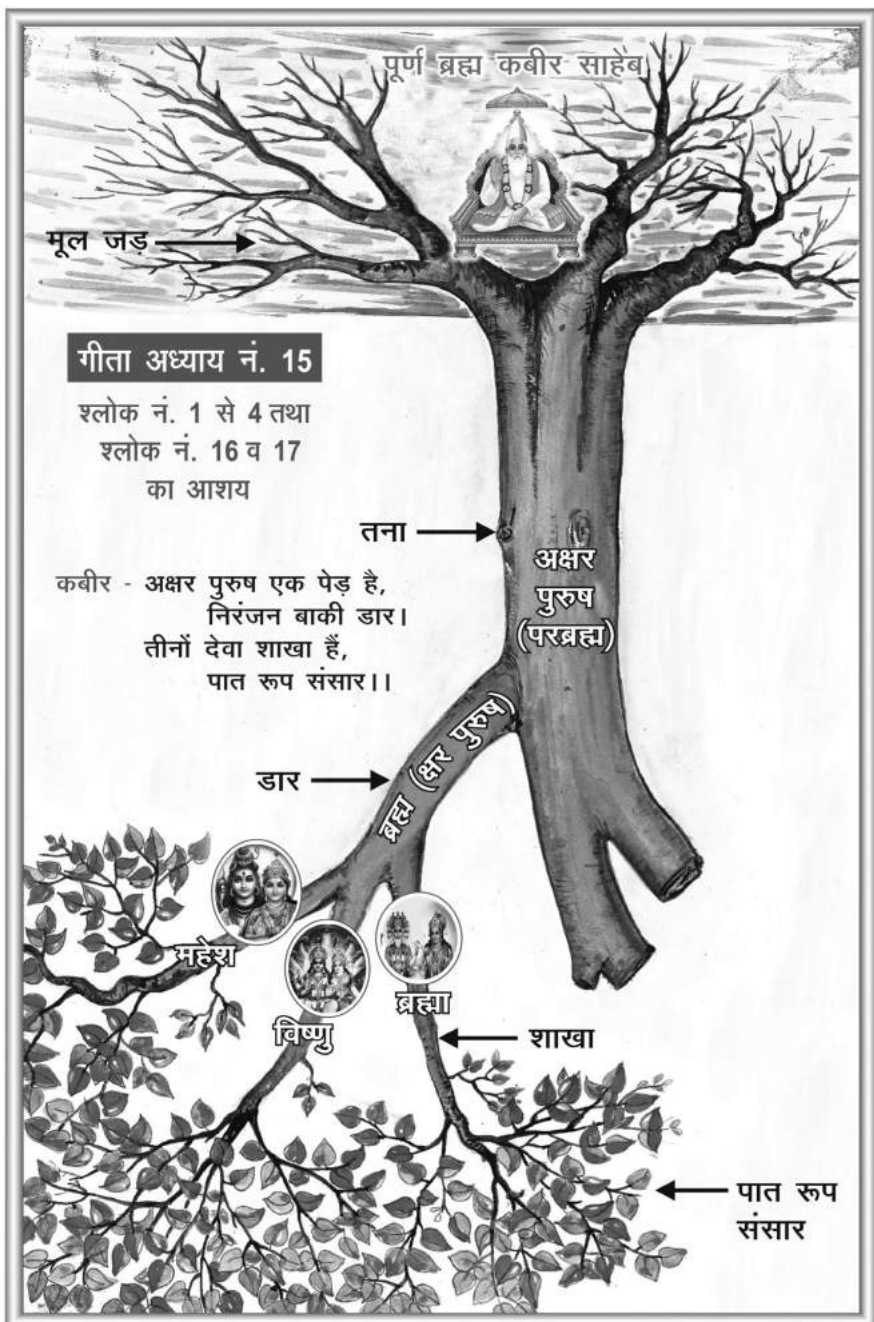
ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

अनुवाद – (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर–अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पृथिव्या) नीचे के पृथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड (मही) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्मण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न–भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्मण्ड में छोटे–छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः–बुध्न्यात्–आष्ट्र–जनुषेः–अभि–अग्रम्–बृहस्पतिः–देवता–तस्य–सम्राट–अहः– यत्–शुक्रम्–ज्योतिषः–जनिष्ट–अथ–द्युमन्तः–वि–वसन्तु–विप्राः

अनुवाद :– (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि–अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया–दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकृति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे—विषिते—एष— जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद – (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टी उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहाः-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च— गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक

16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

"पवित्र ऋग्वेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्त्रशिर्षा—पुरूषः—सहस्त्राक्षः—सहस्त्रपात्—स—भूमिम्—विश्वतः—वृत्वा—अत्यातिष्ठत् —दशंगुलम्।

अनुवाद :— (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्मण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्मण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बैठा है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष—एव—इदम्—सर्वम्—यत्—भूतम्—यत्—च—भाव्यम्—उत—अमृतत्वस्य—इशानः—यत्—अन्नेन—अतिरोहति

अनुवाद :— (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से

(अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

एतावान्—अस्य—महिमा—अतः—ज्यायान्—च—पुरूषः—पादः—अस्य—विश्वा—भूतानि—त्रि—पाद्—अस्य—अमृतम्—दिवि

अनुवाद :— (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्मण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्मण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरूष-अक्षर पुरूष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरूष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :- गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार। सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार। दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि—पाद—ऊर्ध्वः—उदैत्—पुरूषः—पादः—अस्य—इह—अभवत्—पूनः—ततः— विश्वङ्—व्यक्रामत्—सः—अशनानशने—अभि

अनुवाद :— (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टी रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्मण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशिय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभू ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्मण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं (अमृतवाणी राग

कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।
माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः—स—जातः—अत्यरिच्यत—पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :— (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे—छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सुक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कृताः—देवा—यत्—यज्ञम्—तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम्।

अनुवाद :— (सप्त) सात संख ब्रह्मण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्मण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात संख ब्रह्मण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले

पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि *कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।*

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन—यज्ञम्—अ—यजन्त—देवाः—तानि—धर्माणि—प्रथमानि— आसन्—ते—ह—नाकम्— महिमानः— सचन्त— यत्र—पूर्वे—साध्याः—सन्ति देवाः।

अनुवाद :– जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टी के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची सृष्टी के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधी अनुसार करता है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा

अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता–पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3 (गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)

पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है। एक ब्रह्मण्ड की सृष्टी रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्मण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्मण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे नहीं मालूम इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टी करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद अ. 6 के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि ।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100

पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (पृष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टी रचना का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं।

यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित् ।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके ।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा ।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असंड्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्षम वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी ।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना–सृष्टी (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते ।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में

(सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः ।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनीयां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उस के लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्व दर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस तत्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरूष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वृक्ष का पालन होता है तथा वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों

प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सृष्टी रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टी रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टी की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टी की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टी की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हय्यिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने

उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टी की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टी रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टी रचना"

विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मृत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी

शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टी रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टी का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।

अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टी रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टी की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथ श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दु समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मृत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाश्वान हैं। इन के पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) हैं जैसा आप ने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दु समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नही) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक

23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमृतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कर्विदेव (कबीर प्रभु) तत्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

"आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टी रचना का प्रमाण"

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्मण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।
सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बड़भागी।।27।।

धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कृतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्मण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्मण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।
हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।
जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौंरा सें हंस छुटाये।।47।।
जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्मण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकृति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकृति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शाप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मृत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों
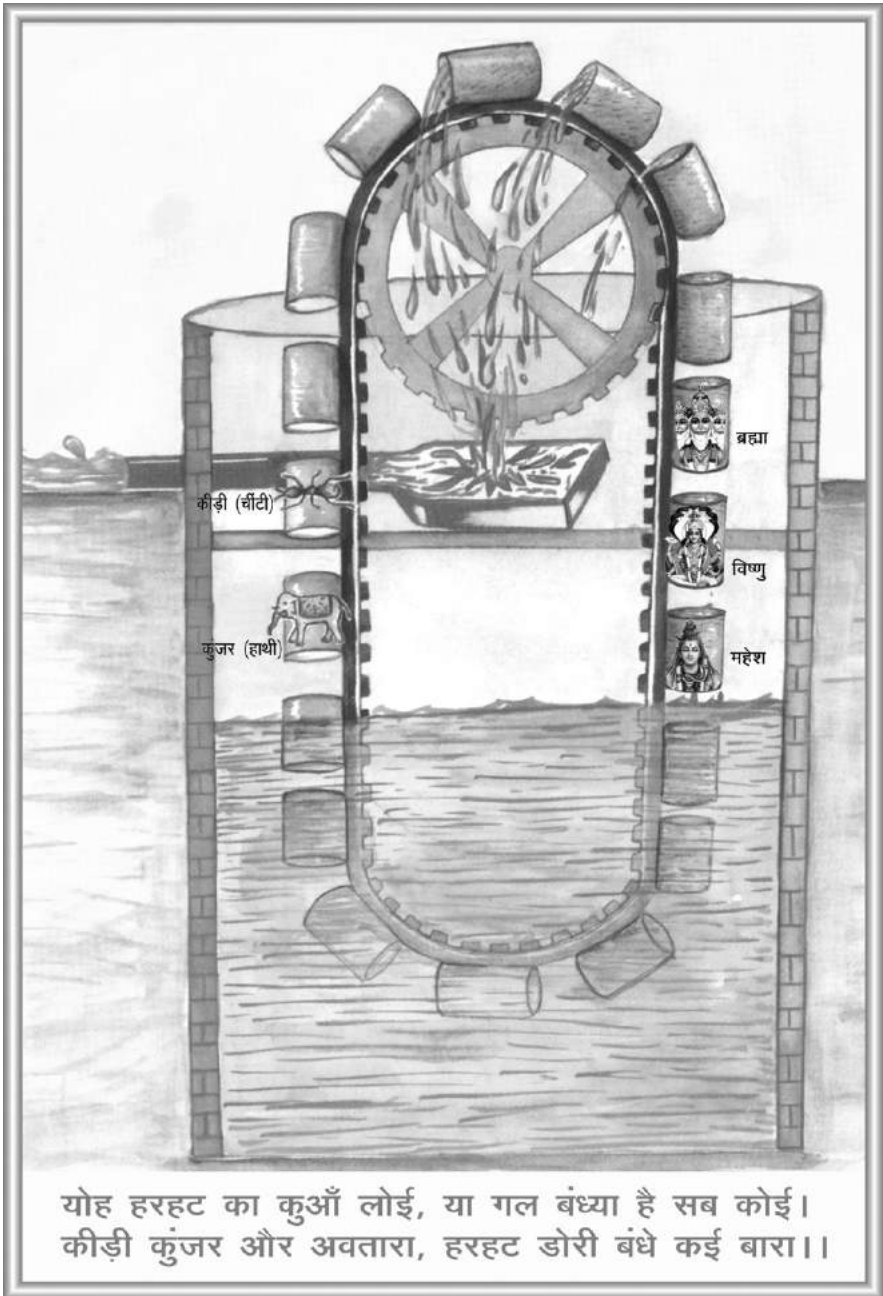
काल लोक में जन्म-मरण रूपी हरहट (चक्र)

व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।

।।गरीबदास जी महाराज की वाणी।।

(सत ग्रन्थ साहिब पृष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई।।
लाख ग्रास नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उतपति परलय डांडे।
ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये।
यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।
अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।

माया काली नागिनी, अपने जाये खात। कुण्डली में छोड़ै नहीं, सौ बातों की बात।।

इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्मण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मृत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं

हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पृष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द। कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है।

जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बन्ध कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शाप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये।
इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये।
बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी।
येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ।
जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू।
मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई।
ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
संहस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी।
ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा।
पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै।

सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं।
द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए।
पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।
जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं।
जहाँ करता नहीं जान भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव (कबीर परमेश्वर) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां। चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धाारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

चाहे संख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओ३म + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं

से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्मण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड व अन्य सर्व ब्रह्मण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टी रचना का संकेत"

श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पृ. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टी की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा रची सृष्टी का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमृतवाणी महला 1(गु.ग्र.पृ. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टी रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न

में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार

ओअंकारि ब्रह्मा उतपति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओ३म् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओ३म् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओ३म् + तत् + सत्) का स्थान - स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा (17)।।5।।17।।

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमृतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)

हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीत (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आप की साधना भगवान शिव तक है, उससे आप को शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्वसे पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमृत वाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी,

श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टी के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टी रचना कैसे हुई? अब पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए। यह पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

''अन्य संतों द्वारा सृष्टी रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टी रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कृप्या निम्न पढ़े :- सृष्टी रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टी की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टी की रचना'' पृष्ठ 81,

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर

सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टी रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पृष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ3म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।

कौन तथा कैसा है कुल का मालिक?

जिन-जिन पुण्यात्माओं ने परमात्मा को प्राप्त किया उन्होंने बताया कि कुल का मालिक एक है। वह मानव सदृश तेजोमय शरीर युक्त है। जिसके एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा करोड़ चन्द्रमाओं की रोशनी से भी अधिक है। उसी ने नाना रूप बनाए हैं। परमेश्वर का वास्तविक नाम अपनी-अपनी भाषाओं में कविर्देव (वेदों में संस्कृत भाषा में) तथा हक्का कबीर (श्री गुरु ग्रन्थ साहेब में पृष्ठ नं. 721 पर क्षेत्रीय भाषा में) तथा सत् कबीर (श्री धर्मदास जी की वाणी में क्षेत्रीय भाषा में) तथा बन्दी छोड़ कबीर (सन्त गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ में क्षेत्रीय भाषा में) कबीरा, कबीरन् व खबीरा या खबीरन् (श्री कुरान शरीफ़ सूरत फुर्कानि नं. 25, आयत नं. 19, 21, 52, 58, 59 में क्षेत्रीय अरबी भाषा में)। इसी पूर्ण परमात्मा के उपमात्मक नाम अनामी पुरुष, अगम पुरुष, अलख पुरुष, सतपुरुष, अकाल मूर्ति, शब्द स्वरूपी राम, पूर्ण ब्रह्म, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं, जैसे देश के प्रधानमंत्री का वास्तविक शरीर का नाम कुछ और होता है तथा उपमात्मक नाम प्रधान मंत्री जी, प्राइम मिनिस्टर जी अलग होता है। जैसे भारत देश का प्रधानमंत्री जी अपने पास गृह विभाग रख लेता है। जब वह उस विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता है तो वहाँ गृहमंत्री की भूमिका करता है तथा अपना पद भी गृहमन्त्री लिखता है, हस्ताक्षर वही होते हैं। इसी प्रकार ईश्वरीय सत्ता को समझना है।

जिन सन्तों व ऋषियों को परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई, उन्होंने अपना अन्तिम अनुभव बताया है कि प्रभु का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, प्रभु दिखाई नहीं देता क्योंकि उसका कोई आकार नहीं है तथा शरीर में धुनि सुनना आदि प्रभु भक्ति की उपलब्धि है।

आओ विचार करें - जैसे कोई अंधा अन्य अंधों में अपने आपको आँखों वाला सिद्ध किए बैठा हो और कहता है कि रात्री में चन्द्रमा की रोशनी बहुत सुहावनी मन भावनी होती है, मैं देखता हूँ। अन्य अन्धे शिष्यों ने पूछा कि गुरु जी चन्द्रमा कैसा होता है। चतुर अन्धे ने उत्तर दिया कि चन्द्रमा तो निराकार है वह दिखाई थोड़े ही दे सकता है। कोई कहे सूर्य निराकार है वह दिखाई नहीं देता रवि स्वप्रकाशित है इसलिए उसका केवल प्रकाश दिखाई देता है। गुरु जी के बताये अनुसार शिष्य 2½ घण्टे सुबह तथा 2½ घण्टे शाम आकाश में देखते हैं। परन्तु कुछ दिखाई नहीं देता। स्वयं ही विचार विमर्श करते हैं कि गुरु जी तो सही कह रहे हैं, हमारी साधना पूरी 2½ घण्टे सुबह शाम नहीं हो पाती। इसलिए हमें सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश दिखाई नहीं दे रहा। चतुर गुरु जी की व्याख्या पर आधारित होकर उस चतुर अन्धे की (ज्ञानहीन) व्याख्या के प्रचारक करोड़ों अंधे (ज्ञानहीन) हो चुके हों। फिर उन्हें आँखों वाला (तत्वदर्शी सन्त) बताए कि सूर्य आकार में है और उसी से प्रकाश निकल रहा है। इसी प्रकार चन्द्रमा से प्रकाश निकल रहा है नेत्रहीनों! चन्द्रमा के बिना रात्री में प्रकाश कैसे हो सकता है? जैसे

कोई कहे कि ट्यूब लाईट देखी, फिर कोई पूछे कि ट्यूब कैसी होती है जिसकी आपने रोशनी देखी है? उत्तर मिले कि ट्यूब तो निराकार होने के कारण दिखाई नहीं देती। केवल प्रकाश देखा जा सकता है। विचार करें :- ट्यूब बिना प्रकाश कैसा?

यदि कोई कहे कि हीरा स्वप्रकाशित होता है। फिर यह भी कहे कि हीरे का केवल प्रकाश देखा जा सकता है, क्योंकि हीरा तो निराकार है, वह दिखाई थोड़े ही देता है, तो वह व्यक्ति हीरे से परिचित नहीं है। फोकट जौहरी बना है। जो परमात्मा को निराकार कहते हैं तथा केवल प्रकाश देखना तथा धुनि सुनना ही प्रभु प्राप्ति मानते हैं वे पूर्ण रूप से प्रभु तथा भक्ति से अपरिचित हैं। जब उनसे प्रार्थना की कि कुछ नहीं देखा है तुमने, अपने अनुयाइयों को भ्रमित करके दोषी हो रहे हो। न तो आपके गुरुदेव के तत्वज्ञान रूपी नेत्र हैं और न ही आपको। इसलिए दुनियाँ को भ्रमित मत करो। इस बात पर सर्व ज्ञान रूपी नेत्रों के अन्धों ने लट्ठ उठा लिए कि हम तो झूठे, तूं एक सच्चा। आज वही स्थिति संत रामपाल जी महाराज के साथ है।

इस विवाद का निर्णय कैसे हो कि किस सन्त के विचार सही हैं किसके गलत हैं? मान लिजिए जैसे किसी अपराध के विषय में पाँच वकील अपना-अपना विचार व्यक्त कर रहे हैं। एक कहे कि इस अपराध पर संविधान की धारा 301 लगेगी, दूसरा कहे 302, तीसरा कहे 304, चौथा कहे 306 तथा पाँचवां वकील 307 को सही बताए।

ये पाँचों ठीक नहीं हो सकते। केवल एक ही ठीक हो सकता है यदि उसकी व्याख्या अपने देश के पवित्र संविधान से मिलती है। यदि उसकी व्याख्या भी संविधान के विपरीत है तो पाँचों वकील गलत हैं। इसका निर्णय देश का पवित्र संविधान करेगा जो सर्व को मान्य होता है। इसी प्रकार भिन्न-भिन्न विचार धाराओं में तथा साधनाओं में से कौन-सी शास्त्र अनुकूल है या कौन-सी शास्त्र विरुद्ध है? इसका निर्णय पवित्र सद्ग्रन्थ ही करेंगे, जो सर्व को मान्य होना चाहिए (यही प्रमाण पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में)।

जिन आँखों वालों (पूर्ण सन्तों) ने सूर्य (पूर्ण परमात्मा) को देखा उन में से कुछ के नाम हैं :-

(क) आदरणीय धर्मदास साहेब जी (ख) आदरणीय दादू साहेब जी (ग) आदणीय मलूक दास साहेब जी (घ) आदरणीय गरीबदास साहेब जी (ड़) आदरणीय नानक साहेब जी (च) आदरणीय घीसा दास साहेब जी आदि।

(क) आदरणीय धर्मदास साहेब जी, बांधवगढ़ मध्य प्रदेश वाले, जिनको पूर्ण परमात्मा जिंदा महात्मा के रूप में मथुरा में मिले, सतलोक दिखाया। वहाँ सत्लोक में दो रूप दिखा कर जिंदा वाले रूप में पूर्ण परमात्मा वाले सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा आदरणीय धर्मदास साहेब जी को कहा कि मैं ही काशी (बनारस) में नीरू-नीमा के घर गया हुआ हूँ। वहाँ धाणक (जुलाहे) का कार्य करता हूँ, आदरणीय

श्री रामानन्द जी मेरे गुरु जी हैं। यह कह कर श्री धर्मदास जी की आत्मा को वापिस शरीर में भेज दिया। श्री धर्मदास जी का शरीर दो दिन बेहोश रहा, तीसरे दिन होश आया तो काशी में खोज करने पर पाया कि यही काशी में आया धाणक ही पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) है। आदरणीय धर्मदास साहेब जी ने पवित्र कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक नामक सद्ग्रन्थों की आँखों देखे तथा पूर्ण परमात्मा के पवित्र मुख कमल से निकले अमृत वचन रूपी विवरण से रचना की। अमृत वाणी में प्रमाण :

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।टेक।।
सत्यलोक से चल कर आए, काटन जम की जंजीर।।1।।
थारे दर्शन से म्हारे पाप कटत हैं, निर्मल होवै जी शरीर।।2।।
अमृत भोजन म्हारे सतगुरु जीमैं, शब्द दूध की खीर।।3।।
हिन्दू के तुम देव कहाये, मुस्लमान के पीर।।4।।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहे ना पाये शरीर।।5।।
धर्मदास की अर्ज गोसांई, बेड़ा लंघाईयो परले तीर।।6।।

(ख) आदरणीय दादू साहेब जी (अमृत वाणी में प्रमाण) कबीर परमेश्वर के साक्षी -

आदरणीय दादू साहेब जी जब सात वर्ष के बालक थे तब पूर्ण परमात्मा जिंदा महात्मा के रूप में मिले तथा सत्यलोक ले गए। तीन दिन तक दादू जी बेहोश रहे। होश में आने के पश्चात् परमेश्वर की महिमा की आँखों देखी बहुत-सी अमृतवाणी उच्चारण की :

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोइ सतगुरु हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सृजन हार।।
दादू नाम कबीर की, जै कोई लेवे ओट। उनको कबहू लागे नहीं, काल बज्र की चोट।।
दादू नाम कबीर का, सुनकर कांपे काल। नाम भरोसे जो नर चले, होवे न बंका बाल।।
जो जो शरण कबीर के, तरगए अनन्त अपार। दादू गुण कीता कहे, कहत न आवै पार।।
कबीर कर्ता आप है, दूजा नाहिं कोय। दादू पूरन जगत को, भक्ति दृढावत सोय।।
ठेका पूरन होय जब, सब कोई तजै शरीर। दादू काल गँजे नहीं, जपै जो नाम कबीर।।
आदमी की आयु घटै, तब यम घेरे आय। सुमिरन किया कबीर का, दादू लिया बचाय।।
मेटि दिया अपराध सब, आय मिले छनमाँह। दादू संग ले चले, कबीर चरण की छांह।।
सेवक देव निज चरण का, दादू अपना जान। भृंगी सत्य कबीर ने, कीन्हा आप समान।।
दादू अन्तरगत सदा, छिन–छिन सुमिरन ध्यान। वारु नाम कबीर पर, पल–पल मेरा प्रान।।
सुन–2 साखी कबीर की, काल नवावै माथ। धन्य–धन्य हो तिन लोक में, दादू जोड़े हाथ।।
केहरि नाम कबीर का, विषम काल गज राज। दादू भजन प्रतापते, भागे सुनत आवाज।।
पल एक नाम कबीर का, दादू मनचित लाय। हस्ती के अश्वार को, श्वान काल नहीं खाय।।
सुमरत नाम कबीर का, कटे काल की पीर। दादू दिन दिन ऊँचे, परमानन्द सुख सीर।।
दादू नाम कबीर की, जो कोई लेवे ओट। तिनको कबहुं ना लगई, काल बज्र की चोट।।
और संत सब कूप हैं, केते झरिता नीर। दादू अगम अपार है, दरिया सत्य कबीर।।
अबही तेरी सब मिटै, जन्म मरन की पीर। स्वांस उस्वांस सुमिरले, दादू नाम कबीर।।
कोई सर्गुन में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय। दादू गति कबीर की, मोते कही न जाय।।

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोइ सतगुरु हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सृजन हार।।

(ग) आदरणीय मलूक दास साहेब जी कविर्देव के साक्षी -

42 वर्ष की आयु में श्री मलूक दास साहेब जी को पूर्ण परमात्मा मिले तथा दो दिन तक श्री मलूक दास जी अचेत रहे। फिर निम्न वाणी उच्चारण की :

जपो रे मन सतगुरु नाम कबीर।।टेक।।
जपो रे मन परमेश्वर नाम कबीर।
एक समय गुरु बंसी बजाई कालंद्री के तीर।
सुर–नर मुनि थक गए, रूक गया दरिया नीर।।
काँशी तज गुरु मगहर आये, दोनों दीन के पीर।
कोई गाढ़े कोई अग्नि जरावै, ढूंडा न पाया शरीर।
चार दाग से सतगुरु न्यारा, अजरो अमर शरीर।
दास मलूक सलूक कहत हैं, खोजो खसम कबीर।।

(घ) आदरणीय गरीबदास साहेब जी छुड़ानी जिला-झज्जर, हरियाणा वाले (अमृत वाणी में प्रमाण) प्रभु कबीर (कविर्देव) के साक्षी -

आदरणीय गरीबदास साहेब जी का आर्विभाव सन् 1717 में हुआ तथा साहेब कबीर जी के दर्शन दस वर्ष की आयु में सन् 1727 में नला नामक खेत में हुए तथा सत्लोक वास सन् 1778 में हुआ। आदरणीय गरीबदास साहेब जी को भी परमात्मा कबीर साहेब जी सशरीर जिंदा रूप में मिले। आदरणीय गरीबदास साहेब जी अपने नला नामक खेतों में अन्य साथी ग्वालों के साथ गाय चरा रहे थे। जो खेत कबलाना गाँव की सीमा से सटा है। ग्वालों ने जिन्दा महात्मा के रूप में प्रकट कबीर परमेश्वर से आग्रह किया कि आप खाना नहीं खाते हो तो दूध ग्रहण करो क्योंकि परमात्मा ने कहा था कि मैं अपने सतलोक गाँव से खाना खाकर आया हूँ। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैं कुँआरी गाय का दूध पीता हूँ। बालक गरीबदास जी ने एक कुँआरी गाय को परमेश्वर कबीर जी के पास लाकर कहा कि बाबा जी यह बिना ब्याई (कुँआरी) गाय कैसे दूध दे सकती है ? तब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कुँआरी गाय अर्थात् बच्छिया की कमर पर हाथ रखा, अपने आप कुँआरी गाय (अध्नया धेनु) के थनों से दूध निकलने लगा। पात्र भरने पर रूक गया। वह दूध परमेश्वर कबीर जी ने पीया तथा प्रसाद रूप में कुछ अपने बच्चे गरीबदास जी को पिलाया तथा सतलोक के दर्शन कराये। सतलोक में अपने दो रूप दिखाकर फिर जिंदा वाले रूप में कुल मालिक रूप में सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा कहा कि मैं ही 120 वर्ष तक काशी में धाणक (जुलाहा) रूप में रहकर आया हूँ। मैं पहले भी हजरत मुहम्मद जी को भी मिला था। पवित्र कुरान शरीफ में जो कबीरा, कबीरन्, खबीरा, खबीरन्, अल्लाहु अक्बर आदि शब्द हैं वे मेरा ही बोध कराते हैं तथा मैं ही श्री नानक जी को बेई नदी पर जिंदा महात्मा के रूप में ही मिला था {मुस्लमानों में जिंदा महात्मा होते हैं, वे काला चौगा (ओवर कोट जैसा) घुटनों से नीचे तक तथा सिर पर चोटे वाला काला टोप पहनते हैं} तथा मैं ही बलख शहर में नरेश श्री अब्राहीम सुलतान अधम जी तथा श्री दादू जी को मिला था तथा चारों

पवित्र वेदों में जो कविर अग्नि, कविर्देव (कविरंघारिः) आदि नाम हैं वह मेरा ही बोध है। 'कबीर बेद हमारा भेद है, मैं मिलु बेदों से नांही। जौन बेद से मैं मिलूं, वो बेद जानते नांही।।' ***मैं ही वेदों से पहले भी सतलोक में विराजमान था।***

(गाँव छुड़ानी जि. झज्जर (हरियाणा) में आज भी उस जंगल में जहाँ पूर्ण परमात्मा, का सन्त गरीबदास जी को मानव शरीर में साक्षात्कार हुआ था, एक यादगार विद्यमान है।) आदरणीय गरीबदास जी की आत्मा अपने परमात्मा कबीर बन्दी छोड़ के साथ चले जाने के बाद उन्हें मृत जान कर चिता पर रख कर जलाने की तैयारी करने लगे, उसी समय आदरणीय गरीबदास साहेब जी की आत्मा को पूर्ण परमेश्वर ने शरीर में प्रवेश कर दिया। दस वर्षीय बालक गरीब दास जीवित हो गए। उसके बाद उस पूर्ण परमात्मा का आँखों देखा विवरण अपनी अमृत वाणी में ''सद्ग्रन्थ'' नाम से ग्रन्थ की रचना की। उसी अमृत वाणी में प्रमाण :

अजब नगर में ले गया, हमकूं सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सूते चादर तान।।
अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का एक रति नहीं भार। सतगुरु पुरुष कबीर हैं कुल के सृजन हार।।
गैबी ख्याल विशाल सतगुरु, अचल दिगम्बर थीर है। भक्ति हेत काया धर आये, अविगत सत् कबीर हैं।।
हरदम खोज हनोज हाजर, त्रिवैणी के तीर हैं। दास गरीब तबीब सतगुरु, बन्दी छोड़ कबीर हैं।।
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया। जात जुलाहा भेद नहीं पाया, काशी माहे कबीर हुआ।।
सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि हैं तीर। दास गरीब सतपुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
जिंदा जोगी जगत् गुरु, मालिक मुरशद पीर। दहूँ दीन झगड़ा मंड्या, पाया नहीं शरीर।।
गरीब जिस कूं कहते कबीर जुलाहाा। सब गति पूर्ण अगम अगाहा।।

उपरोक्त वाणी में आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज ने स्पष्ट कर दिया कि काशी वाले धाणक (जुलाहे) ने मुझे भी नाम दान देकर पार किया, यही काशी वाला धाणक ही (सतपुरुष) पूर्ण ब्रह्म है।

परमेश्वर कबीर ही सतलोक से जिन्दा महात्मा के रूप में आकर मुझे अजब नगर (अद्भुत नगर सतलोक) में लेकर गए। जहाँ पर आनन्द ही आनन्द है, कोई चिन्ता नहीं, जन्म-मृत्यु, अन्य प्राणियों के शरीर में कष्ट आदि का शोक नहीं है।

इसी काशी में धाणक रूप में आए सतपुरुष ने भिन्न-भिन्न समय में प्रकट होकर आदरणीय श्री अब्राहीम सुल्तान अधम साहेब जी तथा आदरणीय दादू साहेब जी व आदरणीय नानक साहेब जी को भी सतनाम देकर पार किया। वही कविर्देव जिसके एक रोम कूप में करोड़ो सूर्यों जैसा प्रकाश है तथा मानव सदृश है, अति तेजोमय अपने वास्तविक शरीर के ऊपर हल्के तेजपुंज का चोला (भद्रा वस्त्रा अर्थात् तेजपुंज का शरीर) डाल कर हमें मृत्य लोक (मनुष्य लोक) में मिलता है। क्योंकि उस परमेश्वर के वास्तविक स्वरूप के प्रकाश को चर्म दृष्टि सहन नहीं कर सकती।

आदरणीय गरीबदास साहेब जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है 'सर्व कला सतगुरु साहेब की, हरि आए हरियाणे नुँ''। भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा कविर हरि (कविर्देव) जिस क्षेत्र में आए उसका नाम हरयाणा अर्थात् परमात्मा के आने वाला पवित्र स्थल, जिस के कारण आस-पास के क्षेत्र को हरिआना (हरयाणा) कहने लगे।

सन् 1966 को पंजाब प्रान्त के विभाजन होने पर इस क्षेत्र का नाम हरिआणा (हरयाणा) पड़ा। लगभग 236 वर्ष पूर्व कही वाणी 1966 में सिद्ध हुई कि समय आने पर यह क्षेत्र हरयाणा प्रान्त नाम से विख्यात होगा। जो आज प्रत्यक्ष प्रमाण है।

इसीलिए गुरुग्रन्थ साहेब पृष्ठ 721 पर अपनी अमृतवाणी महला 1 में श्री नानक जी ने कहा है कि -

"हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदीगार।
नानक बुगोयद जनु तुरा, तेरे चाकरां पाखाक"

इसी का प्रमाण गुरु ग्रन्थ साहिब के राग ''सिरी'' महला 1 पृष्ठ नं. 24 पर शब्द नं. 29

शब्द – एक सुआन दुई सुआनी नाल, भलके भौंकही सदा बिआल
कुड़ छुरा मुठा मुरदार, धाणक रूप रहा करतार।।1।।
मै पति की पंदि न करनी की कार। उह बिगड़ै रूप रहा बिकराल।।
तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहो आस एहो आधार।
मुख निंदा आखा दिन रात, पर घर जोही नीच मनाति।।
काम क्रोध तन वसह चंडाल, धाणक रूप रहा करतार।।2।।
फाही सुरत मलूकी वेस, उह ठगवाड़ा ठगी देस।।
खरा सिआणां बहुता भार, धाणक रूप रहा करतार।।3।।
मैं कीता न जाता हरामखोर, उह किआ मुह देसा दुष्ट चोर।
नानक नीच कह बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।4।।

गुरु ग्रन्थ साहेब, राग आसावरी, महला 1 के कुछ अंश -

साहिब मेरा एको है। एको है भाई एको है।
आपे रूप करे बहु भांती नानक बपुड़ा एव कह।। (पृ. 350)
जो तिन कीआ सो सचु थीआ, अमृत नाम सतगुरु दीआ।। (पृ. 352)
गुरु पुरे ते गति मति पाई। (पृ. 353)
बूडत जगु देखिआ तउ डरि भागे।
सतिगुरु राखे से बड़ भागे, नानक गुरु की चरणों लागे।। (पृ. 414)
मैं गुरु पूछिआ अपणा साचा बिचारी राम। (पृ. 439)

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि साहिब (प्रभु) एक ही है तथा उनका (श्री नानक जी का) कोई मनुष्य रूप में वक्त गुरु भी था जिसके विषय में कहा है कि पूरे गुरु से तत्वज्ञान प्राप्त हुआ तथा मेरे गुरु जी ने मुझे (अमृत नाम) अमर मन्त्र अर्थात् पूर्ण मोक्ष करने वाला उपदेश नाम मन्त्र दिया, वही मेरा गुरु नाना रूप धारण कर लेता है अर्थात् वही सतपुरुष है वही जिंदा रूप बना लेता है। वही धाणक रूप में भी काशी नगर में विराजमान होकर आम व्यक्ति अर्थात् भक्त की भूमिका कर रहा है। शास्त्र विरुद्ध पूजा करके सारे जगत् को जन्म-मृत्यु व कर्मफल की आग में जलते देखकर जीवन व्यर्थ होने के डर से भाग कर मैंने गुरु जी के चरणों में शरण ली।

बलिहारी गुरु आपणे दिउहाड़ी सदवार।
जिन माणस ते देवते कीए करत न लागी वार।

आपीनै आप साजिओ आपीनै रचिओ नाउ।
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ।
दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ।
तूं जाणोइ सभसै दे लैसहि जिंद कवाउ करि आसणु डिठो चाउ। (पृ. 463)

भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा जिंदा का रूप बनाकर बेई नदी पर आए अर्थात् जिंदा कहलाए तथा स्वयं ही दो दुनियाँ ऊपर (सतलोक आदि) तथा नीचे (ब्रह्म व परब्रह्म के लोक) को रचकर ऊपर सत्यलोक में आकार में आसन पर बैठ कर चाव के साथ अपने द्वारा रची दुनियाँ को देख रहे हो तथा आप ही स्वयम्भू अर्थात् माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते, स्वयं प्रकट होते हो। यही प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मं. 8 में है कि कविर् मनीषि स्वयम्भूः परिभू व्यवधाता, भावार्थ है कि कवीर परमात्मा सर्वज्ञ है (मनीषि का अर्थ सर्वज्ञ होता है) तथा अपने आप प्रकट होता है। वह (परिभू) सनातन अर्थात् सर्वप्रथम वाला प्रभु है। वह सर्व ब्रह्मण्डों का (व्यवधाता) भिन्न-भिन्न अर्थात् सर्व लोकों का रचनहार है।

एहू जीउ बहुते जनम भरमिआ, ता सतिगुरु शबद सुणाइया।। (पृ. 465)

भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मेरा यह जीव बहुत समय से जन्म तथा मृत्यु के चक्र में भ्रमता रहा अब पूर्ण सतगुरु ने वास्तविक नाम प्रदान किया।

श्री नानक जी के पूर्व जन्म - सतयुग में राजा अम्ब्रीष, त्रेतायुग में राजा जनक हुए थे और फिर नानक जी हुए तथा अन्य योनियों के जन्मों की तो गिनती ही नहीं है।

"प्रभु कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को तत्वज्ञान समझाया"

पंडित स्वामी रामानन्द जी एक विद्वान पुरुष थे। वेदों व गीता जी के मर्मज्ञ ज्ञाता माने जाते थे।

"पाँच वर्ष की आयु में रामानन्द जी को गुरु धारण करना"

जिस समय कबीर परमेश्वर (कविर्देव) अपने लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हो गए तब गुरु मर्यादा बनाए रखने के लिए लीला की। अढ़ाई वर्ष की आयु के बच्चे का रूप धारण करके सुबह-सुबह अंधेरे में पंचगंगा घाट की पौड़ियों के ऊपर लेट गए, जहाँ पर स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन स्नानार्थ जाया करते थे। श्री रामानन्द जी चारों वेदों के ज्ञाता और पवित्र गीता जी के विद्वान माने जाते थे। स्वामी रामानन्द जी की आयु 104 वर्ष की हो चुकी थी। काशी में जो पाखण्ड पूजा दूसरे पण्डितों ने चला रखी थी वह बंद करवा दी थी। रामानन्द जी शास्त्र अनुकूल साधना बताया करते थे और पूरी काशी में अपने बावन दरबार लगाया करते थे। रामानन्द जी पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों के आधार पर विधिवत् साधना बताते थे। ओ३म् नाम का जाप उपदेश देते थे।

उस दिन भी जब स्नान करने के लिए पंचगंगा घाट पर गए तो पौड़ियों पर कबीर

साहेब लेटे हुए थे। सुबह ब्रह्ममूहूर्त के अंधेरे में स्वामी रामानन्द जी को कबीर साहेब दिखाई नहीं दिए। कबीर साहेब के सिर में रामानन्द जी के पैर की खड़ाऊ लग गई। कविर्देव ने जैसे बालक रोते हैं ऐसे रोना शुरु कर दिया। रामानन्द जी तेजी से झुके और देखा कि कहीं बालक को चोट तो नहीं लग गई तथा प्यार से उठाया। उसी समय रामानन्द जी के गले की कण्ठी (माला) निकल कर परमेश्वर कविर्देव के गले में डल गई। रामानन्द जी ने कहा कि बेटा राम - राम बोलो। राम के नाम से दुःख दूर हो जाते हैं, पुत्र राम - राम बोलो, कबीर साहेब के सिर पर हाथ रखा। शिशु रूप में कबीर साहेब चुप हो गए। फिर रामानन्द जी स्नान करने लग गए और सोचा कि बच्चे को आश्रम में ले चलूँगा। जिसका होगा उसके पास भिजवा दूँगा। रामानन्द जी ने स्नान करके देखा तो बच्चा वहाँ पर नहीं है। कबीर साहेब वहाँ से अंतर्ध्यान हुए और अपनी झोपड़ी में आ गए। रामानन्द जी ने सोचा कि बच्चा था चला गया होगा, अब उसको कहाँ ढूंढूं?।

"कबीर प्रभु द्वारा स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में दो रूप धारण करना"

एक दिन स्वामी रामानन्द जी का कोई शिष्य कहीं पर सत्संग कर रहा था। कबीर साहेब वहाँ पर चले गए। वह ऋषि जी श्री विष्णु पुराण की कथा सुना रहा था। वह कह रहा था कि भगवान विष्णु जी सारी सृष्टी के रचनहार हैं, यही पालनकर्ता हैं, यही राम और कृष्ण रूप में अवतार आने वाली परम शक्ति हैं, अजन्मा हैं, श्री विष्णु जी के कोई माता-पिता नहीं हैं। कविरीश्वर ने यह सारी चर्चा सुनी। सत्संग के उपरान्त कबीर परमेश्वर ने कहा ऋषि जी क्या मैं एक प्रश्न पूछ सकता हूँ? ऋषि जी ने कहा कि हाँ बेटा! पूछो। वहाँ सैकड़ों की संख्या में भक्तजन उपस्थित थे। कविर्देव ने कहा कि आप विष्णु पुराण से सत्संग सुना रहे थे कि श्री विष्णु जी परमशक्ति है, इन्हीं से ब्रह्मा और शिव की उत्पत्ति हुई है। ऋषि जी ने कहा कि मैं जो सुनाता हूँ, विष्णु पुराण में ऐसा ही लिखा हुआ है। कबीर साहेब ने कहा कि ऋषि जी मैंने तो आपसे संशय निवारण के लिए प्रार्थना की है आप क्षुब्ध मत होईये। एक दिन मैंने शिवपुराण सुना था। उसमें वह महापुरुष सुना रहे थे कि भगवान शिव से विष्णु और ब्रह्मा की उत्पत्ति हुई (प्रमाण पवित्र शिव पुराण, रूद्र संहिता, अध्याय 6 तथा 7 में, गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित) देवी भागवत के तीसरे स्कंद में लिखा है कि देवी इन तीनों ब्रह्मा-विष्णु- शिव की माँ है। ये तीनों नाशवान हैं, अविनाशी नहीं हैं। ऋषि जी निरूतर हो गए। क्रोधित होकर बोला तू कौन है ? किसका पुत्र है ? कबीर साहेब से पहले ही दूसरे भक्तजन कहने लगे कि यह तो नीरु जुलाहे का पुत्र है। स्वामी रामानन्द जी का शिष्य कहने लगा कि तूने गले में कण्ठी कैसे डाल रखी है ? (वैष्णु साधू तुलसी की एक मणिये की माला गले में डालते हैं, उससे यह प्रमाणित होता है कि इन्होंने विष्णु परंपरा से उपदेश ले रखा है।) तेरा गुरुदेव कौन है? कबीर साहेब ने कहा कि मेरे गुरुदेव वही हैं जो आपके गुरुदेव हैं। वह ऋषि बहुत क्रोधित हो गया तथा बोला कि रे नादान ! तू अछूत जुलाहे का बच्चा और मेरे गुरुदेव को अपना

गुरुदेव बताता है। मेरे गुरुदेव का पता है कौन हैं ? श्री श्री 1008 पंडित रामानन्द जी आचार्य। तू जुलाहे का बालक, वे तो तेरे जैसे अछूतों के दर्शन भी नहीं करते और तू कह रहा है कि मैंने उनसे नाम लिया है। देख लो भाई भक्तजनों यह झूठा, कपटी है। अभी गुरुदेव के पास जाऊँगा और उनको तेरी सारी कहानी बताऊँगा। तू छोटी जाति का बच्चा हमारे गुरुदेव की बेइज्जती करता है। कविरग्नि बोले कि ठीक है गुरुदेव जी को बताओ। उस ऋषि ने जाकर श्री रामानन्द जी को बताया कि गुरुदेव एक जुलाहे जाति का लड़का है। उसने तो हमारी नाक काट दी। वह कहता है कि स्वामी रामानन्द जी मेरे गुरुदेव हैं। हे भगवन् ! हमारा तो बाहर निकलना दुःभर हो गया। स्वामी रामानन्द जी बोले कि कल सुबह उसको बुला कर लाओ। कल देखना तुम्हारे सामने मैं उसको कितना दण्ड दूँगा।

"स्वामी रामानन्द जी के मन की बात बताना"

अगले दिन सुबह-सुबह कबीर साहेब को दस नादान व्यक्तियों ने पकड़ कर श्री रामानन्द जी के सामने उपस्थित कर दिया। रामानन्द जी ने यह दिखाने के लिए कि मैं कभी छोटी जाति वालों के दर्शन भी नहीं करता, यह झूठ बोल रहा था कि इसने मेरे से दीक्षा ली है, आगे पर्दा लगा लिया। रामानन्द जी ने पर्दे के पीछे से पूछा कि तू कौन है और तेरी क्या जाति है? तेरा कौन सा पंथ है, अर्थात् किस परमात्मा की पूजा करता है? :-

रामानंद अधिकार सुनि, जुलहा अक जगदीश। दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।।407।।
रामानंद कूं गुरु कहै, तनसैं नहीं मिलात। दास गरीब दर्शन भये, पैडे लगी जुं लात।।408।।
पंथ चलत ठोकर लगी, रामनाम कहि दीन। दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रबीन।।409।।
आडा पडदा लाय करि, रामानंद बूझंत। दास गरीब कुलंग छबि, अधर डाक कूदंत।।410।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम। दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।।411।।

उत्तर कबीर जी का :-

जाति हमारी जगतगुरु, परमेश्वर पद पंथ। दास गरीब लिखति परै, नाम निंरजन कंत।।412।।

रामानन्द जी बोले :-

रे बालक सुन दुर्बद्धि, घट मठ तन आकार। दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।।413।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहै के घर बास। दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ विश्वास।।414।।
मान बडाई छांडि करि, बोलौ बालक बैंन। दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।।415।।
तर्क तलूसैं बोलतै, रामानंद सुर ज्ञान। दास गरीब कुजाति है, आखर नीच निदान।।423।।

परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया -

महके बदन खुलास कर, सुनि स्वामी प्रबीन। दास गरीब मनी मरै, मैं आजिज आधीन।।428।।
मैं अविगत गति सैं परै, च्यारि बेद सैं दूर। दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।।429।।
सकल सिंध भरपूर हूँ, खालिक हमरा नाम। दासगरीब अजाति हूँ, तैं जूं कह्या बलि जांव।।430।।
जाति पाति मेरे नहीं, नहीं बस्ती नहीं गाम। दासगरीब अनिन गति, नहीं हमारे नाम।।431।।
नाद बिंद मेरे नहीं, नहीं गुदा नहीं गात। दासगरीब शब्द सजा, नहीं किसी का साथ।।432।।
सब संगी बिछरू नहीं, आदि अंत बहु जांहि। दासगरीब सकल वंसु, बाहर भीतर माँहि।।433।।

ए स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टी हमारै तीर। दास गरीब अधर बसूं, अविगत सत्य कबीर।।434।।
पौहमी धरणि आकाश मैं, मैं व्यापक सब ठौर। दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।।436।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम। दासगरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।।439।।
सुनि रामानंद राम हम, मैं बावन नरसिंह। दास गरीब कली कली, हमहीं से कृष्ण अभंग।।440।।
हमहीं से इंद्र कुबेर हैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश। दास गरीब धरम ध्वजा, धरणि रसातल शेष।।447।।
सुनि स्वामी सति भाखहूँ, झूठ न हमरै रिंच। दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।।453।।
गोता लाऊं स्वर्ग सैं, फिरि पैठूं पाताल। गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।।476।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव। गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नांव।।477।।
मुरजीवा माणिक चुगैं, कंकर पत्थर डारि। दास गरीब डोरी अगम, उतरो शब्द अधार।।478।।

यदि मेरी जाति पूछ रहे हो तो मैं जगतगुरु हूँ (वेदों में लिखा है कि जगतगुरु, सारी सृष्टी को ज्ञान प्रदान करने वाले कबीर प्रभु हैं) मेरा पंथ क्या है? (किस परमेश्वर का मैं मार्ग दर्शन करता हूँ?) इसके उत्तर में कबीर जी ने कहा मेरा परमेश्वर पंथ है। ईश, ईश्वर, परमेश्वर (ब्रह्म, परब्रह्म, पूर्णब्रह्म तथा क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष, परम अक्षर पुरुष) मैं उस सर्चोच्च शक्ति (सुप्रीम पावर) परमेश्वर का मार्ग दर्शन करने आया हूँ, जो अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड के रचयिता और धारण-पोषण करने वाले हैं। वेदों में जिसको कविर्देव, कविरग्नि आदि नामों से सम्बोधित किया है।

ईश व क्षर पुरूष तो ब्रह्म को कहा जाता है जो केवल इक्कीश ब्रह्मण्ड का स्वामी है परब्रह्म व अक्षर पुरूष को ईश्वर कहा जाता है जो सात शंख ब्रह्मण्डों का स्वामी है तथा परम अक्षर पुरूष को पूर्ण ब्रह्म व परमेश्वर कहा जाता है जो असंख ब्रह्मण्डों का स्वामी है अर्थात् कुल का मालिक है और इसलिए कबीर जी ने स्वामी रामानंद जी से कहा कि मेरा पंथ परमेश्वर की प्राप्ति वाला है।

गीता अ. 15 श्लोक नं. 17 में लिखा है कि वास्तव में अविनाशी परमेश्वर तो कोई और ही है और वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है और वही अविनाशी परमात्मा परमेश्वर इस नाम से जाना जाता है। वह परमेश्वर मैं ही हूँ। इस बात को सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्षुब्ध हो गए तथा कहा कि रे निकम्मे! तू छोटी जाति का और छोटा मुँह बड़ी बात। तू अपने आप भगवान बन बैठा। बुरी गालियाँ भी दी। कबीर साहेब बोले हे गुरुदेव! आप मेरे गुरुजी हैं। आप मुझे गाली दे रहे हो तो भी मुझे आनन्द आ रहा है। लेकिन मैं जो आपको कह रहा हूँ, मैं ज्यों का त्यों पूर्णब्रह्म ही हूँ, इसमें कोई संशय नहीं है। इस बात को सुनकर रामानन्द जी ने कहा कि ठहर जा तेरी तो लम्बी कहानी बनेगी, तू ऐसे नहीं मानेगा। मैं पहले अपनी पूजा कर लेता हूँ। रामानन्द जी ने कहा कि इसको बैठाओ मैं पहले अपनी कुछ क्रिया रहती है वह कर लेता हूँ, बाद में इससे निपटूंगा। स्वामी रामानन्द जी क्या क्रिया करते थे? भगवान विष्णु जी की एक काल्पनिक मूर्ति बनाते थे। सामने मूर्ति दिखाई देने लग जाती थी (जैसे कर्मकाण्ड करते हैं, भगवान की मूर्ति के पहले वाले सारे कपड़े उतार कर, उनको जल से स्नान करवा कर, फिर स्वच्छ कपड़े भगवान ठाकुर को पहना कर गले में माला डालकर, तिलक लगा कर मुकुट रख देते हैं।) रामानन्द जी कल्पना कर रहे थे। कल्पना करके भगवान की काल्पनिक मूर्ति बनाई। श्रद्धा से

जैसे नंगे पैरों जाकर आप ही गंगा जल लाए हों, ऐसी अपनी भावना बना कर ठाकुर जी की मूर्ति के कपड़े उतारे, फिर स्नान करवाया तथा नए वस्त्र पहना दिए। तिलक लगा दिया, मुकुट रख दिया और माला (कण्ठी) डालनी भूल गए। यदि कण्ठी न डाले तो पूजा अधूरी और मुकुट रख दिया तो पुनः उसे उतारा नहीं जा सकता। यदि उसी दिन मुकुट उतार दे तो पूजा खण्डित मानी जाती है। स्वामी रामानन्द जी अपने आप को कोस रहे हैं कि इतना जीवन हो गया मेरा कभी, भी ऐसी गलती जिन्दगी में नहीं बनी थी। प्रभु आज क्या गलती बन गई मुझ पापी से? यदि मुकुट उतारूँ तो पूजा खण्डित। उसने सोचा कि चल मुकुट के ऊपर से कण्ठी (माला) डाल कर देखता हूँ (कल्पना से कर रहे हैं कोई सामने मूर्ति नहीं है और पर्दा लगा है कबीर साहेब दूसरी तरफ बैठे हैं)। मुकुट में माला फँस गई आगे नहीं जा रही थी। तब रामानन्द जी ने सोचा अब क्या करूं? हे भगवन्! आज तो मेरा सारा दिन ही व्यर्थ गया। आज की मेरी भक्ति कमाई व्यर्थ गई (क्योंकि जिसको परमात्मा की कसक होती है उसका एक नित्य नियम भी रह जाए तो उसको दर्द बहुत होता है। जैसे इंसान की जेब कट जाए और फिर बहुत पश्चाताप करता है। ऐसे ही प्रभु के सच्चे भक्तों को इतनी लगन होती है।) इतने में कबीर साहेब ने कहा कि स्वामी जी माला की घुण्डी खोलो और गले में डाल दो। फिर गाँठ लगा दो, मुकुट उतारना नहीं पड़ेगा। अब रामानन्द जी काहे के मुकुट उतारे था, काहे की गाँठ खोले था। कुटिया के सामने लगा पर्दा भी स्वामी रामानन्द जी ने अपने हाथ से फैंक दिया और सारे ब्राह्मण समाज के सामने उस कबीर परमेश्वर को सीने से लगा लिया। रामानन्द जी ने कहा कि हे भगवन! आपका तो इतना कोमल शरीर है जैसे रूई हो और मेरा तो पत्थर जैसा शरीर है। एक तरफ तो प्रभु खड़े हैं और एक तरफ जाति व धर्म की दीवार है। प्रभु चाहने वाली पुण्यात्माऐं धर्म की बनावटी दीवार को तोड़ना श्रेयकर समझते हैं। वैसा ही स्वामी रामानन्द जी ने किया। सामने पूर्ण परमात्मा को पा कर न जाति देखी न धर्म देखा, न छुआ-छात, केवल आत्म कल्याण देखा। इसे ब्राह्मण कहते हैं।

बोलत रामानंदजी, हम घर बडा सुकाल। गरीबदास पूजा करैं, मुकुट फही जदि माल।।479।।
सेवा करौं संभाल करि, सुनि स्वामी सुर ज्ञान।गरीबदास शिर मुकुट धरि,माला अटकी जान।।480।।
स्वामी घुंडी खोलि करि, फिरि माला गल डार। गरीबदास इस भजन कूं, जानत है करतार।।481।।
ड्यौढी पडदा दूरि करि, लीया कंठ लगाय। गरीबदास गुजरी बौहत, बदनैं बदन मिलाय।।482।।

स्वामी रामानन्द जी ने कहा हे कबीर प्रभु! आपने झूठ क्यों बोला? कबीर साहेब बोले कि कैसा झूठ स्वामी जी? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि आप कह रहे थे कि आपने मेरे से नाम ले रखा है। आपने मेरे से उपदेश कब लिया? कबीर साहेब बोले एक समय आप स्नान करने के लिए पँचगंगा घाट पर गए थे। मैं वहाँ लेटा हुआ था। आपके पैरों की खड़ाऊ मेरे सिर में लगी थी तो आपने कहा था कि बेटा राम नाम बोलो। रामानन्द जी बोले-हाँ, अब कुछ याद आया। परन्तु वह तो बहुत छोटा बच्चा था (क्योंकि उस समय पाँच वर्ष की आयु के बच्चे बहुत बड़े हो जाया करते थे तथा पाँच वर्ष के बच्चे के शरीर तथा ढ़ाई वर्ष के बच्चे के शरीर में दुगूना अन्तर हो जाता है)। कबीर साहेब कहने लगे कि स्वामी जी देखो, मैं ऐसा था। स्वामी रामानन्द जी के

सामने भी खड़े हैं और एक ढाई वर्षीय बच्चे का दूसरा रूप बना कर किसी सेवक की वहाँ पर खटिया बिछी थी उसके ऊपर विराजमान हो गए। अब रामानन्द जी ने छः बार तो उधर देखा और छः बार उधर देखा। फिर आँखें मलमल कर देखा कि कहीं तेरी आँखें धोखा तो नहीं खा रही हैं। इस प्रकार देख ही रहे थे कि इतने में कबीर साहेब का छोटे वाला रूप उठा और कबीर साहेब के बड़े पाँच वर्ष वाले स्वरूप में समा गया। पाँच वर्ष वाले स्वरूप में कबीर साहेब रह गए।

मनकी पूजा तुम लखी, मुकुट माल परबेश। गरीबदास गति को लखै, कौन वरण क्या भेष।।483।।
यह तौ तुम शिक्षा दई, मानि लई मनमोर। गरीबदास कोमल पुरूष, हमरा बदन कठोर।।484।।

तब रामानन्द जी बोले कि मेरा संशय मिट गया। हे परमेश्वर! आप को कैसे पहचान सकते हैं। आप किस जाति में तथा वेश भूषा में खड़े हो। हम नादान प्राणी आप के साथ वाद-विवाद करके दोषी हो गए, क्षमा करना पूर्ण परमेश्वर कविर्देव, मैं आप का अनजान बच्चा हूँ।

“स्वामी रामानन्द जी को सत्यलोक दर्शन”

सुनि बच्चा मैं स्वर्ग की कैसैं छांडौं रीति। गरीबदास गुदरी लगी, जनम जात है बीत।।486।।
च्यारि मुक्ति बैकुंठ मैं, जिन की मोरै चाह। गरीबदास घर अगम की, कैसैं पाऊं थाह।।487।।
हेम रूप जहाँ धरणि है, रतन जडे बौह शोभ। गरीबदास बैकुंठ कूं, तन मन हमरा लोभ।।488।।
शंख चक्र गदा पदम हैं, मोहन मदन मुरारि। गरीबदास मुरली बजै, सुरगलोक दरबारि।।489।।
दूधौं की नदियां बगैं, सेत वृक्ष सुभान। गरीबदास मंदल मुक्ति, सुरगापुर अस्थान।।490।।
रतन जडाऊ मनुष्य हैं, गण गंधर्व सब देव। गरीबदास उस धाम की कैसैं छाडूं सेव।।491।।
ऋग युज साम अथर्वणं, गावैं चारौं वेद। गरीबदास घर अगम की, कैसैं जानो भेद।।492।।
च्यारि मुक्ति चितवन लगी, कैसैं बंचूं ताहि। गरीबदास गुप्तारगति, हमकूं द्यौ समझाय।।493।।
सुरग लोक बैकुंठ है, यासैं परै न और। गरीबदास षट्शास्त्र, च्यारि बेदकी दौर।।494।।
च्यारि बेद गावैं तिसैं, सुरनर मुनि मिलाप। गरीबदास ध्रुव पोर जिस, मिटि गये तीनूं ताप।।495।।
प्रहलाद गये तिस लोककूं, सुरगा पुरी समूल। गरीबदास हरि भक्ति की, मैं बंचत हूँ धूल।।496।।
बिंद्रावन गये तिस लोककूं, सुरगा पुरी समूल। गरीबदास उस मुक्ति कूं, कैसैं जाऊं भूल।।497।।
नारद ब्रह्मा तिस रटैं, गावैं शेष गणेश। गरीबदास बैकुंठ सैं, और परै को देश।।498।।
सहंस अठासी जिस जपैं, और तेतीसौं सेव। गरीबदास जासैं परै, और कौन है देव।।499।।
सुनि स्वामी निज मूल गति, कहि समझाऊं तोहि।गरीबदास भगवान कूं, राख्या जगत समोहि।।500।।
तीनि लोक के जीव सब, विषय वास भरमाय। गरीबदास हमकूं जपैं, तिसकूं धाम दिखाय।।501।।
जो देखैगा धाम कूं, सो जानत है मुझ। गरीबदास तोसैं कहूं, सुनि गायत्री गुझ।।502।।
कृष्ण विष्णु भगवान कूं, जहडायें हैं जीव। गरीबदास त्रिलोक मैं ,काल कर्म शिर शीव।।503।।
सुनि स्वामी तोसैं कहूँ, अगम दीप की सैल। गरीबदास पूठे परे, पुस्तक लादे बैल।।504।।
पौहमी धरणि अकाश थंभ, चलसी चंदर सूर। गरीबदास रज बिरजकी, कहाँ रहैगी धूर।।505।।
तारायण त्रिलोक सब, चलसी इन्द्र कुबेर। गरीबदास सब जात हैं, सुरग पाताल सुमेर।।506।।
च्यारि मुक्ति बैकुठ बट, फना हुआ कई बार। गरीबदास अलप रूप मघ, क्या जानैं संसार।।507।।
कहौ स्वामी कित रहौगे, चौदा भुवन बिहंड। गरीबदास बीजक कह्या, चलत प्राण और पिंड।।508।।
सुन स्वामी एक शक्ति है, अरधंगी ॐकार। गरीबदास बीजक तहां, अनंत लोक सिंघार।।509।।

जैसेका तैसा रहै, परलो फना प्रान। गरीबदास उस शक्तिकूं, बार बार कुरबांन।।510।।
कोटि इन्द्र ब्रह्मा जहाँ, कोटि कृष्ण कैलास। गरीबदास शिव कोटि हैं, करौ कौंनकी आश।।511।।
कोटि विष्णु जहाँ बसत हैं, उस शक्ति के धाम।गरीबदास गुल बौहत हैं,अलफ बस्त निहकाम।।512।।
शिव शक्ति जासै हुए, अनंत कोटि अवतार। गरीबदास उस अलफकूं, लखै सो होय करतार।।513।।
अलफ हमारा रूप है, दम देही नहीं दंत। गरीबदास गुलसैं परै, चलना है बिन पंथ।।514।।
बिना पंथ उस कंतकै, धाम चलन है मोर। गरीबदास गति ना किसी, संख सुरग पर डोर।।515।।
संख सुरगपर हम बसैं,सुनि स्वामी यह सैंन।गरीबदास हम अलफ हैं,यौह गुल फोकट फैंन।।516।।
जो तै कहया सौ मैं लहया, बिन देखै नहीं धीज।गरीबदास स्वामी कहै,कहाँ अलफ वौ बीज।।517।।
अनंत कोटि ब्रह्मांड फण, अनंत कोटि उदगार। गरीबदास स्वामी कहै, कहां अलफ दीदार।।518।।
हद बेहद कहीं ना कहीं, ना कहीं थरपी ठौर। गरीबदास निज ब्रह्मकी, कौंन धाम वह पौर।।519।।
चल स्वामी सर पर चलैं, गंग तीर सुन ज्ञान। गरीबदास बैकुंठ बट, कोटि कोटि घट ध्यान।।520।।
तहां कोटि वैकुंठ हैं, नक सरवर संगीत। गरीबदास स्वामी सुनैं, जात अनन्त जुग बीत।521।।
प्राण पिंड पुरमैं धसौ, गये रामानंद कोटि। गरीबदास सर सुरगमैं, रहौ शब्दकी ओट।।522।।
तहां वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार। गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।523।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि, भर्म कर्म किये नाश। गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ़ विश्वास।।524।।
सुन्न–बेसुन्न सैं तुम परै, उरैं से हमरै तीर। गरीबदास सरबंगमैं, अविगत पुरूष कबीर।।525।।
कोटि कोटि सिजदे करैं, कोटि कोटि प्रणाम। गरीबदास अनहद अधर, हम परसैं तुम धाम।।526।।
सुनि स्वामी एक गल गुझ,तिल तारी पल जोरि।गरीबदास सर गगन मैं,सूरज अनंत करोरि।।527।।
शहर अमान अनन्तपुर, रिमझिम रिमझिम होय।गरीबदास उस नगर का,मरम न जानैं कोय।।528।।
सुनि स्वामी कैसैं लखौ, कहि समझाऊं तोहि।गरीबदास बिन पर उडैं,तन मन शीश न होय।।529।।
रवनपुरी एक चक्र है, तहाँ धनजय बाय। गरीबदास जीते जन्म, याकूँ लेत समाय।।530।।
आसन पदम लगायकर, भिरंग नाद को खैंचि। गरीबदास अचवन करै, देवदत्त को ऐचि।।531।।
काली ऊन कुलीन रंग, जाकै दो फुन धार। गरीबदास कुरंभ शिर, तास करे उद्गार।।532।।
चिश्में लाल गुलाल रंग, तीनि गिरह नभ पेंच। गरीबदास वह नागनी कूँ, हौने न देवे रेच।।533।।
कुंभक रेचक सब करै, ऊन करत उदगार। गरीबदास उस नागनी कूँ, जीतै कोई खिलार।।534।।
कुंभ भरै रेचक करै, फिर टुटत है पौन। गरीबदास गगन मण्डल, नहीं होत है रौन।। 535।।
आगे घाटी बंद है, ईग्लां–पिंगला दोय। गरीबदास सुषमन खुले, तास मिलावा होय।।536।।
ज्यूंका त्यूंही बैठि रहो, तजि आसन सब जोग। गरीबदास पल बीच पद, सर्व सैल सब भोग।।547।।
कोटि कोटि बैकुंठ हैं, कोटि कोटि शिव शेष। गरीबदास उस धाममैं, ब्रह्मा कोटि नरेश।।553।।
अवादान अमानपुर, चलि स्वामी तहां चाल। गरीबदास परलो अनंत, बौहरि न झंपै काल।।554।।
अमर चीर तहां पहरि है,अमर हंस सुख धाम।गरीबदास भोजन अजर,चल स्वामी निजधाम।।555।।
बोलत रामानंदजी, सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूपमैं, तुमहीं बोलन हार।।556।।
तुम साहिब तुम संत हौ, तुम सतगुरु तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।557।।
मैं भगता मुक्ता भया, किया कर्म कुन्द नाश। गरीबदास अविगत मिले, मेटी मन की बास।।558।।
दोहूँ ठौर है एक तूं, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणैं, उतरे हैं मघ जोय।।559।।
गोष्टी रामानंदसैं, काशी नगर मंझार। गरीबदास जिंद पीरके, हम पाये दीदार।।562।।
बोलै रामानंद जी, सुनौं कबीर सुभांन। गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिंड अरु प्राण।।567।।

कबीर साहेब (कविर्देव) ने स्वामी रामानन्द जी से पूछा कि स्वामी जी आप क्या पूजा करते हो? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि मैं वेदों व गीता जी के अनुसार

साधना करता हूँ। कबीर साहेब ने पूछा कि वेदों व गीता के आधार से साधना करके किस लोक में जाओगे ? स्वामी रामानन्द जी ने कहा स्वर्ग में जाऊँगा। कबीर परमेश्वर ने पूछा स्वर्ग में क्या करोगे दाता? रामानन्द जी ने कहा कि वहाँ पर बहुत प्यारे भगवान विष्णु जी हैं। उनके दर्शन किया करूँगा और वहाँ पर दूधों की नदी है, वहाँ कोई चिंता नहीं है, कोई फिक्र नहीं है, मैं वहाँ आनन्द से रहूँगा। कबीर परमेश्वर ने पूछा कि स्वामी जी कितने दिन रहोगे स्वर्ग में ? (विद्वान पुरुष थे उनको ज्ञान था। दो ही मिनट में समझ गए।)

स्वामी जी बोले मेरी जितनी भक्ति की कमाई होगी तब तक रहूँगा। कबीर साहेब ने पूछा कि फिर कहाँ जाओगे ? रामानन्द जी ने कहा न जाने कर्माधार पर कहाँ तथा किस योनी में जन्म होगा? कबीर साहेब ने कहा कि यह साधना तो स्वामी जी आपने असंख्यों बार की है। इससे जीव मुक्त नहीं हो सकता। आप श्री विष्णु जी की साधना करके स्वर्ग लोक में जाना चाहते हो। जो साधक ब्रह्म साधना करके ब्रह्मलोक में जाते हैं वे भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रहते हैं क्योंकि एक दिन महास्वर्ग जो ब्रह्मलोक में बना है वह भी नष्ट हो जायेगा। गीता जी के आठवें अध्याय का सोलहवाँ श्लोक बताता है। स्वामी रामानन्द जी तो विद्वान पुरुष थे उनको तो श्लोक उंगलियों पर याद थे। स्वामी रामानन्द जी ने कहा आप ठीक कहते हो, ऐसा ही लिखा है। कबीर साहेब ने कहा बताओ जी फिर कहाँ रहोगे ? न आपके श्री कृष्ण मुरारी ही रहेंगे। ये ब्रह्मा लोक, विष्णु लोक आदि के सर्व प्राणी तथा श्री विष्णु जी आदि तीनों देवता भी नष्ट होंगे। फिर आप कहाँ रहोगे गुरुदेव? फिर रामानन्द जी विचार करने पर विवश हो गए। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पूछा स्वामी जी गीता जी का ज्ञान किसने बोला? स्वामी रामानन्द जी ने उत्तर दिया कि श्री कृष्ण जी ने। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा स्वामी जी संक्षिप्त महाभारत द्वितीय खण्ड (पृष्ठ 1531 पुराने वाला तथा 667 नए वाला) में लिखा है कि श्री कृष्ण जी तो कह रहे हैं कि अर्जुन मुझे अब वह गीता वाला ज्ञान याद नहीं है, मैं दोबारा वही ज्ञान नहीं सुना सकता। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने सर्व प्रमाण बताऐं।

गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) कह रहा है कि -

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म, व्याहरन् माम् अनुस्मरन्,
यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम् ।। 13।।

इसका शब्दार्थ है कि गीता बोलने वाला ब्रह्म अर्थात् काल कह रहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का तो (इति) यह (ओम् एकाक्षरम्) ओम्/ॐ एक अक्षर है (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करने का (यः) जो साधक (त्यजन् देहम्) शरीर त्यागने तक अर्थात् अन्तिम स्वांस तक (प्रयाति) स्मरण साधना करता है (सः) वह साधक ही मेरे वाली (परमाम् गतिम्) परमगति को (याति) प्राप्त होता है।

भावार्थ है कि श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् हजार भुजा वाला ज्योति निरंजन काल कह रहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना केवल एक ओम् (ॐ) नाम से मृत्यु पर्यन्त करने वाले साधक को मुझ से मिलने वाला लाभ प्राप्त होता है, अन्य कोई मन्त्र मेरी भक्ति का नहीं है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 5, 7 तथा 13 में गीता ज्ञान दाता ने अपने विषय में साधना करने को बताया है कि जो मेरी साधना ओम् (ॐ) नाम का स्मरण अन्तिम स्वांस तक करता है, वह मुझे ही प्राप्त होगा। इसलिए तू युद्ध भी कर तथा मेरा ओ३म् नाम का स्मरण भी कर क्योंकि युद्ध हल्ला (ऊँचे स्वर से शोर) करके किया जाता है, इसलिए कहा है कि ओम् (ॐ) नाम का उच्चारण (ऊँचे स्वर में शोर) करता हुआ स्मरण भी कर तथा युद्ध भी कर।

फिर गीता अध्याय 8 श्लोक 6 में कहा है कि यह विधान है कि जो जिस प्रभु का अंत समय में स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है वह उसी को प्राप्त होता है। गीता ज्ञान दाता प्रभु गीता अध्याय 8 श्लोक 8 से 10 तक तीनों श्लोकों में ब्रह्म से अन्य पूर्ण परमात्मा (परम दिव्य पुरुष परमेश्वर अर्थात् पूर्णब्रह्म) के विषय में कह रहा है कि यदि कोई उसकी साधना करता हुआ शरीर त्यागता है तो उसी पूर्ण परमात्मा (परमेश्वर) को ही प्राप्त करता है। उसी से पूर्ण मोक्ष तथा सत्यलोक प्राप्ति तथा परम शान्ति प्राप्त होती है। इसलिए उस परमेश्वर की शरण में जा (गीता अध्याय 18 श्लोक 62-66 तथा अध्याय 15 श्लोक 4) मैं (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म) भी इसी की शरण हूँ।

रामानन्द जी ने सर्व प्रमाणों को आँखों देखकर दांतों तले अंगुली दबाई तथा सत्य को स्वीकार किया। कहा कि बच्चा बात तो शास्त्रों की तूं सही बता रहा है जो सत्य है। हमारे को किसी ने ऐसा ज्ञान ही नहीं दिया, हम क्या करें? कबीर साहेब ने बताया कि पवित्र गीता जी में ही लिखा है। आठवें अध्याय का 8,9 और 10 श्लोक तथा अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62 पढ़कर देखो।

पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि उस परमात्मा की शरण में जा अर्जुन तेरा फिर मरण नहीं होगा। उसके लिए (अध्याय नं. 4 का श्लोक नं. 34) उन संतों को खोजो जो उस परमात्मा के परम तत्व को जानने वाले हों। उनको दण्डवत् प्रणाम करो, विनम्र व निष्कपट भाव से उनका सत्कार करो। जब वे तत्वदर्शी सन्त प्रसन्न हो जाऐं फिर उनसे दीक्षा (नाम) माँगों। फिर तेरा पुनर्जन्म व मरण नहीं होगा। पवित्र गीता अध्याय 15 मंत्र 1 से 4 में कहा है कि यह उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष है, ऊपर को मूल तो आदि पुरुष अर्थात् सनातन परमात्मा है, नीचे को तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) रूपी शाखायें हैं। इस पूर्ण संसार रूपी वृक्ष अर्थात् पूर्ण सृष्टी रचना को मैं (ब्रह्म-काल) नहीं जानता। यहाँ विचारकाल में अर्थात् गीता जी के ज्ञान में आपको मैं पूर्ण ज्ञान नहीं दे सकता। उसके लिए किसी तत्वदर्शी संत की खोज कर।(गीता अध्याय 4 मंत्र 34) फिर वह आपको सर्व सृष्टी की रचना का ज्ञान तथा सर्व प्रभुओं की स्थिति सही बताएगा। उसके पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जिसमें गए साधक का फिर जन्म-मृत्यु नहीं होता अर्थात् पूर्ण मोक्ष हो जाता है। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वृक्ष अर्थात् सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है मैं (ब्रह्म-काल) भी उस परमेश्वर की शरण में हूँ, इसलिए उस परमेश्वर की पूजा करो। स्वामी रामानन्द जी बोले कि लिखा तो ऐसा ही है बच्चा, बिल्कुल यों ही है। लेकिन यह सतलोक न तो किसी से

सुना है जिस कारण अब मेरा मन विश्वास नहीं कर रहा है कि वह सत्य होगा। कबीर साहेब ने पूछा कि आप कैसे साधना करते हो? स्वामी रामानन्द जी बोले कि मैंने सारे शरीर को साध रखा है। योग अभ्यास के साथ मैं अन्दर कमलों में से गुजर कर त्रिकुटी (त्रिवैणी) तक पहुँच जाता हूँ। कबीर साहेब बोले कि आप एक बार त्रिवैणी तक पहुँचो। जब रामानन्द जी समाधिस्थ हुए (क्योंकि उनका तो प्रतिदिन का अभ्यास था) त्रिवैणी पर जाकर तीन रास्ते हो जाते हैं। प्रत्येक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में प्रवेश करते ही तीन रास्ते हो जाते हैं। इसी प्रकार बीस ब्रह्मण्डों के पार इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में भी यही व्यवस्था है। एक रास्ता सामने ब्रह्मलोक में बने तीन गुप्त स्थानों को जाता है, जहाँ पर ज्योति निरंजन तीन रूप बना कर रहता है, सामने का ब्रह्मरंध्र तुम्हारे इस नाम से नहीं खुलेगा। यह ब्रह्मरंध्र भी सतनाम से खुलेगा। कबीर साहेब ने स्वांस के द्वारा अपना सतनाम उच्चारण किया, सामने का द्वार खुल गया। कबीर साहेब ने कहा कि अब आपको काल भगवान दिखाता हूँ जिसको आप निराकार कहते हो। जो गीता में कहता है कि मैं सबको खाऊँगा। अर्जुन! मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, मैं कभी किसी के सामने प्रत्यक्ष नहीं होता। कबीर साहेब ने कहा कि अब आप के समक्ष उस काल को दिखाता हूँ। पहले तो एक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में गुप्त स्थानों पर दिखाया ब्रह्मा-विष्णु व शिव रूप धारण किए था। फिर ब्रह्मलोक को पार करने के द्वार से निकल कर इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में ले गये। ब्रह्मलोक से आगे जाने वाले रास्ते को भी जो जटा कुण्डली सरोवर के ऊपर है, अपनी नजरों में रखता है कि कोई निकल न जाए। इक्कीस ब्रह्मण्ड का जो अन्तिम लोक आता है वह काल-ब्रह्म (क्षर पुरुष) का अपना स्थान है। वहाँ पर वह उसी भयंकर रूप में बैठा है, जो इसका वास्तविक रूप है। कबीर साहेब ने कहा कि देखो वह बैठा तुम्हारा निराकार भगवान, जिसको तुम निराकार कहते हो। (क्योंकि योगियों ने वेदों के आधार पर ओ३म् नाम से साधनाएँ की, परमात्मा तो मिला नहीं, सिद्धियाँ आ गई, स्वर्ग चले गए, महास्वर्ग गए, फिर पशु बन गए। इसलिए प्रभु को सभी ने निराकार मान रखा है कि वह दिखाई नहीं देता और वेदों में लिखा है कि भगवान आकार में है।) जब काल के पास पहुँचे तो साहेब ने अपना सारनाम के साथ सतनाम उच्चारण किया। उसी समय काल का सिर नीचे झुक गया। काल के सिर के ऊपर वह द्वार है जहाँ से सतलोक जाया जाता है तथा परब्रह्म के लोक में प्रवेश होते हैं। उसके बाद एक भँवर गुफा शुरू होती है। (एक भँवर गुफा काल के लोक में भी है।) काल के सिर पर पैर रखकर कबीर जी के हंस (निर्विकारी साधक) ऊपर जाते हैं। यह काल उसकी पौड़ी का काम करता है। परब्रह्म के लोक को पार करके कबीर साहेब श्री रामानन्द जी की आत्मा को सतलोक ले गए। (वहाँ पर भी एक भंवर गुफा है)। सतलोक में जाकर श्री रामानन्द जी ने देखा कि कबीर साहिब (कविर्देव) अपने वास्तविक रूप में बैठे हैं। वहाँ पर कबीर साहेब का इतना तेज है कि एक रूमकूप में जैसे करोड़ों सूर्य और करोड़ों चन्द्रमा की जो मिली-जुली रोशनी (परन्तु गर्मी न हो) से भी अधिक है। कबीर साहेब वहाँ जा कर अपने ही दूसरे स्वरूप के ऊपर चँवर करने लगे। श्री रामानन्द जी ने सोचा कि भगवान तो यह है जो सिंहासन पर विराजमान है और यह कबीर यहाँ का कोई सेवक (गण) होगा, परन्तु

लोक सबसे न्यारा है। परमात्मा का बहुत तेज है। ऐसा सोच ही रहे थे, इतने में परमात्मा का तेजोमय रूप सिंहासन से उठा और पाँच वर्षिय बच्चे के रूप में परमेश्वर कबीर जी तख्त पर विराजमान हो गए। परमेश्वर का जो वास्तविक तेजोमय रूप नजर आ रहा था वह बालक रूप कबीर साहेब पर चँवर करने लगा। उसके बाद कबीर साहेब का दूसरा तेजोमय रूप बालक वाले रूप कबीर साहेब में समा गया और अकेले पाँच वर्षीय बच्चे के रूप में कबीर परमेश्वर तख्त पर विराजमान थे, चँवर स्वयं चल रहा था। इतने में रामानन्द जी की आत्मा को वापिस शरीर में भेज दिया। उनकी समाधि टूटी। सामने देखा कबीर साहेब पाँच वर्ष के बच्चे के शरीर में बैठे हैं। तब स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि :-

तहां वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार। गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।523।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि, भर्म कर्म किये नाश। गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ़ विश्वास।।524।।
सुन्न–बेसुन्न सैं तुम परै, उरैं से हमरै तीर। गरीबदास सरबंगमें, अविगत पुरूष कबीर।।525।।
कोटि कोटि सिजदे करैं, कोटि कोटि प्रणाम। गरीबदास अनहद अधर, हम परसैं तुम धाम।।526।।
बोलत रामानंदजी, सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूपमें, तुमहीं बोलन हार।।556।।
तुम साहिब तुम संत हौ, तुम सतगुरु तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।557।।
मैं भगता मुक्ता भया, किया कर्म कुन्द नाश। गरीबदास अविगत मिले, मेटी मन की बास।।558।।
दोहूँ ठौर है एक तूं, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणैं, उतरे हैं मघ जोय।।559।।
बोलत रामानन्द जी, सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में, तू ही बोलनहार।।

रामानन्द जी ने कहा कि हे परमेश्वर! हे कबीर परमात्मा! हे कबीर करतार (सर्व सृष्टी रचनहार)! आप ही सर्वव्यापक पूर्ण परमेश्वर हो।

दहूँ ठोड़ है एक तूं, भया एक से दो। गरीबदास हम कारणे, आए हो मग जो।।

हे परमेश्वर कबीर ! आप दोनों जगह सत्यलोक में तथा मेरे समक्ष आप ही हो और एक से दो रूप बनाकर हम तुच्छ जीवों के लिए यहाँ पर आए हो।

मैं भक्ता मुक्ता भया, कर्म कुण्द भये नाश। गरीबदास अविगत मिले, मिट गई मन की बांस।।

रामानन्द जी 104 वर्षीय महापुरुष और पाँच वर्षीय बच्चे कबीर परमेश्वर को कह रहे हैं कि मैं आपका दास मुक्त हो गया और मेरे मन की भ्रमणा-भटकणा समाप्त हो गई। मुझे परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का दर्शन हो गया। हे पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब (कविर्देव)! चारों पवित्र वेद व पवित्र गीता जी आप ही का गुणगान कर रहे हैं। स्वयं कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने भी कहा है कि :-

बेद हमारा भेद है, मैं ना बेदन के मांही। जिस बेद से मैं मिलूं, बेद जानते नाहीं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेदों में ज्ञान पूर्ण परमात्मा का ही है, परन्तु पूजा की विधि केवल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तक की ही है। परमेश्वर कबीर (कविर्देव) की पूजा विधि के ज्ञान व तत्वज्ञान के लिए पवित्र वेदों तथा पवित्र गीता जी में कहा है कि उसे तो कोई तत्वदर्शी संत ही बता सकता है, जो स्वयं ही परमेश्वर होता है या कोई उसका भेजा हुआ वास्तविक प्रतिनिधि होता है। उससे उपदेश प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष व परम शान्ति प्राप्त होती है।

पवित्र शास्त्र भी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) के साक्षी

इसी प्रकार कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने मुस्लमानों को बुरा नहीं कहा है, न ही पवित्र कुरान शरीफ को गलत कहा है, केवल उन काजी व मुल्लाओं को लताड़ा है जो सर्व समाज को कुरान शरीफ के वास्तविक ज्ञान के विपरीत मनमानी साधना करवा रहे हैं।

जैसे पवित्र वेदों के बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव के विषय में कोई जन्म लेकर अवतार रूप में आना मानते हैं, कोई कभी जन्म न लेने वाला निराकार कहते हैं। उसकी जानकारी तो (धीराणाम्) तत्वदृष्टा संत ही बताएगें। मैं (ब्रह्म) नहीं जानता (यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10)। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में भी है। जब तक वह तत्वदर्शी संत नहीं मिलेगा तब तक जीव का कल्याण असम्भव है। वह संत अब आ गया है, इन तत्वदर्शी संत रामपाल जी को पहचानों।

"पवित्र कुरान शरीफ में प्रमाण"

इसी प्रकार पवित्र कुरान शरीफ के अध्याय सूरत फुर्कानी सं. 25, आयत 52, से 59 में कहा है कि वास्तव में (इबादइ कबीरा) पूजा के योग्य कबीर अल्लाह है। यह कबीर वही पूर्ण परमात्मा है जिसने छः दिन में सृष्टी रची तथा सातवें दिन तख्त पर जा विराजा, उसकी खबर किसी बाखबर से पूछ देखों।

पवित्र कुरान शरीफ को बोलने वाला अल्लाह स्वयं किसी और कबीर नामक प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है तथा कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा कबीर के विषय में मैं भी नहीं जानता, उसके विषय में किसी तत्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो।

कविर्देव ने यही कहा था कि मैं स्वयं पूर्ण परमात्मा (अल्लाह कबीर/अकबिरु) हूँ। अपने स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक रूप में मैं स्वयं ही आया हूँ, मुझे पहचानों। परन्तु ऐसे ही आचार्यों ने पहले भी परमेश्वर के वास्तविक ज्ञान को जनता तक नहीं जाने दिया। कहा करते थे कि कबीर तो अशिक्षित है, यह संस्कृत तो जानता ही नहीं, हम शिक्षित हैं। इस बात पर पहले तो भक्तजन गुमराह हो गए थे, परन्तु अब सर्व समाज शिक्षित है, इन मार्ग भ्रष्ट आचार्यों की दाल नहीं गल रही, न ही गलेगी।

सल्लि अला :- ज-स-दि मुहम्मदिन फिल् अज्सादि अल्लाहुम म सल्लि अला कबिर् (कबीर) मुहम्मिद फ़िल् कुबूरि0   फजाईले जिक्र

(٥) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَ رض قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ مَا
قَالَ عَبْدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ اِلَّا فُتِحَتْ لَهٗ اَبْوَابُ السَّمَآءِ حَتّٰی یُفْضِیَ اِلَی الْعَرْشِ
مَا اجْتُنِبَتِ الْكَبَآئِرُ۔ رواه الترمذی وهكذا فی المشكوة لكن ليس فيها
حسن بل غريب فقط قال القاری و رواه النسائی وابن حبان وعزاه
السيوطی فی الجامع الی الترمذی و رقم له بالحسن وحكاه السيوطی فی
الدر من طريق ابن مردويه عن ابی هريرة وليس فيه ما اجتنبت الكبائر
وفی الجامع الصغير برواية الطبرانی عن معقل ابن يسار لكل شیء مفتاح
ومفتاح السموات قول لآ اله الا الله ورقم له بالضعف۔

5. हुजूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई बन्दा ऐसा नहीं कि 'लाइला-ह-इल्लल्लाहह' कहे और उसके लिए आसमानों के दरवाजें न खुल जायें, यहाँ तक कि यह कलिमा सीधा अर्श तक पहुँचता है, बशर्ते कि कबीरा गुनाहों से बचाता रहे।

फ़—कितनी बड़ी फ़जीलत है और कुबूलियत की इन्तिहा है कि यह कलिमा बराहे रास्त अर्शे मुअल्ला तक पहुँचता है और यह अभी मालूम हो चुका है कि अगर कबीरा गुनाहों के साथ भी कहा जाये, तो नफ़ा से उस वक्त भी खाली नहीं।

मुल्ला अली कारी रह0 फरमाते हैं कि कबाइर से बचने की शर्त कुबूल की जल्दी और आसमान के सब दरवाजे खुलने के एताबर से है, वरना सवाब और कूबूल से कबाइर (कबीर) के साथ भी खाली नहीं।

बाज उलेमा ने इस हदीस का यह मतलब बयान फरमाया है कि ऐसे शख्स के वास्ते मरने के बाद उस की रूह के एजाज में आसमान के सब दरवाजे खुल जायेंगे।

एक हदीस में आया है, दो कलिमे ऐसे हैं कि उनमें से एक के लिए अर्श के नीचे कोई मुन्तहा नहीं।' दूसरा आसमान और जमीन को (अपने नूर या अपने अज्र से) भर दे—

एक 'लाइला-ह इल्लल्लाह' है, दूसरा 'अल्लाहु अकबर' (कबीर) है,

"पवित्र वेदों में प्रमाण"

कविर्देव अपने ज्ञान का दूत बनकर स्वयं ही आता है तथा अपना स्वस्थ ज्ञान (वास्तविक तत्वज्ञान) स्वयं ही कराता है।

स्वयं कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी ने अपनी अमृतवाणी में कहा है -

शब्द :- अविगत से चल आए, कोई मेरा भेद मर्म नहीं पाया। (टेक) न मेरा जन्म न गर्भ बसेरा, बालक हो दिखलाया। काशी नगर जल कमल पर डेरा, वहाँ जुलाहे ने पाया।। मात—पिता मेरे कुछ नाहीं, ना मेरे घर दासी (पत्नी)। जुलहा का सुत आन कहाया, जगत करें मेरी हाँसी।। पाँच तत्व का धड़ नहीं मेरा, जानुं ज्ञान अपारा। सत्य स्वरूपी (वास्तविक) नाम साहेब (पूर्ण प्रभु) का सोई नाम हमारा।। अधर द्वीप (ऊपर सत्यलोक में) गगन गुफा में तहां निज वस्तु सारा। ज्योत स्वरूपी अलख निरंजन (ब्रह्म) भी धरता ध्यान हमारा।। हाड़ चाम लहु ना मेरे कोई जाने सत्यनाम उपासी। तारन तरन अभय पद दाता, मैं हूँ कबीर अविनाशी।।

उपरोक्त शब्द में कबीर परमेश्वर कह रहे हैं कि न तो मेरी कोई पत्नी है, न ही मेरा पाँच तत्व (हाड-चाम, लहू अर्थात् नाड़ियों के जोड़-जुगाड़ वाली काया) का शरीर है, मैं स्वयंभू हूँ तथा काशी के लहरतारा नामक तालाब के जल में कमल के फूल पर स्वयं प्रकट होकर बालक रूप बनाया था। वहाँ से मुझे नीरू नामक जुलाहा उठा कर ले गया था। जो वास्तविक नाम परमेश्वर का अर्थात् मेरा है (वेदों में कविर्देव, गुरु ग्रन्थ साहेब में हक्का कबीर तथा कुरान शरीफ में अल्लाह कबीरन्) वही नाम मेरा है, मैं ऊपर ऋतधाम में रहता हूँ तथा आप का भगवान ज्योति निरंजन (ब्रह्म) भी मेरी पूजा करता है। इसी का प्रमाण सत्यार्थ प्रकाश सातवें समुल्लास (पृ. 152-153, दीनानगर पंजाब से प्रकाशित) में भी है। स्वामी दयानन्द जी ने यजुर्वेद अध्याय 13 मन्त्र 4 तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 49 मन्त्र 1 का अनुवाद किया है। जिसमें वेदों को बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है (5= ऋग्वेद

मं. 10 सु. 49 मं. 1 तथा 6= यजुर्वेद अध्याय 13 मं. 4 में) - हे मनुष्यों जो सृष्टी के पूर्व सर्व की उत्पति करता तथा सर्व का स्वामी था, है, आगे भी रहेगा वही सर्व सृष्टी को बनाकर धारण कर रहा है। उस सुख स्वरूप परमात्मा की भक्ति जैसे हम (ब्रह्म तथा अन्य देव भी उसी की साधना) करते हैं वैसे ही तुम लोग भी करो।

प्रमाण - 1. पवित्र यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 -

समिद्धोऽद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः–अद्य–मनुषः–दुरोणे–देवः–देवान्–यज्–असि– जात–वेदः–आ– च–वह–मित्रमहः–चिकित्वान्–त्वम्–दूतः– कविर्–असि–प्रचेताः।

अनुवाद – (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, अग्नि जला कर भस्म कर देती है ऐसे साधक का जीवन शास्त्रविरूद्ध साधना नष्ट कर देती है। उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरुष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु , (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा के (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात् यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर) कबीर (असि) है।

भावार्थ :- जिस समय भक्त समाज को शास्त्रविधी त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) कराया जा रहा होता है। उस समय कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्व ज्ञान को प्रकट करता है।

प्रमाण 2. पवित्र सामवेद संख्या 1400 में

संख्या न. 359 सामवेद अध्याय न. 4 के खण्ड न. 25 का श्लोक न. 8 -

पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत। इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ।।4।।

पुराम्–भिन्दुः–युवा–कविर्–अमित–औजा– अजायत–इन्द्रः–विश्वस्य– कर्मणः–धर्ता–वज्री– पुरूष्टुतः।

शब्दार्थ :– (युवा) पूर्ण समर्थ (कविर्) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर (अमितऔजा) विशाल शक्ति युक्त अर्थात् सर्व शक्तिमान है (अजायत) तेजपुंज का शरीर मायावयी बनाकर (धर्ता) प्रकट होकर अर्थात् अवतार धारकर (वज्री) अपने सत्यशब्द व सत्यनाम रूपी शस्त्र से (पुराम्) काल–ब्रह्म के पाप रूपी बन्धन रूपी कीले को (भिन्दुः) तोड़ने वाला, टुकड़े–टुकड़े करने वाला (इन्द्रः) सर्व सुखदायक परमेश्वर (विश्वस्य) सर्व जगत के सर्व प्राणियों को (कर्मणः) मनसा वाचा कर्मणा अर्थात् पूर्ण निष्ठा के साथ अनन्य मन से धार्मिक कर्मो द्वारा सत्य भक्ति से (पुरूष्टुतः) स्तुति उपासना करने योग्य है।

{जैसे बच्चा तथा वृद्ध सर्व कार्य करने में समर्थ नहीं होते जवान व्यक्ति सर्व कार्य करने की क्षमता रखता है। ऐसे ही परब्रह्म–ब्रह्म व त्रिलोकिय ब्रह्मा–विष्णु–शिव तथा अन्य देवी–देवताओं को बच्चे तथा वृद्ध समझो इसलिए कबीर परमेश्वर को युवा की उपमा वेद में दी है}

भावार्थ :- जो कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्वज्ञान लेकर संसार में आता है। वह सर्वशक्तिमान है तथा काल (ब्रह्म) के कर्म रूपी किले को तोड़ने वाला है वह सर्व सुखदाता है तथा सर्व के पुजा करने योग्य है।

संख्या नं. 1400 सामवेद उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5

भद्रा वस्त्रा समन्या3वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।5।।

भद्रा वस्त्रा समन्या वसअनः महान् कविर् निवचनानि शंसन् आवच्यस्व चम्वोः पूयमानः विचक्षणः जागृविः देव वीतौ

अनुवाद :– (विचक्षणः) चतुर व्यक्तियों ने (आवच्यस्व) अपने वचनों द्वारा पूर्णब्रह्म की पूजा को न बताकर आन उपासना का मार्ग दर्शन करके अमृत के स्थान पर (पूयमानः) आन उपासना {जैसे भूत–प्रेत पूजा, पित्र पूजा, तीनों गुणों (रजगुण–ब्रह्मा, सतगुण–विष्णु, तमगुण–शिव शंकर) तथा ब्रह्म–काल तक की पूजा} रूपी मवाद को (चम्वोः) आदर के साथ आचमन करा रहे गलत ज्ञान को (भद्रा) परमसुखदायक (महान् कविर्) पूर्ण परमात्मा कबीर (वस्त्रा) सशरीर साधारण वेशभूषा में ''अर्थात् वस्त्र का अर्थ है वेशभूषा, संत भाषा में इसे चोला भी कहते हैं, चोला का अर्थ है शरीर। यदि किसी संत का देहान्त हो जाता है तो कहते हैं कि चोला छोड़ गए'' (समन्या) अपने सत्यलोक वाले शरीर के सदृश अन्य शरीर तेजपुंज का धारकर (वसानः) आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर कुछ दिन संसार में रह कर (निवचनानि) अपनी शब्दावली आदि के माध्यम से सत्यज्ञान (शंसन्) वर्णन करके (देव) पूर्ण परमात्मा के (वीतौ) छिपे हुए सर्गुण–निर्गुण ज्ञान को (जागृविः) जाग्रत करते हैं।

भावार्थ :– शास्त्रविधि विरूद्ध साधना रूपी मवाद अर्थात् घातक साधना पर आधारित भक्त समाज को कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तत्वज्ञान समझाने के लिए यहाँ संसार में प्रकट होता है। उस समय अपने तेजोमय शरीर पर अन्य शरीर रूपी वस्त्र (हलके तेज का) पहन कर आता है। (क्योंकि परमेश्वर के वास्तविक तेजोमय शरीर को चर्म दृष्टि से नहीं देखा जा सकता।) कुछ दिन आम व्यक्ति जैसा जीवन जीकर लीला करता है तथा परमेश्वर को (अपने को) पाने वाले ज्ञान को उजागर करता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17

शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्नि मरूतो गणेन।
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्।।17।।

शिशुम् जज्ञानम् हर्य तम् मृजन्ति शुम्भन्ति वहिन मरूतः गणेन।
कविर्गीर्भि काव्येना कविर् सन्त् सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्।।

अनुवाद – पूर्ण परमात्मा (हर्य शिशुम्) विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में (जज्ञानम्) जान बूझ कर प्रकट होता है तथा अपने तत्वज्ञान को (तम्) उस समय (मृजन्ति) निर्मलता के साथ (शुम्भन्ति) उच्चारण करता है। (वह्निः) प्रभु प्राप्ति की लगी विरह अग्नि वाले (मरुतः) भक्त (गणेन) समूह के लिए (काव्येना) कविताओं द्वारा कवित्व से (पवित्रम् अत्येति) अत्यधिक वाणी निर्मलता के साथ (कविर गीर्भि) कविर वाणी अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (रेभन्) ऊंचे स्वर से सम्बोधन करके बोलता है, (कविर् सन्त् सोमः) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही संत अर्थात् ऋषि रूप में स्वयं कविर्देव ही होता है। परन्तु उस परमात्मा को न पहचान कर कवि कहने लग जाते हैं। परन्तु वह पूर्ण परमात्मा ही होता है। उसका वास्तविक नाम कविर्देव है।

भावार्थ - ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त नं. 96 मन्त्र 16 में कहा है कि आओ पूर्ण परमात्मा के वास्तविक नाम को जाने इस मन्त्र 17 में उस परमात्मा का नाम व परिपूर्ण परिचय दिया है। वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में प्रकट होकर कविर्देव अपने वास्तविक ज्ञानको अपनी कबीर बाणी के द्वारा निर्मल ज्ञान अपने हंसात्माओं अर्थात् पुण्यात्मा अनुयाइयों को कविताओं, लोकोक्तियों के द्वारा सम्बोधन करके अर्थात् उच्चारण

करके वर्णन करता है। इस तत्वज्ञान के अभाव से उस समय प्रकट परमात्मा को न पहचान कर केवल ऋषि व संत या कवि मान लेते हैं वह परमात्मा स्वयं भी कहता है कि मैं पूर्ण ब्रह्म हूँ परन्तु लोक वेद के आधार से परमात्मा को निराकार माने हुए प्रजाजन नहीं पहचानते जैसे गरीबदास जी महाराज ने काशी में प्रकट परमात्मा को पहचान कर उनकी महिमा कही तथा उस परमेश्वर द्वारा अपनी महिमा बताई थी उसका यथावत् वर्णन अपनी वाणी में किया

गरीब, जाति हमारी जगत गुरू, परमेश्वर है पंथ। दासगरीब लिख पड़े नाम निरंजन कंत।।
गरीब, हम ही अलख अल्लाह है, कुतूब गोस और पीर। गरीबदास खालिक धनी हमरा नाम कबीर।।
गरीब, ऐ स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टी हमरे तीर, दास गरीब अधर बसू। अविगत सत कबीर।।

इतना स्पष्ट करने पर भी उसे कवि या संत, भक्त या जुलाहा कहते हैं। परन्तु वह पूर्ण परमात्मा ही होता है। उसका वास्तविक नाम कविर्देव है। वह स्वयं सतपुरुष कबीर ही ऋषि या संत रूप में होता है। परन्तु तत्व ज्ञानहीन ऋषियों व संतों गुरूओं के अज्ञान सिद्धांत के आधार पर आधारित प्रजा उस समय अतिथि रूप में प्रकट परमात्मा को नहीं पहचानते क्योंकि उन अज्ञानी ऋषियों, संतों व गुरूओं में परमात्मा को निराकार बताया होता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप्।।18।।

ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्। तृतीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधि प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकृत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक होती हैं। (सोम) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष (तृतीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सत्यलोक की (महिषः) सुदृढ़ पृथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् (सन्त्) मानव सदृश संत रूप में होता हुआ (स्टुप) गुबंद अर्थात् गुम्बज में उच्चे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदृश तेजोमय शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की पदवी प्राप्त करता है अर्थात् उसे ऋषि, संत व कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् ही है। उसके द्वारा रची अमृतवाणी कबीर वाणी (कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सत्यलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदृश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस मंत्र में तीसरा धाम सतलोक को कहा है। जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात संख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र

है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का सतलोक है क्योंकि पूर्ण परमात्मा ने सत्यलोक में सत्यपुरूष रूप में विराजमान होकर नीचे के लोकों की रचना की है। इसलिए नीचे के लोकों की गणना की गई है।

यही आँखों देखा प्रमाण सन्त गरीब दास जी ने बताया है अर्स कुर्स पर सफेद गुम्बज है जहाँ सतगुरु का डेरा। ***भावार्थ यह है कि ऊपर आसमान के ऊपरी छोर पर कबीर परमेश्वर जी एक सफेद गुबंद (गुम्बज) में रहते हैं।***

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 19

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्भि सचमानाः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति।।19।।

चमूसत् श्येनः शकुनः विभृत्वा गोबिन्दुः द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्।
अपामूर्भिः सचमानः समुद्रम् तुरीयम् धाम महिषः विवक्ति।।

अनुवाद – (चमूसत्) पवित्र (गोविन्दुः) कामधेनु रूपी सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला पूर्ण परमात्मा कविर्देव (विभृत्वा) सर्व का पालन करने वाला है (श्येनः) सफेद रंग युक्त (शकुनः) शुभ लक्षण युक्त (चमूसत्) सर्वशक्तिमान है। (द्रप्सः) जैसे दूध से दही बनाने की विधी होती ऐसे शास्त्रानुकूल साधना से दही रूपी पूर्ण मुक्ति दाता (आयुधानि) तत्व ज्ञान रूपी काल जाल विनाशक धनुष युक्त सारंगपाणी प्रभु है। (सचमानः) वास्तविक (बिभ्रत्) सर्व का पालन–पोषण करता है। (अपामूर्भिः) गहरे जल युक्त (समुद्रम्) सागर की तरह गहरा गम्भीर अर्थात् विशाल (तुरीयम्) चौथे (धाम) लोक अर्थात् अनामी लोक में (महिषः) उज्जवल सुदृढ़ पृथ्वी पर (विवक्ति) अलग स्थान पर भिन्न भी रहता है यह जानकारी कविर्देव स्वयं ही भिन्न–भिन्न करके विस्तार से देता है।

भावार्थ - मंत्र 18 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सतलोक में एक गुम्बज में रहता है। इस मंत्र 19 में कहा है कि अत्यधिक सफेद रंग वाला पूर्ण प्रभु जो कामधेनु की तरह सर्व मनोकामना पूर्ण करने वाला है, वही वास्तव में सर्व का पालन कर्ता है। वही कविर्देव जो मृतलोक में शिशु रूप धारकर आता है वही जैसे दूध से दही बनाने की विधी होती है ऐसे पूर्ण मोक्ष प्राप्त करने की शास्त्रविधि अनुसार साधना बता कर पूर्ण मोक्ष रूपी दही प्रदान करने वाला है तत्वज्ञान रूपी शास्त्र अर्थात् धनुष युक्त होने से सारंगपाणी है तथा जैसे समुद्र सर्व जल का स्रोत है वैसे ही पूर्ण परमात्मा से सर्व की उत्पत्ति हुई है। गीता अध्याय 15 श्लोक 3 में कहा है कि संसार रूपी वृक्ष को तत्त्वज्ञान रूपी शस्त्र द्वारा काटकर अर्थात् तत्त्वज्ञान द्वारा संशय समाप्त करके उस के पश्चात् उस परम पद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जहां जाने के पश्चात् साधक लौटकर कभी संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण हो जाते हैं। जिस परमेश्वर से सर्व संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है। वह पूर्ण प्रभु चौथे धाम अर्थात् अनामी लोक में रहता हैं, जैसे प्रथम सतलोक दूसरा अलख लोक, तीसरा अगम लोक, चौथा अनामी लोक है। इसलिए इस मंत्र 19 में स्पष्ट किया है कि कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अनामी पुरुष रूप में चौथे धाम अर्थात् अनामी लोक में भी अन्य तेजोमय रूप धारण करके रहता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 20

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम्।

वृषेव यूथा परि कोशमर्षनकनिक्रदच्चम्बो३रा विवेश।।20।।

मर्यः न शुभ्रस्तन्वम् मृजानः अत्यः न सृत्वा सनये धनानाम्

वृषेव यूथा परिकोशम् अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः इरा विवेश

अनुवाद – पूर्ण परमात्मा कविर्देव जो चौथे धाम अर्थात् अनामी लोक में तथा तीसरे धाम अर्थात् सत्यलोक में रहता है वही परमात्मा (न मर्यः) मनुष्य जैसा है परन्तु नाश रहित अर्थात् अमर (मृजनः) निर्मल मुखमण्डल युक्त आकार में (अत्यः) बहुत (शुभ्रस्तन्वम्) विशाल श्वेत शरीर धारण करता हुआ ऊपर के लोकों में विद्यमान है तथा वहाँ से (सृत्वा) गति करके अर्थात् चलकर जिसका किसी को पता नहीं चलता वही समरूप परमात्मा (इरा) पृथ्वी पर (विवेश) अन्य वेशभूषा अर्थात् भिन्न रूप (चम्वोः) धारण करके आता है। सतलोक तथा पृथ्वी लोक पर लीला करता है (यथा) बहुत बड़े समुह को वास्तविक (सनये) सनातन पूजा की (वृषेव) वर्षा करके (न धनानाम्) उन रामनाम की कमाई के निर्धनों को (कनिक्रदत्) मंद स्वर से अर्थात् स्वांस–उस्वांस से मन ही मन में उचारण करके पूजा करवाता है, जिससे असंख्य अनुयाइयों का पूरा संघ (परि कोशम्) पूर्व वाले सुख सागर रूप अमृत खजाने अर्थात् सत्यलोक को (अर्षन्) पूजा करके प्राप्त करता है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ऊपर तीसरे धाम अर्थात् सत्यलोक में रहता है तथा वही परमेश्वर अन्य मनुष्य रूप धारण करके चौथे धाम अर्थात् अनामी लोक में रहता है। वही परमात्मा वैसा ही मनुष्य वाला समरूप सुन्दर मुखमण्डल युक्त श्वेत शरीर युक्त आकार में यहाँ पृथ्वी लोक पर भी आता है तथा अपनी वास्तविक पूजा विधि का ज्ञान करवा कर बहुत सारे समूह को अर्थात् पूरे संघ को सत्यभक्ति के धनी बनाता है, असंख्य अनुयाइयों का पूरा संघ सत्य भक्ति की कमाई से पूर्व वाले सुखमय लोक पूर्ण मुक्ति के खजाने को अर्थात् सत्यलोक को साधना करके प्राप्त करता है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक न. 1, मन्त्र नं. 7**(संत रामपाल दास द्वारा भाषा भाष्य) :-**

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।

त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च—गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देवबन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) सबसे बड़ा स्वामी ज्ञान दाता जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) जो सतलोक जा चुके हैं उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों को (जनिता) रचने वाला (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः कविर्/देवः) कबीर परमेश्वर अर्थात् कविर्देव है।

भावार्थ :- जिस परमेश्वर के विषय में कहा जाता है - त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणम्, त्वमेव सर्वम् मम् देव देव।। वह जो अविनाशी सर्व का माता पिता तथा भाई व सखा व जगत गुरु रूप में सर्व को सत्य भक्ति प्रदान करके सतलोक ले जाने वाला, काल की तरह धोखा न देने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है।

कबीर साहेब चारों युगों में आते हैं

सतगुरु पुरुष कबीर हैं, चारों युग प्रवान।
झूठे गुरुवा मर गए, हो गए भूत मसान।।

"सतयुग में कविर्देव (कबीर साहेब) का सत्सुकृत नाम से प्राकाट्य"

तत्वज्ञान के अभाव से श्रद्धालु शंका व्यक्त करते हैं कि जुलाहे रूप में कबीर जी तो वि. सं. 1455 (सन् 1398) में काशी में आए हैं। वेदों में कविर्देव यही काशी वाला जुलाहा (धाणक) कैसे पूर्ण परमात्मा हो सकता है?

इस विषय में दास (सन्त रामपाल दास) की प्रार्थना है कि यही पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) वेदों के ज्ञान से भी पूर्व सतलोक में विद्यमान थे तथा अपना वास्तविक ज्ञान (तत्वज्ञान) देने के लिए चारों युगों में भी स्वयं प्रकट हुए हैं। सतयुग में सतसुकृत नाम से, त्रेतायुग में मुनिन्द्र नाम से, द्वापर युग में करूणामय नाम से तथा कलयुग में वास्तविक कविर्देव (कबीर प्रभु) नाम से प्रकट हुए हैं। इसके अतिरिक्त अन्य रूप धारण करके कभी भी प्रकट होकर अपनी लीला करके अन्तर्ध्यान हो जाते हैं। उस समय लीला करने आए परमेश्वर को प्रभु चाहने वाले श्रद्धालु नहीं पहचान सके, क्योंकि सर्व महर्षियों व संत कहलाने वालों ने प्रभु को निराकार बताया है। वास्तव में परमात्मा आकार में है। मनुष्य सदृश शरीर युक्त हैं। परंतु परमेश्वर का शरीर नाड़ियों के योग से बना पांच तत्व का नहीं है। एक नूर तत्व से बना है। पूर्ण परमात्मा जब चाहे यहाँ प्रकट हो जाते हैं वे कभी मां से जन्म नहीं लेते क्योंकि वे सर्व के उत्पत्ति कर्त्ता हैं।

पूर्ण प्रभु कबीर जी (कविर्देव) सतयुग में सतसुकृत नाम से स्वयं प्रकट हुए थे। उस समय गरुड़ जी, श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि को सतज्ञान समझाया था। श्री मनु महर्षि जी को भी तत्वज्ञान समझाना चाहा था। परन्तु श्री मनु जी ने परमेश्वर के ज्ञान को सत न जानकर श्री ब्रह्मा जी से सुने वेद ज्ञान पर आधारित होकर तथा अपने द्वारा निकाले वेदों के निष्कर्ष पर ही आरूढ़ रहे। इसके विपरीत परमेश्वर सतसुकृत जी का उपहास करने लगे कि आप तो सर्व विपरीत ज्ञान कह रहे हो। इसलिए परमेश्वर सतसुकृत का उर्फ नाम वामदेव निकाल लिया (वाम का अर्थ होता है उल्टा, विपरीत जैसे बायां हाथ को वामा अर्थात् उलटा हाथ भी कहते हैं। जैसे दायें हाथ को सीधा हाथ भी कहते हैं)।

इस प्रकार सतयुग में परमेश्वर कविर्देव जी जो सतसुकृत नाम से आए थे उस समय के ऋषियों व साधकों को वास्तविक ज्ञान समझाया करते थे। परन्तु ऋषियों ने स्वीकार नहीं किया। सतसुकृत जी के स्थान पर परमेश्वर को ''वामदेव'' कहने लगे।

इसी लिए यजुर्वेद अध्याय 12 मंत्र 4 में विवरण है कि यजुर्वेद के वास्तविक ज्ञान को वामदेव ऋषि ने सही जाना तथा अन्य को समझाया। पवित्र वेदों के ज्ञान को समझने के लिए कृपया विचार करें - जैसे यजुर्वेद है, यह एक पवित्र पुस्तक है। इस के

विषय में कहीं संस्कृत भाषा में विवरण किया हो जहां यजुः या यजुम् आदि शब्द लिखें हो तो भी पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध समझा जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव है। इसी को भिन्न-भिन्न भाषा में कबीर साहेब, कबीर परमेश्वर कहने लगे। कई श्रद्धालु शंका व्यक्त करते हैं कि कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया। व्याकरण दृष्टिकोण से कविः का अर्थ सर्वज्ञ होता है। दास की प्रार्थना है कि प्रत्येक शब्द का कोई न कोई अर्थ तो बनता ही है। रही बात व्याकरण की। भाषा प्रथम बनी क्योंकि वेद वाणी प्रभु द्वारा कही है, तथा व्याकरण बाद में ऋषियों द्वारा बनाई है। यह त्रुटि युक्त हो सकती है। वेद के अनुवाद (भाषा-भाष्य) में व्याकरण व्यतय है अर्थात् असंगत तथा विरोद्ध भाव है। क्योंकि वेद वाणी मंत्रों द्वारा पदों में है। जैसे पलवल शहर के आस-पास के व्यक्ति पलवल को परवर बोलते हैं। यदि कोई कहे कि पलवल को कैसे परवर सिद्ध कर दिया। यही कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया कहना मात्र है। जैसे क्षेत्रिय भाषा में पलवल शहर को परवर कहते हैं। इसी प्रकार कविर् को कबीर बोलते हैं, प्रभु वही है। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' समुल्लास 4 पृष्ठ 100 पर (दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित पर) ''देवृकामा''का अर्थ देवर की कामना करने किया है देवृ को पूरा '' र '' लिख कर देवर किया है। कविर् को कविर फिर भाषा भिन्न कबीर लिखने व बोलने में कोई आपत्ति या व्याकरण की त्रुटि नहीं है। पूर्ण परमात्मा कविर्देव है, यह प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 तथा सामवेद संख्या 1400 में भी है जो निम्न है :-

यजुर्वेद के अध्याय नं. 29 के श्लोक नं. 25 **(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य) :-**

समिद्धोऽद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः—अद्य—मनुषः—दुरोणे—देवः—देवान्—यज्—असि—जातवेदः— आ— च—वह—मित्रमहः—चिकित्वान्—त्वम्—दूतः—कविर्—असि—प्रचेताः

अनुवाद :— (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः) देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरूष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा ही अपने (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविरसि) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर हैं।

भावार्थ - जिस समय पूर्ण परमात्मा प्रकट होता है उस समय सर्व ऋषि व सन्त जन शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण अर्थात् पूजा द्वारा सर्व भक्त समाज को मार्ग दर्शन कर रहे होते हैं। तब अपने तत्वज्ञान अर्थात् स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक बन कर स्वयं ही कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु ही आता है।

संख्या नं. 1400 सामवेद उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5

(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।

आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ।।5।।

भद्रा–वस्त्रा–समन्या–वसानः–महान्–कविर्–निवचनानि–शंसन्– आवच्यस्व–चम्वोः– पूयमानः–विचक्षणः– जागृविः–देव–वीतौ

अनुवाद :– (विचक्षणः) चतुर व्यक्तियों ने (आवच्यस्व) अपने वचनों द्वारा कहा होता है कि जो हम प्रवचन करते हैं इन का अनुसरण करो। उन चतुर व्यक्तियों ने पूर्णब्रह्म की पूजा को न बताकर आन उपासना का मार्ग दर्शन करके अमृत के स्थान पर (पूयमानः) आन उपासना रूपी मवाद {जैसे भूत–प्रेत पूजा, पित्र पूजा, तीनों गुणों (रजगुण–ब्रह्मा, सतगुण–विष्णु, तमगुण–शिव शंकर) तथा ब्रह्म–काल तक की पूजा} को (चम्वोः) आदर के साथ आचमन करा रहे अर्थात् शास्त्र विरुद्ध गलत ज्ञान को समाप्त करने के लिए (भद्रा) परमसुखदायक (महान् कविर्) महान कविर अर्थात् पूर्ण परमात्मा कबीर (वस्त्रा) सशरीर साधारण वेशभूषा में ''अर्थात् वस्त्र का अर्थ है वेशभूषा, संत भाषा में इसे चोला भी कहते हैं, चोला का अर्थ है शरीर। यदि किसी संत का देहान्त हो जाता है तो कहते हैं कि चोला छोड़ गए'' (समन्या) अपने सतलोक वाले शरीर के सदृश अन्य शरीर हल्के तेजपुंज का धारकर (वसानः) आम व्यक्ति की तरह जीवन जी कर कुछ दिन संसार में अतिथि की तरह वस कर (निवचनानि) अपनी शब्दावली कबीर वाणी आदि के माध्यम से सतज्ञान (शंसन्) वर्णन करके (देव) पूर्ण परमात्मा के (वीतौ) छिपे हुए सर्गुण–निर्गुण ज्ञान रूपी धन को (जागृविः) जाग्रत करते हैं।

भावार्थ :- जैसे यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र एक में कहा है कि 'अग्नेः तनः असि = परमेश्वर सशरीर है। विष्णवे त्वा सोमस्य तनुः असि = उस अमर प्रभु का पालन पोषण करने के लिए अन्य शरीर है जो अतिथि रूप में कुछ दिन संसार में आता है। तत्व ज्ञान से अज्ञान निंद्रा में सोए प्रभु प्रेमियों को जगाता है। वही प्रमाण इस मंत्र में है कि कुछ समय के लिए पूर्ण परमात्मा कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु अपना रूप बदलकर सामान्य व्यक्ति जैसा रूप बनाकर पृथ्वी मण्डल पर प्रकट होता है तथा कविर्निवचनानि शंसन् अर्थात् कविर्वाणी बोलता है। जिसके माध्यम से तत्वज्ञान को जगाता है तथा उस समय महर्षि कहलाने वाले चतुर प्राणी मिथ्याज्ञान के आधार पर शास्त्र विधि अनुसार सत्य साधना रूपी अमृत के स्थान पर शास्त्र विधि रहित पूजा रूपी मवाद को श्रद्धा के साथ आचमन अर्थात् पूजा करा रहे होते हैं। उस समय पूर्ण परमात्मा स्वयं प्रकट होकर तत्वज्ञान द्वारा शास्त्र विधि अनुसार साधना का ज्ञान प्रदान करता है।

पवित्र ऋग्वेद के निम्न मंत्रों में भी पहचान बताई है कि जब वह पूर्ण परमात्मा कुछ समय संसार में लीला करने आता है तो शिशु रूप धारण करता है। उस पूर्ण परमात्मा की परवरिश (अध्न्य धेनवः) कंवारी गाय द्वारा होती है। फिर लीलावत् बड़ा होता है तो अपने पाने व सतलोक जाने अर्थात् पूर्ण मोक्ष मार्ग का तत्वज्ञान (कविर्गिभिः) कबीर बाणी द्वारा कविताओं द्वारा बोलता है, जिस कारण से प्रसिद्ध कवि कहलाता है, परन्तु वह स्वयं कविर्देव पूर्ण परमात्मा ही होता है जो तीसरे मुक्ति धाम सतलोक में रहता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 तथा सूक्त 96 मंत्र 17-18 :-

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

अनुवाद : –(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुख सुविधाओं द्वारा अर्थात् खाने–पीने द्वारा जो शरीर वृद्धि को प्राप्त होता है उसे (पातवे) वृद्धि के लिए (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हो अर्थात् कंवारी गाय द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआ बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है उस समय कंवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरीष होती है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17

शिशुम् जज्ञानम् हर्य तम् मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निमरूतः गणेन।
कविर्गीर्भि काव्येना कविर् सन्त् सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्।।17।।

अनुवाद – पूर्ण परमात्मा (हर्य शिशुम्) मनुष्य के बच्चे के रूप में (जज्ञानम्) जान बूझ कर प्रकट होता है तथा अपने तत्वज्ञान को (तम्) उस समय (मृजन्ति) निर्मलता के साथ (शुम्भन्ति) उच्चारण करता है। (वह्नि) प्रभु प्राप्ति की लगी विरह अग्नि वाले (मरुतः) वायु की तरह शीतल भक्त (गणेन) समूह के लिए (काव्येना) कविताओं द्वारा कवित्व से (पवित्रम् अत्येति) अत्यधिक निर्मलता के साथ (कविर गीर्भि) कविर वाणी अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (रेभन्) ऊंचे स्वर से सम्बोधन करके बोलता है, (कविर् सन्त् सोमः) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही संत अर्थात् ऋषि रूप में स्वयं कविर्देव ही होता है। परन्तु उस परमात्मा को न पहचान कर कवि कहने लग जाते हैं।

भावार्थ - वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में प्रकट होकर पूर्ण परमात्मा कविर्देव अपने वास्तविक ज्ञानको अपनी कविर्गिभिः अर्थात् कबीर बाणी द्वारा निर्मल ज्ञान अपने हंसात्माओं अर्थात् पुण्यात्मा अनुयाइयों को कवि रूप में कविताओं, लोकोक्तियों के द्वारा सम्बोधन करके अर्थात् उच्चारण करके वर्णन करता है। वह स्वयं सतपुरुष कबीर ही होता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्।
तृतीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।18।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधी प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकृत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक होती हैं। (सन्त् सोमः) ऋषि/संत रूप से प्रकट वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही होता है, वह पूर्ण प्रभु (तृतीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सतलोक की (महिषः) सुदृढ़ पृथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् मानव सदृश संत रूप में (स्टुप्) गुबंद अर्थात् गुम्बज में ऊँचे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदृश शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की

पदवी प्राप्त करता है अर्थात् उसे कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् (कबीर प्रभु) ही है। उसके द्वारा रची अमृतवाणी कबीर वाणी (कविर्गिरः अर्थात् कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सतलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदृश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस मंत्र में तीसरा धाम सतलोक को कहा है। जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात संख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का ऋतधाम अर्थात् सतलोक है।

"त्रेतायुग में कविर्देव (कबीर साहेब) का मुनिन्द्र नाम से प्राकाट्य"

"नल तथा नील को शरण में लेना"

त्रेतायुग में स्वयंभु (स्वयं प्रकट होने वाला) कविर्देव (कबीर परमेश्वर) रूपान्तर करके मुनिन्द्र ऋषि के नाम से आए हुए थे। अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील। दोनों आपस में मौसी के पुत्र थे। माता-पिता का देहान्त हो चुका था। नल तथा नील दोनों शारीरिक व मानसिक रोग से अत्यधिक पीड़ीत थे। सर्व ऋषियों व सन्तों से कष्ट निवारण की प्रार्थना कर चुके थे। सर्व सन्तों ने बताया था कि यह आप का प्रारब्ध का पाप कर्म का दण्ड है, यह आपको भोगना ही पड़ेगा। इसका कोई समाधान नहीं है। दोनों दोस्त जीवन से निराश होकर मृत्यु का इंतजार कर रहे थे।

एक दिन दोनों को मुनिन्द्र नाम से प्रकट पूर्ण परमात्मा का सतसंग सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। सत्संग के उपरांत ज्यों ही दोनों ने परमेश्वर कविर्देव (कबीर साहेब) उर्फ मुनिन्द्र ऋषि जी के चरण छुए तथा परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने सिर पर हाथ रखा तो दोनों का असाध्य रोग छू मन्त्र हो गया अर्थात् दोनों नल तथा नील स्वस्थ हो गए। इस अद्भुत चमत्कार को देख कर प्रभु के चरणों में गिर कर घण्टों रोते रहे तथा कहा आज हमें प्रभु मिल गया जिसकी तलाश थी तथा उससे प्रभावित होकर उनसे नाम (दीक्षा) ले लिया तथा मुनिन्द्र साहेब जी के साथ ही सेवा में रहने लगे। पहले संतों का समागम पानी की व्यवस्था देख कर नदी के किनारे पर होता था। नल और नील दोनों बहुत प्रभु प्रेमी तथा भोली आत्माएँ थी। परमात्मा में श्रद्धा बहुत थी। सेवा बहुत किया करते थे। समागमों में रोगी व वृद्ध व विकलांग भक्तजन आते तो उनके कपड़े धोते तथा बर्तन साफ करते। उनके लोटे और गिलास मांज देते थे। परंतु थे भोले से दिमाग के। कपड़े धोने लग जाते तो सत्संग में जो प्रभु की कथा सुनी होती उसकी चर्चा करने लग जाते। वे दोनों प्रभु चर्चा में बहुत मस्त हो जाते और वस्तुएँ दरिया के जल में डूब जाती। उनको पता भी नहीं चलता। किसी की चार वस्तु ले कर जाते तो दो वस्तु वापिस ला कर देते थे। भक्तजन कहते कि भाई आप सेवा तो बहुत करते हो, परंतु हमारा तो बहुत काम बिगाड़ देते हो। ये खोई हुई वस्तुएँ हम कहाँ से

ले कर आयें? आप हमारी सेवा ही करनी छोड़ दो। हम अपनी सेवा आप ही कर लेंगे। फिर नल तथा नील रोने लग जाते थे कि हमारी सेवा न छीनों। अब की बार नहीं खोएँगे। परन्तु फिर वही काम करते। फिर प्रभु की चर्चा में लग जाते और वस्तुएँ दरिया जल में डूब जाती। भक्तजनों ने ऋषि मुनिन्द्र जी से प्रार्थना की कि कृपा नल तथा नील को समझाओ। ये न तो मानते है और मना करते हैं तो रोने लग जाते हैं। हमारी तो आधी भी वस्तुएँ वापिस नहीं लाते। ये नदी किनारे सत्संग में सुनी भगवान की चर्चा में मस्त हो जाते हैं और वस्तुएँ डूब जाती हैं। मुनिन्द्र साहेब ने एक दो बार तो उन्हें समझाया। वे रोने लग जाते थे कि साहेब हमारी ये सेवा न छीनों। सतगुरु मुनिन्द्र साहेब ने कहा बेटा नल तथा नील खूब सेवा करो, आज के बाद आपके हाथ से कोई भी वस्तु चाहे पत्थर या लोहा भी क्यों न हो जल में नहीं डुबेगी। मुनिन्द्र साहेब ने उनको यह आशीर्वाद दे दिया।

आपने रामायण सुनी है। एक समय की बात है कि सीता जी को रावण उठा कर ले गया। भगवान राम को पता भी नहीं कि सीता जी को कौन उठा ले गया? श्री रामचन्द्र जी इधर उधर खोज करते हैं। हनुमान जी ने खोज करके बताया कि सीता माता लंकापति रावण (राक्षस) की कैद में है। पता लगने के बाद भगवान राम ने रावण के पास शान्ति दूत भेजे तथा प्रार्थना की कि सीता लौटा दे। परन्तु रावण नहीं माना। युद्ध की तैयारी हुई। तब समस्या यह आई कि समुद्र से सेना कैसे पार करें?

भगवान श्री रामचन्द्र ने तीन दिन तक घुटनों पानी में खड़ा होकर हाथ जोड़कर समुद्र से प्रार्थना की कि रास्ता दे दे। परन्तु समुद्र टस से मस न हुआ। जब समुद्र नहीं माना तब श्री राम ने उसे अग्नि बाण से जलाना चाहा। भयभीत समुद्र एक ब्राह्मण का रूप बनाकर सामने आया और कहा कि भगवन सबकी अपनी-अपनी मर्यादाएँ हैं। मुझे जलाओ मत। मेरे अंदर न जाने कितने जीव-जंतु बसे हैं। अगर आप मुझे जला भी दोगे तो भी आप मुझे पार नहीं कर सकते, क्योंकि यहाँ पर बहुत गहरा गड्डा बन जायेगा, जिसको आप कभी भी पार नहीं कर सकते।

समुद्र ने कहा भगवन ऐसा काम करो कि सर्प भी मर जाए और लाठी भी न टूटे। मेरी मर्यादा भी रह जाए और आपका पुल भी बन जाए। तब भगवान श्री राम ने समुद्र से पूछा कि वह क्या विधि है ? ब्राह्मण रूप में खडे समुद्र ने कहा कि आपकी सेना में नल और नील नाम के दो सैनिक हैं। उनके पास उनके गुरुदेव से प्राप्त एक ऐसी शक्ति है कि उनके हाथ से पत्थर भी जल पर तैर जाते हैं। हर वस्तु चाहे वह लोहे की हो, तैर जाती है। श्री रामचन्द्र ने नल तथा नील को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या आपके पास कोई ऐसी शक्ति है? नल तथा नील ने कहा कि हाँ जी, हमारे हाथ से पत्थर भी जल नहीं डुबेंगे। श्रीराम ने कहा कि परीक्षण करवाओ।

उन नादानों (नल-नील) ने सोचा कि आज सब के सामने तुम्हारी बहुत महिमा होगी। उस दिन उन्होंने अपने गुरुदेव भगवान मुनिन्द्र(कबीर साहेब) को यह सोचकर याद नहीं किया कि अगर हम उनको याद करेंगे तो कहीं श्रीराम ये न सोच लें कि इनके पास शक्ति नहीं है, यह तो कहीं और से मांगते हैं। उन्होंने पत्थर उठाकर पानी

में डाला तो वह पत्थर पानी में डूब गया। नल तथा नील ने बहुत कोशिश की, परन्तु उनसे पत्थर नहीं तैरे। तब भगवान राम ने समुद्र की ओर देखा मानो कहना चाह रहे हों कि आप तो झूठ बोल रहे हो। इनमें तो कोई शक्ति नहीं है। समुद्र ने कहा कि नल-नील आज तुमने अपने गुरुदेव को याद नहीं किया। नादानों अपने गुरुदेव को याद करो। वे दोनों समझ गए कि आज तो हमने गलती कर दी। उन्होंने सतगुरु मुनिन्द्र साहेब जी को याद किया। सतगुरु मुनिन्द्र (कबीर साहेब) वहाँ पर पहुँच गए। भगवान रामचन्द्र जी ने कहा कि हे ऋषिवर! मेरा दुर्भाग्य है कि आपके सेवकों के हाथों से पत्थर नहीं तैर रहे हैं। मुनिन्द्र साहेब ने कहा कि अब इनके हाथ से तैरेंगे भी नहीं, क्योंकि इनको अभिमान हो गया है। सतगुरु की वाणी प्रमाण करती है कि:-

गरीब, जैसे माता गर्भ को, राखे जतन बनाय।
ठेस लगे तो क्षीण होवे, तेरी ऐसे भक्ति जाय।

उस दिन के पश्चात् नल तथा नील की वह शक्ति समाप्त हो गई। श्री रामचन्द्र जी ने परमेश्वर मुनिन्द्र साहेब जी से कहा कि हे ऋषिवर! मुझ पर बहुत आपत्ति आयी हुई है। दया करो किसी प्रकार सेना परले पार हो जाए। जब आप अपने सेवकों को शक्ति दे सकते हो तो प्रभु कुछ रजा करो। मुनिन्द्र साहेब ने कहा कि यह जो सामने वाला पहाड़ है, मैंने उसके चारों तरफ एक रेखा खींच दी है। इसके बीच-बीच के पत्थर उठा लाओ, वे नहीं डूबेंगे। श्री राम ने परीक्षण के लिए पत्थर मंगवाया। उसको पानी पर रखा तो वह तैरने लग गया। नल तथा नील कारीगर (शिल्पकार) भी थे। हनुमान जी प्रतिदिन भगवान याद किया करते थे। उसने अपनी दैनिक क्रिया भी साथ रखी राम राम भी लिखता रहा और पहाड़ के पहाड़ उठा कर ले आता था। नल नील उनको जोड़-तोड़ कर पुल में लगा लेते थे। इस प्रकार पुल बना था। धर्मदास जी कहते हैं :-

रहे नल नील जतन कर हार, तब सतगुरू से करी पुकार।
जा सत रेखा लिखी अपार, सिन्धु पर शिला तिराने वाले।
धन–धन सतगुरु सत कबीर, भक्त की पीर मिटाने वाले।

कोई कहता था कि हनुमान जी ने पत्थर पर राम का नाम लिख दिया था इसलिए पत्थर तैर गये। कोई कहता था कि नल-नील ने पुल बनाया था। कोई कहता था कि श्रीराम ने पुल बनाया था। परन्तु यह सत कथा ऐसे है, जैसे आपको ऊपर बताई गई है।

(सत कबीर की साखी - पृष्ठ 179 से 182 तक)

-: पीव पिछान को अंग :-

कबीर– तीन देव को सब कोई ध्यावै, चौथे देव का मरम न पावै।
चौथा छाड़ पंचम को ध्यावै, कहै कबीर सो हम पर आवै।।3।।

कबीर– ओंकार निश्चय भया, यह कर्ता मत जान।
साचा शब्द कबीर का, परदे मांही पहचान।।5।।

कबीर– राम कृष्ण अवतार हैं, इनका नांही संसार।
जिन साहेब संसार किया, सो किन्हूं न जन्म्या नार।।17।।

कबीर – चार भुजा के भजन में, भूलि परे सब संत।
कबिरा सुमिरो तासु को, जाके भुजा अनंत।।23।।
कबीर – समुद्र पाट लंका गये, सीता को भरतार।
ताहि अगस्त मुनि पीय गयो, इनमें को करतार।।26।।
कबीर – गोवर्धनगिरि धारयो कृष्ण जी, द्रोणागिरि हनुमंत।
शेष नाग सब सृष्टी सहारी, इनमें को भगवंत।।27।।
कबीर – काटे बंधन विपति में, कठिन किया संग्राम।
चिन्हों रे नर प्राणियां, गरुड बड़ो की राम।।28।।
कबीर – कह कबीर चित चेतहूं, शब्द करौ निरूवार।
श्रीरामहि कर्ता कहत हैं, भूलि परयो संसार।।29।।
कबीर – जिन राम कृष्ण व निरंजन कियो, सो तो करता न्यार।
अंधा ज्ञान न बूझई, कहै कबीर विचार।।30।।

"द्वापरयुग में कविर्देव (कबीर साहेब) का करूणामय नाम से प्राकाट्य"

परमेश्वर कबीर (कविर्देव) द्वापर युग में करूणामय नाम से प्रकट हुए थे। उस समय एक वाल्मीक जाति में उत्पन्न भक्त सुदर्शन सुपच (अनुसुचित जाति का) उनका शिष्य हुआ था। इसी सुदर्शन जी ने पाण्डवों की यज्ञ सफल की थी। जो न तो श्री कृष्ण जी के भोजन करने से सफल हुई थी, न ही तेतीस करोड़ देवताओं, अठासी हजार ऋषियों, बारह करोड़ ब्राह्मणों, नौ नाथों, चौरासी सिद्धों आदि के भोजन खाने से सफल हुई थी। भक्त सुदर्शन वाल्मीक पूर्ण गुरु जी से वास्तविक तीन मंत्र प्राप्त करके सत साधना गुरु मर्यादा में रहते हुए कर रहा था।

"द्वापर युग में इन्द्रमति को शरण में लेना"

द्वापरयुग में चन्द्रविजय नाम का एक राजा था। उसकी पत्नी इन्द्रमति बहुत ही धार्मिक प्रवृति की औरत थी। संत-महात्माओं का बहुत आदर किया करती थी। उसने एक गुरुदेव भी बना रखा था। उनके गुरुदेव ने बताया था कि बेटी साधु-संतों की सेवा करनी चाहिए। संतों को भोजन खिलाने से बहुत लाभ होता है। एकादशी का व्रत, मन्त्र के जाप आदि साधनायें जो गुरुदेव ने बताई थी, वह भगवत् भक्ति में बहुत दृढता से लगी हुई थी। गुरुदेव ने बताया था कि संतों को भोजन खिलाया करेगी तो तू आगे भी रानी बन जाएगी और तुझे स्वर्ग प्राप्ति होगी। रानी ने सोचा कि प्रतिदिन एक संत को भोजन अवश्य खिलाया करूँगी। उसने यह प्रतिज्ञा मन में ठान ली कि मैं खाना बाद में खाया करूँगी, पहले संत को खिलाया करूँगी। इससे मुझे याद बनी रहेगी। कहीं मुझे भूल न पड़ जाये। रानी प्रतिदिन पहले एक संत को भोजन खिलाती फिर स्वयं खाती। वर्षों तक ये क्रम चलता रहा।

एक समय हरिद्वार में कुम्भ के मेले का संयोग हुआ। जितने भी त्रिगुण माया के

उपासक संत थे सभी गंगा में स्नान के लिए (परभी लेने के लिए) प्रस्थान कर गये। इस कारण से कई दिन रानी को भोजन कराने के लिए कोई संत नहीं मिला। रानी इन्द्रमति ने भी प्रतिज्ञा वश स्वयं भी भोजन नहीं किया। चौथे दिन रानी इन्द्रमति ने अपनी बांदी से कहा कि बांदी देख ले कोई संत मिल जाए तो। नहीं तो आज तेरी रानी जीवित नहीं रहेगी। आज मेरे प्राण निकल जाएँगे परन्तु मैं खाना नहीं खाऊँगी। वह दीन दयाल कबीर परमेश्वर अपने पूर्व वाले भक्त को शरण में लेने के लिए न जाने क्या कारण बना देता है ? बांदी ने ऊपर अटारी पर चढ़कर देखा कि सामने से एक संत आ रहा था। सफेद कपड़े थे। द्वापर युग में परमेश्वर कबीर करूणामय नाम से आये थे। बांदी नीचे आई और रानी से कहा कि एक व्यक्ति है जो साधु जैसा नजर आता है। रानी ने कहा कि जल्दी से बुला ला। बांदी महल से बाहर गई तथा प्रार्थना की कि हे महात्मा जी! आपको हमारी रानी ने याद किया है। करूणामय साहेब ने कहा कि रानी ने मुझे क्यों याद किया है, मेरा और रानी का क्या सम्बन्ध? नौकरानी ने सारी बात बताई। करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि रानी को आवश्यकता पड़े तो यहाँ आ जाए, मैं यहाँ खड़ा हूँ। तू बांदी और वह रानी। मैं वहाँ जाऊँ और यदि वह कह दे कि तुझे किसने बुलाया था या उसका राजा ही कुछ कह दे और बेटी संतों का अनादर बहुत पापदायक होता है। बांदी फिर वापिस आई और रानी से सब वार्ता कह सुनाई। तब रानी ने कहा कि बांदी मेरा हाथ पकड़ और चल। जाते ही रानी ने दण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना की कि हे परवरदिगार! चाहती तो हूँ कि आपको कंधे पर बैठा लूं। करूणामय साहेब ने कहा बेटी ! मैं यही देखना चाहता था कि तेरे में कोई श्रद्धा भी है या वैसे ही भूखी मर रही है। रानी ने अपने हाथों खाना बनाया। करूणामय रूप में आए कविर्देव ने कहा कि मैं खाना नहीं खाता। मेरा शरीर खाना खाने का नहीं है। तो रानी ने कहा कि मैं भी खाना नहीं खाऊँगी। करूणामय साहेब जी ने कहा कि ठीक है बेटी लाओ खाना खाते हैं, क्योंकि समर्थ उसी को कहते हैं जो, जो चाहे, सो करे। करूणामय साहेब ने खाना खा लिया, करूणामय रूप में प्रकट कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने रानी से पूछा कि जो यह तू साधना कर रही है यह तेरे को किसने बताई है? रानी ने कहा कि मेरे गुरुदेव ने आदेश दिया है? कबीर साहेब ने पूछा क्या आदेश दिया है तेरे गुरुदेव ने? इन्द्रमती ने कहा कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश की पूजा, एकादशी का व्रत, तीर्थ भ्रमण, देवी पूजा, श्राद्ध निकालना, मन्दिर में जाना, संतों की सेवा करना। करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि जो साधना तेरे गुरुदेव ने दी है तेरे को जन्म और मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक के चक्र में रखेगी व चौरासी लाख योनियों के कष्ट से मुक्त नहीं होने देगी। रानी ने कहा कि महाराज जी जितने भी संत हैं, अपनी-अपनी प्रभुता आप ही बनाने आते हैं। मेरे गुरुदेव के बारे में कुछ नहीं कहोगे। मैं चाहे मुक्त होऊँ या न होऊँ।

अब करूणामय (कबीर) साहेब सोचते हैं कि इस भोले जीव को कैसे समझाए? इन्होंने जो पूछ पकड़ ली उसको छोड़ नहीं सकते, मर सकते हैं। करूणामय साहेब ने कहा कि बेटी वैसे तो तेरी ईच्छा है, मैं निंदा नहीं कर रहा। क्या मैंने आपके गुरुदेव

को गाली दी है या कोई बुरा कहा है? मैं तो भक्तिमार्ग बता रहा हूँ कि यह भक्ति शास्त्र विरूद्ध है। तुझे पार नहीं होने देगी और न ही तेरा कोई आने वाला कर्म दण्ड कटेगा और सुन ले आज से तीसरे दिन तेरी मृत्यु हो जाएगी। न तेरा गुरु बचा सकेगा और न तेरी यह नकली साधना बचा सकेगी। (जब मरने की बारी आती है फिर जीव को डर लगता है। वैसे तो नहीं मानते) रानी ने सोचा कि संत झूठ नहीं बोलते। कहीं ऐसा न हो कि मैं परसों ही मर जाऊँ। इस डर से करूणामय साहेब से पूछा कि साहेब क्या मेरी जान बच सकती है? कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि बच सकती है। अगर तू मेरे से उपदेश लेगी, मेरी शिष्या बनेगी, पिछली पूजाएँ त्यागेगी, तब तेरी जान बचेगी। इन्द्रमति ने कहा मैंने सुना है कि गुरुदेव नहीं बदलना चाहिए, पाप लगता है। कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि नहीं पुत्री यह भी तेरा भ्रम है। एक वैद्य (डाक्टर) से दवाई न लगे तो क्या दूसरे से नहीं लेते? एक पाँचवीं कक्षा का अध्यापक होता है। फिर एक उच्च कक्षा का अध्यापक होता है। बेटी अगली कक्षा में जाना होगा। क्या सारी उम्र पाँचवीं कक्षा में ही लगी रहेगी। इसको छोड़ना पड़ेगा। तू अब आगे की पड़ाई पढ़, मैं पढाने आया हूँ। वैसे तो नहीं मानती परन्तु मृत्यु दिखने लगी कि संत कह रहा है तो कहीं बात न बिगड़ जाए। ऐसा विचार करके इन्द्रमति ने कहा कि जैसे आप कहोगे मैं वैसे ही करूँगी। करूणामय (कबीर) साहेब ने उपदेश दिया। कहा कि तीसरे दिन मेरे रूप में काल आयेगा, तू उससे बोलना मत। जो मैंने नाम दिया है दो मिनट तक इसका जाप करना। दो मिनट के बाद उसको देखना है। उसके बाद सत्कार करना है। वैसे तो गुरुदेव आए तो अति शीघ्र चरणों में गिर जाना चाहिए। ये मेरा केवल इस बार आदेश है। रानी ने कहा ठीक है जी।

अब रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमति, इन्द्रमति। अब उसको तो पहले ही डर था, नाम स्मरण किया। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई। रानी बहुत खुश हुई, फूली नहीं समाई। कभी अपनी बांदियों को कहने लगी कि मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने मुझे बचा दिया। राजा के पास गई तथा कहा कि आज मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने रक्षा कर दी। मुझे लेने के लिए काल आया था। राजा ने कहा कि तू ऐसे ही ड्रामें करती रहती है। काल आता तो क्या तुझे छोड़ जाता? ये संत वैसे बहका देते हैं। राजा की बात को रानी कैसे माने? खुशी-खुशी में रानी अपने कक्ष में जाकर लेट गई। कुछ देर के बाद सर्प बनकर काल फिर आया और रानी को डस लिया। ज्यों ही सर्प ने डसा रानी को पता चल गया। रानी जोर से चिल्लाई। मुझे साँप ने डंस लिया। नौकर भागे। देखते ही देखते एक मोरी (पानी निकलने का छोटा छिद्र) में से वह सर्प निकल गया। अपने गुरुदेव को पुकार कर रानी बेहोश हो

गई। करूणामय (कबीर) साहेब वहाँ प्रकट हो गए। लोगों को दिखाने के लिए मंत्र बोला। (वे तो बिना मंत्र भी जीवित कर सकते हैं, किसी जंत्र-मंत्र की आवश्यकता नहीं) इन्द्रमती को जीवित कर दिया। रानी ने बड़ा शुक्र मनाया कि हे बंदी छोड़ यदि आज आपकी शरण में नहीं होती तो मेरी मृत्यु हो जाती। कबीर परमेश्वर ने कहा कि ईन्द्रमति इस काल को मैं तेरे घर में घुसने भी नहीं देता। तेरे पर यह हमला भी नहीं करता। परन्तु तुझे विश्वास नहीं होता। तू यह सोचती कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति नहीं आनी थी। गुरुजी ने मुझे बहका कर नाम दे दिया। इसलिए तेरे को थोड़ा-सा झटका दिखाया है। नहीं तो बेटी तेरे को विश्वास नहीं होता।

धर्मदास यहाँ घना अंधेरा, बिन परचय जीव जम का चेरा।।

कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि अब जब मैं चाहूँगा, तब तेरी मृत्यु होगी। गरीबदास जी कहते हैं कि :-

गरीब, काल डरै करतार से, जय जय जय जगदीश।
जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारे शीश।।

यह काल, कबीर भगवान (कबीर परमेश्वर) से डरता है और यह मौत कबीर साहेब के जूते झाड़ती है अर्थात् नौकर तुल्य है। फिर उस धूल को अपने सिर पर लगाकर कहती है कि आप के भक्त के पास मैं नहीं जाऊँगी।

गरीब, काल जो पीसै पीसना, जौरा है पनिहार ।
ये दो असल मजूर हैं, मेरे साहेब के दरबार।।

यह काल जो यहाँ का 21 ब्रह्मण्ड का भगवान (ब्रह्म) है तथा जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश का पिता है। ये तो मेरे कबीर साहेब का आटा पीसता है अर्थात पक्का नौकर है और जौरा (मौत) मेरे कबीर परमेश्वर का पानी भरती है अर्थात् एक विशेष नौकरानी है। यह दो असल मजदूर मेरे कबीर परमेश्वर के दरबार में है। कुछ दिनों के बाद साहेब फिर आए। रानी इन्द्रमति को सतनाम प्रदान किया।

फिर कुछ समय के उपरान्त करूणामय साहेब ने रानी इन्द्रमति की अति श्रद्धा देखकर सारनाम दिया। शब्द की उपलब्धि करवाई। कबीर परमेश्वर रानी इन्द्रमति को समय-२ पर दर्शन देने जाते रहते थे तो इन्द्रमति प्रार्थना किया करती थी कि मेरे पति राजा को समझाओ मालिक, यह भी मान जाये। आपके चरणों में आ जाये तो मेरा जीवन सफल हो जाये। चन्द्रविजय से कबीर साहेब ने प्रार्थना की कि चन्द्रविजय आप भी नाम लो, यह दो दिन का राज और ठाठ है। फिर चौरासी लाख योनियों में प्राणी चला जाएगा। चन्द्रविजय ने कहा कि भगवन मैं तो नाम लूं नहीं और आपकी शिष्या को मना करूँ नहीं, चाहे सारे खजाने को ही दान करो, चाहे किसी प्रकार का सत्संग करवाओ, मैं मना नहीं करूँगा। कबीर साहेब (करूणामय) ने पूछा आप नाम क्यों नहीं लोगे? चन्द्रविजय राजा ने कहा कि मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं की पार्टियों में जाना पड़ता है। करूणामय (कबीर साहेब) ने कहा कि पार्टियों में जाने में नाम क्या बाधा करेगा? सभा में जाओ, वहाँ काजू खाओ, दूध पी लो, शरबत(जूस) पी लो, शराब मत प्रयोग करो। शराब पीना महापाप है। परन्तु राजा नहीं माना।

रानी की प्रार्थना पर करूणामय (कबीर) साहेब ने राजा को फिर समझाया कि

नाम के बिना ये जीवन ऐसे ही व्यर्थ हो जायेगा। आप नाम ले लो। राजा ने फिर कहा कि गुरू जी मुझे नाम के लिए मत कहना। आपकी शिष्या को मैं मना नहीं करूँगा। चाहे कितना दान करे, कितना सत्संग करवाए। साहेब ने कहा कि बेटी इस दो दिन के सुख को देखकर इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। तू प्रभु के चरणों में लगी रह। अपना आत्मकल्याण करवा। यहाँ कोई किसी का पति नहीं, कोई किसी की पत्नी नहीं। पूर्व जन्म के संस्कार से दो दिन का सम्बन्ध है। अपना कर्म बना बेटी। अब इन्द्रमति 80 वर्ष की बुढिया हो गई है, कहाँ 40 साल की उम्र में मर जाना था। जब शरीर भी हिलने लगा, तब करूणामय साहेब बोले अब बोल इन्द्रमति क्या चाहती है? चलना चाहती है सतलोक? इन्द्रमति ने कहा कि परमेश्वर मैं तैयार हूँ। बिल्कुल तैयार हूँ दाता। करूणामय साहेब ने कहा कि तेरी पोते या पोती में कोई ममता तो नहीं है? रानी ने कहा बिल्कुल नहीं परमेश्वर। आपने ज्ञान ही ऐसा निर्मल दे दिया। इस गंदे लोक की क्या इच्छा करूँ? कबीर (करूणामय) परमेश्वर जी ने कहा कि चल बेटी। रानी प्राण त्याग गई। परमेश्वर कबीर (करूणामय) बन्दी छोड़ रानी इन्द्रमति की आत्मा को ऊपर ले गए। इसी ब्रह्मण्ड में एक मानसरोवर है। उस मान सरोवर पर जाकर इस आत्मा को स्नान कराना होता है। इस प्राणी को कबीर परमेश्वर पूरे गुरु के स्वरूप में प्रकट होकर कुछ समय तक मानसरोवर पर रखते हैं। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने इन्द्रमति से फिर पूछा इस संसार में तेरी कुछ इच्छा हो तो दुबारा जन्म लेना पड़ेगा। यदि मन में इच्छा रह गई तो सतलोक नहीं जा सकती। इन्द्रमति ने कहा साहेब आप तो अंतर्यामी हो, कोई इच्छा नहीं है। आपके चरणों की इच्छा है। लेकिन एक मन में शंका बनी हुई है कि मेरा जो पति था, उसने मुझे किसी भी धार्मिक कर्म के लिए कभी मना नहीं किया। नहीं तो आजकल के पति अपनी पत्नियों को बाधा कर देते हैं। यदि वह मुझे मना कर देता तो मैं आपके चरणों में नहीं लग पाती। मेरा कल्याण नहीं होता। उसका इस शुभ कर्म में सहयोग का कुछ लाभ मिलता हो तो कभी उस पर भी दया करना दाता। परमेश्वर कबीर जी ने देखा कि यह नादान इसके पीछे फिर लटक गई। साहेब बोले ठीक है बेटी, अभी तू दो चार वर्ष यहाँ रह।

दो वर्ष पश्चात् राजा भी मरने लगा। क्योंकि नाम ले नहीं रखा था। यम के दूत आए। राजा चौक में चक्कर खाकर गिर गया। यम के दूतों ने उसकी गर्दन को दबाया। राजा की टट्टी और पेशाब निकल गया। करूणायम (कबीर) साहेब ने रानी को कहा कि देख तेरे राजा की क्या हालत हो रही है? वहाँ मानसरोवर से परमेश्वर कबीर जी ने दिखाया। यह सर्व कौतुक देखकर रानी ने कहा कि देख लो दाता यदि उसका भक्ति में सहयोग का कोई फल बनता हो तो दया कर लो। रानी को फिर भी थोड़ी-सी ममता बनी थी। साहेब कबीर (करूणामय) ने सोचा की यह फिर काल जाल में फंसेगी। यह सोचकर मानसरोवर से वहाँ गए जहाँ राजा चन्द्रविजय अपने महल में अचेत पड़ा था। यमदूत उसके प्राण निकाल रहे थे। कबीर साहेब के आते ही यमदूत ऐसे आकाश में उड़ गए जैसे मुर्दे से गिद्ध उड़ जाते हैं। चन्द्रविजय होश में आ गया। सामने करूणामय साहेब खड़े थे। केवल चन्द्रविजय को दिखाई दे रहे थे, किसी अन्य

को दिखाई नहीं दे रहे थे। चन्द्रविजय चरणों में गिर कर याचना करने लगा मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचाओ। क्योंकि अब उसने देखा कि तेरी जान जाने वाली है। (जब इस जीव की आँख खुलती है कि यह तो बात बिगड़ गई) मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचा लो मालिक। कबीर साहेब ने कहा राजा आज भी वही बात है, उस दिन भी वही बात थी, नाम लेना होगा। राजा ने कहा मैं नाम ले लूँगा जी, अभी ले लूँगा नाम। कबीर साहेब ने नाम उपदेश दिया तथा कहा कि अब मैं तुझे दो वर्ष की आयु दूँगा, यदि इसमें एक स्वांस भी खाली चला गया तो फिर कर्मदण्ड रह जाएगा।

कबीर, जीवन तो थोड़ा भला, जै सत सुमरण हो। लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरे ना को।।

शुभ कर्म में सहयोग दिया हुआ पिछला कर्म और साथ में श्रद्धा से दो वर्ष के स्मरण से तथा तीनों नाम प्रदान करके कबीर साहेब चन्द्रविजय को भी पार कर ले गये। बोलो (कबीर परमेश्वर) कविर्देव की जय।''जय बन्दी छोड़''

परमेश्वर कबीर जी सच्चे श्रद्धालु की आयु बढ़ा देता है तथा उसके परिवार की भी रक्षा करता है, उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ। यह प्रमाण बहुत पहले के हैं। वर्तमान में साधारण व्यक्ति विश्वास नहीं करता। वर्तमान में पूज्य कबीर परमेश्वर की शक्ति से सतगुरु रामपाल जी के द्वारा हुए कष्ट निवार्ण तथा आयु वृद्धि के ढेर सारे प्रमाण पढ़ें इसी पुस्तक में 'भटकों को मार्ग विषय' नामक लेख में।

"कबीर साहेब (कविर्देव) का कलियुग में प्राकाट्य"

विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा सुबह-सुबह ब्रह्ममुहुर्त में वह पूर्ण परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी स्वयं अपने मूल स्थान सतलोक से आए। काशी में लहर तारा तालाब के अंदर कमल के फूल पर एक बालक का रूप धारण किया। पहले मैं आपको नीरू-नीमा के बारे में बताना चाहूँगा कि ये कौन थे? द्वापर युग में नीरू-नीमा सुपच सुदर्शन के माता पिता थे। इन्होंने कबीर साहेब की बात को उस समय स्वीकार नहीं किया था। अंत में सुदर्शन ने करूणामय रूप में आए कबीर साहेब से प्रार्थना की थी कि प्रभु आपने मुझे उपदेश दे दिया तो सब कुछ दे दिया। आपसे आज तक कुछ माँगने की कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी। क्योंकि आपने सर्व मनोकामना पूर्ण कर दी तथा जो वास्तविक भक्ति धन है उससे भी परिपूर्ण कर दिया। एक प्रार्थना है दास की यदि उचित समझो तो स्वीकार कर लेना। मेरे माता पिता यदि किसी जन्म में कभी मनुष्य शरीर प्राप्त करें तो इनको संभालना प्रभु। ये बहुत पुण्यात्मा हैं, लेकिन आज इनकी बुद्धि विपरीत हो गई है। ये परमात्मा की वाणी को मान नहीं रहे। कबीर साहेब ने कहा चिंता न कर, अब तू अपने माता पिता के चक्कर में यहाँ उलझ जायेगा। आने दे समय इनको भी संभालूंगा। काल जाल से पार करूँगा। तू निश्चिंत होकर सतलोक जा। सुदर्शन जी सतलोक चले गये।

सुदर्शन के माता-पिता के कलयुग में नीरू-नीमा के जन्म से पहले भी ब्राह्मण घर में इनके दो जन्म हुए, उस समय भी निःसंतान ही रहे। फिर तीसरा मनुष्य जन्म काशी में हुआ। उस समय भी वे ब्राह्मण और ब्राह्मणी (गौरी शंकर और सरस्वती के

नाम से) थे, संतान फिर भी नहीं थी।

नीरू तथा नीमा दोनों गौरी शंकर और सरस्वती नाम के ब्राह्मण जाति से थे। ये भगवान शिव के उपासक थे। भगवान शिव की महिमा शिव पुराण से निःस्वार्थ भाव से भक्तात्माओं को सुनाया करते थे। किसी से पैसा नहीं लेते थे। इतने नेक आत्मा थे कि यदि कोई उनको अपने आप दक्षिणा दे जाता था, उसमें से अपने भोजन योग्य रख लेते थे और जो बच जाता था उसका भण्डारा कर देते थे।

अन्य स्वार्थी ब्राह्मण गौरी शंकर तथा सरस्वती से इर्ष्या रखते थे क्योंकि गौरी शंकर निस्वार्थ कथा किया करते थे। पैसे के लालच में भक्तों को गुमराह नहीं करते थे, जिस कारण से प्रशंसा के पात्र बने हुए थे। उधर से मुस्लमानों को ज्ञान हो गया कि इनके साथ कोई हिन्दू, ब्राह्मण नहीं है। उन्होंने इसका लाभ उठाया और बलपूर्वक उनको मुस्लमान बना दिया। मुस्लमानों ने अपना पानी उनके सारे घर में छिड़क दिया तथा उनके मुँह में भी डाल दिया, सारे कपड़ों पर छिड़क दिया। उससे हिन्दू ब्राह्मणों ने कहा कि अब ये मुस्लमान बन गए हैं। आज के बाद इनका हमारे से कोई भाई-चारा नहीं रहेगा।

''नीरू-नीमा को जुलाहे की उपाधि तथा परमेश्वर प्राप्ति''

बेचारे गौरी शंकर तथा सरस्वती विवश हो गए। मुसलमानों ने पुरुष का नाम नीरू तथा स्त्री का नाम नीमा रखा। पहले उनके पास जो पूजा आती थी उससे उनकी रोजी-रोटी चल रही थी और जो कोई रूपया-पैसा बच जाता था वे उसका दुरूपयोग नहीं करते थे। उस बचे धन से धर्म-भण्डारा कर देते थे। पूजा आनी भी बंद हो गई। उन्होंने सोचा अब क्या काम करें? उन्होंने एक कपड़ा बुनने की खड्डी लगा ली और जुलाहे का कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। कपड़ा बुन कर निर्वाह करने लगे कपड़े की बुनाई से घर के खर्च के पश्चात् जो पैसा बच जाता था उसको भण्डारों में लगा देते थे। हिन्दू ब्राह्मणों ने नीरू-नीमा का गंगा घाट पर गंगा दरिया में स्नान करना बंद कर दिया था। कहते थे कि अब तुम मुसलमान हो गए हो।

गंगा दरिया का ही पानी लहरों के द्वारा उछल कर काशी में एक लहरतारा नामक बहुत बड़े सरोवर को भरकर रखता था। बहुत निर्मल जल भरा रहता था। उसमें कमल के फूल उगे हुए थे। सन् 1398 (विक्रमी संवत् 1455) ज्येष्ठ मास शुद्धि पूर्णमासी को ब्रह्ममूहूर्त (सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पहले) में अपने सत्यलोक (ऋतधाम) से सशरीर आकर परमेश्वर कबीर (कविर्देव) बालक रूप बनाकर लहर तारा तालाब में कमल के फूल पर विराजमान हुए। उसी लहर तारा तालाब पर नीरू-नीमा सुबह-सुबह ब्रह्ममुहुर्त में स्नान करने के लिए प्रतिदिन जाया करते थे। (ब्रह्ममुहुर्त कहते हैं सूर्योदय होने से डेढ घण्टा पूर्व) एक बहुत तेजपुंज का चमकीला गोला (बालक रूप में परमेश्वर कबीर साहेब जी तेजोमय शरीर युक्त आए थे, दूरी के कारण प्रकाश पुंज ही नजर आता है) ऊपर से (सत्यलोक से) आया और कमल के फूल पर सिमट गया। जिससे सारा लहर तारा तालाब जगमग-जगमग हो गया था और फिर एक कोने में जाकर वह अदृश्य हो गया। इस दृश्य को स्वामी रामानन्द जी

के एक शिष्य ऋषि अष्टानन्द जी आँखों देख रहे थे। अष्टानंद जी भी स्नान करने के लिए एकांत स्थान पर उसी लहर तारा तालाब पर प्रतिदिन जाया करते थे। वहाँ बैठकर अपनी साधना गुरुदेव ने जो मंत्र दिए थे उसका जाप करते थे और प्रकृति का आनन्द लिया करते थे। स्वामी अष्टानंद जी ने जब देखा कि इतना तेज प्रकाश जिससे आँखे भी चौंधिया गई। ऋषि जी ने सोचा कि ये कोई मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरा धोखा है। यह सोचकर कारण पूछने के लिए अपने गुरुदेव के पास गए।

आदरणीय रामानन्द जी से अष्टानन्द जी ने पूछा कि हे गुरुदेव! मैंने आज ऐसी रोशनी देखी है जो कि जिन्दगी में कभी नहीं देखी। सर्व वृतांत बताया कि आकाश से एक प्रकाश समूह आ रहा था। मैंने देखा तो मेरी आँखें उस रोशनी को सहन नहीं कर सकी। इस लिए बन्द हो गई, बंद आँखों में एक शिशु का रूप दिखाई दिया। (जैसे सूर्य की तरफ देखने के पश्चात सूर्य का एक गोला-सा ही दिखाई देता है, ऐसे बालक दिखाई देने लगा)। क्या यह मेरी भक्ति की कोई उपलब्धि है या मेरा दृष्टिदोष था? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि पुत्र ऐसे लक्षण तब होते हैं जब ऊपर के लोकों से कोई अवतारगण आते हैं। वे किसी के यहाँ प्रकट होंगे, किसी माँ के जन्म लेंगे और फिर लीला करेंगे। (क्योंकि इन ऋषियों को इतना ही ज्ञान है कि माँ से ही जन्म होता है) जितना ऋषि को ज्ञान था अपने शिष्य का शंका समाधान कर दिया।

नीरू व नीमा प्रतिदिन की तरह उस दिन भी स्नान करने जा रहे थे। रास्ते में नीमा ने प्रभु से प्रार्थना की कि हे भगवान शिव (क्योंकि वे भले ही मुस्लमान बन गए थे लेकिन अपनी वह साधना हृदय से नहीं भूल पा रहे थे जो इतने वर्षों से कर रहे थे।) क्या आपके घर में हमारे लिए एक बच्चे की कमी पड़ गई? हमें भी एक लाल दे देते, हमारा जीवन भी सफल हो जाता। ऐसा कहकर फूट-फूट कर रोने लगी। उसके पति नीरू ने कहा कि नीमा प्रभु की इच्छा पर प्रसन्न रहने में ही हित होता है। यदि ऐसे रोती रहेगी तो तेरा शरीर कमजोर हो जायेगा, आँखों से दिखना बंद हो जायेगा। हमारे भाग्य में संतान नहीं है। ऐसे कहते-कहते लहर तारा तालाब पर पहुँच गए। थोड़ा-थोड़ा अंधेरा था। नीमा स्नान करके बाहर आई। अपने कपड़े बदले। नीरू स्नान करने के लिए तालाब में प्रवेश करके गोते मार-मार कर नहाने लगा। नीमा जब स्नान करते समय पहना हुआ कपड़ा धोने के लिए दोबारा तालाब के किनारे पर गई, तब तक अंधेरा हट गया था। सूर्य उदय होने वाला ही था। नीमा ने तालाब में देखा कि सामने कमल के फूल पर कोई वस्तु हिल रही है। कबीर साहेब ने बच्चे के रूप में एक पैर का अँगूठा मुख में दे रखा था और एक पैर को हिला रहे थे। पहले तो नीमा ने सोचा कि शायद कोई सर्प न हो और मेरे पति की तरफ आ रहा हो। फिर ध्यान से देखा तो समझते देर न लगी कि ये तो कोई बच्चा है। बच्चा और कमल के फूल पर। एकदम अपने पति को आवाज लगाई कि देखना जी बच्चा डूबेगा, बच्चा डूबेगा। नीरू बोला कि नादान तू बच्चों के चक्कर में पागल हो गई है। पानी में भी तुझे बच्चा नजर आने लगा। नीमा ने कहा हाँ, वह सामने कमल के फूल पर देखो। नीमा की जोरदार आवाज से प्रभावित होकर जिस तरफ हाथ से संकेत कर रही थी नीरू ने उधर देखा,

एक कमल के फूल पर नवजात शिशु लेटा हुआ था। नीरू उस बच्चे को फूल समेत उठा लाए और नीमा को दे दिया। स्वयं स्नान करने लगा। नीरू स्नान करके बाहर आया नीमा बच्चे के रूप में आए परमेश्वर को बहुत प्यार कर रही थी तथा शिव प्रभु की प्रसंशा तथा स्तुति कर रही थी कि हे प्रभु आपने मेरी वर्षों की मनोकामना पूर्ण कर दी। (क्योंकि वह शिव की पुजारिन थी।) कह रही थी हे शिव प्रभु आज ही हृदय से पुकार की थी, आज ही सुन ली।

उस कबीर परमेश्वर को जिसका नाम लेने से हमारे हृदय में एक विशेष हलचल-सी होती है, उसके प्रेम में रोम-रोम खड़ा हो जाता है, आत्मा भर कर आती है और जिस माता-बहन ने सीने से लगाकर पुत्रवत प्यार किया जो आनन्द उस माई को हुआ होगा। वह अवर्णनीय है। जैसे व्यक्ति गुड़ खा कर अन्य को उस के आनन्द को नहीं बता सकता खाने वाला ही जान सकता है। जैसे माँ प्यार करती है ऐसे शिशु रूपधारी परमेश्वर के कभी मुख को चूमा, कभी सीने से लगा रही थी और फिर बार-बार उसके मुख को देख रही थी। इतने में नीरू स्नान करके बाहर आया। (क्योंकि मनुष्य समाज की तरफ ज्यादा देखता है) उसने विचार लगाया कि न तो अभी मुस्लमानों से हमारा कोई विशेष प्यार बना है और हिन्दू ब्राह्मण हमारे से द्वेष करते हैं। पहले इसी अवसर का लाभ मुस्लमानों ने उठाया कि हमें मुस्लमान बना दिया। हमारा कोई साथी नहीं है। यदि हम इस बच्चे को ले जायेंगे तो लोग पूछेगें कि बताओ इस बच्चे के माता-पिता कौन हैं? तुम किसी का बच्चा उठा कर लाए हो। इसकी माँ रो रही होगी। हम क्या जवाब देंगे, कैसे बतायेंगे? कमल के फूल पर बतायेंगे तो कोई मानेगा नहीं। यह सर्व विचार करके नीरू ने कहा कि नीमा इस बच्चे को यहीं छोड़ दे। नीमा ने कहा कि जी मैं इस बच्चे को नहीं छोड़ सकती। मेरे प्राण जा सकते हैं, मैं तड़फ कर मर जाऊँगी। न जाने मेरे ऊपर इस बालक ने क्या जादू कर दिया? मैं इसको नहीं छोड़ सकती। नीरू ने नीमा को सारी बात समझाई कि हमारे साथ ऐसा बन सकता है। नीमा ने कहा कि इस बच्चे के लिए मैं देश निकाला भी ले सकती हूँ परन्तु इसको नहीं छोडूंगी। नीरू ने उसकी नादानी को देख कर सोचा कि यह तो पागल हो गई, समाज को भी नहीं देख रही है। नीरू ने नीमा से कहा कि मैंने आज तक तेरी बात की अवहेलना नहीं की थी क्योंकि हमारे बच्चे नहीं थे। जो तू कहती रही मैं स्वीकार करता रहा। परन्तु आज मैं तेरी यह बात नहीं मानूंगा। या तो इस बालक को यहीं पर रख दे, नहीं तो तुझे अभी दो थप्पड़ लगाता हूँ। उस महापुरुष ने पहली बार अपनी पत्नी की तरफ हाथ किया था। उसी समय शिशु रूप में कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि नीरू मुझे घर ले चलो। तुम्हें कोई आपत्ति नहीं आयेगी। शिशु रूप में परमेश्वर के वचन सुनकर नीरू घबरा गया कहीं यह बालक कोई फरिश्ता हो अथवा कोई सिद्ध पुरुष हो और तेरे ऊपर कोई आपत्ति न आ जाए। चुप करके चल पड़ा।

जब बच्चे को लेकर घर आ गए तो सभी यह पूछना तो भूल गये कि कहाँ से लाए हो? काशी के स्त्री तथा पुरुष लड़के को देखने आए तथा कहने लगे कि यह तो कोई

देवता नजर आता है। इतना सुन्दर शरीर, ऐसा तेजोमय बच्चा पहले कभी हमने नहीं देखा। कोई कहे यह तो ब्रह्मा-विष्णु-महेश में से कोई प्रभु है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश कहते हैं कि यह तो कोई ऊपर के लोकों से आई हुई शक्ति है। ऐसे सब अपनी-अपनी टिप्पणी कर रहे थे।

गरीब, चौरासी बंधन काटन, कीनी कलप कबीर। भवन चतुरदश लोक सब, टूटैं जम जंजीर।।376।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मांड में, बंदी छोड़ कहाय। सो तौ एक कबीर हैं, जननी जन्या न माय।।377।।
गरीब, शब्द स्वरूप साहिब धनी, शब्द सिंध सब माँहि। बाहर भीतर रमि रह्या, जहाँ तहां सब ठांहि।।378।।
गरीब, जल थल पृथ्वी गगन में, बाहर भीतर एक। पूरणब्रह्म कबीर हैं, अविगत पुरूष अलेख।।379।।
गरीब, सेवक होय करि ऊतरे, इस पृथ्वी के माँहि। जीव उधारन जगतगुरु, बार बार बलि जांहि।।380।।
गरीब, काशीपुरी कस्त किया, उतरे अधर अधार। मोमन कूं मुजरा हुवा, जंगल में दीदार।।381।।
गरीब, कोटि किरण शशि भान सुधि, आसन अधर बिमान। परसत पूरणब्रह्म कूं, शीतल पिंडरू प्राण।।382।।
गरीब, गोद लिया मुख चूंबि करि, हेम रूप झलकंत। जगर मगर काया करै, दमकैं पदम अनंत।।383।।
गरीब, काशी उमटी गुल भया, मोमन का घर घेर। कोई कहै ब्रह्मा विष्णु हैं, कोई कहै इन्द्र कुबेर।।384।।
गरीब, कोई कहै छल ईश्वर नहीं, कोई किंनर कहलाय। कोई कहै गण ईश का, ज्यूं ज्यूं मात रिसाय।।388।।
गरीब, कोई कहै वरूण धर्मराय है, कोई कोई कहते ईश। सोलह कला सुभांन गति, कोई कहै जगदीश।।385।।
गरीब, भक्ति मुक्ति ले ऊतरे, मेटन तीनूं ताप। मोमन के डेरा लिया, कहै कबीरा बाप।।386।।
गरीब, दूध न पीवै न अन्न भखै, नहीं पलने झूलंत। अधर अमान धियान में, कमल कला फूलंत।।387।।
गरीब, काशी में अचरज भया, गई जगत की नींद। ऐसे दुल्हे ऊतरे, ज्यूं कन्या वर बींद।।389।।
गरीब, खलक मुलक देखन गया, राजा प्रजा रीत। जंबूदीप जिहाँन में, उतरे शब्द अतीत।।390।।
गरीब, दुनी कहै योह देव है, देव कहत हैं ईश। ईश कहै पारब्रह्म है, पूरण बीसवे बीस।।391।।

परमेश्वर कबीर जी ही अनादि परम गुरु हैं। वे ही रूपान्तर करके सन्त व ऋषि वेश में समय-समय पर (स्वयंभू) स्वयं प्रकट होते हैं। काल के दूतों (सन्तों) द्वारा बिगाड़े तत्वज्ञान को स्वस्थ करते हैं। कबीर साहेब ने ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि देवताओं, ऋषि मुनी व संतों को समय-२ पर अपने सतलोक से आकर नाम उपदेश दिया। आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने अपनी वाणी में लिखा है जो कबीर जी ने स्वयं बताया है :--

आदि अंत हमरा नहीं, मध्य मिलावा मूल। ब्रह्मा ज्ञान सुनाईया, धर पिंडा अस्थूल।।
श्वेत भूमिका हम गए, जहां विश्वम्भरनाथ। हरियम् हीरा नाम दे, अष्ट कमल दल स्वांति।।
हम बैरागी ब्रह्म पद, सन्यासी महादेव। सोहं मंत्र दिया शंकर कूं, करत हमारी सेव।।
हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी माहे कबीर हुआ।।

सतयुग में सतसुकृत कह टेरा, त्रेता नाम मुनिन्द्र मेरा।
द्वापर में करूणामय कहलाया, कलियुग में नाम कबीर धराया।।
चारों युगों में हम पुकारैं, कूक कहैं हम हेल रे।
हीरे मानिक मोती बरसें, ये जग चुगता ढेल रे।।

उपरोक्त वाणी से सिद्ध है कि कबीर परमेश्वर ही अविनाशी परमात्मा है। यही अजरो-अमर है। यही परमात्मा चारों युगों में स्वयं अतिथि रूप में कुछ समय के लिए इस संसार में आकर अपना सतभक्ति मार्ग देते हैं।
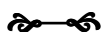
पूर्ण संत की पहचान

(पवित्र सद्ग्रन्थों से पूर्ण संत की पहचान)

वेदों, गीता जी आदि पवित्र सद्ग्रंथों में प्रमाण मिलता है कि जब-जब धर्म की हानि होती है व अधर्म की वृद्धि होती है तथा वर्तमान के नकली संत, महंत व गुरुओं द्वारा भक्ति मार्ग के स्वरूप को बिगाड़ दिया गया होता है। फिर परमेश्वर स्वयं आकर या अपने परमज्ञानी संत को भेज कर सच्चे ज्ञान के द्वारा धर्म की पुनः स्थापना करता है। वह भक्ति मार्ग को शास्त्रों के अनुसार समझाता है। उसकी पहचान होती है कि वर्तमान के धर्म गुरु उसके विरोध में खड़े होकर राजा व प्रजा को गुमराह करके उसके ऊपर अत्याचार करवाते हैं। कबीर साहेब जी अपनी वाणी में कहते हैं कि-

जो मम संत सत उपदेश दृढ़ावै (बतावै), वाके संग सभि राड़ बढ़ावै।
या सब संत महंतन की करणी, धर्मदास मैं तो से वर्णी।।

कबीर साहेब अपने प्रिय शिष्य धर्मदास को इस वाणी में ये समझा रहे हैं कि जो मेरा संत सत भक्ति मार्ग को बताएगा उसके साथ सभी संत व महंत झगड़ा करेंगे। ये उसकी पहचान होगी।

दूसरी पहचान वह संत सभी धर्म ग्रंथों का पूर्ण जानकार होता है। प्रमाण सतगुरु गरीबदास जी की वाणी में -

"सतगुरु के लक्षण कहूं, मधूरे बैन विनोद। चार वेद षट शास्त्र, कहै अठारा बोध।।"

सतगुरु गरीबदास जी महाराज अपनी वाणी में पूर्ण संत की पहचान बता रहे हैं कि वह चारों वेदों, छः शास्त्रों, अठारह पुराणों आदि सभी ग्रंथों का पूर्ण जानकार होगा अर्थात् उनका सार निकाल कर बताएगा। यजुर्वेद अध्याय 19 मंत्र 25, 26 में लिखा है कि वेदों के अधूरे वाक्यों अर्थात् सांकेतिक शब्दों व एक चौथाई श्लोकों को पुरा करके विस्तार से बताएगा व तीन समय की पूजा बताएगा। सुबह पूर्ण परमात्मा की पूजा, दोपहर को विश्व के देवताओं का सत्कार व संध्या आरती अलग से बताएगा वह जगत का उपकारक संत होता है।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 25

सन्धिछेदः– अर्द्ध ऋचैः उक्थानाम् रूपम् पदैः आप्नोति निविदः।
प्रणवैः शस्त्राणाम् रूपम् पयसा सोमः आप्यते।(25)

अनुवादः– जो सन्त (अर्द्ध ऋचैः) वेदों के अर्द्ध वाक्यों अर्थात् सांकेतिक शब्दों को पूर्ण करके (निविदः) आपूर्त्ति करता है (पदैः) श्लोक के चौथे भागों को अर्थात् आंशिक वाक्यों को (उक्थानम्) स्तोत्रों के (रूपम्) रूप में (आप्नोति) प्राप्त करता है अर्थात् आंशिक विवरण को पूर्ण रूप से समझता और समझाता है (शस्त्राणाम्) जैसे शस्त्रों को चलाना जानने वाला उन्हें (रूपम्) पूर्ण रूप से प्रयोग करता है ऐसे पूर्ण सन्त (प्रणवैः) औंकारों अर्थात् ओम्–तत्–सत् मन्त्रों को पूर्ण रूप से समझ व समझा कर (पयसा) दूध–पानी छानता है अर्थात् पानी रहित दूध जैसा तत्व ज्ञान प्रदान करता है जिससे (सोमः) अमर पुरूष अर्थात् अविनाशी परमात्मा को (आप्यते) प्राप्त करता है। वह पूर्ण

सन्त वेद को जानने वाला कहा जाता है।

भावार्थः- तत्वदर्शी सन्त वह होता है जो वेदों के सांकेतिक शब्दों को पूर्ण विस्तार से वर्णन करता है जिससे पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति होती है वह वेद के जानने वाला कहा जाता है।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 26

सन्धिछेद :— अश्विभ्याम् प्रातः सवनम् इन्द्रेण ऐन्द्रम् माध्यन्दिनम्
वैश्वदैवम् सरस्वत्या तृतीयम् आप्तम् सवनम् (26)

अनुवाद :— वह पूर्ण सन्त तीन समय की साधना बताता है। (अश्विभ्याम्) सूर्य के उदय—अस्त से बने एक दिन के आधार से (इन्द्रेण) प्रथम श्रेष्ठता से सर्व देवों के मालिक पूर्ण परमात्मा की (प्रातः सवनम्) पूजा तो प्रातः काल करने को कहता है जो (ऐन्द्रम्) पूर्ण परमात्मा के लिए होती है। दूसरी (माध्यन्दिनम्) दिन के मध्य में करने को कहता है जो (वैश्वदैवम्) सर्व देवताओं के सत्कार के सम्बधित (सरस्वत्या) अमृतवाणी द्वारा साधना करने को कहता है तथा (तृतीयम्) तीसरी (सवनम्) पूजा शाम को (आप्तम्) प्राप्त करता है अर्थात् जो तीनों समय की साधना भिन्न—२ करने को कहता है वह जगत् का उपकारक सन्त है।

भावार्थः- जिस पूर्ण सन्त के विषय में मन्त्र 25 में कहा है वह दिन में 3 तीन बार (प्रातः दिन के मध्य-तथा शाम को) साधना करने को कहता है। सुबह तो पूर्ण परमात्मा की पूजा मध्याह्न को सर्व देवताओं को सत्कार के लिए तथा शाम को संध्या आरती आदि को अमृत वाणी के द्वारा करने को कहता है वह सर्व संसार का उपकार करने वाला होता है।

यजुर्वेद अध्याय 19 मन्त्र 30

सन्धिछेदः— व्रतेन दीक्षाम् आप्नोति दीक्षया आप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणा श्रद्धाम् आप्नोति श्रद्धया सत्यम् आप्यते (30)

अनुवादः— (व्रतेन) दुर्व्यसनों का व्रत रखने से अर्थात् भांग, शराब, मांस तथा तम्बाखु आदि के सेवन से संयम रखने वाला साधक (दीक्षाम्) पूर्ण सन्त से दीक्षा को (आप्नोति) प्राप्त होता है अर्थात् वह पूर्ण सन्त का शिष्य बनता है (दीक्षया) पूर्ण सन्त दीक्षित शिष्य से (दक्षिणाम्) दान को (आप्नोति) प्राप्त होता है अर्थात् सन्त उसी से दक्षिणा लेता है जो उस से नाम ले लेता है। इसी प्रकार विधिवत् (दक्षिणा) गुरूदेव द्वारा बताए अनुसार जो दान—दक्षिणा से धर्म करता है उस से (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त होता है (श्रद्धया) श्रद्धा से भक्ति करने से (सत्यम्) सदा रहने वाले सुख व परमात्मा अर्थात् अविनाशी परमात्मा को (आप्यते) प्राप्त होता है।

भावार्थ :- पूर्ण सन्त उसी व्यक्ति को शिष्य बनाता है जो सदाचारी रहे। अभक्ष्य पदार्थों का सेवन व नशीली वस्तुओं का सेवन न करने का आश्वासन देता है। पूर्ण सन्त उसी से दान ग्रहण करता है जो उसका शिष्य बन जाता है फिर गुरू देव से दीक्षा प्राप्त करके फिर दान दक्षिणा करता है उस से श्रद्धा बढ़ती है। श्रद्धा से सत्य भक्ति करने से अविनाशी परमात्मा की प्राप्ति होती है अर्थात् पूर्ण मोक्ष होता

है। पूर्ण संत भिक्षा व चंदा मांगता नहीं फिरेगा।

कबीर, गुरू बिन माला फेरते गुरू बिन देते दान।
गुरू बिन दोनों निष्फल है पूछो वेद पुराण।।

तीसरी पहचान तीन प्रकार के मंत्रों (नाम) को तीन बार में उपदेश करेगा जिसका वर्णन कबीर सागर ग्रंथ पृष्ठ नं. 265 बोध सागर में मिलता है व गीता जी के अध्याय नं. 17 श्लोक 23 व सामवेद संख्या नं. 822 में मिलता है।

कबीर सागर में अमर मूल बोध सागर पृष्ठ 265 -

तब कबीर अस कहेवे लीन्हा, ज्ञानभेद सकल कह दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहो बिचारी, जिहिते निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई, ता कहैं पान देहु तुम भाई।।1।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना, ता कहैं कहु शब्द प्रवाना।।2।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै, ता कहैं ज्ञान अगाध सुनावै।।3।।

दोबारा फिर समझाया है -

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासों कहहू वचन प्रवाना।।1।।
जा को सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता को स्मरन देहु लखाई।।2।।
ज्ञान गम्य जा को पुनि होई। सार शब्द जा को कह सोई।।3।।
जा को होए दिव्य ज्ञान परवेशा, ताको कहे तत्व ज्ञान उपदेशा।।4।।

उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है कि कड़िहार गुरु (पूर्ण संत) तीन स्थिति में सार नाम तक प्रदान करता है तथा चौथी स्थिति में सार शब्द प्रदान करना होता है। क्योंकि कबीर सागर में तो प्रमाण बाद में देखा था परंतु उपदेश विधि पहले ही पूज्य दादा गुरुदेव तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी ने हमारे पूज्य गुरुदेव को प्रदान कर दी थी जो हमारे को शुरु से ही तीन बार में नामदान की दीक्षा करते आ रहे हैं।

हमारे गुरुदेव रामपाल जी महाराज प्रथम बार में श्री गणेश जी, श्री ब्रह्मा सावित्री जी, श्री लक्ष्मी विष्णु जी, श्री शंकर पार्वती जी व माता शेरांवाली का नाम जाप देते हैं। जिनका वास हमारे मानव शरीर में बने चक्रों में होता है। मूलाधार चक्र में श्री गणेश जी का वास, स्वाद चक्र में ब्रह्मा सावित्री जी का वास, नाभि चक्र में लक्ष्मी विष्णु जी का वास, हृदय चक्र में शंकर पार्वती जी का वास, कंठ चक्र में शेरांवाली माता का वास है और इन सब देवी-देवताओं के आदि अनादि नाम मंत्र होते हैं जिनका वर्तमान में गुरुओं को ज्ञान नहीं है। इन मंत्रों के जाप से ये पांचों चक्र खुल जाते हैं। इन चक्रों के खुलने के बाद मानव भक्ति करने के लायक बनता है। सतगुरु गरीबदास जी अपनी वाणी में प्रमाण देते हैं कि :--

पांच नाम गुझ गायत्री आत्म तत्व जगाओ। ॐ किलियं हरियम् श्रीयम् सोहं ध्याओ।।

भावार्थ : पांच नाम जो गुझ गायत्री है। इनका जाप करके आत्मा को जागृत करो।

दूसरी बार में दो अक्षर का जाप देते हैं जिनमें एक ओम् और दूसरा तत् (जो कि गुप्त है उपदेशी को बताया जाता है) जिनको स्वांस के साथ जाप किया जाता है।

तीसरी बार में सारनाम देते हैं जो कि पूर्ण रूप से गुप्त है।

तीन बार में नाम जाप देने का प्रमाण :--

अध्याय 17 का श्लोक 23

ॐ, तत्, सत्, इति, निर्देशः, ब्रह्मणः, त्रिविधः, स्मृतः,
ब्राह्मणाः, तेन, वेदाः, च, यज्ञाः, च, विहिताः, पुरा।।23।।

अनुवाद : (ॐ) ब्रह्म का (तत्) यह सांकेतिक मंत्र परब्रह्म का (सत्) पूर्णब्रह्म का (इति) ऐसे यह (त्रिविधः) तीन प्रकार के (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा के नाम सुमरण का (निर्देशः) संकेत (स्मृतः) कहा है (च) और (पुरा) सृष्टीके आदिकालमें (ब्राह्मणाः) विद्वानों ने बताया कि (तेन) उसी पूर्ण परमात्मा ने (वेदाः) वेद (च) तथा (यज्ञाः) यज्ञादि (विहिताः) रचे।

संख्या न. 822 सामवेद उतार्चिक अध्याय 3 खण्ड न. 5 श्लोक न. 8 (संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशां असिष्यदत्।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरन्निन्द्रस्य वायुं सख्याय वर्धयन्।।8।।

मनीषिभिः—पवते—पूर्व्यः—कविर्—नृभिः—यतः—परि—कोशान्—असिष्यदत्—त्रि—तस्य—नाम—जनयन्—मधु—क्षरनः—न—इन्द्रस्य—वायुम्—सख्याय—वर्धयन्।

शब्दार्थ—(पूर्व्यः) सनातन अर्थात् अविनाशी (कविर नृभिः) कबीर परमेश्वर मानव रूप धारण करके अर्थात् गुरु रूप में प्रकट होकर (मनीषिभिः) हृदय से चाहने वाले श्रद्धा से भक्ति करने वाले भक्तात्मा को (त्रि) तीन (नाम) मन्त्र अर्थात् नाम उपदेश देकर (पवते) पवित्र करके (जनयन्) जन्म व (क्षरनः) मृत्यु से (न) रहित करता है तथा (तस्य) उसके (वायुम्) प्राण अर्थात् जीवन—स्वांसों को जो संस्कारवश गिनती के डाले हुए होते हैं को (कोशान्) अपने भण्डार से (सख्याय) मित्रता के आधार से (परि) पूर्ण रूप से (वर्धयन्) बढ़ाता है। (यतः) जिस कारण से (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (मधु) वास्तविक आनन्द को (असिष्यदत्) अपने आशीर्वाद प्रसाद से प्राप्त करवाता है।

भावार्थ :- इस मन्त्र में स्पष्ट किया है कि पूर्ण परमात्मा कविर अर्थात् कबीर मानव शरीर में गुरु रूप में प्रकट होकर प्रभु प्रेमीयों को तीन नाम का जाप देकर सत्य भक्ति कराता है तथा उस मित्र भक्त को पवित्रकरके अपने आर्शिवाद से पूर्ण परमात्मा प्राप्ति करके पूर्ण सुख प्राप्त कराता है। साधक की आयु बढाता है। यही प्रमाण गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि ओम्-तत्-सत् इति निर्देशः ब्रह्मणः त्रिविद्य स्मृतः भावार्थ है कि पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का ॐ (1) तत् (2) सत् (3) यह मन्त्र जाप स्मरण करने का निर्देश है। इस नाम को तत्वदर्शी संत से प्राप्त करो। तत्वदर्शी संत के विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है तथा गीता अध्याय नं. 15 श्लोक नं. 1 व 4 में तत्वदर्शी सन्त की पहचान बताई तथा कहा है कि तत्वदर्शी सन्त से तत्वज्ञान जानकर उसके पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए। जहां जाने के पश्चात् साधक लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मुक्त हो जाते हैं। उसी पूर्ण परमात्मा से संसार की रचना हुई है।

विशेष :- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि पवित्र चारों वेद भी साक्षी हैं कि पूर्ण परमात्मा ही पूजा के योग्य है, उसका वास्तविक नाम कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है तथा तीन मंत्र के नाम का जाप करने से ही पूर्ण मोक्ष होता है।

धर्मदास जी को तो परमश्वेर कबीर साहेब जी ने सार शब्द देने से मना कर दिया था तथा कहा था कि यदि सार शब्द किसी काल के दूत के हाथ पड़ गया तो बिचली पीढ़ी वाले हंस पार नहीं हो पाऐंगे। जैसे कलयुग के प्रारम्भ में प्रथम पीढ़ी वाले भक्त अशिक्षित थे तथा कलयुग के अंत में अंतिम पीढ़ी वाले भक्त कृतघनी हो जाऐंगे तथा अब वर्तमान में सन् 1947 से भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। सन् 1951 में सतगुरु रामपाल जी महाराज को भेजा है। अब सर्व भक्तजन शिक्षित हैं। शास्त्र अपने पास विद्यमान हैं। अब यह सत मार्ग सत साधना पूरे संसार में फैलेगा तथा नकली गुरु तथा संत, महंत छुपते फिरेंगे।

इसलिए कबीर सागर, जीव धर्म बोध, बोध सागर, पृष्ठ 1937 पर :-

धर्मदास तोहि लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परि है, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरि है।

पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" के पृष्ठ 46 पर लिखा है कि ग्यारहवीं पीढ़ी को गद्दी नहीं मिली। जिस महंत जी का नाम "धीरज नाम साहब" कवर्धा में रहता था। उसके बाद बारहवां महंत उग्र नाम साहेब ने दामाखेड़ा में गद्दी की स्थापना की तथा स्वयं ही महंत बन बैठा। इससे पहले दामाखेड़ा में गद्दी नहीं थी। इससे स्पष्ट है कि पूरे विश्व में सतगुरु रामपाल जी महाराज के अतिरिक्त वास्तविक भक्ति मार्ग नहीं है। संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में बार-२ कहते हैं कि सर्व प्रभु प्रेमी श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि मुझे प्रभु का भेजा हुआ दास जान कर अपना कल्याण करवाऐं।

यह संसार समझदा नाहीं, कहन्दा श्याम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ बारहवां पंथ लिखा है कबीर सागर,कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1870 पर) के विषय में कबीर सागर कबीर वाणी पृष्ठ नं. 136-137 पर वाणी लिखी है कि :-

सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।
बारवें पंथ प्रगट ह्वै बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।
धर्मदास मोरी लाख दोहाई, सार शब्द बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परही, बिचली पीढी हंस नहीं तरहीं।
तेतिस अर्ब ज्ञान हम भाखा, सार शब्द गुप्त हम राखा।
मूल ज्ञान तब तक छुपाई, जब लग द्वादश पंथ मिट जाई।

यहां पर साहेब कबीर जी अपने शिष्य धर्मदास जी को समझाते हैं कि संवत् 1775 में मेरे ज्ञान का प्रचार होगा जो बारहवां पंथ होगा। बारहवें पंथ में हमारी वाणी प्रकट होगी लेकिन सही भक्ति मार्ग नहीं होगा। फिर बारहवें पंथ में हम ही चल कर आएगें और सभी पंथ मिटा कर केवल एक पंथ चलाएंगे। लेकिन धर्मदास तुझे लाख सौगंध है कि यह सार शब्द किसी कुपात्र को मत दे देना नहीं तो बिचली

पीढ़ी के हंस पार नहीं हो सकेंगे। इसलिए जब तक बारह पंथ मिटा कर एक पंथ नहीं चलेगा तब तक मैं यह मूल ज्ञान छिपा कर रखूंगा।

संत गरीबदास जी महाराज की वाणी में नाम का महत्व :--

नाम अभैपद ऊंचा संतों, नाम अभैपद ऊंचा।
राम दुहाई साच कहत हूं, सतगुरु से पूछा।।
कहै कबीर पुरुष बरियामं, गरीबदास एक नौका नामं।।
नाम निरंजन नीका संतों, नाम निरंजन नीका।
तीर्थ व्रत थोथरे लागे, जप तप संजम फीका।।
गज तुरक पालकी अर्था, नाम बिना सब दानं व्यर्था।
कबीर, नाम गहे सो संत सुजाना, नाम बिना जग उरझाना।
ताहि ना जाने ये संसारा, नाम बिना सब जम के चारा।।

संत नानक साहेब जी की वाणी में नाम का महत्व :--

नानक नाम चढ़दी कलां, तेरे भाणे सबदा भला।
नानक दुःखिया सब संसार, सुखिया सोय नाम आधार।।
जाप ताप ज्ञान सब ध्यान, षट शास्त्र सिमरत व्याखान।
जोग अभ्यास कर्म धर्म सब क्रिया, सगल त्यागवण मध्य फिरिया।
अनेक प्रकार किए बहुत यत्ना, दान पूण्य होमै बहु रत्ना।
शीश कटाये होमै कर राति, व्रत नेम करे बहु भांति।।
नहीं तुल्य राम नाम विचार, नानक गुरुमुख नाम जपिये एक बार।।

(परम पूज्य कबीर साहेब (कविर् देव) की अमृतवाणी)

संतो शब्दई शब्द बखाना।।टेक।। शब्द फांस फँसा सब कोई शब्द नहीं पहचाना।। प्रथमहिं ब्रह्म स्वं इच्छा ते पाँचौ शब्द उचारा। सोहं, निरंजन, रंरकार, शक्ति और ओंकारा।। पाँचौ तत्व प्रकृति तीनों गुण उपजाया। लोक द्वीप चारों खान चौरासी लख बनाया।। शब्दइ काल कलंदर कहिये शब्दइ भर्म भुलाया।। पाँच शब्द की आशा में सर्वस मूल गंवाया।। शब्दइ ब्रह्म प्रकाश मेंट के बैठे मूंदे द्वारा। शब्दइ निरगुण शब्दइ सरगुण शब्दइ वेद पुकारा।। शुद्ध ब्रह्म काया के भीतर बैठ करे स्थाना। ज्ञानी योगी पंडित औ सिद्ध शब्द में उरझाना।। पाँचइ शब्द पाँच हैं मुद्रा काया बीच ठिकाना। जो जिहसंक आराधन करता सो तिहि करत बखाना।। शब्द निरंजन चांचरी मुद्रा है नैनन के माँही। ताको जाने गोरख योगी महा तेज तप माँही।। शब्द ओंकार भूचरी मुद्रा त्रिकुटी है स्थाना। व्यास देव ताहि पहिचाना चांद सूर्य तिहि जाना।। सोहं शब्द अगोचरी मुद्रा भंवर गुफा स्थाना। शुकदेव मुनी ताहि पहिचाना सुन अनहद को काना।। शब्द रंरकार खेचरी मुद्रा दसवें द्वार ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु महेश आदि लो रंरकार पहिचाना।। शक्ति शब्द ध्यान उनमुनी मुद्रा बसे आकाश सनेही। झिलमिल झिलमिल जोत दिखावे जाने जनक विदेही।। पाँच शब्द पाँच हैं मुद्रा सो निश्चय कर जाना। आगे पुरुष पुरान निःअक्षर तिनकी खबर न जाना।। नौ नाथ चौरासी सिद्धि लो पाँच शब्द में अटके। मुद्रा साध रहे घट भीतर फिर ओंधे मखु लटके।। पाँच शब्द पाँच है मुद्रा लोक द्वीप यमजाला। कहैं कबीर अक्षर के आगे निःअक्षर का उजियाला।।

जैसा कि इस शब्द ''संतो शब्दई शब्द बखाना'' में लिखा है कि सभी संत जन शब्द (नाम) की महिमा सुनाते हैं। पूर्णब्रह्म कबीर साहिब जी ने बताया है कि शब्द

सतपुरुष का भी है जो कि सतपुरुष का प्रतीक है व ज्योति निरंजन (काल) का प्रतीक भी शब्द ही है। जैसे शब्द ज्योति निरंजन यह चांचरी मुद्रा को प्राप्त करवाता है इसको गोरख योगी ने बहुत अधिक तप करके प्राप्त किया जो कि आम (साधारण) व्यक्ति के बस की बात नहीं है और फिर गोरख नाथ काल तक ही साधना करके सिद्ध बन गए। मुक्त नहीं हो पाए। जब कबीर साहिब ने सत्यनाम तथा सार नाम दिया तब काल से छुटकारा गोरख नाथ जी का हुआ। इसीलिए ज्योति निरंजन नाम का जाप करने वाले काल जाल से नहीं बच सकते अर्थात् सत्यलोक नहीं जा सकते। शब्द ओंकार (ओ३म) का जाप करने से भूंचरी मुद्रा की स्थिति में साधक आ जाता हे। जो कि वेद व्यास ने साधना की और काल जाल में ही रहा। सोहं नाम के जाप से अगोचरी मुद्रा की स्थिति हो जाती है और काल के लोक में बनी भंवर गुफा में पहुँच जाते हैं। जिसकी साधना सुखदेव ऋषि ने की और केवल श्री विष्णु जी के लोक में बने स्वर्ग तक पहुँचा। शब्द रंरकार खैंचरी मुद्रा दसमें द्वार (सुष्मणा) तक पहुँच जाते हैं। ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों ने ररंकार को ही सत्य मान कर काल के जाल में उलझे रहे। शक्ति (श्रीयम्) शब्द ये उनमनी मुद्रा को प्राप्त करवा देता है जिसको राजा जनक ने प्राप्त किया परन्तु मुक्ति नहीं हुई। कई संतों ने पाँच नामों में शक्ति की जगह सत्यनाम जोड़ दिया है जो कि सत्यनाम कोई जाप नहीं है। ये तो सच्चे नाम की तरफ इशारा है जैसे सत्यलोक को सच्च खण्ड भी कहते हैं ऐसे ही सत्यनाम व सच्चा नाम है। केवल सत्यनाम-सत्यनाम जाप करने का नहीं है। इन पाँच शब्दों की साधना करने वाले नौ नाथ तथा चौरासी सिद्ध भी इन्हीं तक सीमित रहे तथा शरीर में (घट में) ही धुनि सुनकर आनन्द लेते रहे। वास्तविक सत्यलोक स्थान तो शरीर (पिण्ड) से (अण्ड) ब्रह्मण्ड से पार है, इसलिए फिर माता के गर्भ में आए (उलटे लटके) अर्थात् जन्म-मृत्यु का कष्ट समाप्त नहीं हुआ। जो भी उपलब्धि (घट) शरीर में होगी वह तो काल (ब्रह्म) तक की ही है, क्योंकि पूर्ण परमात्मा का निज स्थान (सत्यलोक) तथा उसी के शरीर का प्रकाश तो परब्रह्म आदि से भी अधिक तथा बहुत आगे (दूर) है। उसके लिए तो पूर्ण संत ही पूरी साधना बताएगा जो पाँच नामों (शब्दों) से भिन्न है।

संतों सतगुरु मोहे भावै, जो नैनन अलख लखावै।। ढोलत ढिगै ना बोलत बिसरै, सत उपदेश दृढ़ावै।।
आंख ना मूंदै कान ना रूदैं ना अनहद उरझावै। प्राण पूंज क्रियाओं से न्यारा, सहज समाधि बतावै।।

घट रामायण के रचयिता आदरणीय तुलसीदास साहेब जी हाथ रस वाले स्वयं कहते हैं कि :- (घट रामायण प्रथम भाग पृष्ठ नं. 27)।

पाँचों नाम काल के जानौ तब दानी मन संका आनौ। सुरति निरत लै लोक सिधाऊँ, आदिनाम ले काल गिराऊँ। सतनाम ले जीव उबारी, अस चल जाऊँ पुरुष दरबारी।।
कबीर, कोटि नाम संसार में, इनसे मुक्ति न हो। सार नाम मुक्ति का दाता, वाको जाने न कोए।।

पूरा सतगुरु सोए कहावै, दोय अखर का भेद बतावै।
एक छुड़ावै एक लखावै, तो प्राणी निज घर जावै।।

गुरु नानक जी की वाणी में तीन नाम का प्रमाण :--

जै पंडित तु पढ़िया, बिना दुउ अखर दुउ नामा।

परणवत नानक एक लंघाए, जे कर सच समावा।
वेद कतेब सिमरित सब सांसत, इन पढ़ि मुक्ति न होई।।
एक अक्षर जो गुरुमुख जापै, तिस की निरमल होई।।

भावार्थ : गुरु नानक जी महाराज अपनी वाणी द्वारा समाझाना चाहते हैं कि पूरा सतगुरु वही है जो दो अक्षर के जाप के बारे में जानता है। जिनमें एक काल व माया के बंधन से छुड़वाता है और दूसरा परमात्मा को दिखाता है और तीसरा जो एक अक्षर है वो परमात्मा से मिलाता है।

संत गरीबदास जी महाराज की अमृत वाणी में स्वांस के नाम का प्रमाण :--

गरीब, स्वांसा पारस भेद हमारा, जो खोजे सो उतरे पारा।
स्वांसा पारा आदि निशानी, जो खोजे सो होए दरबानी।
स्वांसा ही में सार पद, पद में स्वांसा सार। दम देही का खोज करो, आवागमन निवार।।
गरीब, स्वांस सुरति के मध्य है, न्यारा कदे नहीं होय।
सतगुरु साक्षी भूत कूं, राखो सुरति समोय।।
गरीब, चार पदार्थ उर में जोवै, सुरति निरति मन पवन समोवै।
सुरति निरति मन पवन पदार्थ (नाम), करो इक्तर यार।
द्वादस अन्दर समोय ले, दिल अंदर दीदार।
कबीर, कहता हूं कहि जात हूं, कहूं बजा कर ढोल।
स्वांस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।।
कबीर, माला स्वांस उस्वांस की, फेरेंगे निज दास।
चौरासी भ्रमे नहीं, कटैं कर्म की फांस।।

गुरु नानक देव जी की वाणी में प्रमाण :--

चहऊं का संग, चहऊं का मीत, जामै चारि हटावै नित।
मन पवन को राखै बंद, लहे त्रिकुटी त्रिवैणी संध।।
अखण्ड मण्डल में सुन्न समाना, मन पवन सच्च खण्ड टिकाना।।

पूर्ण सतगुरु वही है जो तीन बार में नाम दे और स्वांस की क्रिया के साथ सुमिरण का तरीका बताए। तभी जीव का मोक्ष संभव है। जैसे परमात्मा सत्य है। ठीक उसी प्रकार परमात्मा का साक्षात्कार व मोक्ष प्राप्त करने का तरीका भी आदि अनादि व सत्य है जो कभी नहीं बदलता है। गरीबदास जी महाराज अपनी वाणी में कहते हैं :

भक्ति बीज पलटै नहीं, युग जांही असंख। सांई सिर पर राखियो, चौरासी नहीं शंक।।
घीसा आए एको देश से, उतरे एको घाट। समझों का मार्ग एक है, मूर्ख बारह बाट।।
कबीर भक्ति बीज पलटै नहीं, आन पड़ै बहु झोल। जै कंचन बिष्टा परै, घटै न ताका मोल।।

बहुत से महापुरुष सच्चे नामों के बारे में नहीं जानते। वे मनमुखी नाम देते हैं जिससे न सुख होता है और न ही मुक्ति होती है। कोई कहता है तप, हवन, यज्ञ आदि करो व कुछ महापुरुष आंख, कान और मुंह बंद करके अन्दर ध्यान लगाने की बात कहते हैं जो कि यह उनकी मनमुखी साधना का प्रतीक है। जबकि कबीर साहेब, संत गरीबदास जी महाराज, गुरु नानक देव जी आदि परम संतों

ने सारी क्रियाओं को मना करके केवल एक नाम जाप करने को ही कहा है।

एक नैसत्रे दमस नामक भविष्य वक्ता था। जिसकी सर्व भविष्य वाणियां सत्य हो रही हैं जो लगभग चार सौ वर्ष पूर्व लिखी व बोली गई थी। उसने कहा है कि सन् 2006 में एक हिन्दू संत प्रकट होगा अर्थात् संसार में उसकी चर्चा होगी। वह संत न तो मुसलमान होगा, न वह इसाई होगा वह केवल हिन्दू ही होगा। उस द्वारा बताया गया भक्ति मार्ग सर्व से भिन्न तथा तथ्यों पर आधारित होगा। उसको ज्ञान में कोई पराजित नहीं कर सकेगा। सन् 2006 में उस संत की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। (संत रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर सन् 1951 को हुआ। जुलाई सन् 2006 में संत जी की आयु ठीक 55 वर्ष बनती है जो भविष्यवाणी अनुसार सही है।) उस हिन्दू संत द्वारा बताए गए ज्ञान को पूरा संसार स्वीकार करेगा। उस हिन्दू संत की अध्यक्षता में सर्व संसार में भारत वर्ष का शासन होगा तथा उस संत की आज्ञा से सर्व कार्य होंगे। उसकी महिमा आसमानों से ऊपर होंगी। नैसत्रे दमस द्वारा बताया सांकेतिक संत रामपाल जी महाराज हैं जो सन् 2006 में विख्यात हुए हैं। भले ही अनजानों ने बुराई करके प्रसिद्ध किया है परंतु संत में कोई दोष नहीं है।

उपरोक्त लक्षण जो बताए हैं ये सभी तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज में विद्यमान हैं।
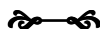
संत सताने की सजा

आदरणीय गरीबदास साहेब जी का जन्म पावन गाँव छुड़ानी जिला-झज्जर में श्री बलराम जी धनखड़ (जाट) के घर हुआ। आपजी को पूर्णब्रह्म कबीर परमेश्वर (कविर्देव) सतलोक (ऋतधाम) से सन् 1727 में सशरीर आकर मिले थे तथा आपजी के जीव को सत्यलोक लेकर गए थे। पीछे से परिवार जनों ने गरीबदास जी को मृत जानकर चिता पर रखा दिया था। उसी समय कविर्देव ने आप जी का जीव वापिस शरीर में प्रविष्ट कर दिया। उसके पश्चात् आदरणीय गरीबदास जी भी परम पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की आँखों देखी महिमा जन-जन को सुनाने लगे। जो भी दुःखी प्राणी आपजी से उपदेश प्राप्त करता, वही सुखी हो जाता। आपजी की बढ़ती महिमा तथा तत्वज्ञान के सामने अन्य गुरुओं (आचार्यों) के अधूरे ज्ञान की पोल खुलने से आस-पास के सर्व अधूरे ज्ञान युक्त गुरू जन (आचार्य जन) आप जी से अत्यधिक ईर्ष्या करने लगे। आस पास के मुख्य-मुख्य चौधरियों को उलटी पट्टी पढ़ा दी। जिससे आस-पास के गाँव के आम व्यक्ति प्रभु कबीर के प्यारे बच्चे आदरणीय गरीबदास जी से घृणा करने लगे।

दिल्ली के वाजीदपुर गाँव में आपका एक शिष्य था। उससे भी पूरा गाँव ईर्ष्या करता था। उसकी प्रार्थना पर आप जी कुछ दिन वाजीदपुर में ठहरे। उसी समय टिड्डी दल ने आस पास के क्षेत्र में बाजरे की फसल नष्ट कर दी। परन्तु आप जी के सेवक की फसल को कोई हानि नहीं पहुँचाई। सर्व ग्रामवासी सन्त गरीबदास जी की महिमा से बहुत प्रभावित हुए तथा ज्ञान को स्वीकार करके अपना आत्म कल्याण करवाया।

आप जी के आदेश से आप के भक्त ने उस बाजरे को पूरे गाँव में बांट दिया तथा गरीबदास जी के बार-२ मना करने पर भी कुछ बाजरा बैलगाड़ी में डाल दिया तथा कहा कि प्रत्येक पूर्णमासी में आप भण्डारा करते हो, कुछ दान आपके दास का भी हो जायेगा। भक्तों की श्रद्धा को रखते हुए आप जी ने स्वीकृति प्रदान कर दी (आदरणीय गरीबदास जी के चार लड़के तथा दो कन्याएें संतान रूप में थी तथा लगभग 1300 एकड़ जमीन के स्वामी भी थे)। उसी बैलगाड़ी में बैठकर आप गाँव छुड़ानी को चल पड़े। रास्ते में गाँव काणौंदा के पास बैलगाड़ी पहुँचते ही पहले से सुनियोजित षड़यन्त्र स्वार्थी गुरूओं (आचार्यों) ने संत गरीबदास जी को घेर लिया। सर्व बाजरा लूट लिया तथा उसी गाँव के चौधरी छाजूराम छिक्कारा को सूचना कर दी कि वह हिन्दू धर्म का द्रोही पकड़ लिया है। चौधरी छाजुराम जी के आदेश से चौपाड़ में बांध दिया गया। चौधरी छाजुराम जी को सरकार की तरफ से कुछ कानूनी अधिकार प्राप्त थे। छः महीने की सजा, पाँच सौ रूपये जुर्माना तथा महादोषी को काठ में बंद करना आदि सम्मिलित थे।

उन धर्म के अज्ञानी ठेकेदारों (गुरूओं - आचार्यों) द्वारा पूर्व से उल्टी पट्टी पढ़े चौधरी छाजुराम छिक्कारा जी ने उस परम आदरणीय गरीबदास जी महाराज को काठ में बंद कर दिया (काठ में बंद करना एक प्रकार की कठिन कारागार की सजा थी, दोनों पैरों के घुटनों से ऊपर दो काष्ठ के मोटे डण्डे बांध कर दोनों हाथों को पीछे बांध दिया जाता था जिस कारण व्यक्ति बैठ नही सकता था तथा पीड़ा बहुत होती थी पैर सूज जाते थे)। बैलगाड़ी वाला खाली गाड़ी लेकर गाँव वाजीदपुर

वापिस चला गया जो गाँव काणौंदा से लगभग 10 कि.मी. दूरी पर है। सूचना प्राप्त होते ही वाजीदपुर गाँव के कुछ मुख्य व्यक्ति तुरन्त काणौंदा पहुँच गए तथा चौधरी छाजुराम जी से प्रार्थना की तथा बहुत समझाया कि यह आम व्यक्ति नहीं है, यह परम शक्ति सम्पन्न है। आप क्षमा याचना कर लो। चौधरी छाजुराम जी बहुत ही नेक आत्मा तथा बहुत ही दयालु व नम्र हृदय का व्यक्ति था। परन्तु उन स्वार्थी व प्रभुता के भूखे गुरुओं (आचार्यों) ने उस पुण्यात्मा श्री छाजुराम छिक्कारा जी को झूठी कहानी सुनाकर प्रभु के प्यारे बच्चे आदरणीय गरीबदास जी के प्रति अत्यधिक गलानि पैदा कर रखी थी। जिस कारण से चौधरी छाजुराम जी ने बिना कारण जाने ही सजा प्रारम्भ कर दी थी। वाजीदपुर के भक्तों की प्रार्थना मान कर आदरणीय गरीबदास जी को छोड़ दिया। आदरणीय गरीबदास जी साहेब जी ने कुछ नहीं कहा तथा अपने गाँव छुड़ानी आ गए। कुछ दिनों उपरान्त चौधरी छाजुराम जी प्रातः काल टट्टी फिरने (फ्रैश होने) जोहड़ (तालाब) पर गए तो उनके दोनों हाथ दो घुड़सवारों ने काट दिए। उसी समय उनके समक्ष ही अदृश हो गए। इस दृश्य को तालाब पर उपस्थित कई व्यक्तियों ने भी देखा। बहुत उपचार करवाया परन्तु दर्द तथा रक्त का स्राव बंद नहीं हुआ। कई दिन तक बुरी तरह चिल्लाते रहे। फिर एक व्यक्ति ने कहा उसी सन्त गरीबदास जी के पास जाकर क्षमा याचना कर लो, वे दयालु हैं, परिवार जन उस चौधरी को घोड़े पर बैठा कर छुड़ानी ले गये। श्री छाजुराम जी जाते ही आदरणीय गरीबदास जी के चरणों में गिर गए। क्षमा याचना की। संत गरीबदास जी ने आशीर्वाद दिया तथा नाम उपदेश दिया तथा आजीवन भक्ति करने को कहा। चौधरी छाजुराम जी ने कहा दाता मेरे को आप के विषय में अत्यधिक भ्रमित कर रखा था।

मुझे नहीं मालुम था कि आप पूर्ण परमात्मा आए हो। आदरणीय गरीबदास जी ने कहा मैं पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब (कविर्देव) जुलाहा का भेजा हुआ दास हूँ। उन्हीं की शक्ति से आप ठीक हुए हो। मैंने आपको कोई शाप नहीं दिया था। आप का कर्म आपको मिला है। यदि यहाँ नहीं आते तो आपके परिवार पर और भी पाप का प्रभाव था। अब वह नहीं रहेगा, क्योंकि आपने उपदेश प्राप्त कर लिया। चौधरी छाजुराम जी ने अपने सर्व परिवार को उपदेश दिलाया। आज भी उसी पुण्यात्मा छाजुराम के वंशज आदरणीय गरीबदास जी की परम्परागत पूजा करते हैं। लगभग सैकड़ों परिवार हैं जिन्हें छाजुवाड़ा कहते हैं। क्योंकि : तुमने उस दरगाह का महल ना देख्या। धर्मराय के तिल–२ का लेख।। राम कहै मेरे साध को, दुःख ना दीजो कोए। साध दुखाय मैं दुःखी, मेरा आपा भी दुःखी होय।। हिरण्यक शिपु उदर (पेट) विदारिया, मैं ही मार्‌या कंश। जो मेरे साधु को सतावै, वाका खो–दूं वंश।। साध सतावन कोटि पाप है, अनगिन हत्या अपराधं। दुवार्सा की कल्प काल से, प्रलय हो गए यादव।।

उपरोक्त वाणी में सतगुरु गरीबदास जी साहेब प्रमाण दे रहे हैं कि परमेश्वर कहते हैं कि मेरे संत को दुःखी मत कर देना। जो मेरे संत को दुःखी करता है समझो मुझे दुःखी करता है। जब मेरे भक्त प्रहलाद को दुःखी किया तब मैंने हिरणयकशिपु का पेट फाड़ा और मैंने ही कंश को मारा और जो मेरे साधु को दुःखी करेगा मैं उसका वंश मिटा दूंगा। इसलिए संत को सताने के करोड़ों पाप लगते हैं। जैसे अनगिन (अनंत) हत्याएं कर दी हों। ये अनजान लोग परमात्मा के संविधान

से परीचित नहीं हैं, इसलिए भयंकर भूल करते हैं और फिर दण्ड के भागी बनते हैं। साधु सताने को निम्न दण्ड मिलता है।

यदि एक मनुष्य दुसरे मनुष्य की मृत्यु कर देता है तो उसका अगले जन्म में हत्या करने से पूरा हो जाता है। लेकिन संत को सताने का बहुत बड़ा दण्ड है जो अनंत जन्मों में भी पूरा नहीं होता। सतगुरु अपनी वाणी में कहते हैं :--

अर्धमुखी गर्भवास में हरदम बारम्बार, जूनी भूत पिशाच की, जब लग सृष्टी संहार।

ऐसी गलती करने वाले को परमेश्वर भिन्न प्राणियों की योनियों में बारम्बार मां के गर्भ में डालते हैं अर्थात् वह जन्म लेते ही बारम्बार मृत्यु को प्राप्त हो जाता है और जब तक सृष्टी प्रलय नहीं हो जाती तब तक भूत-पिशाच की योनि व मां के गर्भ में महान कष्ट रखता है जो बहुत ही दुःखदायी होता है और तब तक क्षमा नहीं मिलती जब तक सताया हुआ संत ही क्षमा नहीं कर देता।

एक बार दुर्वासा ऋषि ने अभिमान वश अम्ब्रीष ऋषि को मारने के लिए अपनी शक्ति से एक सुदर्शन चक्र छोड़ दिया। सुदर्शन चक्र अम्ब्रीष ऋषि के चरण छू कर वापिस दुर्वासा ऋषि को मारने के लिए दुर्वासा की तरफ ही चल पड़ा। दुर्वासा ऋषि ने सोच लिया कि तुने बहुत बड़ी गलती कर दी है। लेकिन अधिक समय न रहते देख दुर्वासा सुदर्शन चक्र के आगे-२ भाग लिया। भागता-२ श्री ब्रह्मा जी के पास गया और बोला कि हे भगवन ! कृप्या आप मुझे इस सुदर्शन चक्र से बचाओ। इस पर ब्रह्मा जी बोले कि ऋषि जी यह मेरे बस की बात नहीं है। अपने सिर पर से बला को टालते हुए कहा कि आप भगवान शंकर के पास जाओ। वे ही आपको बचा सकते हैं। यह सुनते ही दुर्वासा ऋषि, भगवान शंकर के पास गया और बोला कि हे भगवन् ! कृपा करके आप मुझे इस सुदर्शन चक्र से बचाओ। इस पर भगवान शिव ने भी ब्रह्मा की तरह टालते हुए कहा कि आप श्री विष्णु भगवान के पास जाओ। वही आपको बचा सकते हैं। यह सुनते ही भगवान विष्णु जी के पास जाकर दुर्वासा ऋषि ने कहा कि हे भगवन ! आप ही मेरे को इस सुदर्शन चक्र से बचा सकते हो वरना यह मेरे को काट कर मार डालेगा। इस पर भगवान विष्णु जी ने कहा कि हे ऋषि जी ! यह सुदर्शन चक्र आपको क्यों मारना चाहता है ? दुर्वासा ऋषि ने उपरोक्त सारी कहानी बताई तब विष्णु जी ने कहा कि हे दुर्वासा ऋषि ! यदि आप उसी अम्ब्रीष ऋषि के चरण पकड़ कर माफी मांगो तो यह सुदर्शन चक्र आपकी जान बख्स सकता है अन्यथा मैं तो क्या कोई भी देव आपको नहीं बचा सकता। इसका दूसरा कोई विकल्प ही नहीं है। मरता क्या नहीं करता ? तब दुर्वासा ऋषि वापिस जाकर अम्ब्रीष ऋषि के चरण पकड़ कर रोने लगा और हृदय से माफी मांगी। तब अम्ब्रीष ऋषि ने वह सुदर्शन चक्र अपने हाथ में पकड़ कर दुर्वासा ऋषि को दिया और कहा कि संतों/ऋषियों के साथ बेअदबी कभी नहीं करनी चाहिए। उसका परिणाम बहुत बुरा होता है।

"श्री कृष्ण गुरु कसनी हुई और बचेगा कौन"

जब श्री कृष्ण जी के गुरु श्री दुर्वासा जैसे ऋषियों की ये हालत है तो फिर आम आदमी कैसे मच सकता है ?

❧ ☙

भटकों को मार्ग विषय

"भक्त समाज प्रभु की वास्तविक भक्ति से कोसों दूर"

सतलोक आश्रम करौंथा, जिला-रोहतक, हरियाणा में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) के प्रकट दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे पाँच दिवसीय (18 से 22 जून 2005 तक) सत्संग समारोह में भक्त बसंत सिंह सैनी ने अपनी कहानी सुनाई जो कृप्या निम्न पढ़ें :-

"प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना"

मैं बसंत सिंह सैनी गाँव गांधरा जिला-रोहतक हरियाणा का रहने वाला हूँ तथा पुराना पता म.नं. एस 161 पाण्डव नगर, नजदीक मदर डेयरी, यमुनापार, दिल्ली-92 में रहता था। हमारे परिवार पर मानों दुःखों का पहाड़ टूटा हुआ था। फिर भी परमात्मा को पाने की चाहत व दुःखों की निवर्ति के लिए संतों व महंतों के पास आते जाते रहते थे। परन्तु कहीं भी दुःखों का निवारण नहीं हुआ। आखिरकार एक जाने-माने संत श्री आसाराम बापू से मिले। उस समय बापू जी की संगत दिल्ली में लगभग एक हजार थी। जिसके कारण बहुत नजदीक से मिलने का मौका मिला। हमने अपने दुःख व परमात्मा पाने की जिज्ञासा उनके सामने रखी। उन्होंने हमें 7 मंत्र (ॐ गुरु, हरि ॐ, ॐ ऐं नमः, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ह्रीं रामाय नमः व गायत्री मंत्र इत्यादि) बताए। जिनमें से एक छांटने के लिए कहा गया और एक 'सोहं' मंत्र जो स्वांस के द्वारा 'सो' अंदर व 'हं' बाहर निकाल कर जाप के लिए कहा गया। एकादशी व पूर्णिमा का व्रत, सोमवार का व्रत व अष्टमी का व्रत करने को कहा, ज्यादा से ज्यादा त्रिबंध प्राणायाम व सिद्धासन में बैठकर ध्यान लगाना व अनुष्ठान करना बताया। हमने मंत्र लिया तथा अपने दुःख उनके सामने रोए तथा बताया कि हमारे ताऊ जी जो चालीस वर्ष पहले मर गए थे वह बहुत बड़ा प्रेत बना हुआ है। उसने हमारे दो भाईयों को मार दिया, आठ-दस भैंसों को मार दिया, पाँच-छः गायों को मार दिया, पशुओं का कोई भी बच्चा जीवित नहीं रहता। घर के सभी सदस्य बीमार रहते हैं। दुःख के कारण बेहाल हैं तथा किसी भी काम धंधे को नहीं चलने देता। अब कह रहा है कि आपके पिता जी को लेकर जाऊंगा। हमने बापू जी से प्रार्थना की कि हमें बचाओ। परन्तु छः महीने बाद वह प्रेत हमारे पिताजी को भी ले गया। बापू जी ने कहा कि जो हुआ वह तो होना ही था, पशु आदि व धन की हानि तथा शारीरिक बीमारी तो पाप का भोग है जो जीव के प्रारब्ध में लिखा होता है, वह तो भोगना ही पड़ता है। आप भक्ति करो। हम परमात्मा प्राप्ति के लिए लगे रहे। बापू जी के समझाने के बाद हम परमात्मा प्राप्ति के लिए पूरी श्रद्धा से लग गये तथा मैंने (बसंत दास) सबसे पहले श्री आसाराम बापू आश्रम दिल्ली में चालीस दिन का अनुष्ठान महन्त नरेन्द्र ब्रह्मचारी की सलाह से किया। इसके बाद चालीस दिन के छः

अनुष्ठान आसाराम बापू आश्रम पंचेड़ रतलाम, मध्यप्रदेश में महन्त काका जी की देखरेख में किए। उसके बाद दो अनुष्ठान आसाराम आश्रम साबरमती अहमदाबाद गुजरात के मौन मन्दिर में किए। जहाँ पर श्री आसाराम बापू जी से अच्छी तरह बात करने का मौका मिला। तब मैंने बापू जी से पूछा कि बापू जी जिस परमात्मा को पाने के लिए मैं तथा सारा भक्त समाज लगा हुआ है वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? तथा कहां रहता है ? बताने की कृप्या करें।

यह सुनकर बापू जी ने कहा कि आप लगे रहो सब पता चल जायेगा और बताया कि गीता जी के एक अध्याय का पाठ प्रतिदिन करना है और कभी मेरे दर्शनों की इच्छा हो तो एक क्रिया बताता हूँ कि तीन दिन तक एक कमरे में बंद हो जाओ। कमरे में बंद होने से पहले दिन खाना पीना छोड़ दो ताकि शाम तक लैटरिंग व बाथरूम से निवर्ति हो जाये। उसके तीन दिन तक कुछ भी खाना पीना नहीं है, न बाहर निकलना है। कमरे में रहो, त्राटक करो। घर जाकर मैंने यह तीन बार किया, परन्तु बापू के दर्शन नहीं हुए। अनुष्ठान के समय जीवन मृत्यु से जूझ कर बीमारी का सामना करना पड़ा। परन्तु फिर भी परमात्मा पाने के लिए लगा रहा।

सितम्बर 2000 में संत रामपाल दास जी महाराज का सत्संग काठमण्डी रोहतक में सुना, जिन्होंने तत्वज्ञान के आधार पर गीता जी को समझाया उसके बाद गीता जी का पाठ करने से मन में आने लगा कि गीता जी में भगवान क्या कह रहे हैं और बापू जी क्या बता रहे हैं। कहीं सचमुच हम भगवान के विरुद्ध तो साधना नहीं कर रहे हैं। संत रामपाल जी के द्वारा बताए गीता जी के अनुवाद को समझा तो अंतरात्मा रोने लगी तथा बापू जी से मिलकर यह सब शंकाऐं पूछनी चाही। मैं बापू जी के पास गीता लेकर गया तथा गीता जी को दिखाकर सब शंकाऐं पूछी। परन्तु बापू जी ने किसी भी शंका का समाधान नहीं किया। मैंने बापू जी से कहा कि बापू जी आपको परमात्मा के बारे में नहीं पता तो आप भक्त समाज को अपने पास क्यों उलझा रहे हो, इस पर बाबू जी मेरी तरफ घूर कर बोले कि तू क्या जाने भक्ति के विषय में। मैं उठकर रोता हुआ अपने घर आ गया।

परमात्मा की प्राप्ति न होने से तथा उलझे हुए जीवन को देखते हुए तथा हठ रूपी अनुष्ठान व व्रतों के करने से शरीर काफी कमजोर हो गया और मृत्यु नजदीक दिखाई देने लगी। फिर अन्य संतों (राधास्वामी पंथ, धन-धन सतगुरु, श्री सतपाल जी महाराज, श्री बालयोगेश्वर जी महाराज, दिव्य ज्योति, ब्रह्मकुमारी, निरंकारी मिशन, जय गुरुदेव मथुरा वाले आदि) के पास भटका, परन्तु जो निर्णायक ज्ञान संत रामपाल जी महाराज ने बताया वह उपरोक्त किसी भी संत व पंथ के पास नहीं है। मैं पश्चाताप करने लगा कि इस समय शायद पृथ्वी पर कोई भी संत ऐसा नहीं है जिसको परमात्मा प्राप्ति हुई है और जो यह बता सके कि वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? और कहां रहता है ? यह विचार कर मैं फूट फूट कर रातों रोता रहा, संतों से विश्वास उठ गया। मन में आने लगा कि जब श्री आसाराम जी जैसे सुप्रसिद्ध संत ही शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं

तो किस संत पर विश्वास किया जाए। संत रामपाल जी ज्ञान तो श्रेष्ठ बता रहे हैं परन्तु इनके पास जन समूह कुछ भी नहीं है। ये पूर्ण संत कैसे हो सकते हैं ? यह शंका मन में आई। कुछ दिनों के बाद संत रामपाल जी महाराज का एक शिष्य हमारे गाँव का मिला तथा मेरी कहानी सुनकर उसने मुझे फिर से परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के सत्संग में दोबारा लाकर बैठा दिया। मैंने एक घंटे का सत्संग सुना और सत्संग के बाद रोता हुआ महाराज जी से मिला। महाराज जी ने मुझे सीने से लगाकर कहा कि जिस संत के पास आप जाते हो वे शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं। जैसा यह सब वे पहले ही जानते थे कि मुझे क्या चाहिए और मेरी शंकाओं का समाधान संत रामपाल जी महाराज ने अपने चरणों में बैठाकर इस तरह से किया।

तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज ने बताया कि पवित्र गीता जी अध्याय 9 मंत्र 25 में पित्तर पूजना अर्थात् श्राद्ध निकालना मना किया है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने वालों को मन्द बुद्धि वाले लिखा है (गीता अध्याय 7 मन्त्र 12 से 15 तथा 20 से 23 तक)। परन्तु श्री आसाराम जी ''श्राद्ध महिमा'' नामक पुस्तक में श्राद्ध निकालने की श्रेष्ठ विधि बताते हैं। संत श्री आसाराम जी के साबरमति अहमदाबाद आश्रम से प्रकाशित पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक-135 मार्च 2004 में लिखा है कि भूत पूजने वाले तथा पित्तरों को पूजने वाले तथा अन्य देवी देवताओं को पूजने वाले क्या बनेंगे, पढिए पत्रिका के अगले अंक में ....। अगले अंक की पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक 136 अप्रैल 2004 पृष्ठ 19 में लिखा था कि भूत पूजने वाले भूत लोकों को प्राप्त होंगे तथा पित्तर पूजने वाले पित्तर लोकों को प्राप्त होंगे तथा श्री कृष्ण के पूजारी भगवान श्री कृष्ण जी के बैकुण्ठ लोक को प्राप्त होंगे।

विचारें - श्री आसाराम जी द्वारा प्रकाशित 'श्राद्ध महिमा' नामक पुस्तक में पित्तर पूजने की अच्छी विधि भी लिखी है।

कृप्या सोचें - कोई व्यक्ति यह भी कह रहा हो कि कूएँ में गिरने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। फिर स्वयं ही कूएँ में गिरने का परामर्श भी कर रहा है तथा कह रहा है कि कूएँ में गिरने की अच्छी विधि बताता हूँ कि दोनों कदम उठा कर एक दम छलांग लगाऐं। यह कूएँ में गिर कर मरने की श्रेष्ठ विधि है। जो ऐसा नहीं करता वह दोषी है।

क्या वह व्यक्ति नेक है ? यह भूमिका श्री आसाराम जी संत कर रहे हैं कि एक तरफ तो कह रहे हैं कि पित्तर व भूत पूजने वाले भूत व पित्तर बनकर भूतलोक व पित्तरलोक में जायेंगे, जहाँ पर वे भूखे प्यासे रहते हैं। फिर उनको श्राद्धों द्वारा तृप्त किया जाता है। एक और विचारणीय विषय है कि जब अपने माता-पिता जीवित थे तो वे प्रतिदिन कम से कम दो बार भोजन करते थे। अब मृत्यु के पश्चात् वे श्री गीता जी विरुद्ध साधना करके दुःखदाई भूत व पित्तर जूनी को प्राप्त कर चुके हैं। अब एक दिन के श्राद्ध से वे कैसे तृप्त हो सकते हैं। 364 दिन क्या खाऐंगे ? जिसके लिए संत व गुरुजन दोषी हैं जो भोली-भाली आत्माओं को गुमराह कर रहे हैं। शास्त्र ज्ञान से अपरिचित संत ही इस जीव को शास्त्र विधि रहित साधना करवा

कर दुःखदाई योनियों में डलवाते हैं।

श्री आसाराम जी श्री शिवजी की उपासना का मन्त्र (ॐ नमो शिवाय) व श्री विष्णु जी का मन्त्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) बताते हैं। इसी के अतिरिक्त हरि ॐ, ॐ गुरु आदि नामों में से कोई एक मंत्र अपनी इच्छा अनुसार चुन लेने को कहते हैं तथा सोहं को दो हिस्से करके स्वांस द्वारा स्मरण करना आदि मन्त्र देते हैं जो किसी शास्त्र में प्रमाण नहीं है।

विचार करें - कोई रोगी जिसके पेट में दर्द हो किसी वैद्य के पास ईलाज के लिए प्रार्थना करे। वैद्य उसके आगे छः प्रकार की गोलियां डाल कर कहे की जो तुझे अच्छी लगे, इनमें से एक उठा ले। क्या वह वैद्य हो सकता है ?

पवित्र गीता जी अध्याय 8 मन्त्र 13 में कहा है कि :-

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म, व्याहरन् माम् अनुस्मरन्, यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम् ।। 13 ।।

इसका शब्दार्थ है कि गीता बोलने वाला ब्रह्म अर्थात् काल कह रहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का तो (इति) यह एक (ओम् एकाक्षरम्) ओम् एक अक्षर है (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करने का (यः) जो साधक (त्यजन् देहम्) शरीर त्यागने तक अर्थात् अन्तिम स्वांस तक (प्रयाति) स्मरण साधना करता है (सः) वह साधक ही मेरे वाली (परमाम् गतिम्) परमगति को (याति) प्राप्त होता है।

भावार्थ है कि श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् हजार भुजा वाला ज्योति निरंजन काल कह रहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना केवल एक ओम् (ॐ) नाम से मृत्यु पर्यन्त करने वाले साधक को मुझ से मिलने वाला लाभ प्राप्त होता है, अन्य कोई मन्त्र मेरी भक्ति का नहीं है तथा अपनी गति को भी गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 में अनुत्तमाम् अर्थात् अति घटिया बताया है। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 9 मन्त्र 20 से 25 में कहा है कि जो तीनों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद) में वर्णित विधि द्वारा मेरी साधना करते हैं तथा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं उनकी जन्म-मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक बना रहता है तथा पित्तर पूजने वाले (श्राद्ध करने वाले) पित्तर बनकर पित्तरों को प्राप्त होते हैं। भूत पूजने वाले (तेरहवीं, सतरहवीं, बर्षी, अस्थियां उठा कर गंगा आदि में क्रिया करवा कर प्रवाह करवाना, पिण्ड भरवाना आदि भूत पूजा है) भूत बन कर भूतलोक में चले जायेंगे, फिर पृथ्वी पर भी भटकते रहेंगे। यह पूजा अविधि पूर्वक अज्ञान पूवर्क मन माना आचरण है। इसलिए व्यर्थ है। प्रमाण गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24 । विशेष : यहाँ चौथे अथर्ववेद का विवरण इसलिए नहीं है कि इसमें पूजा विधि कम तथा सृष्टी रचना अधिक है। इसलिए गीता अध्याय 18 मन्त्र 62 में कहा है कि उस परमात्मा की शरण में जा जिससे तेरी पूर्ण मुक्ति होगी तथा परम शान्ति तथा शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा तथा गीता अध्याय 15 मंत्र 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत मिलने पर उसके बताए अनुसार शास्त्र विधि अनुसार साधना करनी चाहिए। फिर उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात्

साधक का कभी जन्म-मृत्यु नहीं होता अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त हो जाता है।(गीता बोलने वाला काल अर्थात् क्षर पुरुष-ब्रह्म कह रहा है कि) मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ।

संत रामपाल महाराज जी ने बताया कि अन्य सर्व संत कहते हैं कि पाप का भोग तो प्रारब्ध में लिखा होने के कारण जीव को भोगना ही पड़ता है। भक्ति करते रहना चाहिए, आने वाला दूसरा जीवन सुखमय हो जायेगा।

कृप्या विचार करें - किसी के पैर में कांटा लगा हो जिस कारण से उसे बहुत पीड़ा हो रही हो। उस कांटे के कष्ट के निवारण के लिए किसी से प्रार्थना करे तो उतर मिलें कि कांटा तो लगा रहने दे, जूता पहन ले, भविष्य में कांटा नहीं लगेगा। क्या वह व्यक्ति ठीक सलाह दे रहा है ? क्योंकि कांटा लगे पैर में जूता पहना ही नहीं जा सकता। पहले कांटा निकले फिर इस डर से जूता पहनेगा कि कहीं दोबारा कांटा न लग जाए। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा के पूर्ण संत की शरण में आने से पाप रूपी कांटे का कष्ट समाप्त होता है। फिर साधक पूर्ण प्रभु की शास्त्र विधि अनुसार साधना रूपी जूता इस डर से पहनेगा कि कहीं फिर से कोई पाप रूपी कांटा कष्ट दायक न हो जाए।

सभी संतों ने पवित्र गीता जी के अनुवाद में अर्थों का अनर्थ किया है। गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 व 24 में अनुत्तमाम् का अर्थ अति उत्तम किया है तथा अध्याय 18 मन्त्र 66 में व्रज का अर्थ आना किया है। जबकि अनुत्तम का अर्थ अति घटिया होता है तथा व्रज का अर्थ जाना होता है। तत्वज्ञान के अभाव से तथा ज्ञान हीन गुरुओं के कारण ही सर्व भक्त समाज शास्त्र विधि रहित साधना करके मनुष्य जीवन व्यर्थ कर रहा है (पवित्र गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24)। सर्व पवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, सन्तों, महन्तों तथा ऋषियों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा।

उपरोक्त सच्चाई को आँखों देखकर मैं तथा अन्य परिवार के सदस्य संत रामपाल महाराज जी के चरणों में लगे हैं। पूरे परिवार में कोई बीमारी नहीं रही और जो भूत कभी परिवार के किसी सदस्य को मार देते थे, किसी पशु को मार देते थे, काम धंधे को नहीं चलने देते थे वे घर से ही नहीं गाँव से भी भाग गये हैं तथा दूसरे रिश्तेदारों के घर चले गए हैं, जो अब भी श्री आसाराम जी के पूजारी हैं। वहाँ जाकर भूत कहते हैं कि उनके बसंत आदि के घर तो परमात्मा का निवास हो गया है, उनको परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत मिल गये हैं, हम उनके पास नहीं जा सकते। संत रामपाल जी से उपदेश के पश्चात् हम पूरी तरह से स्वस्थ व सुखी जीवन जी रहे हैं। हमारे परिवार व रिश्तेदारों के लगभग दो सौ सदस्यों ने संत रामपाल जी महाराज का उपदेश प्राप्त कर लिया है जो पहले श्री आसाराम जी महाराज के शिष्य थे। संत रामपाल जी के द्वारा बताए तत्वज्ञान को समझ कर लगभग दस हजार श्री आसाराम जी के शिष्य भी सतगुरु रामपाल जी महाराज की

शरण में आ चुके हैं। वे भी मेरे की तरह पश्चाताप कर रहे हैं। मेरी भक्त समाज से प्रार्थना है कि जिनको भी परमात्मा पाने की तड़फ है, तलाश है, कृप्या परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर अपने जीवन को सुखी बनाए तथा परमात्मा को प्राप्त करें।

भक्त बसंत दास
मोब. नं. 9812151088

"अद्धभुत करिश्मा"

पूजनीय गुरुदेव जी दण्डवत प्रणाम,

मैं अपने परिवार की खुशी आदरपूर्वक सूचित करना चाहता हूँ कि जनवरी 2000 के आरम्भ में आपका प्रवचन/सत्संग ताजपुर गाँव देहली में श्री मुरारी भक्त के निवास पर चल रहा था तो एक अन्य भक्त की बेटी ने मेरी पत्नी श्रीमति बिमला देवी (छावला) से कहा कि चाची जी पड़ोस के गाँव में जो सत्संग चल रहा है यदि आप उस महाराज से नाम ले लो तो आपका असाध्य रोग (रीढ़ की हड्डी में एक इंच का फासला) ठीक हो सकता है। तो मेरी पत्नी ने उस लड़की से कहा कि आल इंडिया मैडीकल इंस्टीच्यूट ऑफ रिसर्च सेंटर ऑफ साईंस दिल्ली में जिसका ढाई वर्ष ईलाज चलकर असफल हो चुका हो तो उस एक नाम या शब्द में कौन-सी शक्ति है जो मेरा असाध्य रोग ठीक हो जायेगा? काफी देर तक दोनों की बहस चलती रही, अन्त में धीरे चलकर उस सत्संग में जाने का निर्णय लिया गया। परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज के प्रवचन/अमृतवाणी सुनकर अधूरी छूटी हुई भक्ति का तार पुनः बन्दी छोड़ से जुड़ गया और ढाई वर्ष के ईलाज से फायदा न पाकर केवल नाम के सुमरन से पाँच दिन के अंदर ही असाध्य रोग ठीक हो गया। इससे पूर्व डॉक्टरों ने उनको बैठने व खड़ा होने की सख्त मनाही की थी जो आज भी ट्रीटमैंट स्लीप पर लिखा है तथा वह एक इंच के फासले के एक्स-रे भी मौजूद हैं। सबसे बड़ी समस्या मेरी पत्नी को यह थी कि उनसे बैठ कर पाखाना नहीं किया जाता था और हाथ धोने के समय तो दस-पंद्रह मिनट रोना पड़ता था क्योंकि ज्यादा झुकने पर ज्यादा दर्द होता था। अब वह परम पूजनीय सतगुरु रामपाल जी महाराज जी के आशीर्वाद से 50 किलो के गट्ठर/वजन अपने आप उठा सकती है और पूर्ण स्वस्थ है। मेरी सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि परमेश्वर तुल्य संत रामपाल जी महाराज जो कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी के पूर्ण कृपा पात्र हैं, से शीघ्रातिशीघ्र मुफ्त नाम प्राप्त करके सपरिवार कल्याण करवाऐं तथा पूर्ण मोक्ष तथा सतलोक (शाश्वतम् स्थानम्) प्राप्त करें।

आपका सेवक भक्त नथूराम,
गाँव छावला, दिल्ली,
दूरभाष 20913936

"अनहोनी की परमेश्वर ने"

मैं भक्त सुरेन्द्र दास गाँव गांधरा, त. सांपला, जिला-रोहतक का निवासी हूँ। मेरी आयु 31 वर्ष है तथा बचपन से ही परमात्मा की खोज में लगा हुआ था तथा मनमुखी पूजा (मन्दिरों में जाना, व्रत आदि करना, श्राद्ध निकालना आदि) भी करता था। परन्तु शारीरिक कष्ट व मानसिक अशान्ति लगातार बनी हुई थी। फिर भी परमात्मा में विश्वास तथा परमात्मा पाने की तड़फ बरकरार थी। यही तड़फ मुझे सन् 1995 में संत आसाराम बापू के पास ले गई। मैंने उनसे नाम उपदेश लिया व जैसा भक्ति मार्ग बापू जी ने बताया डट कर साधना की। परन्तु न तो कोई शारीरिक कष्ट दूर हुआ और न ही कोई आध्यात्मिक उपलब्धि हुई, अपितु कष्ट बढ़ता ही चला गया। मैं आसाराम बापू के बताए अनुसार साधना करता था। जैसे 250 ग्राम दूध सुबह पीता था और 250 ग्राम दूध शाम को पीता था और मेरे मंत्र में जितने अक्षर थे उतने लाख मंत्र जाप करना और समाधि लगाना। चालीस दिन की यह क्रिया थी, जो कि यह एक अनुष्ठान होता था। ऐसे-ऐसे मैंने चौदह अनुष्ठान किए।

एक बार मैंने बापूजी के सत्संग में सुना कि सात दिन तक निराहार रहकर मंत्र जाप करने, समाधि लगाने तथा प्राणायाम करने से ईश्वर प्राप्ति होगी। फिर मैंने इन वचनों को सत्य मान कर ऐसा ही किया। परन्तु परमात्मा प्राप्ति की बजाए भूखा रहने के कारण मृत्यु के निकट पहुँच गया तथा प्राणायाम करने से दिमागी संतुलन बिगड़ गया और मैं पागल-सा हो गया।

उसी दौरान मेरे ऊपर सतगुरु पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की कृपा दृष्टि हुई तथा मुझे सितम्बर 2000 में पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। उपदेश मिलते ही मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने दीपक में घी डाल दिया हो तथा मेरा जीवन शांत व्यवस्थित रहने लगा।

पूर्ण संत पाप कर्मों को समाप्त कर सकता है इसका प्रमाण मेरे जीवन में स्पष्ट रूप से तब घटित हुआ जब मैं मई 2004 में औरंगाबाद महाराष्ट्र में संत रामपाल जी महाराज के सतसंग के लिए टैंट की सेवा करते हुए 25 फुट ऊपर से नीचे पथरीली जमीन पर गिर गया। यहाँ काल को कुछ और ही मंजूर था तथा मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई और मेरे शरीर के नीचे के हिस्से में अधर्ग मार गया। उसी समय मैंने अपने सतगुरु देव जी संत रामपाल जी महाराज को याद किया। मेरे गुरुदेव की दया से उसी समय दोनों पैर ठीक काम करने लग गए।

गरीब, काल डरै करतार से, जै जै जगदीश। जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारै शीश।।

उसके बाद मुझे औरंगाबाद के निजी हस्पताल (पटवर्धन हॉस्पीटल) में ले जाया गया। वहाँ पर डॉ. डी.जी. पटवर्धन ने मेरे शरीर की जाँच की तथा मेरी रीढ़ की हड्डी के एक्स-रे लिए। रिपोर्ट से पता चला कि रीढ़ की हड्डी टूटी हुई है। रिपोर्ट देखकर डॉ. बहुत हैरान होकर कहने लगा कि आपकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है और उसका एक टूकड़ा टूट कर अलग हो गया है। डॉ. बार-बार मेरे पैरों को हाथ

लगाकर देखता रहा और कहा कि आप पर परमात्मा की विशेष कृपा है कि आपके पाँव ठीक काम कर रहे हैं। क्योंकि इस रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्ग होना जरूरी था। वहाँ उस हॉस्पीटल में मैं तीन दिन तक दाखिल रहा। उसके बाद मैं छूट्टी लेकर वापिस अपने घर हरियाणा आ गया। यहाँ रोहतक में मैंने अपना ईलाज हड्डियों के प्रसिद्ध डॉ. चड्ढा से करवाया। डॉ. चड्डा भी मेरी रिपोर्ट देखकर हैरान रह गया तथा कहा कि आप चल-फिर कैसे रहे हो। आपको तो रिपोर्ट के अनुसार अधर्ग होना चाहिए था। डॉ. चड्डा ने फिर से रंगीन एक्स-रे करवाया तथा कहा कि इसका ईलाज संभव नहीं है तथा ऑप्रेशन के द्वारा इसको जिस स्थिति में है वहीं रोका जा सकता है, ताकि हड्डी और न टूट सके। उसने हड्डियों को ताकत देने के लिए इंजेक्शन शुरु किए और तीन महीने में पूरे इंजेक्शन लग गए। फिर उसने कहा कि ऑप्रेशन जरूर करवाना पड़ेगा, नहीं तो बाकी बची हुई हड्डी भी टूट सकती है और कहा कि ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये आयेगा। फिर उसी समय डॉ. ने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको तीन महीने के अंदर मृत्यु को प्राप्त हो जाना था। आज आप परमात्मा की कृपा से ही जीवित हो। ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये देने में मैं असमर्थ था, इसलिए मैं दूसरे डॉ. के पास ईलाज के लिए गया। वह भी मेरी रिपोर्ट देखकर आश्चर्य में पड़ गया और कहा कि यदि ऑप्रेशन में देर हो गई तो हड्डी और भी टूट सकती है। उसने भी बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्ग होना चाहिए था, आप चल-फिर कैसे रहे हो ?

आखिर हारकर मैंने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज के चरणों में प्रार्थना की। तब मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझपर दया की और सिर पर हाथ रखकर कहा 'बेटा आप बिल्कुल ठीक हो जाओगे, यदि आज परमेश्वर कबीर साहेब जी की शरण में नहीं होते तो आपको भुगत कर मरना था। आपकी आयु शेष नहीं थी। आप एक बार फिर डॉ. को दिखा लो'। मैंने गुरु जी के आदेशानुसार अगले ही दिन डॉ. को दिखाया, जिसने मेरा एक्स-रे किया और एक्स-रे देखकर डॉक्टर आश्चर्य चकित रह गया और बोला 'जो हड्डी टूट कर अलग हो गई थी, वह अपने आप ऊपर को उठकर कैसे जुड़ गई। डॉक्टर जी ने बताया कि इस हड्डी की ऐसी स्थिति थी कि जैसे कोई गाड़ी बहुत ज्यादा ढलान वाली चढ़ाई में चढ़ रही हो। उसके इंजन में खराबी हो जाऐं, वह वापिस ही आ सकती है या प्रथम गियर में डाल कर पत्थर आदि पहियों के पीछे लगाकर वहीं रोकी जा सकती है, आगे को नहीं चढ़ सकती। आपकी हड्डी ऐसे ऊपर को चढ़ कर जुड़ गई जो डॉक्टरी इतिहास से बाहर की बात है। इससे मुझे भी महसूस होता है कि कोई शक्ति है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। यह तो ऑप्रेशन से भी नहीं हो सकता था। आप्रेशन करके इसमें कोई पदार्थ भरकर वह गैप भरा जा सकता था। फिर भी यदि आप कोई वजन उठाने का कार्य करते तो फिर से हड्डी खिसक कर आप चारपाई पर भुगत कर मरते। डॉक्टर के समझ में भी नहीं आ रहा था। मैंने कहा कि पूर्णब्रह्म कबीर साहेब के स्वरूप मेरे पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज ने मेरे पाप कर्म

काटकर तथा मेरी मृत्यु को टालकर अपने कोटे से मुझे नई जिंदगी दी है। परमेश्वर कबीर साहेब की वाणी है -

"जो मेरी भक्ति पीछोड़ी होई, तो हमरा नाम न लेवे कोई।"

अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ तथा सतगुरु के चरणों में आत्म कल्याण हेतु निःस्वार्थ सेवा कर रहा हूँ। 50 कि.ग्रा. वजन अपने आप ही उठा कर चलता हूँ। हमारे गुरुदेव का वास्तविक उद्देश्य तो भक्ति करवाकर जीव को विकार रहित करवा कर अपने परम धाम सतलोक में ले जाना है, यहाँ के छोटे-मोटे सुख तो हमारे गुरुदेव अपने खजाने से दे देते हैं, ताकि जीव भक्ति मार्ग में लगा रहे। अतः सर्व समाज से प्रार्थना है कि हमारे गुरुदेव के चरणों में आकर सत्यभक्ति करें तथा सांसारिक सुखों के साथ-साथ आत्म कल्याण का मार्ग भी प्राप्त करें। सत् साहिब!!

विशेषः- ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मन्त्र 2 में पूर्ण परमात्मा ने कहा है कि हे शास्त्रानुकूल साधना करने वाले साधक तू सम्पूर्ण भाव से मेरी शरण ग्रहण कर अर्थात् संस्यरहित होकर मेरी भक्ति कर मैं तेरे असाध्य रोग को भी समाप्त कर दूगां, यदि तेरी आयु भी शेष नहीं है तो तेरी आयु के स्वांस बढ़ाकर सौ वर्ष कर दूगां। उपरोक्त कथा प्रभु की समर्थता को प्रमाणित करती है।

भक्त सुरेन्द्र दास
मोब. नं. 9992600826

"प्रभु ने सुनी गरीबों की"

मैं कर्मवीर पुत्र श्री घासीराम पुत्र श्री छोटूराम, गाँव भराण, जिला-रोहतक का स्थाई निवासी हूँ। सबसे पहले मैंने व पूरे परिवार ने सन् 1986 में निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का नाम लिया। उस समय मैं बहनों को चूडियां पहनाने का कार्य करता था। आर्थिक स्थिति अच्छी थी। धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ती चली गई। फिर कुछ दिनों के बाद मेरी पत्नी के शरीर में तरह-तरह की बिमारियां घर कर गई। उसको बवासीर की बीमारी व पित की थैली में पथरी थी। डॉक्टर ने ऑपरेशन में लागत बीस हजार रूपये की बताई। मुझ दास के घर में उस समय बीस हजार दानें भी नहीं थे और मुझ दास को भी दमे की बीमारी थी। मेरी पत्नी तथा मैं अपने कष्टों को याद करके दुःखी मन से चर्चा करते हुए एक ऑटो में बैठकर बस अड्डा जा रहे थे कि पैसा तो है नहीं अब ऑपरेशन कैसे होगा ? हम तो मर ही जायेंगे। उसी ऑटो में एक बहन बैठी हुई थी। उसने हमारी सारी बात पूछी और कहा कि आप करौंथा चले जाओ। वहाँ एक महाराज जी हैं और बीमारियों की दवाई मुफ्त देते हैं। मेरी पत्नी भक्तमति मेवा देवी 27-7-2003 को सतलोक आश्रम करौंथा में गई तथा बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज को अपनी सारी बीमारी व घर की हालत बताई। सतगुरु देव ने बहुत प्यार से सभी बातें सुनी तथा कहा कि बेटी यहाँ कोई औषधी आदि नहीं दी जाती, केवल आत्म कल्याण का मार्ग समझाया जाता है तथा भक्ति करने की विधि पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी के आधार पर शास्त्रानुकूल बताई जाती है। पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी की कृपा से

केवल मंत्र जाप के करने मात्र से ही सर्व कष्ट दूर हो जाते हैं तथा मूल लाभ तो जन्म-मृत्यु से पूर्ण रूप से जीव का छूटकारा करवाने का है, समाज सुधार व अन्य सुख तो रूंगे में अर्थात् निशुल्क स्वयं ही हो जाते हैं। रामनाम की दवाई देकर मेरे सारे परिवार को कृतार्थ किया। अब हम प्रेम पूर्वक जिन्दगी जी रहे हैं। सर्व बिमारियां केवल नाम स्मरण से व गुरुदेव के आशीर्वाद मात्र से समाप्त हो गई। हम बन्दी छोड़ से अरदास करते हैं कि दाता जैसा सुखी जीवन हमें दिया है वैसा ही सबको बख्सें।

भक्त कर्मवीर दास पुत्र श्री घासीराम,
गाँव भराण, त. महम, जिला-रोहतक।

"भगवान हो तो ऐसा"

मैं भक्त महाबीर सिंह पुत्र श्री केहर सिंह, गाँव-ढराणा जिला-झज्जर (हरियाणा) निवासी हूँ। पहले मैं शिव का कट्टर भक्त था। मेरे लीवर और गुर्दे के अंदर पीप पड़ गई थी और मेरे को मेरा भाई भक्त महेन्द्र सिंह मैडिकल में ईलाज करवाने के लिए ले गया, उससे पहले भी काफी पैसा लग गया था। लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। मैडीकल के अंदर अल्ट्रासाऊंड के बाद तीन ऑपरेशन बोल दिए। मैं घबरा गया। मैंने ऑपरेशन करवाने से इंकार कर दिया। खाना भी नहीं खाया जाता था। हालत बिल्कुल नाजुक हो चुकी थी। मेरा बड़ा भाई महेन्द्र कहा करता कि आप संत रामपाल जी से उपदेश ले लो, वे पूर्ण परमात्मा के अवतार आए हैं। कबीर परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म हैं। मैं कहता था कि शिवजी भगवान के सामने तेरे कबीर जुलाहे (धाणक) की क्या औकात है। कबीर तो एक कवि था, वह भगवान नहीं हो सकता। मेरे बड़े भाई महेन्द्र सिंह पुत्र श्री केहर सिंह का परिवार भी बिल्कुल उजड़ा हुआ था। संत रामपाल जी महाराज की शरण में जाने से वे पूर्ण सुखी हैं। उन्होंने सर्व पूर्व वाली पूजाऐं त्याग रखी हैं। वे फिर भी बहुत सुखी हैं। मैं भी मानता था, परन्तु फिर भी मैं अपने भगवान शिवजी से अधिक किसी को नहीं मानता था। मेरा बड़ा भाई महेन्द्र मुझे कहता था महाबीर यही भूल सबको लगी है। पूर्णब्रह्म कविरद्देव (कबीर परमेश्वर) ही हैं। इनकी शक्ति के सामने ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म तो बहुत न्यून शक्ति युक्त हैं। जैसे देश के प्रधान मंत्री व राष्ट्रपति के सामने प्रान्त के मंत्री की शक्ति होती है, इतना अंतर परमेश्वर कबीर जी (राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री जानों) तथा शिव जी (एक विभागीय मंत्री जानों) की शक्ति में है। अब आप स्वयं ही विचार करें कि 'कहाँ ठांठां (कविर्देव/कबीर परमेश्वर) कहां म्यां-म्यां (भगवान शिव जी) अर्थात् खागड़ की तुलना में बकरा। संत रामपाल जी महाराज ने सर्व सद् ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया है तथा भक्ति शक्ति से स्व अनुभव से भी सही पाया है, तब अपनी जे.ई. की नौकरी त्यागकर भक्ति मैदान में कूदे हैं। आज सर्व संतों व महंतों तथा आचार्यों का पिछोड़ कर रख दिया है। सर्व पंथों व महर्षि दयानन्द जैसे को भी उन्हीं के लेखों से फेल कर दिया। समाचार पत्रों में भी खुल्लम-खुला सर्व को

ललकारा है। कोई नहीं बोलता। आर्य समाज के कुछ नादानों ने विरोध किया था, मुँह की खानी पड़ी। क्योंकि महाराज रामपाल जी प्रमाणों सहित बात करते हैं। अन्य केवल निराधार दंत कथाओं के आधार पर ही मार्ग दर्शन कर रहे हैं। सत्य के सामने असत्य नहीं टिक सकती।

बड़े भाई महेन्द्र की उपरोक्त बातें सुनकर मन में आता था कि लड़ पडूं, परन्तु बड़ा होने के नाते नहीं बोलता था। कोई और कह देता कि 'कहां ठांठां (कबीर परमेश्वर) कहां म्यां म्यां (भगवान शिव जी) तो मैं (महाबीर) अवश्य लड़ाई कर देता। परन्तु अब पता चला कि सचमुच कबीर जी पूर्ण परमेश्वर ही हैं। मरता क्या नहीं करता ? उस दिन मैंने अपने भाई महेन्द्र से कहा कि मेरी जान बचा ले। मेरे भाई महेन्द्र ने कहा कि करौंथा आश्रम में चल तेरी जान वहीं बचेगी। मुझे ऑप्रेशन थियेटर में ले जाने के लिए ट्राली में लिटा दिया था तथा ऑप्रेशन वाले कपड़े पहना दिए थे। मैं उठकर चल पड़ा और कपड़े उतार कर अपने कपड़े पहन कर अपने भाई महेन्द्र से कहा कि मैं नाम ले लूंगा। हम गाड़ी करके मैडिकल रोहतक से सीधे बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की शरण में आए। नाम उपदेश लिया, उसी समय आश्रम में मैंने भोजन पाया। मैं फिर मैडीकल में गया और जाँच करवाई। डॉक्टर आश्चर्य में पड़ गए। और मेरे कोई तकलीफ नहीं पाई। मैं स्वस्थ हो गया। मेरा आश्रम में कोई खर्च नहीं हुआ। नाम तथा मंत्र जाप की पुस्तिका मुफ्त प्राप्त हुई। मेरा सारा परिवार अन्य देवी-देवताओं की पूजा पाठ किया करता, परन्तु उपदेश लेने के बाद सर्व त्याग दी, पहले से अधिक सुखी व स्वस्थ हो गए। बन्दी छोड़ पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज का दिन-रात गुणगान करते हैं।

संत रामपाल जी महाराज का मुख्य उद्देश्य तो नाम उपदेश देकर भक्ति करवाके काल के जाल से मुक्त करवाना है। समाज सुधार व अन्य सुख तो रूंगे में अर्थात् स्वयं ही हो जाते हैं। ''सत साहेब''

भक्त महाबीर

"लुटे पिटों को सहारा"

मैं भक्त जीयाराम (राजू) पुत्र श्री गणेशी राम, गाँव-ढ़राणा निवासी हूँ। मेरे और मेरी पत्नी को असाध्य रोग था, कोई ओपरा-पराया कहता था। डॉक्टरों ने टी.बी. बताई। हमने डॉक्टरों से भी काफी ईलाज करवाया और देवी-देवताओं की बहुत पूजा की और यू.पी., हरियाणा, राजस्थान में बालाजी आदि भी ईलाज के लिए गए, काफी पैसा लग गया। दस-बारह वर्ष तक ऐसे ही भटकते रहे। हमने कम-से-कम दो लाख रूपये लगा दिऐं होंगे, लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। हम बहुत तंग हो गए। मैं बहुत निर्धन हो गया, 50 रूपये कमाता और 100 रूपये खर्च हो जाते। कई बार आत्म हत्या करने की सोची। हवन भी करवाया। हवन करते समय पंडित डर गया और पंडित ने बताया कि इसके अंदर बहुत बड़ा जिन्द है। पंडित ने कहा कि मैं

फिर से हवन करूंगा और फिर बताऊँगा। भक्त महेन्द्र पुत्र श्री केहर सिंह (जो मेरे गाँव के हैं) ने संत रामपाल जी महाराज से नाम ले रखा था। मुझे कई बार कहता था कि जीयाराम कहीं घूमले और ठगों के पास लुट ले, संत रामपाल जी महाराज बिना कष्ट निवारण नहीं हो सकता, भक्त महेन्द्र कहता था कि मैं भी सर्व भटक कर तथा लुट कर संत रामपाल जी महाराज के आशीर्वाद से व उनके द्वारा दिए नाम से उजड़ कर बसा हूँ। मैं भक्त महेन्द्र से कहता था कि करौंथा वाला आश्रम तो अभी बना है। मैं तो बहुत बड़े-बड़े मन्दिरों में जा चुका हूँ। परन्तु मैं तंग आने के बाद भक्त महेन्द्र से मिला। हमने भक्त महेन्द्र के साथ जाकर अगले दिन सतगुरु रामपाल जी महाराज से मुफ्त नाम उपदेश लिया और उपदेश लेने के बाद हम बिल्कुल स्वस्थ हो गए। हमें नाम उपदेश लिए सन् 2005 में लगभग दो वर्ष हो गये हैं। अब हमारा पूरा परिवार स्वस्थ है। हम रात-दिन पूर्ण परमात्मा बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज का गुणगान करते हैं।

संत रामपाल जी महाराज का मुख्य उद्देश्य तो नाम उपदेश देकर भक्ति करवाके काल के जाल से मुक्त करवाना है। समाज सुधार व अन्य सुख तो रूंगे में अर्थात् स्वयं ही हो जाते हैं। ''सत साहेब''

भक्त जियाराम

"संत हो तो ऐसा"

मैं शशी प्रभा प्रधानाचार्या (प्रिंसिपल) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डिगाना जिला जीन्द में कार्यरत हूँ। मैं अपने घर के लड़ाई-झगड़े, मानसिक तनाव के कारण लगभग 35 वर्ष से परेशान थी। पति मारता भी था। सारा वेतन छीन लेता था तथा जितना उससे परेशान किया जाता वह करता था। 32 किल्ले जमीन का मालिक होते हुए भी हमारे को सदा कुतों की तरह रोटी देता था। मैंने उसके तथा अपने सभी रिश्तेदारों से मदद माँगी। मैंने समाज में रहने वाले पंचायती आदमियों से भी मदद माँगी। मेरा किसी ने भी साथ नहीं दिया। यह विचार करके कि संत बिगड़े कार्यों को संवार दिया करते हैं, मैंने आनन्दपुर (बीना) मध्यप्रदेश वाले को गुरु बनाया। लेकिन घर में वही क्लेश। लड़कियां परमात्मा की दया से अपने दम पर पढ़ाई। अब शादी नहीं हो पा रही थी। बाप ने रिश्ता ढूंढना बंद कर दिया। अब इसी उलझन के कारण मैं बाला जी गई। बगड़ (राजस्थान), धौली धार हिमाचल प्रदेश गई। पीर फकीर, गुरुद्वारे का सहारा लिया। घर में जब अकेली होती थी तब रोती थी कि धरती पर परमात्मा है ही नहीं, जुल्म और नाइन्साफी सहन करती-करती मेरी हालत पागलों की सी हो गई थी।

फिर एक दिन यह दुःखी आत्मा उस परमात्मा के दरबार तक पहुँची जो दुःख निवारण करता है। मेरे पड़ौस में पाठ हुआ। मेरी पड़ौसिन मुझे प्रसाद देने के लिए मेरे घर बुलाने आई। जाने के बाद बातचीत हुई। पाठ के बारे में बताया कि यह पाठ परमात्मा की सच्ची वाणी है, जिससे दुःख कटते हैं। परन्तु यह पाठ केवल संत

रामपाल जी की आज्ञा अनुसार करवाने से ही लाभ होता है। अन्य किसी से पाठ करवाने से कोई लाभ नहीं होता। जैसे राजा परिक्षीत को कथा सुनाने के समय किसी भी ऋषि ने पाठ (कथा) करने की हिम्मत नहीं की। क्योंकि वे अनअधिकारी थे तथा सातवें दिन परिणाम मिलना था। इसलिए स्वर्ग से ऋषि सुखदेव आए, उन्होंने राजा परिक्षीत को नाम देकर (शिष्य बनाकर) सात दिन तक कथा (पाठ) की। तब राजा परिक्षीत को कुछ राहत मिली। वर्तमान में कोई भी वास्तविक ज्ञान व सत्य साधना से परिचित नहीं है। इसलिए कोई भी पाठ कर देता है। जिससे साधक को कोई लाभ नहीं होता। वह बहन जिससे मेरी चर्चा हुई, संत रामपाल जी महाराज के विचार सुना करती थी, अशिक्षित होते हुए शास्त्रों का गूढ़ रहस्य संत जी से सुना हुआ सुनाया। मैं प्रधान आचार्या (प्रिंसिपल) होते हुए भी हैरान थी। ऐसा लगा परमात्मा मेरा हाथ पकड़ने जा रहे हैं। बहन ने बताया हमारे गुरु जी दुःखों का निवारण करते हैं। मैंने अपने को व्यक्त किया कि आप मुझे अपने गुरु जी के दर्शन करवा सकते हो। मालिक की दया से अगले दिन मैं गुरु रामपाल महाराज जी को साधारण-सी कुर्सी पर बैठा पाया, मैं नहीं जानती थी कि संत क्या होते है, उनकी महिमा क्या होती है। जो जितना ऊँचा होता है, वह उतना ही साधारण दिखता है। हमारा स्थान तो धरती से भी नीचे है। हम परमात्मा की महिमा को क्या समझें। मेरे गुरु जी ने मेरी व्यथा सुनी और कहा कि आप नाम उपदेश ले लो, सब ठीक हो जायेगा। अगले दिन मुझे उपदेश दिया। एक महीने के अंदर-अंदर लड़की का रिश्ता आया और फिर शादी हुई। मुझे ऐसा लगा कि कुछ अनहोनी सी हो रही है। वही पति जो रिश्ता भी नहीं कर रहा था, आज शादी कर रहा है। फिर कुछ समय बाद मेरी बड़ी लड़की के पेट में रिसौली हो गई। बच्चा अभी था नहीं फिर चिन्ता बनी। मैंने अपने लड़के को कहा कि तुमने देखा कि जब हम फिल्म देखते हैं तो इधर से परमात्मा की प्रार्थना की जाती है और उधर से किसी व्यक्ति का ऑप्रेशन चल रहा हो तो वह ठीक हो जाता है। वह मेरी बात से सहमत हो गया और मैं ताजपुर (दिल्ली) सतगुरु के सत्संग में सेवा में चली गई। वहाँ से मैं लड़की के पास अस्पताल में गई। ऑप्रेशन ठीक हुआ। जो शंका कैंसर की हुई वह भी ठीक हुई। फिर लड़की गर्भवती हुई। इतने में जमाई के साथ एक ट्रेक्टर मोटर साईकिल की दुर्घटना का समाचार मिल गया। मुझे तो मेरे पूज्य गुरुदेव जी के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझता, मालिक की जितनी महिमा गाऊं थोड़ी है। इस जिव्हा से जितना मैं अपने गुरु जी की महिमा लोगों को सुनाऊं थोड़ी है। डेढ़ महीने के अंदर ठीक होकर जमाई घर आ गया। दुनियां क्या समझे कि मेरी प्रार्थना परमात्मा सुनता है।

जिस दिन से मैंने यह उपदेश लिया मैंने उन नकली संतों की फोटो अपने आंगन में डालकर स्वाह कर दी। उस दिन से मेरी यह जीवन की गाड़ी पटरी पर चढ़ी। 23 सितम्बर 2003 को मैंने अपनी जागती आँखों से 4-5 बजे को एक भयानक आकृति देखी। इतनी भयंकर आकृति का व्यक्ति था कि यदि नाम न ले रखा होता तो मेरा दिल फट जाता। परन्तु मुझे उस समय तो भय नहीं लगा। लेकिन यह एहसास हो गया था कि यह यमदूत है। अगले दिन मैंने अपने गुरु जी को बताया,

जिन्होंने यह स्पष्ट किया कि मेरे उक्त दिन को सांस पूरे हो गए थे। अब मैं अपने परमात्मा स्वरूप गुरु जी की दया से ही जी रही हूँ। उन्हीं की कृपा से छोटी लड़की की शादी एक इन्जिनियर लड़के से पिछले वर्ष हुई। दो तीन बार मेरी नौकरी जाने की भी आशंका हुई। लेकिन फिर मेरे परमात्मा ने मुझे संभाला, मुझे दो पदोन्नति दी। संत रामपाल जी महाराज कहते हैं कि राजा भी प्रभु का ही बच्चा होता है। उसमें भी प्रभु की शक्ति काम करती हे। परमेश्वर ही अपने साधक के लिए राजा में प्रेरणा करके सर्व फेर बदल करा देता है। करता हुआ राजा दिखाई देता है, परन्तु कराता परमात्मा ही है। कोई मेरे गुरु रामपाल महाराज जी का आसरा लेकर देखो, लेने वालों के इसी तरह से कांटे निकलेंगे, जैसे मेरे निकले हैं। परमात्मा सचमुच बेसहारों को सहारा देते हैं। आत्मा की पुकार सुनते हैं। मेरे साथ इन चन्द वर्षों में जो हुआ उसे केवल परमात्मा ही कर सकता हैं मेरे गुरु जी की महिमा वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। यह स्वयं ही कबीर साहिब के अवतार हैं। जो परमात्मा का दीदार चाहता है वह करौंथा आना ना भूलें। मुझ छोटे से जीव को आपने कैसे उभारा ? आपकी मैं कृतज्ञ हूँ, किन शब्दों में आपकी महिमा गाऊं ? इन्हीं शब्दों को पाठक अपने ह्रदय में उतार लो और लाभ उठाओ।

बहुत तुच्छ प्राणी, भक्तमति शशी
मोब. नं. -+918684900607

"अपने भक्त को धर्मराज के दरबार से छुड़वाना"

मैं भक्त ओमप्रकाश सुपुत्र श्री मातादीन, नजफगढ़, दिल्ली का निवासी हूँ। मुझे परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से नाम लिए डेढ़ वर्ष हो गया है। मेरी नजफगढ़ में हलवाई की दुकान है। 19 मई 2005 को रात के 9:30 बजे मुझे दुकान पर पेट में बहुत ज्यादा दर्द हुआ। दर्द के कारण मेरी हालत बिल्कुल खराब हो गई थी। मैं गुरु जी का नाम जपते-जपते घर पहुँचा। घर में घुसते ही सामने गुरु जी की तस्वीर के सामने दण्डवत प्रणाम किया। मैं दण्डवत प्रणाम करके खड़ा हुआ तो मुझे पेट का दर्द महसूस नहीं हुआ। फिर मैं चारपाई पर लेट गया। चारपाई पर लेटते ही मैं बेहोश हो गया। मेरे चारों तरफ यम के दूत चक्कर लगाने लगे और मुझे डराने लगे। मैं डर के मारे बेहोश हो गया। तब यम के दूतों ने मेरे ऊपर सफेद चादर डाली और मेरे को उठा कर यमराज के दरबार में ले गये। यमराज के दरबार में मैंने देखा कि वहाँ पर लाईन लगी हुई थी। जब मेरा नम्बर आया तो यमराज ने कहा कि इसको तालाब में फैंक दो। मैंने तालाब की तरफ देखा तो मुझे तालाब में मगरमच्छ ही मगरमच्छ दिखाई दिए। मैं मगरमच्छों को देखकर डर गया। तब मैंने अपने परम पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज को याद किया, उस समय धर्मराज के दूत मुझे तालाब में फैंकने के लिए तैयार हो गये। मैंने गुरु जी को पुकारा कि - ''हे गुरु जी बचाओ''। तब मैंने देखा कि मेरे गुरु जी कबीर साहेब के रूप में आए और मुझे तालाब में गिरने से पहले ही बाहर निकाल लिया। यमराज ने कबीर साहेब के चरणों में गिरकर डण्डौतं प्रणाम किया। फिर गुरु जी अपने रूप में आ गए और मुझसे कहने लगे कि अब तू किस लिए डर रहा है, अब मैं तेरे साथ हूँ।

तब मेरा डर दूर हो गया। धर्मराज ने गुरु जी से बहस की कि आप इसको बार-बार क्यों बचाते हो। यह तो मेरा भोजन है। आप ने इसको पहले भी दो बार मरते मरते बचाया है। 'पहली बार तो स्कूटर और जीप की आमने-सामने की टक्कर होने पर भी मुझे खरोंच तक नहीं आई थी। और दूसरी बार मोटर साईकिल स्लिप होने के बाद मैं चलते ट्रक के नीचे जा गिरा। गुरुदेव जी ने मुझे उस ट्रक के नीचे से बचाया।'

तब गुरुदेव ने धर्मराज को कहा - 'इसने मेरी पिछले जन्म की भक्ति की हुई थी, इसलिए मैंने इसे बचाया। फिर धर्मराज ने कहा अब कि बार आपने क्यों बचाया, जबकि मैंने इसका नाम तुड़वा रखा था। फिर गुरु जी ने कहा कि इसका नाम आपने तुड़वाया था, इसने अपनी मर्जी से नहीं तोड़ा। इसलिए मैंने बचाया, यह मेरी भक्ति करता है।' तब काल ने कहा कि मैं देखता हूँ कि आप इसे कब तक बचाते हो। फिर गुरु जी ने कहा कि मैं पल-पल इसके साथ हूँ, तुम इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

फिर सतगुरुदेव ने धर्मराज को कहा कि अब कि बार इसको किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाया तो जैसे तू लोगों को सताता है, उससे बुरा हाल तेरा करूंगा।

उसके बाद सतगुरुदेव जी मुझे धर्मराज के दरबार से नीचे लेकर आए और मुझसे कहा कि तू जल्दी से जल्दी अपने घर वालों को बता दे कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ और मुझको घर ले चलो। दो डॉक्टर तो मना कर चुके थे कि हमारे बस की बात नहीं है। मेरे घर वाले मुझे हस्पताल (मैडीकल) में लेकर जा रहे थे। मैंने घरवालों से कहा कि मुझे जल्दी से जल्दी घर ले चलो, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। जो मेरे साथ थे, वे एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि ये तो मर गया था। इसको होश कैसे आ गया ? ये ऐसी बातें कैसे कर रहा है ? फिर मेरे घर वाले रास्ते में से वापिस घर की तरफ आने लगे तो मुझे सतगुरुदेव कमल के फूल पर बैठे हुए दिखाई दिए। कभी तो गुरु जी के रूप में और कभी कबीर साहेब के रूप में दिखाई दे रहे हैं और मेरी तरफ हाथ हिलाते हुए जाते दिखाई दिए। मैं फिर जोर-जोर से रोने लगा कि मेरे गुरु जी गए, मेरे गुरु जी गए। हमारे घर वाले फिर घबरा गए कि यह ऐसे कैसे कर रहा है। फिर मैडीकल की तरफ जाने लगे। तब गुरु जी ने आवाज लगाई कि भक्त तू यह क्या कर रहा है, मैंने तो तेरे को कहा है कि घर चला जा जल्दी से जल्दी। फिर मैंने अपने घर वालों से कहा कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मुझे मेरे गुरु जी दिखाई दिए थे। तब हमारे घर वाले मेरे को घर लेकर गए और घरवाले एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि यह तो मर गया था, यह जिन्दा कैसे हुआ ? मैंने अपने घरवालों को अपने साथ बीती सारी घटना बताई कि मेरे साथ ऐसे-ऐसे हुआ और मेरे सतगुरुदेव जी मुझे घर छोड़कर चले गए।

भक्त ओमप्रकाश दास
RZ-15, B Block, गली नं. 2, मकसूदा बाद कॉलोनी, नजफगढ़, नई दिल्ली।
मोब. नं. -09812166044

''पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है''

भक्त डा. ओम प्रकाश हुड्डा (C.M.O.) का प्रमाण

प्रमाण ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 161 मंत्र 1, 2 तथा 5 जिसमें परमेश्वर कहता है कि यदि किसी को प्रत्यक्ष या गुप्त क्षय रोग तपेदिक हो उसे भी ठीक करता हूँ तथा यदि किसी रोगी व्यक्ति की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी हो। जिसकी आयु शेष न रही हो तेरे प्राणों की रक्षा करूं तथा तेरी आयु सौ वर्ष प्रदान कर दूं, सर्व सुख प्रदान करूं। मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जीवन प्राप्त प्राणी ! तू सर्व भाव से मेरी शरण ग्रहण कर। यदि पाप कर्म दण्ड के कारण तेरी आँखें भी समाप्त होनी हों तो मैं तुझे पुनर् आजीवन आँखें दान कर दूं। तुझे रोग मुक्त करके सर्व अंग प्रदान करूं तथा तुझे प्राप्त होऊं अर्थात् मिलुं।

जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख।
अदली अदल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में पूर्ण रूप से सत्य घटित हुई।

मैं भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा (C.M.O. - M.B.B.S., M.S.(Eye specialist), 18 A, सरकुलर रोड़ रोहतक में रहता हूँ। मेरा मोबाईल नं. 9813045050 है। मेरा जन्म 12 अप्रैल 1953 को गाँव किलोई जिला-रोहतक में हुआ। मेरी पाँचवी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई D.A.V. स्कूल व D.A.V. कॉलेज अमृतसर में हुई। अमृतसर में मेरे बड़े भाई Librarian के पद पर D.A.V. स्कूल में कार्यरत थे। वहाँ के जानकार लोग उन्हें मास्टर जी तथा मुझे प्यार से छोटे मास्टर जी कहते थे। जब मैं छठी कक्षा में पढ़ता था तो मुझे एक महात्मा ने जो कि दुरग्याना मन्दिर अमृतसर में सेवक था, ने मेरी हस्तरेखा देखकर बताया कि छोटे मास्टर जी आप डॉक्टर बनोगे तथा तुम्हारी आयु केवल पचास वर्ष है। यह कहते हुए यह भय हुआ कि बच्चे को यह सच्चाई बताकर गलत कर दिया, लेकिन मैंने महात्मा की बातों को एक बच्चे की भांति सुना अनसुना कर दिया। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बना तथा मैंने M.B.B.S. तथा M.S. (Eye specialist) भी P.G.I. M.S. रोहतक से की है।

ठीक पचासवां वर्ष जब पूरा होना था यानी 10/11 अप्रैल 2003 की रात बारह बजे के करीब उस दिन मैं सपरिवार रोहतक में ही था तो मुझे दोनों हाथों में दर्द तथा सीने में भारीपन शुरु हुआ और हम उपचार के लिए P.G.I. M.S. में चले गए। इससे पहले मुझे न ही ब्लड प्रेशर रहता था और न ही मुझे शुगर की बीमारी थी। मैंने नाम लेने से पहले पच्चीस वर्ष लगातार धूम्रपान अवश्य किया था।

वहाँ ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर को मैंने परिचय दिया कि H.C.M.S.I. (Group A) श्रेणी में मैं एस.एम.ओ. के पद पर तैनात हूँ। (उस समय S.M.O वर्तमान में C.M.O.) परिचय देने के बाद डॉक्टर ने तुरन्त उचित निरिक्षण के बाद मेरा ईलाज शुरु कर दिया और Intensive Care Unit में शिफ्ट करने तक मुझे सभी गतिविधियाँ पता रही। लेकिन I.C.U. में शिफ्ट करने के कुछ समय बाद से मुझे कुछ मालूम नहीं कि

आगे क्या हुआ ? लगभग डेढ़ दो घण्टे के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे काल के दूत चारों तरफ से घेर कर खडे हैं और मुझे कह रहे हैं कि चलो तुम्हारा समय पूरा हो चुका है, हम तुम्हें लेने आए हैं। मैं उनको कुछ भी नहीं कह पाया था कि तभी पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब मेरे सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के रूप में मेरे बैड के पास प्रकट हुए तो वे काल के दूत जिनका चेहरा डरावना तथा शरीर डील-डोल था, महाराज जी को देखते ही अदृश्य हो गए।

मेरे सतगुरु देव ने मुझे आशीर्वाद दिया तथा कहा कि कबीर परमेश्वर ने आपकी आयु अपने कोटे से (अपनी शक्ति) से बढ़ा दी है ताकि आप अपनी भक्ति पूरी कर सके और सतलोक जा सकें। मैंने रोकर कहा कि मालिक आप ही स्वयं परमेश्वर हो, आपने इस चोले में अपने आपको छुपा रखा है, परमेश्वर भक्ति भी आप ही करवाने वाले हो। मैं भक्ति करने वाला कौन होता हूँ ? इतना कहकर मेरी आँखें खुल गई और मेरी आँखों में आसुंओं के सिवाए कुछ भी नहीं था। तीन दिन बाद जब I.C.U से मुझे वार्ड में लाया जा रहा था तो मैं उठकर पैदल चलने लगा तो एक डॉक्टर ने भाग कर मुझे पकड़ लिया तथा कहा कि क्या कर रहे हो ? आपने पैदल बिल्कुल नहीं चलना, आपको हार्ट अटैक हुआ है।

स्पेशल वार्ड में शिफ्ट करने के बाद डॉक्टर ने मुझे बताया कि हम हैरान हैं कि 10/11 तारीख की रात को आपकी E.C.G./B.P. इत्यादि रिपोर्ट बता रही थी कि आप बचने वाले नहीं हो, लेकिन सुबह आपकी E.C.G. आदि फिर सामान्य शुरु हो गई।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया था। इससे पहले मैं ब्रह्मा कुमारी, जैनी, राधास्वामी का शिष्य रहा तथा D.A.V. School/College का छात्र होने की वजह से आर्य समाज की अमिट छाप मुझ पर थी। गायत्री मंत्र का जाप कई लाख बार किया होगा। घर में लगभग सैकड़ों फोटो सभी देवी-देवताओं की थी। नामदान के बाद सभी देवी-देवताओं की फोटो जल प्रवाह कर दी तथा सभी प्रकार की आन उपासना बंद कर दी तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की भक्ति शुरु कर दी। क्योंकि सतगुरु ने कहा है कि --

'एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाए। माली सींचैं मूल को, फले–फूले अघाए।।'

एक कबीर परमेश्वर की भक्ति में आरूढ़ होने से वह भी केवल तत्वदर्शी संत से नाम लेने के बाद लाभ यह हुआ कि संत रामपाल जी महाराज ने अपने कोटे से मेरी उम्र बढ़ा दी। यह बातें मैंने तथा मेरे परिवार के सदस्यों ने P.G.I.M.S. में कार्यरत डॉक्टर तथा दूसरे स्टॉफ के सदस्यों को बताई, लेकिन उनके समझ में एक न आई। क्योंकि ये बातें समझ में उसी को आयेंगी जिनका चैनल परमेश्वर ऑन करेंगे, अन्यथा संभव नहीं कि कोई इस ज्ञान को समझ सके।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया तो मुझे मालूम नहीं था कि यही पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब ज्यों के त्यों अवतार आए हुए हैं। लेकिन जब मेरे साथ उपरोक्त घटना घटित हुई तब मुझे यह विश्वास हो

गया कि

माँसा घटे न तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख। साचा सतगुरु मेट कर ऊपर मारें मेख।

कबीर परमेश्वर सशरीर संत रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं जो सच्चे सतगुरु हैं और विधना (भाग्य) के पाप कर्मों रूपी लेख को मिटा कर अपनी शक्ति से नये लेख लिख देते हैं।

"भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना"

इसी प्रकार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला हुड्डा को 6-12-2004 को दाईं आँख से दो-दो वस्तुएं नजर आनी शुरु हो गई थी। P.G.I.M.S. रोहतक में सभी टेस्ट M.R.I. तथा M.R.I. Angio graphy इत्यादि करवाने तथा सभी वरिष्ठ डॉक्टरों को दिखाया तथा ईलाज भी किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। प्राइवेट डॉक्टर ईश्वर सिंह इत्यादि को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यह सभी हमने सतगुरु से आज्ञा लेने के बाद किया था लेकिन जब दवाईयों से कोई लाभ नहीं हुआ तो हमने सतगुरु से प्रार्थना की कि परमेश्वर आप आयु तक बढ़ा देते हो तो आपके लिए यह क्या कठिन है ? कृप्या आप अपने बच्चों पर यह कृपा भी कर दो। सतगुरुदेव ने कृपा की और सिर पर हाथ रखते ही दाई आँख बिल्कुल सीधी हो गई और दो-दो वस्तु नजर आनी बंद हो गई। जैसे पहले थी बिल्कुल ज्यों की त्यों हो गई। अब इनको पूर्ण परमात्मा पाप कर्मों को जलाकर नष्ट करने वाले भगवान नहीं कहे तो और क्या कहें ? कृप्या पाठक स्वयं पढ़कर विचार कर निर्णय लें और अति शीघ्र आप भी अपनी मान-बड़ाई व शास्त्रविधि रहित साधना को त्याग कर सतलोक आश्रम करौंथा में आकर परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाऐं। ''सत साहेब''

प्रार्थी

भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा।

'' तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है''

भक्त रामकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण

मैं रामकुमार ढाका 'रिटायर हैडमास्टर दिल्ली' (M.A.B.ED.), गाँव सुंडाना, जिला-रोहतक, वर्तमान पता - आजाद नगर, रोहतक (मोब. नं. - 9813844747) में रहता हूँ। सन् 1996 से मेरी पत्नी और दोनों लड़कों को एक बहुत भयंकर बीमारी थी। इस बीमारी से इतने तंग हो गये कि दोनों लड़के कहने लगे कि नौकरी नहीं हो सकती क्योंकि इस बीमारी से गला रूकता था और सांस आना बंद हो जाता था, तभी डाक्टर लेकर आते और नशे का टीका देते, परन्तु रात को ड्यूटी पर होते तब कहां ले जायें, बहुत ही परेशानी हो जाती थी, अफसर भी मुझे बुला लेते थे, मैं उनको बताता तब कहते की ईलाज करवाओ, जब घर पर होते तो डॉ. को रात को दो-दो बार भी आना पड़ता था, क्योंकि कभी किसी घर के सदस्य को तो कभी किसी को।

अगर किसी को शक हो तो डबल फाटक पर डॉ. सचदेवा की दुकान है, सचदेवा साहब से पूछ लो कि मास्टर जी के घर पर क्या हाल हो रहा था ?

जिसने भी जहाँ पर बताया मैं वहीं पर गया - उत्तर प्रदेश में कराना शामली के पास, उत्तर प्रदेश में खेखड़ा, राजस्थान में बाला जी कई बार, खाटूश्याम जी व कई जगह जन्त्र-मन्त्र वालों के पास, हरियाणा में तो मैंने कोई जगह नहीं छोड़ी, परन्तु कोई फर्क नहीं लगा, करेला के पास खेड़ा कंचनी, बोहतावाला, गोहाना के पास नगर, समचाना, सिकन्दरपुर, खिड़वाली आदि अनेक जगह गया और लगभग तीन लाख रूपये लग गये कोई काम नहीं आये।

मैं थक गया और मेरा परिवार बर्बाद हो गया। मेरी पत्नी ने मेरे से कहा कि मेरा जीवन समाप्त होने वाला है तथा भक्त सुभाष पुत्र महेन्द्र पुलिस वाला जिस संत रामपाल की महिमा सुनाता है मुझे उसी संत से नाम दिला दे। पहले मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करता था तथा गुरु बनाना तो बहुत ही हेय समझता था। कहा करता था कि तेरा गुरु तो मैं ही हूँ, मैं एम.ए.बी.एड मेरे से ज्यादा कौन गुरु होगा ? परन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया तथा मैंने यह भी स्वीकृति अपनी पत्नी को दे दी कि आप नाम ले लो। आप का जीवन शेष नहीं है। क्योंकि उस समय मेरी पत्नी का वजन 50 कि.ग्रा. रह गया था, पहले 80 कि.ग्रा. वजन था। उठने-बैठने से भी रह गई थी, चलना फिरना तो बहुत दूर की बात थी।

मैंने कहा मर तो ली, नाम और लेकर देखले, अपने मन की यह और करके देखले, अब मैं तेरे को नहीं रोकूंगा, नाम ले ले, ठीक है, क्योंकि संत रामपाल जी से नाम लेने के लिए कहने दूसरे तीसरे महीने सुभाष हमारा भतीजा आता था, कहता था ताई नाम ले लो नहीं तो मरोगे। मैं कहता था कि कोई डॉ. छोडा नहीं, हम बाला जी आदि सभी तान्त्रिकों के पास सिर मार लिया तो आपका संत क्या ले रहा है ?

परन्तु तंग आकर, कहीं बात नहीं बनी तब नाम लेने भेज दी। क्योंकि मैं भी अपने परिवार के आश्रम में जाने के सख्त विरुद्ध था। 16 जनवरी 2003 में नाम लिया और 'गहरी नजर गीता में' नामक पुस्तक साथ लेकर आई। एक महीने में जैसे दीपक में तेल डाल दिया इस प्रकार रोशनी हो गई, हर महीने तीन किलो वजन बढ़ने लगा।

तब बड़े लड़के को भी बगैर नाम लिये ही इस माँ के नाम लेने से अच्छी नींद आने लगी, तभी उसने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया, फिर मैंने 'गहरी नजर गीता में' पुस्तक पढ़ी, तब मैं भी गहराई में गया तो पाया कि ऐसा ज्ञान कभी नहीं पढ़ा व सुना था और मैंने भी अप्रैल 2003 में नाम लिया। आज मेरे घर में सभी बड़े से बच्चे तक ने नाम ले लिया है।

जब वह बीमारी होती थी तब सारा घर कांप उठता था, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में विवाद, डॉ. का आना जाना या मैडीकल में इमरजैंसी में लेकर पहुँचते थे। आज हमारा घर स्वर्ग के समान है और सतलोक जाने की इच्छा है।

एक महीना पहले स्वपन में परमेश्वर कबीर साहेब जी गुड़गाँव सैक्टर 57 में

प्लॉट बुक कर गये, जब ड्रा निकला तो वही प्लॉट नंबर मिला जो स्वपन में कबीर परमेश्वर ने बताया था, सुबह समाचार पत्र पढ़ा तो वही प्लॉट नं. अलोट था।

हमारे यहाँ ऐसी बीमारी थी कि कोई भी इतना दुःखी नहीं होगा जो हम थे अब संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् बहुत थोड़े दिनों में हम बहुत सुखी हैं।

मेरे घर पर 'जिन्न' (जिन्द) प्रकट हुआ, उसने कहा मैं आपके आश्रम में जाता हूँ, सब कुछ देखकर आता हूँ, परन्तु मैं शीशों में नहीं जाता जहाँ संत जी बैठ कर सत्संग करते हैं, क्योंकि मैंने सब बातों का पता है, अगर वहाँ जाउंगा तो मेरी पिटाई बनेगी इसलिए मैं वापिस बाहर आ जाता हूँ और तुम कहीं तान्त्रिकों के पास क्या, चाहे बाला जी गये, मैं अंदर जाया ही नहीं करता, बाहर रह जाता हूँ, मेरे को कोई बांधने वाला नहीं है। मेरे साथी डरपोक थे वह भाग गये मैं नहीं जाउंगा, मेरे को पढ़ कर छोड़ रखा है, मैंने तेरे घर व तेरी लड़की के घर की ईंट से ईंट बजानी है। मैं इस प्रकार पढ़कर छोड़ रखा हूँ कि एक के बाद एक सभी के विनाश का नम्बर आयेगा, चाहे कहीं भी भाग लो।

कुछ दिन के बाद वही प्रेत घर में फिर प्रकट हुआ और जोर-जोर से बोलने लगा कहां है तेरा गुरु रामपाल ? कहां है तेरा मालिक कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ? जब भी वह प्रकट होता था मनुष्य की तरह बातचीत करता था। तभी मेरी पत्नी हमारे घर पर बने पूजा स्थल पर चली गई और डण्डौतं प्रणाम किया, तभी जिन्द(प्रेत) की पिटाई आरम्भ हो गयी और कहने लगा क्या पिटाई करते हो, इन दीवारों को अब गिरा दूंगा। उसकी अच्छी पिटाई हुई वो कहने लगा हाय ये तो दीवार नहीं लोहे का जाल है, सरिये हैं। ये मालिक रामपाल जी कहां से आ गये ये तो बरवाला सत्संग करने गये हुए थे (उस दिन संत रामपाल जी महाराज बरवाला जि. हिसार में सत्संग करने गए हुए थे) मैं तो इसलिये आया था कि मालिक यहाँ पर है ही नहीं।

जिन्द ने कहा कि मैं आया था तुम्हारी ईंट से ईंट बजाने परन्तु मेरी ईंट से ईंट बज गई। मेरे को नरक में डालेंगे, मैं चला जाउंगा, मुझे छुड़वा दो। करौंथा आश्रम में संत रामपाल जी बैठे हैं इनको आदमी मत समझना पूर्ण परमात्मा आये हुए हैं। इनको मत छोड़ देना, नहीं तो खता खा जाओगे। ऐसे ही खेड़ा कचनी वाला पण्डित भी इलाज करता था।

जब मैं खेड़ा कंचनी में गया तो उस पंडित ने बताया कि आपका परिवार एक के बाद एक करके खत्म हो जायेगा। मैंने नहीं मानी, परन्तु शाहपुर में ही भाई की लड़कियों की शादी कर रखी है तथा वह पण्डित भी शाहपुर का ही है। फिर पण्डित जी ने हमारे चौधरी को बताया कि रोहतक वाले चौधरी रामकुमार के यहाँ बहुत खतरनाक बीमारी है और सारा परिवार नष्ट हो जायेगा। उनको बुलाकर लाओ। तब हमारे चौधरी साहब ने बटेऊ को मेरे पास भेजा। हमारे बटेऊ जिले सिंह ने बताया और वह साथ लेकर गया। बुलाना तो आसान था परन्तु फिर ईलाज बहुत मुश्किल हो गया। उसके काबू में नहीं आया। मंगल व शनिवार को रात के समय

पाँच-पाँच चौकियां आती थी। उन्हें उतारता और साथ में तालाब में डाल देता। यह कार्यक्रम चार साल तक चलता रहा परन्तु बाद में हाथ खड़े कर दिए।

मैं बोहतावाला (जीन्द) एक स्याने के पास पहुँचा। उसने कहा कि तेरी बीमारी मैं काट दूंगा। आपकी बीमारी का मुझे पता है। वह हमें कई बार बाला जी भी ले गया, न उस स्याने के काबू में आया और न उसके मन्दिर में। क्योंकि मंगल व शनिवार को चौकियों के आने ने उसको इतना तंग कर दिया कि वह भी हाथ खड़े कर गया, क्योंकि चौकियां जब आती थी तो मेरे पास भी संदेश आ जाता था कि रात 9 से 2 बजे तक आग जला कर, पानी का लोटा लेकर और लाठी लेकर जागते रहना है। यह कार्यक्रम सन् 1996 से 2002 तक चलता रहा। बोतावाले के पास जब चौकी आई तो उसमें एक पर्ची मिली थी बोहतावाले स्याने को कहा था कि बीच से हट जा तेरे को पचास हजार रूपये दे देंगे, नहीं तो तेरी भी खैर नहीं है। उसने डर के कारण मुझे इन्कार कर दिया। मैं दिन में दिल्ली नौकरी करने जाता और रात को पहरा देता। कभी रात को डॉ. को बुला कर लाता। मेरी बहुत ही दुर्दशा थी। मैं ऊपर के काम से तथा सारा परिवार बीमारी से बहुत तंग था। किसी को कहते तो मजाक करते थे, किसी ने भी साथ नहीं दिया। बहुत पैसे (लगभग 3 लाख) खर्च हो गये।

मेरी पत्नी चांदकौर को थाईराइड हो गई थी। जनवरी 2003 में डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने थाईराईड के लिए तिमारपुर, दिल्ली हस्पताल में दाखिल करवाने के लिए मार्क कर दिया। परन्तु वहाँ न जाकर मैं मैडिकल में डॉ. चुग इसका स्पेशलिस्ट था उनसे ईलाज करवाया, उसने कहा सारी उम्र दवा खानी पड़ेगी, परन्तु अब 2003 में नाम लेने के बाद दवाई बिल्कुल समाप्त हो गई। मैंने डॉ. चुग को भी चैक करवाया, तो हैरान होगये, ये कैसे हुआ, सारी बातें बताई।

अब मेरे लड़के व मेरी पत्नी की सभी बिमारियाँ बन्दी छोड़ ने ठीक कर दी। बड़े लड़के का नाम सुरेन्द्र कुमार तथा छोटे लड़के का नाम मनोज कुमार है। दोनों हरियाणा पुलिस में नौकरी करते हैं। जब वे दोनों ही उस जिन्द भूत से ग्रस्त थे व घाल ने भी उन पर कई बार अटैक किया, लेकिन नाम उपदेश ले रखा था। इसलिए उनको परमात्मा कबीर साहिब ने बचा लिया।

तत्वदर्शी जगतगुरु संत रामपाल महाराज हमारे लिये ही अवतरित हुऐ हैं क्योंकि जिस परिवार में दो लड़के नौकरी पर दोनों में ही जिन्द हो तो उस घर में क्या होगा। जिस औरत के दोनों लड़कों के साथ ऐसा खिलवाड़ हो और खुद में भी जिन्द हो तो क्या जिन्दगी है ? जो लोग करौंथा आश्रम के बारे में ज्ञान अर्जित नहीं करते वे लोग अंधेरे में हैं। क्योंकि पढ़ने के लिए दिमाग दिया है, पढ़िये और सोचिये कि वास्तविकता क्या है ?

हमारा परिवार बर्बाद हो गया था। मेरे बच्चे और मेरी पत्नी जब ठीक हो गई तभी मैंने अपने आपको सतगुरु रामपाल जी के चरणों में समर्पण कर दिया। मेरा कुछ नहीं है। ये तन-मन-धन सभी गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूँ।

मेरी लड़की ने व दामाद ने भी नाम ले लिया। आज मेरी बेटी का घर भी स्वर्ग

हो गया है। मेरा दामाद शराब पीता था, उसने शराब भी त्याग दी। मेरी लड़की की प्रमोसन, प्लॉट, मकान आदि चन्द दिनों में ही प्राप्त हो गए तथा सबकी मौज हो रही है।

सन् 2003 में बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज ने हमारे पाप कर्मों रूपी सूखे घास के ढेर को सतनाम रूपी अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया। न कोई गंडा, न कोई डोरी, न राख, न ताबिज आदि कुछ नहीं, बस केवल बन्दी छोड के मंत्र (नाम उपदेश) मात्र से सर्व रोग नष्ट हो गए। मंत्र तो मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी बन्धनों से छुटकारा पाकर सतलोक ले जाने का है, ये सभी बिमारियां तो रूंगे में कविर्देव की कृपा से ही समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसा न हो तो भक्ति से विश्वास उठ जाता है। अब हम बहुत सुखी हैं। अब चाहे कोई कुछ भी करे, हमारे घर पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि हम बन्दी छोड़ कबीर साहेब के हंस हैं, उनके चरणों में हैं। मैं भी नहीं मानता था, इन बातों को पाखण्ड कहता था, परन्तु जब एक के बाद एक को डॉ. के पास ले जाता था तथा बीमारी में पैसे भी लगे, तंग भी हुए, तब आँखें खुली वास्तव में ही जाल में फंसा रखा है। इसलिए अपने इस भ्रम को भुला देना कि भूत-प्रेत कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ कि बकवास नहीं ये बातें वास्तव में हैं, क्योंकि मरोड़ में मैंने अपने घर को बरबाद कर दिया होता। इसलिए मैं सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी अपने समस्त दुःखों से छुटकारा पाने व सत्यभक्ति करने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा में परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त उपदेश प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए।

प्रार्थी

हैडमास्टर रामकुमार (एम.ए.बी.एड.)

उपरोक्त कुछ भक्तात्माओं की आत्म कथाएं आपने पढी। ऐसे-२ भक्त हजारों-लाखों हैं जो अपनी आत्म कथा पुस्तकों में लिखवाना चाहते हैं। लेकिन यहां पर स्थान के अभाव के कारण हम कुछेक भक्तों की आत्म कथा दे पाए। यदि सभी भक्तों की आत्म कथा हम लिखने बैठ जांए तो शायद सैकड़ों पुस्तकें छप जाएंगी। इसलिए समझदार व्यक्ति को इशारा (संकेत) ही काफी होता है।

भक्ति में भेद : भक्ति भक्ति में बहुत भेद होता है। आप चाहें किसी देव/देवी की भक्ति करें उसका फल अवश्य मिलेगा जो कि नाशवान होगा लेकिन मुक्ति नहीं हो पाएगी और पाप कर्म भी समाप्त नहीं होंगे जिन्हें भोगने के लिए बार-२ जन्म लेते रहना पड़ेगा। मुक्ति तो केवल पूर्ण संत की शरण में जाकर अर्थात् उनसे नाम उपदेश लेकर पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही हो पाएगी अन्यथा नहीं।

ये संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास ये वक्त जात है, रोवेगो इस पहरे नूं।।
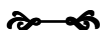
कबीर साहेब की काल से वार्ता

जब परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की और अपने लोक में विश्राम करने लगे। उसके बाद हम सभी काल के ब्रह्मण्ड में रह कर अपना किया हुआ कर्मदण्ड भोगने लगे और बहुत दुःखी रहने लगे। सुख व शांति की खोज में भटकने लगे और हमें अपने निज घर सतलोक की याद सताने लगी तथा वहां जाने के लिए भक्ति प्रारंभ की। किसी ने चारों वेदों को कंठस्थ किया तो कोई उग्र तप करने लगा और हवन यज्ञ, ध्यान, समाधि आदि क्रियाएं प्रारम्भ की, लेकिन अपने निज घर सतलोक नहीं जा सके क्योंकि उपरोक्त क्रियाएं करने से अगले जन्मों में अच्छे समृद्ध जीवन को प्राप्त होकर (जैसे राजा-महाराजा, बड़ा व्यापारी, अधिकारी, देव-महादेव, स्वर्ग-महास्वर्ग आदि) वापिस लख चौरासी भोगने लगे। बहुत परेशान रहने लगे और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे दयालु ! हमें निज घर का रास्ता दिखाओ। हम हृदय से आपकी भक्ति करते हैं। आप हमें दर्शन क्यों नहीं दे रहे हो ?

यह वृतान्त कबीर साहेब ने धर्मदास जी को बताते हुए कहा कि धर्मदास इन जीवों की पुकार सुनकर मैं अपने सतलोक से जोगजीत का रूप बनाकर काल लोक में आया। तब इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में जहां काल का निज घर है वहां पर तप्तशिला पर जीवों को भूनकर सुक्ष्म शरीर से गंध निकाला जा रहा था। मेरे पहुंचने के बाद उन जीवों की जलन समाप्त को गई। उन्होंने मुझे देखकर कहा कि हे पुरुष ! आप कौन हो? आपके दर्शन मात्र से ही हमें बड़ा सुख व शांति का आभास हो रहा है। फिर मैंने बताया कि मैं पारब्रह्म परमेश्वर कबीर हूं। आप सब जीव मेरे लोक से आकर काल ब्रह्म के लोक में फंस गए हो। यह काल रोजाना एक लाख मानव के सुक्ष्म शरीर से गंध निकाल कर खाता है और बाद में नाना-प्रकार की योनियों में दण्ड भोगने के लिए छोड़ देता है। तब वे जीवात्माएं कहने लगी कि हे दयालु परमश्वेर ! हमारे को इस काल की जेल से छुड़वाओ। मैंने बताया कि यह ब्रह्मण्ड काल ने तीन बार भक्ति करके मेरे से प्राप्त किए हुए हैं जो आप यहां सब वस्तुओं का प्रयोग कर रहे हो ये सभी काल की हैं और आप सब अपनी इच्छा से घूमने के लिए आए हो। इसलिए अब आपके ऊपर काल ब्रह्म का बहुत ज्यादा ऋण हो चुका है और वह ऋण मेरे सच्चे नाम के जाप के बिना नहीं उतर सकता।

जब तक आप ऋण मुक्त नहीं हो सकते तब तक आप काल ब्रह्म की जेल से बाहर नहीं जा सकते। इसके लिए आपको मुझसे नाम उपदेश लेकर भक्ति करनी होगी। तब मैं आपको छुड़वा कर ले जाऊंगा। हम यह वार्ता कर ही रहे थे कि वहां पर काल ब्रह्म प्रकट हो गया और उसने बहुत क्रोधित होकर मेरे ऊपर हमला बोला। मैंने अपनी शब्द शक्ति से उसको मुर्छित कर दिया। फिर कुछ समय बाद वह होंश में आया। मेरे चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा और बोला कि आप मुझ से बड़े हो, मुझ पर कुछ दया करो और यह बताओ कि आप मेरे लोक में क्यों आए हो ? तब मैंने काल पुरुष को बताया कि कुछ जीवात्माएं भक्ति करके अपने निज घर सतलोक में वापिस जाना

चाहती हैं। उन्हें सतभक्ति मार्ग नहीं मिल रहा है। इसलिए वे भक्ति करने के बाद भी इसी लोक में रह जाती हैं। मैं उनको सतभक्ति मार्ग बताने के लिए और तेरा भेद देने के लिए आया हूं कि तूं काल है, एक लाख जीवों का आहार करता है और सवा लाख जीवों को उत्पन्न करता है तथा भगवान बन कर बैठा है। मैं इनको बताऊंगा कि तुम जिसकी भक्ति करते हो वह भगवान नहीं, काल है। इतना सुनते ही काल बोला कि यदि सब जीव वापिस चले गए तो मेरे भोजन का क्या होगा ? मैं भूखा मर जाऊंगा। आपसे मेरी प्रार्थना है कि तीन युगों में जीव कम संख्या में ले जाना और सबको मेरा भेद मत देना कि मैं काल हूं, सबको खाता हूं। जब कलियुग आए तो चाहे जितने जीवों को ले जाना। ये वचन काल ने मुझसे प्राप्त कर लिए। कबीर साहेब ने धर्मदास को आगे बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में भी मैं आया था और बहुत जीवों को सतलोक लेकर गया लेकिन इसका भेद नहीं बताया। अब मैं कलियुग में आया हूं और काल से मेरी वार्ता हुई है। काल ब्रह्म ने मुझ से कहा कि अब आप चाहे जितना जोर लगा लेना, आपकी बात कोई नहीं सुनेगा। प्रथम तो मैंने जीव को भक्ति के लायक ही नहीं छोड़ा है। उनमें बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांस आदि दुर्व्यसन की आदत डाल कर इनकी वृत्ती को बिगाड़ दिया है। नाना-प्रकार की पाखण्ड पूजा में जीवात्माओं को लगा दिया है। दूसरी बात यह होगी कि जब आप अपना ज्ञान देकर वापिस अपने लोक में चले जाओगे तब मैं (काल) अपने दूत भेजकर आपके पंथ से मिलते-जुलते बारह पंथ चलाकर जीवों को भ्रमित कर दूंगा। महिमा सतलोक की बताएंगे, आपका ज्ञान कथेंगे लेकिन नाम-जाप मेरा करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप मेरा ही भोजन बनेंगे। यह बात सुनकर कबीर साहेब ने कहा कि आप अपनी कोशिश करना, मैं सतमार्ग बताकर ही वापिस जाऊंगा और जो मेरा ज्ञान सुन लेगा वह तेरे बहकावे में कभी नहीं आएगा।

सतगुरु कबीर साहेब ने कहा कि हे निरंजन ! यदि मैं चाहूं तो तेरे सारे खेल को क्षण भर में समाप्त कर सकता हूं परंतु ऐसा करने से मेरा वचन भंग होता है। यह सोच कर मैं अपने प्यारे हंसों को यथार्थ ज्ञान देकर शब्द का बल प्रदान करके सतलोक ले जाऊंगा और कहा कि -

सुनो धर्मराया, हम संखों हंसा पद परसाया।
जिन लीन्हा हमरा प्रवाना, सो हंसा हम किए अमाना।।

(पवित्र कबीर सागर में जीवों को भूल-भूलइयां में डालने के लिए तथा अपनी भूख को मिटाने के लिए तरह-२ के तरीकों का वर्णन)

द्वादस पंथ करूं मैं साजा, नाम तुम्हारा ले करूं अवाजा।
द्वादस यम संसार पठहो, नाम तुम्हारे पंथ चलैहो।।
प्रथम दूत मम प्रगटे जाई, पीछे अंश तुम्हारा आई।।
यही विधि जीवनको भ्रमाऊं, पुरुष नाम जीवन समझाऊं।।
द्वादस पंथ नाम जो लैहे, सो हमरे मुख आन समै है।।
कहा तुम्हारा जीव नहीं माने, हमारी ओर होय बाद बखानै।।

मैं दृढ़ फंदा रची बनाई, जामें जीव रहे उरझाई ।।
देवल देव पाषान पूजाई, तीर्थ व्रत जप—तप मन लाई ।।
यज्ञ होम अरू नेम अचारा, और अनेक फंद में डारा ।।
जो ज्ञानी जाओ संसारा, जीव न मानै कहा तुम्हारा ।।

(सतगुरु वचन)

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई, काटो फंद जीव ले जाई ।।
जेतिक फंद तुम रचे विचारी, सत्य शबद तै सबै बिंडारी ।।
जौन जीव हम शब्द दृढावे, फंद तुम्हारा सकल मुकावै ।।
चौका कर प्रवाना पाई, पुरुष नाम तिहि देऊं चिन्हाई ।।
ताके निकट काल नहीं आवै, संधि देखी ताकहं सिर नावै ।।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध होता है कि जो अनेक पंथ चले हुए हैं। जिनके पास कबीर साहेब द्वारा बताया हुआ सतभक्ति मार्ग नहीं है, ये सब काल प्रेरित हैं। अतः बुद्धिमान को चाहिए कि सोच-विचार कर भक्ति मार्ग अपनाएं क्योंकि मनुष्य जन्म अनमोल है, यह बार-बार नहीं मिलता। कबीर साहेब कहते हैं कि --

कबीर मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार।
तरूवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डारि ।।

''विश्व विजेयता सन्त''

(संत रामपाल जी महाराज की अध्यक्षता में हिन्दुस्तान विश्व धर्मगुरु के रूप में प्रतिष्ठित होगा)

"संत रामपाल जी के विषय में ''नास्त्रेदमस'' की भविष्यवाणी"

फ्रैंच (फ्रांस) देश के नास्त्रेदमस नामक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता ने सन् (इ.स.) 1555 में एक हजार श्लोकों में भविष्य की सांकेतिक सत्य भविष्यवाणियां लिखी हैं। सौ-सौ श्लोकों के दस शतक बनाए हैं। जिनमें से अब तक सर्व सिद्ध हो चुकी हैं। हिन्दुस्तान में सत्य हो चुकी भविष्यवाणियों में से :-

1. भारत की प्रथम महिला प्रधानमन्त्री बहुत प्रभावशाली व कुशल होगी (यह संकेत स्व. श्रीमती इन्दिरा गांधी की ओर है) तथा उनकी मृत्यु निकटतम रक्षक द्वारा होना लिखा था, जो सत्य हुई।

2. उसके पश्चात् उन्हीं का पुत्र उनका उत्तराधिकारी होगा और वह बहुत कम समय तक राज्य करेगा तथा आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त होगा, जो सत्य सिद्ध हुई। (पूर्व प्रधानमन्त्री स्व. श्री राजीव गांधी जी के विषय में)।

3. संत रामपाल जी महाराज के विषय में भविष्यवाणी नास्त्रेदमस द्वारा जो विस्तार पूर्वक लिखी हैं।

(क) अपनी भविष्यवाणी के शतक पांच के अंत में तथा शतक छः के प्रारम्भ में नास्त्रेदमस जी ने लिखा है कि आज अर्थात् इ.स. (सन्) 1555 से ठीक 450 वर्ष पश्चात् अर्थात् सन् 2006 में एक हिन्दू संत (शायरन) प्रकट होगा अर्थात् सर्व जगत में उसकी चर्चा होगी। उस समय उस हिन्दू धार्मिक संत (शायरन) की आयु 50 व 60 वर्ष के बीच होगी। परमेश्वर ने नास्त्रेदमस को संत रामपाल जी महाराज के अधेड़ उम्र वाले शरीर का साक्षात्कार करवा कर चलचित्र की भांति सारी घटनाओं को दिखाया और समझाया। श्री नास्त्रेदमस जी ने 16 वीं सदी को प्रथम शतक कहा है इस प्रकार पांचवां शतक 20 वीं सदी हुआ। नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि वह धार्मिक हिन्दू नेता अर्थात् संत (CHYREN-शायरन) पांचवें शतक के अंत के वर्ष में अर्थात् सन् (ई.सं.) 1999 में घर-घर सत्संग करना त्याग कर अर्थात् चौखटों को लांघ कर बाहर आयेगा तथा अपने अनुयाइयों को शास्त्रविधि अनुसार भक्तिमार्ग बताएगा। उस महान संत के बताए मार्ग से अनुयाइयों को अद्वितीय आध्यात्मिक और भौतिक लाभ होगा। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत के द्वारा बताए शास्त्रप्रमाणित तत्वज्ञान को समझ कर परमात्मा चाहने वाले श्रद्धालु ऐसे अचंभित होगें जैसे कोई गहरी नींद से जागा हो। उस तत्वदृष्टा हिन्दू संत द्वारा सन् 1999 में चलाई आध्यात्मिक क्रांति इ.स. 2006 तक चलेगी। तब तक बहु संख्या में परमात्मा चाहने वाले भक्त तत्व ज्ञान समझ कर अनुयायी बन कर सुखी हो चुके होंगे। उसके पश्चात् उस स्थान की चौखट से भी बाहर लांघेगा। उसके पश्चात् 2006 से स्वर्ण युग का प्रारम्भ होगा।

नोटः प्रिय पाठकजन कृप्या पढ़ें निम्न भविष्यवाणी जो फ्रांस देश के वासी श्री नास्त्रेदमस ने की थी। जिस के विषय में मद्रास के एक ज्योतिशास्त्री के. एस. कृष्णमूर्ति ने कहा है कि श्री नास्त्रेदमस जी द्वारा सन् 1555 में लिखी भविष्यवाणियों का यथार्थ अनुवाद "सन् 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिष शास्त्री करेगा। वह ज्योतिष शास्त्री नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों का सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्य ग्रंथ प्रकाशित करेगा।" उसी ज्योतिषशास्त्री द्वारा यथार्थ अनुवादित की गई पुस्तक से अनुवादकर्ता के शब्दों में पढ़ें।

1. (पृष्ठ 32, 33 पर) :-- ठहरो स्वर्ण युग (रामराज्य) आ रहा है। एक अधेड़ उम्र का औदार्य (उदार) अजोड़ महासत्ता अधिकारी भारत ही नहीं सारी पृथ्वी पर स्वर्ण युग लाएगा और अपने सनातन धर्म का पुनरूत्थान करके यथार्थ भक्ति मार्ग बताकर सर्वश्रेष्ठ हिन्दू राष्ट्र बनाएगा। तत्पश्चात् ब्रह्मदेश पाकिस्तान, बांगला, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत (तिबेत), अफगानिस्तान, मलाया आदि देशों में वही सार्वभौम धार्मिक नेता होगा। सत्ताधारी चांडाल चौकड़ियों पर उसकी सत्ता होगी वह नेता (शायरन) दुनिया को अधाप मालूम होना है, बस देखते रहो।

2. (पृष्ठ 40 पर फिर लिखा है) :-- ठहरो रामराज्य (स्वर्ण युग) आ रहा है। जून इ.स. 1999 से इ.स. 2006 तक चलने वाली उत्क्रांति में स्वर्णयुग का उत्थान होगा। हिन्दुस्तान में उदयन होने वाला तारणहार शायरन दुनिया में सुख समृद्धि व शान्ति प्रदान करेगा। नास्त्रेदमस जी ने निःसंदेह कहा है कि प्रकट होने वाला शायरन (CHYREN) अभी ज्ञात नहीं है लेकिन वह क्रिश्चन अथवा मुस्लमान हरगिज नहीं है। वह हिन्दू ही होगा और मैं नास्त्रेदमस उसका अभी छाती ठोक कर गर्व करता हूं क्योंकि उस दिव्य स्वतंत्र सूर्य शायरन का उदय होते ही सारे पहले वाले विद्वान कहलाने वाले महान नेताओं को निष्प्रभ होकर उसके सामने नम्र बनना पड़ेगा। वह हिन्दुस्तानी महान तत्वदृष्टा संत सभी को अभूतपूर्व राज्य प्रदान करेगा। वह समान कायदा, समान नियम बनाएगा, स्त्री-पुरुष में, अमीर-गरीब में, जाति और धर्म में कोई भेद-भाव नहीं रखेगा, किसी पर अन्याय नहीं होने देगा। उस तत्व दर्शी संत का सर्व जनता विशेष सम्मान करेगी। माता-पिता तो आदरणीय होते ही हैं परन्तु अध्यात्मिकता व पवित्रता के आधार पर उस शायरन (तत्वदर्शी संत) का माता-पिता से भी अलग श्रद्धा स्थान होगा। नास्त्रेदमस स्वयं ज्यू वंश का था तथा फ्रांस देश का नागरिक था। उसने क्रिश्चन धर्म स्वीकार कर रखा था, फिर भी नास्त्रेदमस ने निःसंदेह कहा है कि प्रगट होने वाला शायरन केवल हिन्दू ही होगा।

3. (पृष्ठ 41 पर) :-- सभी को समान कायदा, नियम, अनुशासन पालन करवा कर सत्य पथ पर लाएगा। मैं (नास्त्रेदमस) एक बात निर्विवाद सिद्ध करता हूं वह शायरन (धार्मिक नेता) नया ज्ञान आविष्कार करेगा। वह सत्य मार्ग दर्शन करवाने वाला तारणहार एशिया खण्ड में जिस देश के नाम महासागर (हिन्द महासागर) है। उसी नाम वाले (हिन्दुस्तान) देश में जन्म लेगा। वह ना क्रिश्चन, ना मुस्लमान,

ना ज्यू होगा वह निःसंदेह हिन्दू होगा। अन्य भूतपूर्व धार्मिक नेताओं से महतर बुद्धिमान होगा और अजिंकय होगा। (नास्त्रेदमस भविष्यवाणी के शतक 6 श्लोक 70 में महत्वपूर्ण संकेत संदेश बता रहा है) उस से सभी प्रेम करेगें। उसका बोल बाला रहेगा। उसका भय भी रहेगा। कोई भी अपकृत्य करना नहीं सोचेगा। उसका नाम व कीर्ती त्रिखण्ड में गुंजेगी अर्थात् आसमानों के पार उसकी महिमा का बोल-बाला होगा। अब तक अज्ञान निंद्रा में गाढ़े सोए हुए समाज को तत्व ज्ञान की रोशनी से जगाएगा। सर्व मानव समाज हड़बड़ा कर जागेगा। उसके तत्व ज्ञान के आधार से भक्ति साधना करेगा। सर्व समाज से सत्य साधना करवाएगा। जिस कारण सर्व साधकों को अपने आदि अनादि स्थान (सत्यलोक) में अपने पूर्वजों के पास ले जा कर वहां स्थाई स्थान प्राप्त करवाएगा (वारिस बनाएगा)। इस क्रुर भूमि (काल लोक) से मुक्त करवाएगा, यह शब्द बोल उठेगा।

4. (पृष्ठ 42, 43) :-- यह हिंसक क्रुरचन्द्र (महाकाल) कौन है, कहाँ है, यह बात शायरन (तत्वदर्शी संत) ही बताएगा। उस क्रुरचन्द्र से वह CHYREN - शायरन ही मुक्त करवाएगा। शायरन (तत्वदर्शी संत) के कारकिर्द में इस भूतल की पवित्र भूमि पर (हिन्दुस्तान में) स्वर्णयुग का अवतरण होगा, फिर वह पूरे विश्व में फैलेगा। उस विश्व नेता और उसके सद्गुणों की, उसके बाद भी महिमा गाई जाएगी। उसके मन की शालीनता, विनम्रता, उदारता का इतना रेल-पेल बोल बाला होगा कि इससे पहले नमूद किए हुए शतक 6 श्लोक 70 के आखिरी पंक्ति में किया हुआ उल्लेख कि अपना शब्द खुद ही बोल उठता है और शायरन कि ही जुबान बोल रही है कि ''शायरन अपने बारे में बस तीन ही शब्द बोलता है '' एक विजयी ज्ञाता'' इसके साथ और विशेषण न चिपकाएं मूझे मंजूर नहीं होगा। (यह पृष्ठ 42 वाला 4 उल्लेख वाणी शतक 6 श्लोक 71 है) हिन्दू शायरन अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतुंग ऊंचा स्वरूप का विधान (तत्वज्ञान) फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा। (Chyren will be chief of the world, Loved feared and unchallenged) और मानवी संस्कृती निर्धोक संवारेगा, इसमें संदेह नहीं। अभी किसी को मालूम नहीं, लेकिन अपने समय पर जैसे नरसिंह अचानक प्रगट हुआ था ऐसे ही वह विश्व महान नेता (Great Chyren) अपने तर्कशुद्ध, अचूक आध्यात्मिक ज्ञान और भक्ति तेज से विख्यात होगा। मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित हूँ। मैं ना उसके देश (जहां से अवतरित होगा अर्थात् सतलोक देश) को तथा ना उसको जानता हूँ, मैं उसे सामने देख भी रहा हूँ, उसकी महिमा का शब्द बद्ध में कोई मिसाल नहीं कर सकता। बस उसे Great Chyren (महान धार्मिक नेता) कहता हूँ अपने धर्म बंधुओं की सद्द कालीन समस्या से दयनीय अवस्था से बैचेन होता हुआ स्वतंत्र ज्ञान सूर्य का उदय करता हुआ अपने भक्ति तेज से जग का तारणहार 5वें शतक (20 वीं सदी के अंतिम वर्ष में) के अंत में ई.स. 1999 अधेड़ उम्र का विश्व का महान नेता जैसे तेजस्वी सिंह मानव (Great Chyren) उदिवग्न अवस्था से चोखट लांघता हुआ मेरे (नास्त्रेदमस के) मन का भेद ले रहा है और मैं उसका स्वागत करता हुआ आश्चर्य

चकित हो रहा हूँ, उदास भी हो रहा हूं, क्योंकि उसका दुनिया को ज्ञान न होने से मेरा शायरन (तत्वदर्शी संत) उपेक्षा का पात्र बन रहा है।

मेरी (नास्त्रेदमस की) चितभेदक भविष्यवाणी की और उस वैश्विक सिंह मानव की उपेक्षा ना करें। उसके प्रकट होने पर तथा उसके तेजस्वी तत्व ज्ञान रूपी सूर्य उदय होने से आदर्शवादी श्रेष्ठ व्यक्तियों का पुनर्उत्थान तथा स्वर्ण युग का प्रभात शतक 6 में आज ई.स. 1555 से 450 वर्ष बाद अर्थात् 2006 में (1555+450=2005 के पश्चात् अर्थात् 2006 में) शुरूआत होगी। इस कृतार्थ शुरूवात का मैं (नास्त्रेदमस) दृष्टा हो रहा हूँ।

5. (पृष्ठ 44, 45, 46) :-- (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में फिर प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप (हिन्दुस्तान देश) में उस महान संत का जन्म होगा उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50)

(नोटः- नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी फ्रांस देश की भाषा में लिखी गई थी। बाद में एक पाल ब्रन्टन नामक अंग्रेज ने इस नास्त्रेदमस की भविष्यवाणी ''सैन्चयुरी ग्रंथ'' को फ्रांस में कुछ वर्ष रह कर समझा, फिर इंग्लिश भाषा में लिखा। उसने गुरुवर शब्द को (बृहस्पति) गुरुवार अर्थात् थरस्डे जान कर लिख दिया की वह अपनी पूजा का आधार बृहस्पत्तिवार को बनाएगा। वास्तव में गुरुवर शब्द है जिसका अर्थ है सर्व गुरुओं में जो एक तत्वज्ञाता श्रेष्ठ है तथा गुरु को मुख्य मानकर साधना करना होता है। वेद भाषा में बृहस्पति का भावार्थ सर्वोच्च स्वामी अर्थात् परमेश्वर, दूसरा अर्थ बृहस्पति का जगतगुरु भी होता है। जगत गुरु तथा परमेश्वर भी बृहस्पति का बोध है।)

वह अधेड़ उम्र में तत्वज्ञान का ज्ञाता तथा ज्ञेय होकर त्रिखंड में कीर्ति मान होगा। मुझ (नास्त्रेदमस) को उसका नया उपाय साधना मंत्र ऐसा जालिम मालूम हो रहा है जैसे सर्प को वश करने वाला गारडू मंत्र से महाविषैले सर्प को वश कर लेता है। वह नया उपाय, नया कायदा बनाने वाला तत्ववेता दुनिया के सामने उजागर होगा उसी को मैं (नास्त्रेदमस) अचंभित होकर ''ग्रेट शायरन'' बता रहा हूं उसके ज्ञान के दिव्य तेज के प्रभाव से उस द्वीपकल्प (भारतवर्ष) में आक्रामक तूफान, खलबली मचेगी अर्थात् अज्ञानी संतों द्वारा विद्रोह किया जाएगा। उसको शांत करने का उपाय भी उसी को मालूम होगा। जैसे जालिम सर्पनी को वश किया जाता है। वह सिंह के समान शक्तिशाली व तेजपूंज व्यक्तित्व का होगा। यह मैं नास्त्रेदमस स्पष्ट शब्दों में बता रहा हूं कि वह कुण्डलीनी शक्ति धारण किए हुए है। आगे स्पष्ट शब्द यह है कि जिस समय वह शायरन जिस महासागर में द्वीपकल्प

है उसी देश के नाम पर महासागर का भी नाम है (हिन्दमहासागर)। विशेषता यह होगी की उस देश की भुजंग सर्पिनी शक्ति (कुण्डलनी शक्ति) का पूर्ण परिचित True Master होगा। वह Chyren (महान धार्मिक नेता) उदारमत वाला, कृपालु, दयालु, दैदिप्यमान, सनातन साम्राज्य अधिकारी, आदि पुरूष (सत्यपुरूष) का अनुयाई होगा। उसकी सत्ता सार्वभौम होगी उसकी महिमा, उपाय गुरु श्रद्धा, गुरु भक्ति अर्थात् गुरु बिना कोई साधना सफल नहीं होती, इस सिद्धांत को दृढ़ करेगा। तत्वज्ञान का सत्संग करके प्रथम अज्ञान निंद्रा में सोए अपने धर्म बंधुओं (हिन्दुओं) को जागृत करके अंधविश्वास के आधार पर साधना कर रहे श्रद्धालुओं को शास्त्रविधि रहित साधना का बुरका फाड़ कर गूढ़ गहरे ज्ञान (तत्वज्ञान) का प्रकाश करेगा। अपने सनातन धर्म का पालन करवा कर समृद्ध शांति का अधिकारी बनाएगा। तत् पश्चात् उसका तत्वज्ञान सम्पूर्ण विश्व में फैलेगा, उस (महान तत्वदर्शी संत) के ज्ञान की कोई भी बराबरी नहीं कर सकेगा अर्थात् उसका कोई भी सानी नहीं होगा। उसके गूढ़ ज्ञान (तत्वज्ञान) के सामने सूर्य का तेज भी कम पड़ेगा। इसलिए मैं (नास्त्रेदमस) वैश्विक सिंह महामानव इतना महान होगा कि मैं उसकी महिमा को शब्दों में नहीं बांध पांउगा। मैं (नास्त्रेदमस) उस ग्रेट शायरन को देख रहा हूँ।

उपरोक्त विवरण का भावार्थ है कि "उस विश्व नेता को 50 वर्ष की आयु में तत्वज्ञान शास्त्रों में प्रमाणित होगा अर्थात् वह 50 वर्ष की आयु में सन् 2001 में सर्व धर्मों के शास्त्रों को पढ़ कर उनका ज्ञाता (तत्वज्ञानी) होगा तथा उसके पश्चात् उस तत्वज्ञान का ज्ञेय (जानने योग्य परमेश्वर का ज्ञान अन्य को प्रदान करने वाला) होगा तथा उसका अध्यात्मिक जन्म अमावस्या को होगा। उस समय उसकी आयु तरुण अर्थात् 16, 20, 25 वर्ष की नहीं होगी, वह प्रौढ़ होगा तथा जब वह प्रसिद्ध होगा तब उसकी आयु पचास से साठ साल के मध्य होगी।"

6. (पृष्ठ 46, 47) :-- नास्त्रेदमस कहता है कि निःसंदेह विश्व में श्रेष्ठ तत्वज्ञाता (ग्रेट शायरन) के विषय में मेरी भविष्यवाणी के शब्दा शब्द को किसी नेताओं पर जोड़ कर तर्क-वितर्क करके देखेगें तो कोई भी खरा नहीं उतरेगा। मैं (नास्त्रेदमस) छाती ठोक कर शब्दा शब्द कह रहा हूँ मेरा शायरन का कर्तृत्व और उसका गूढ़-गहरा ज्ञान (तत्वज्ञान) ही सर्व की खाल उतारेगा, बस 2006 साल आने दो। इस विधान का एक-एक शब्द खरा-खरा समर्थन शायरन ही देगा।

7. (पृष्ट 52) :-- नास्त्रेदमस ने अपनी भविष्यवाणी में कहा है कि 21 वीं सदी के प्रारम्भ में दुनिया के क्षितिज पर 'शायरन' का उदय होगा। जो भी बदलाव होगा वह मेरी (नास्त्रेदमस की) इच्छा से नहीं बल्कि शायरन की आज्ञा से नियती की इच्छा से सारा बदलाव होगा ही होगा। उस में से नया बदलाव मतलब हिन्दुस्तान सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र होगा। कई सदियों से ना देखा ऐसा हिन्दुओं का सुख साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा। उस देश में पैदा हुआ धार्मिक संत ही तत्वदृष्टा तथा जग का तारणहार, जगज्जेता होगा। एशिया खण्डों में रामायण, महाभारत आदि का ज्ञान

जो हिन्दुओं में प्रचलित है उससे भी भिन्न आगे का ज्ञान उस तत्वदर्शी संत का होगा। वह सतपुरुष का अनुयाई होगा। वह एक अद्वितीय संत होगा।

8. (पृष्ठ 74) :-- बहुत सारे संत नेता आएगें और जाएगें, सर्व परमात्मा के द्रोही तथा अभिमानी होगें। मुझे (नास्त्रेदमस को) आंतरिक साक्षात्कार उस शायरन का हुआ है। नास्त्रेदमस ने कहा है कि उस महान हिन्दू धार्मिक नेता को न पहचानकर उस पर राष्ट्रद्रोह का भी आरोप लगाया जाएगा। मुझे (नास्त्रेदमस को) दुख है कि वह महान धार्मिक नेता (CHYREN) उपेक्षा का पात्र बनाया जाएगा, परंतु हिन्दुस्तान का हिन्दू संत आगामी अंधकारी (भक्तिज्ञान के अभाव से अंधे) प्रलयकारी (स्वार्थ वश भाई-भाई को मार रहा है, बेटा-बाप से विमुख है, हिन्दू-हिन्दू का शत्रु, मुस्लमान-मुस्लमान का दुश्मन बना है) धुंधुकारी (माया की दौड़ में बेसब्रे समाज) जगत को नया प्रकाश देने वाला सर्वश्रेष्ठ जगज्जेता धार्मिक विश्व नेता की अपनी उदासी के सिवा कोई अभिलाषा नहीं होगी अर्थात् मानव उद्धार के लिए चिन्ता के अतिरिक्त कुछ भी स्वार्थ नहीं होगा। ना अभिमान होगा, यह मेरी भविष्यवाणी की गौरव की बात होगी की वास्तव में वह तत्वदर्शी संत संसार में अवश्य प्रसिद्ध होगा। उसके द्वारा बताया ज्ञान सदियों तक छाया रहेगा। वह संत आधुनिक वैज्ञानिकों की आँखें चकाचौंध करेगा ऐसे आध्यात्मिक चमत्कार करेगा कि वैज्ञानिक भी आश्चर्य में पड़ जायेंगे। उसका सर्व ज्ञान शास्त्र प्रमाणित होगा। मैं (नास्त्रेदमस) कहता हूँ कि बुद्धिवादी व्यक्ति उसकी उपेक्षा न करें। उसे छोटा ज्ञानदीप न समझें, उस तत्ववेता महामानव (शायरन को) सिहांसनस्थ करके (आसन पर बैठाकर) उसको आराध्य देव मानकर पूजा करें। वह आदि पुरुष (सतपुरुष) का अनुयाई दुनिया का तारणहार होगा।

"संत रामपाल जी महाराज के समर्थन में अन्य भविष्यवक्ताओं की भविष्यवाणियाँ"

1. इंग्लैण्ड के ज्योतिषी 'कीरो' ने सन् 1925 में लिखी पुस्तक में भविष्यवाणी की है, बीसवीं सदी अर्थात् सन् 2000 ई. के उत्तरार्द्ध में (सन् 1950 के पश्चात् उत्पन्न सन्त) ही विश्व में 'एक नई सभ्यता' लाएगा जो सम्पूर्ण विश्व में फैल जावेगी। भारत का वह एक व्यक्ति सारे संसार में ज्ञानक्रांति ला देगा।

2. भविष्यवक्ता ''श्री वेजीलेटिन'' के अनुसार 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में, विश्व में आपसी प्रेम का अभाव, मानवता का ह्रास, माया संग्रह की दौड़, लूट व राज नेताओं का अन्यायी हो जाना आदि-२ बहुत से उत्पात देखने को मिलेगें। परन्तु भारत से उत्पन्न हुई शांति भ्रातृत्व भाव पर आधारित नई सभ्यता, संसार में-देश, प्रांत और जाति की सीमायें तोड़कर विश्वभर में अमन व चैन उत्पन्न करेगी।

3. अमेरिका की महिला भविष्यवक्ता ''जीन डिक्सन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अंत से पहले विश्व में एक घोर हाहाकार तथा मानवता का संहार होगा। वैचारिक युद्ध के बाद आध्यात्मिकता पर आधारित एक नई सभ्यता सम्भवत: भारत के ग्रामीण परिवार के व्यक्ति के नेतृत्व में जमेगी और संसार से युद्ध को सदा-सदा

के लिए विदा कर देगी।

4. अमेरिका के ''श्री एण्डरसन'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में विश्व में असभ्यता का नंगा तांडव होगा। इस बीच भारत के एक देहात का एक धार्मिक व्यक्ति, एक मानव, एक भाषा और झण्डा की रूपरेखा का संविधान बनाकर संसार को सदाचार, उदारता, मानवीय सेवा व प्यार का सबक देगा। यह मसीहा सन् 1999 तक विश्व में आगे आने वाले हजारों वर्षों के लिए धर्म व सुख-शांति भर देगा।

5. हॉलैण्ड के भविष्यदृष्टा ''श्री गेरार्ड क्राइसे'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले या 21 वीं सदी के प्रथम दशक में भयंकर युद्ध के कारण कई देशों का अस्तित्व ही मिट जावेगा। परन्तु भारत का एक महापुरूष सम्पूर्ण विश्व को मानवता के एक सूत्र में बांध देगा व हिंसा, फूट-दुराचार, कपट आदि संसार से सदा के लिए मिटा देगा।

6. अमेरिका के भविष्वक्ता ''श्री चार्ल्स क्लार्क'' के अनुसार 20 वीं सदी के अन्त से पहले एक देश विज्ञान की उन्नति में सब देशों को पछाड़ देगा परन्तु भारत की प्रतिष्ठा विशेषकर इसके धर्म और दर्शन से होगी, जिसे पूरा विश्व अपना लेगा, यह धार्मिक क्रांति 21 वीं सदी के प्रथम दशक में सम्पूर्ण विश्व को प्रभावित करेगी और मानव को आध्यात्मिकता पर विवश कर देगी।

7. हंगरी की महिला ज्योतिषी ''बोरिस्का'' के अनुसार सन् 2000 ई. से पहले-पहले उग्र परिस्थितियों हत्या और लूटमार के बीच ही मानवीय सद्‌गुणों का विकास एक भारतीय फरिश्ते के द्वारा भौतिकवाद से सफल संघर्ष के फलस्वरूप होगा, जो चिरस्थाई रहेगा, इस आध्यात्मिक व्यक्ति के बड़ी संख्या में छोटे-छोटे लोग ही अनुयायी बनकर भौतिकवाद को आध्यात्मिकता में बदल देगें।

8. फ्रांस के डॉ. जूलर्वन के अनुसार सन् 1990 के बाद योरोपीय देश भारत की धार्मिक सभ्यता की ओर तेजी से झूकेंगे। सन् 2000 तक विश्व की आबादी 640 करोड़ के आस-पास होगी। भारत से उठी ज्ञान की धार्मिक क्रांति नास्तिकता का नाश करके आँधी तूफान की तरह सम्पूर्ण विश्व को ढक लेगी। उस भारतीय महान आध्यात्मिक व्यक्ति के अनुयाई देखते-देखते एक संस्था के रूप में 'आत्मशक्ति' से सम्पूर्ण विश्व पर प्रभाव जमा लेंगे।

9. फ्रांस के ''नास्त्रेदमस'' के अनुसार विश्व भर में सैनिक क्रांतियों के बाद थोड़े से ही अच्छे लोग संसार को अच्छा बनाऐंगे। जिनका महान् धर्मनिष्ठ विश्वविख्यात नेता 20 वीं सदी के अन्त और 21 वीं सदी की शुरूआत में किसी पूर्वी देश से जन्म लेकर भ्रातृवृत्ति व सौजन्यता द्वारा सारे विश्व को एकता के सूत्र में बांध देगा। (नास्त्रेदमस शतक 1 श्लोक 50 में प्रमाणित कर रहा है) तीन ओर से सागर से घिरे द्वीप में उस महान संत का जन्म होगा। उस समय तत्व ज्ञान के अभाव से अज्ञान अंधेरा होगा। नैतिकता का पतन होकर, हाहाकार मचा होगा। वह शायरन (धार्मिक नेता) गुरुवर अर्थात् गुरुजी को वर (श्रेष्ठ) मान कर अपनी साधना करेगा

तथा करवाएगा। वह धार्मिक नेता (तत्वदर्शी सन्त) अपने धर्म बल अर्थात् भक्ति की शक्ति से तथा तत्वज्ञान द्वारा सर्व राष्ट्रों को नतमस्तक करेगा। एशिया में उसे रोकना अर्थात् उस के प्रचार में बाधा करना पागलपन होगा। (शतक 1 श्लोक 50) (सेंचुरी-I, कन्ना-50)

10. इजरायल के प्रो. हरार के अनुसार भारत देश का एक दिव्य महापुरूष मानवतावादी विचारों से सन् 2000 ई. से पहले-पहले आध्यात्मिक क्रांति की जड़े मजबूत कर लेगा व सारे विश्व को उनके विचार सुनने को बाध्य होना पड़ेगा। भारत के अधिकतर राज्यों में राष्ट्रपति शासन होगा, पर बाद में नेतृत्व धर्मनिष्ठ वीर लोगों पर होगा। जो एक धार्मिक संगठन के आश्रित होगें।

11. नार्वे के श्री आनन्दाचार्य की भविष्यवाणी के अनुसार, सन् 1998 के बाद एक शक्तिशाली धार्मिक संस्था भारत में प्रकाश में आवेगी, जिसके स्वामी एक गृहस्थ व्यक्ति की आचार संहिता का पालन सम्पूर्ण विश्व करेगा। धीरे-धीरे भारत औद्योगिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व का नेतृत्व करेगा और उसका विज्ञान (आध्यात्मिक तत्वज्ञान) ही पूरे विश्व को मान्य होगा।

उपरोक्त भविष्यवाणियों के अनुसार ही आज विश्व में घटनाएँ घट रही हैं। युग परिवर्तन प्रकृति का अटल सिद्धांत है। वैदिक दर्शन के अनुसार चार युगों- सतयुग, त्रेतायुग, द्वापर और कलयुग की व्यवस्था है। जब पृथ्वी पर पापियों का एक छत्र साम्राज्य हो जाता है तब भगवान पृथ्वी पर मानव रूप में प्रकट होता है।

मानवता के इस पूर्ण विकास का काम अनादि काल से भारत ही करता आया है। इसी पुण्यभूमि पर अवतारों का अवतरण अनादि काल से होता आ रहा है।

लेकिन कैसी विडम्बना है कि ऋषि-मुनियों महापुरूषों व अवतारों के जीवन काल में उस समय के शासन व्यवस्था व जनता ने उनकी दिव्य बातों व आदर्शों पर ध्यान नहीं दिया और उनके अन्तर्ध्यान होने पर दूगने उत्साह से उनकी पूजा शुरू कर पूजने लग गये। यह भी एक विडम्बना कि हम जीवंत और समय रहते उनकी नहीं मानते अपितु उनका विरोध व अपमान ही करते रहे हैं। कुछ स्वार्थी तत्व जनता को भ्रमित करके परम सन्त को बदनाम करके बाधक बनते हैं। यह उक्ति हर युग में चरितार्थ होती आई है, और आज भी हो रही है।

जो महापुरूष हजारों कष्टों को सहन कर अपनी तपस्या व सत्य पर अडिग रहता है उनकी बात असत्य नहीं हो सकती। सत्य पर अडिग रहते हुए ईसा मसीह ने अपने शरीर में कीलों की भयंकर पीड़ा को झेला, सुकरात ने जहर का प्याला पिया, श्री राम तथा श्री कृष्ण जी को भी यातनाओं का शिकार होना पड़ा।

ईसा मसीह ने कहा था कि- ''पृथ्वी और आकाश टल सकते हैं, सूर्य का अटल सिद्धांत है उदय-अस्त, वो भी निरस्त हो सकता है, लेकिन मेरी बातें कभी झूठी नहीं हो सकती है।''

सज्जनों ! यदि आज के करोड़ों मानव उस परमतत्व के ज्ञाता सन्त को ढूंढकर, स्वीकार कर, उनके बताए पथानुसार, अपनी जीवन शैली को सुधार लेंगे तो पूरे विश्व में सद्भावना, आपसी भाई-चारा, दया तथा सद्भक्ति का वातावर्ण हो जाएगा। वर्तमान का मानव बुद्धिजीवी है इसलिए उस सन्त के विचारों को अवश्य स्वीकार करेगा तथा धन्य होगा। वह सन्त है जगत् गुरु तत्वदर्शी सन्त रामपाल जी महाराज। कृप्या पढ़ें सन्त रामपाल जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी जो सर्व भविष्यवाणियों पर खरी उतर रही है।

"संत रामपाल जी महाराज का संक्षिप्त परिचय"

संत रामपाल जी का जन्म 8 सितम्बर 1951 को गांव धनाना जिला सोनीपत हरियाणा में एक किसान परिवार में हुआ। पढ़ाई पूरी करके हरियाणा प्रांत में सिंचाई विभाग में जूनियर इंजिनियर की पोस्ट पर 18 वर्ष कार्यरत रहे। सन् 1988 में परम संत रामदेवानंद जी से दीक्षा प्राप्त की तथा तन-मन से सक्रिय होकर स्वामी रामदेवानंद जी द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना की तथा परमात्मा का साक्षात्कार किया।

संत रामपाल जी को नाम दीक्षा 17 फरवरी 1988 को फाल्गुन महीने की अमावस्या को रात्री में प्राप्त हुई। उस समय संत रामपाल जी महाराज की आयु 37 वर्ष थी। उपदेश दिवस (दीक्षा दिवस) को संतमत में उपदेशी भक्त का आध्यात्मिक जन्मदिन माना जाता है।

उपरोक्त विवरण श्री नास्त्रेदमस जी की उस भविष्यवाणी से पूर्ण मेल खाता है जो पृष्ठ संख्या 44-45 पर लिखी है। "जिस समय उस तत्वदृष्टा शायरन का आध्यात्मिक जन्म होगा उस दिन अंधेरी अमावस्या होगी। उस समय उस विश्व नेता की आयु 16, 20, 25 वर्ष नहीं होगी, वह तरुण नहीं होगा, बल्कि वह प्रौढ़ होगा और वह 50 और 60 वर्ष के बीच की उम्र में संसार में प्रसिद्ध होगा। वह सन् 2006 होगा।"

सन् 1993 में स्वामी रामदेवानंद जी महाराज ने आपको सत्संग करने की आज्ञा दी तथा सन् 1994 में नामदान करने की आज्ञा प्रदान की। भक्ति मार्ग में लीन होने के कारण जे.ई. की पोस्ट से त्यागपत्र दे दिया जो हरियाणा सरकार द्वारा 16-5-2000 को पत्र क्रमांक 3492-3500, तिथि 16-5-2000 के तहत स्वीकृत है। सन्

1994 से 1998 तक संत रामपाल जी महाराज ने घर-घर, गांव-गांव, नगर-नगर में जाकर सत्संग किया। बहु संख्या में अनुयाई हो गये। साथ-साथ ज्ञानहीन संतों का विरोध भी बढ़ता गया। सन् 1999 में गांव करौंथा जिला रोहतक (हरियाणा) में सतलोक आश्रम करौंथा की स्थापना की तथा एक जून 1999 से 7 जून 1999 तक परमेश्वर कबीर जी के प्रकट दिवस पर सात दिवसीय विशाल सत्संग का आयोजन करके आश्रम का प्रारम्भ किया तथा महीने की प्रत्येक पूर्णिमा को तीन दिन का सत्संग प्रारम्भ किया। दूर-दूर से श्रद्धालु सत्संग सुनने आने लगे तथा तत्वज्ञान को समझकर बहुसंख्या में अनुयाई बनने लगे। चंद दिनों में संत रामपाल महाराज जी के अनुयाइयों की संख्या लाखों में पहुंच गई। जिन ज्ञानहीन संतों व ऋषियों के अनुयाई संत रामपाल जी के पास आने लगे तथा अनुयाई बनने लगे फिर उन अज्ञानी आचार्यों तथा सन्तों से प्रश्न करने लगे कि आप सर्व ज्ञान अपने सद्ग्रंथों के विपरीत बता रहे हो।

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि पूर्ण परमात्मा अपने भक्त के सर्व अपराध (पाप) नाश (क्षमा) कर देता है। आपकी पुस्तक जो हमने खरीदी है उसमें लिखा है कि ''परमात्मा अपने भक्त के पाप क्षमा (नाश) नहीं करता। आपकी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 7 में लिखा है कि सूर्य पर पृथ्वी की तरह मनुष्य तथा अन्य प्राणी वास करते हैं। इसी प्रकार पृथ्वी की तरह सर्व पदार्थ हैं। बाग, बगीचे, नदी, झरने आदि, क्या यह सम्भव है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि परमात्मा सशरीर है। अग्ने तनुः असि। विष्णवै त्वां सोमस्य तनुर् असि।। इस मंत्र में दो बार गवाही दी है कि परमेश्वर सशरीर है। उस अमर पुरुष परमात्मा का सर्व के पालन करने के लिए शरीर है अर्थात् परमात्मा जब अपने भक्तों को तत्वज्ञान समझाने के लिए कुछ समय अतिथि रूप में इस संसार में आता है तो अपने वास्तविक तेजोमय शरीर पर हल्के तेजपुंज का शरीर ओढ कर आता है। इसलिए उपरोक्त मंत्र में दो बार प्रमाण दिया है। इस तरह के तर्क से निरूत्तर होकर अपने अज्ञान का पर्दा फास होने के भय से उन अंज्ञानी संतों, महंतों व आचार्यो ने सतलोक आश्रम करौंथा के आसपास के गांवों में संत रामपाल जी महाराज को बदनाम करने के लिए दुष्प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया तथा 12-7-2006 को संत रामपाल को जान से मारने तथा आश्रम को नष्ट करने के लिए आप तथा अपने अनुयाइयों से सतलोक आश्रम पर आक्रमण करवाया। पुलिस ने रोकने की कोशिश की जिस कारण से कुछ उपद्रवकारी चोटिल हो गये। सरकार ने सतलोक आश्रम को अपने आधीन कर लिया तथा संत रामपाल जी महाराज व कुछ अनुयाइयों पर झूठा केस बना कर जेल में डाल दिया। इस प्रकार 2006 में संत रामपाल जी महाराज विख्यात हुए। भले ही अंजानों ने झूठे आरोप लगाकर संत को प्रसिद्ध किया परन्तु संत निर्दोष है। प्रिय पाठको (नास्त्रेदमस) की भविष्यवाणी को पढ़कर सोचेगें कि संत रामपाल जी को इतना बदनाम कर दिया है, कैसे संभव होगा कि विश्व को ज्ञान प्रचार करेगा। उनसे प्रार्थना है कि परमात्मा पल में

परिस्थिती बदल सकता है।

कबीर, साहेब से सब होत है, बंदे से कछु नांहि।
राई से पर्वत करे, पर्वत से फिर राई।।

परमेश्वर कबीर जी अपने बच्चों के उद्धार के लिए शीघ्र ही समाज को तत्वज्ञान द्वारा वास्तविकता से परिचित करवाएंगे, फिर पूरा विश्व संत रामपाल जी महाराज के ज्ञान का लोहा मानेगा।

संत रामपाल जी महाराज सन् 2003 से अखबारों व टी वी चैनलों के माध्यम से सत्य ज्ञान का प्रचार कर अन्य धर्म गुरुओं से कह रहे हैं कि आपका ज्ञान शास्त्रविरूद्ध अर्थात् आप भक्त समाज को शास्त्ररहित पूजा करवा रहे हैं और दोषी बन रहे हैं। यदि मैं गलत कह रहा हूँ तो इसका जवाब दो आज तक किसी भी संत ने जवाब देने की हिम्मत नहीं की।

संत रामपाल जी महाराज को ई.सं. (सन्) 2001 में अक्तुबर महीने के प्रथम बृहस्पतिवार को अचानक प्रेरणा हुई कि "सर्व धर्मों के सद्ग्रन्थों का गहराई से अध्ययन कर" इस आधार पर सर्वप्रथम पवित्र श्रीमद् भगवद्गीता जी का अध्ययन किया तथा पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' की रचना की तथा उसी आधार पर सर्वप्रथम राजस्थान प्रांत के जोधपुर शहर में मार्च 2002 में सत्संग प्रारंभ किया। इसलिए नास्त्रेदमस जी ने कहा है कि विश्व धार्मिक हिन्दू संत (शायरन) पचास वर्ष की आयु में अर्थात् 2001 ज्ञेय ज्ञाता होकर प्रचार करेगा। संत रामपाल जी महाराज का जन्म पवित्र हिन्दू धर्म में सन् (ई.सं.) 1951 में 8 सितम्बर को गांव धनाना जिला सोनीपत, प्रांत हरियाणा (भारत) में एक किसान परिवार में हुआ। इस प्रकार सन् 2001 में संत रामपाल जी महाराज की आयु पचास वर्ष बनती है, सो नास्त्रेदमस के अनुसार खरी है। इसलिए वह विश्व धार्मिक नेता संत रामपाल जी महाराज ही हैं जिनकी अध्यक्षता में भारतवर्ष पूरे विश्व पर राज्य करेगा। पूरे विश्व में एक ही ज्ञान (भक्ति मार्ग) चलेगा। एक ही कानून होगा, कोई दुःखी नहीं रहेगा, विश्व में पूर्ण शांति होगी। जो विरोध करेंगे अंत में वे भी पश्चाताप करेंगे तथा तत्वज्ञान को स्वीकार करने पर विवश होंगे और सर्व मानव समाज मानव धर्म का पालन करेगा और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सतलोक जाएंगे।

जिस तत्वज्ञान के विषय में नास्त्रेदमस जी ने अपनी भविष्यवाणी में उल्लेख किया है कि उस विश्व विजेता संत के द्वारा बताए शास्त्र प्रमाणित तत्व ज्ञान के सामने पूर्व के सर्व संत निष्प्रभ (असफल) हो जाएंगे तथा सर्व को नम्र होकर झुकना पड़ेगा। उसी के विषय में परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने अपनी अमृत वाणी में पवित्र 'कबीर सागर' ग्रंथ में (जो संत धर्मदास जी द्वारा लगभग 550 वर्ष पूर्व लीपीबद्ध किया गया है) कहा है कि एक समय आएगा जब पूरे विश्व में मेरा ही ज्ञान चलेगा। पूरा विश्व शांति पूर्वक भक्ति करेगा। आपस में विशेष प्रेम होगा, सतयुग जैसा समय (स्वर्ण युग) होगा। परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ द्वारा बताए ज्ञान को संत रामपाल जी महाराज ने समझा है। इसी ज्ञान के विषय में कबीर साहेब

जी ने अपनी वाणी में कहा है कि --

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान।
जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

भावार्थ है कि यह तत्वज्ञान इतना प्रबल है कि इसके समक्ष अन्य संतों व ऋषियों का ज्ञान टिक नहीं पाएगा। जैसे तोब यंत्र का गोला जहां भी गिरता है वहां पर सर्व किलों तक को ढहा कर साफ मैदान बना देता है।

यही प्रमाण संत गरीबदास जी (छुड़ानी, जिला झज्जर, हरियाणा वाले) ने दिया है कि सतगुरु (तत्वदर्शी संत परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ का भेजा हुआ) दिल्ली मण्डल में आएगा।

"गरीब, सतगुरु दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरणी सूम जगायसी"

परमात्मा की भक्ति बिना कंजूस हो गए व्यक्तियों को जगाएगा। गांव धनाना, जिला सोनीपत पहले दिल्ली शासित क्षेत्र में पड़ता था। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि सतगुरु (वास्तविक ज्ञान जानने वाला संत अर्थात् तत्व दृष्टा संत) दिल्ली मण्डल में आएगा फिर कहा है कि -

"साहेब कबीर तख्त खवासा, दिल्ली मण्डल लीजै वासा"

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ के तख्त (दरबार) का ख्वास (नौकर) अर्थात् परमेश्वर का नुमायंदा (प्रतिनिधि) दिल्ल मण्डल में वास करेगा अर्थात् वहां उत्पन्न होगा। प्रथम अपने हिन्दू बंधुओं को तत्वज्ञान से परिचित करवाएगा। बुद्धिमान हिन्दू ऐसे जागेंगे जैसे कोई हड़बड़ा कर जागता है अर्थात् उस संत के द्वारा बताए तत्व ज्ञान को समझ कर अविलम्ब उसकी शरण ग्रहण करेंगे। फिर पूरा विश्व उस तत्वदर्शी हिन्दू संत के ज्ञान को स्वीकार करेगा। यह भविष्यवाणी श्री नास्त्रेदमस जी ने भी की है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी लिखा है कि मुझे दुःख इस बात का है कि उससे परिचित न होने के कारण मेरा शायरन (तत्वदृष्टा संत) उपेक्षा का पात्र बना है। हे बुद्धिमान मानव ! उसकी उपेक्षा ना करो। वह तो सिंहासनस्थ करके (आसन पर बैठा कर) अराध्य देव (इष्टदेव) रूप में मान करने योग्य है। वह हिन्दू धार्मिक संत शायरन आदि पुरुष (पूर्ण परमात्मा) का अनुयाई जगत् का तारणहार है।

नास्त्रेदमस जी भविष्य वक्ता ने पुस्तक पृष्ठ 41-42 पर तीन शब्द का उल्लेख किया है। कहा है कि वह विश्व विजेता तत्वदृष्टा संत क्रुरचन्द्र अर्थात् काल की दुःखदाई भूमि से छुड़ा कर अपने आदि अनादि पूर्वजों के साथ वारिस बनाएगा तथा मुक्ति दिलाएगा। यहां पर उपदेश मंत्र की ओर संकेत है कि वह शायरन केवल तीन शब्द (ओम्-तत्-सत्) ही मंत्र जाप देगा। इन तीन शब्दों के साथ मुक्ति का कोई अन्य शब्द न चिपकाएगा। यही प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 16 में, सामवेद श्लोक संख्या 822 तथा श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में है कि पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) तीन मंत्र (ओम्-तत्-सत् जिनमें तत् तथा सत् सांकेतिक हैं) दे कर पूर्ण परमात्मा (आदि पुरुष) की भक्ति करवा कर जीव को

काल-जाल से मुक्त करवाता है। फिर वह साधक की भक्ति कमाई के बल से वहां चला जाता है जहां आदि सृष्टी के अच्छे प्राणी रहते हैं। जहां से यह जीव अपने पूर्वजों को छोड़ कर क्रुरचन्द्र (काल प्रभु) के साथ आकर इस दुःखदाई लोक में फंस कर कष्ट पर कष्ट उठा रहा है। नास्त्रेदमस जी ने यह भी स्पष्ट किया है कि मध्य काल अर्थात् बिचली पीढ़ी हिन्दू धर्म का आदर्श जीवन जीएंगे। शायरन (तत्वदृष्टा संत) अपने ज्ञान से दैदिप्यमान उतंग ऊँचा स्वरूप अर्थात् सर्व श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति विधान फिर से बिना शर्त उजागर करवाएगा ओर मानवी संस्कृति अर्थात् मानव धर्म के लक्षण निर्धोक (निष्कपट भाव से) संवारेगा। (मधल्या कालात हिन्दू धर्मांचे व हिन्दुच्या आदर्शवत् झालेल - यह मराठी भाषा में पृष्ठ 42 पर लिखा है कि उपरोक्त भावार्थ है कि बिचली पीढ़ी का उद्धार शायरन करेगा। यह उल्लेख पृष्ठ 42 की हिन्दी लिखना रह गया था इसलिए यहां लिख दिया है तथा स्पष्टीकरण भी दिया है। यही प्रमाण स्वयं पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि

धर्मदास तोहे लाख दुहाई, सारज्ञान व सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारनाम बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तर ही।।
सारज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादस पंथ न मिट जाई)।

जैसे ई.सं.(सन्) 1947 में भारतवर्ष अंग्रेजों से मुक्त हुआ। उससे पहले हिन्दुस्तान में शिक्षा नहीं थी। सन् 1951 में संत रामपाल जी महाराज को परमेश्वर जी ने पृथ्वी पर भेजा। सन् 1947 से पहले कलियुग की प्रथम पीढ़ी जानें तथा 1947 से बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। यह एक हजार वर्ष तक सत्य भक्ति करेगी। इस दौरान जो पूर्ण निश्चय के साथ भक्ति करेगा वह सतलोक चला जाएगा। जो सतलोक नहीं जा सके तथा कभी भक्ति की, कभी छोड़ दी, परंतु गुरु द्रोही नहीं हुए वे फिर हजारों मनुष्य जन्म इसी कलियुग में प्राप्त करेंगे क्योंकि यह उनकी शास्त्रविधि अनुसार साधना का परिणाम होगा। इस प्रकार कई हजारों वर्षों तक कलियुग का समय वर्तमान से भी अच्छा चलेगा। फिर अंत की पीढ़ी भक्ति रहित उत्पन्न होगी क्योंकि शुभ कमाई जो भक्ति युग में की है वह बार-२ जन्म प्राप्त करके खर्च (समाप्त) कर दी होगी। इस प्रकार कलियुग के अंत की पीढ़ी कृतघनी होगी। वे भक्ति नहीं कर सकेंगी। इसलिए कहा है कि अब कलियुग की बिचली पीढ़ी चल रही है (1947 से)। सन् 2006 से वह शायरन सर्व के समक्ष प्रकट हो चुका है, वह है "संत रामपाल जी महाराज"।

उपरोक्त ज्ञान जो बिचली पीढ़ी व प्रथम तथा अंतिम पीढ़ी वाला संत रामपाल जी महाराज अपने प्रवचनों में वर्षों से बताते आ रहे हैं जो अब नास्त्रेदमस जी की भविष्यवाणी ने भी स्पष्ट कर दिया। इसलिए संत गरीबदास जी महाराज ने कहा है कि - कबीर परमेश्वर की भक्ति पूर्ण संत से उपदेश लेकर करो नहीं तो यह अवसर फिर हाथ नहीं आएगा।

गरीब, समझा है तो सिर धर पांव, बहुर नहीं रे ऐसा दाव।।

भावार्थ है कि यदि आप तत्वज्ञान को समझ गए हैं तो सिर पर पैर रख अर्थात्

अतिशिघ्रता से तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाओ। यह सुअवसर फिर प्राप्त नहीं होगा। जैसे यह बिचली पीढ़ी (मध्य काल) वाला समय और आपका मानव शरीर तथा तत्वदृष्टा संत प्रकट है। यदि अब भी भक्ति मार्ग पर नहीं लगोगे तो उसके विषय में कहा है कि --

यह संसार समझदा नांही, कहंदा श्याम दुपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

भावार्थ है कि संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि यह भोला संसार शास्त्रविधि रहित साधना कर रहा है जो अति दुःखदाई है, इसी को सुखदाई कह रहा है। जैसे जून मास दोपहर (दिन के बारह बजे) में धूप में खड़ा-२ जल रहा है उसी को सांय बता रहा है। जैसे कोई शराबी व्यक्ति शराब पीकर सड़क पर पड़ा है और उससे कोई कहे कि आप दोपहर की धूप में क्यों जल रहे हो, छांया में चलो। वह शराब के नशे में कहता है कि नहीं सांय है, कौन कहता है कि दोपहर है ? इसी प्रकार जो साधक शास्त्रविधि त्याग कर मनमाना आचरण कर रहे हैं वे अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं। उसे त्यागना नहीं चाहते अपितु उसी को सर्व श्रेष्ठ मानकर काल के लोक की आग में जल रहे हैं। संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि इतने प्रमाण मिलने के पश्चात् भी सतसाधना पूर्ण संत के बताए अनुसार नहीं करोगे तो यह अनमोल मानव शरीर तथा बिचली पीढ़ी का भक्ति युग हाथ से निकल जाएगा फिर इस समय को याद करके रोवोगे, बहुत पश्चाताप करोगे। फिर कुछ नहीं बनेगा। परमेश्वर कबीर जी बन्दी छोड़ ने कहा है कि -

आच्छे दिन पाछै गए, सतगुरु से किया ना हेत।
अब पछतावा क्या करे, जब चिड़िया चुग गई खेत।।

सर्व मानव समाज से प्रार्थना करते हैं कि पूर्ण संत रामपाल जी महाराज को पहचानों तथा अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाओ। अपने रिश्तेदारों तथा दोस्तों को भी बताओ तथा पूर्ण मोक्ष पाओ। स्वर्ण युग प्रारम्भ हो चुका है। लाखों पुण्य आत्मांए संत रामपाल जी तत्वदर्शी संत को पहचान कर सत्य भक्ति कर रहे हैं, वे अति सुखी हो गए हैं। सर्व विकार छोड़ कर निर्मल जीवन जी रहे हैं।

कृपया आगे पढ़ें महाराष्ट्र के ज्योतिष शास्त्री का मराठी भाषा में नास्त्रेदमस की भविष्यवाणियों का अनुवाद।

होते ही वे फिर से विश्व में योग्यमार्ग से भ्रमण करके शत्रुत्व के भाव से भारत को त्रस्त करेंगे। देखिए, प्रथम मुस्लिम समाज रूप से शुक्र भारत पर आक्रमण करके उस भूमि को तहस-नहस कर देगा। उसके बाद भारत में घुसकर वे सत्ता पर कब्जा करेंगे, अंधश्रद्धालु और दुर्बल भारतीय जनता को सतायेंगे और उन्हें मुस्लिम धर्म की दीक्षा देंगे। उसके कारण महान् भारतमाता मुस्लिमों की दासी बनेगी। भारतीय प्रदेश और समाज भ्रष्ट होगा। यह कार्य इ.स. 1291 से 1999 तक चलेगा।

इसी काल में भारत माता का (कामदुहिता का) बंधु गुरु पिंगल सम शत्रुत्व भाव धारण करके पश्चिम यूरोप के क्रिश्चनों को व्यापारी और नाविक बनाकर भारत की ओर भेज देगा। वे प्रथम व्यापारी बनकर भारतमाता को लूटेंगे। उसके बाद एक-- एक प्रदेश हाथ में लेकर उन्हें और वहाँ की जनता को भ्रष्ट क्रिश्चन बनाकर उन पर शासन करेंगे। धीरे-धीरे अपना प्रभाव बढ़ाकर वे संपूर्ण भारत माता को अपने कब्जे में ले लेंगे। उसी समय भारतीय गुलाम दुर्बल जनता मोक्षप्राप्ति के लिए मंदिर बाँधकर देवी-देवता के भजन-कीर्तन करती रहेगी।

इसी काल में धोखेबाज क्रिश्चन गुरु का भ्रष्टाचारी रूप लेकर आयेंगे। यहाँ के प्राचीन ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन कर किरो जैसे यूरोपीयन विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषी होंगे। लेकिन भारतीय अंध और झूठे ज्योतिषियों को अपने ज्योतिष-ग्रंथों का अर्थ नहीं समझेगा। वे गुलाम होंगे। उन्हें अप ी मानसिकता और प्रवृत्ति के कारण अंग्रेजी भाषा में मौजूदा ज्ञान ही सत्य लगेगा। लेकिन कीरोसम भारतीय ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन करके महान् विद्वताधारक लेखकों द्वारा लिखित अंग्रेजी पुस्तक के आधार पर ज्योतिषशास्त्र नहीं समझेगा अन्त में वे शापित होंगे और उसके कारण उनमें मूर्खता और क्रूरता होगी।

उसके कारण महापरिवर्तन काल का आरंभ होगा। वह काल होगा इ.स. 1905 से 2028 तक। सबसे पहले भारत को स्वातंत्र्य प्राप्त करने के लिए कॉंग्रेस की स्थापना होगी। भारतीय जनता महान् राक्षस कुंभकर्ण के अनुसार गहरी नींद में से जागृत होने लगेगी। झूठा ज्योतिषशास्त्र नष्ट करके अचूक भविष्य ज्ञान देने के लिए मद्रास में के.एस.कृष्णमूर्ति का जन्म होकर वे भारतीय जनता को कृष्णमूर्ति पद्धति का ज्ञान देंगे। 1998 में महाराष्ट्र में एक ज्योतिषशास्त्री नॉस्ट्रॅडॅमस की भविष्यवाणी में अंकित सांकेतिक भाषा का स्पष्टीकरण कर उसमें लिखित भविष्य घटनाओं का अर्थ देकर अपना भविष्यग्रंथ प्रकाशित करेगा। उस समय वह भारत में अज्ञात ज्योतिष द्वारा कलियुग के विषय में दिये गए महान् सांकेतिक भाषा में अर्थ को सुलझाकर उसमें लिखित महान् भविष्यवाणी का अर्थ स्पष्ट करेगा। लेकिन भारतीय जनता पर और सत्ताधारियों पर झूठे प्रचंड ज्योतिषियों का प्रभुत्व होगा। वे इन नये महान् ज्ञानी ज्योतिषियों को प्रकाश में नहीं आने देंगे। लेकिन उन पर स्वार्थ के अंधकार से, झूठे धर्म जाति का भूत सवार हुआ होगा। अब भी वे मातंग (गारुड़ी) कार्य में मग्न होकर सत्य का, मानवता धर्म का, ज्योतिष ज्ञान का खून करते रहेंगे।

२१ व्या शतकात होणाऱ्या जागातील
सर्व श्रेष्ठ भविष्यवेत्ता
नॉस्ट्राडेमस्
यांचे जागतिक स्तरावरचे भविष्य
- डॉ. रामचंद्र ज. जोशी

२१ व्या शतकाकडे झेपावतांना
जगातील सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता!

मायकेल द नॉत्रदेम (नॉस्ट्राडेमस)

यांचे जागतिक स्तरावरचे भाविष्य

डॉ. रामचंद्र ज. जोशी.

ग्रंथ मिळण्याचे ठिकाण

जोशी ब्रदर्स अप्पा बळवंत चौक, पुणे २. फोनः ४४५९४२४	**श्री गजानन बुक डेपो** भरत नाट्य मंदिरासमोर, पुणे ३०. फोन : ४४७३३०४
श्री गजानन बुक डेपो कबुतरखाना, दादर, मुंबई २८. फोन: ४२२७५८४	**श्री गजानन बुक डेपो** बिल्डिंग नं. १३२, पहिला माळा, पंतनगर, घाटकोपर, मुंबई ७५. फोन: ५१३८००९

...(32)...

आफ्रिकेला वळसा घालण्याचा द्राविडी-प्राणायाम त्या सुवेज कालव्याच्या निर्मितीने कमी झाला हे खरेच, पण त्या कालव्याच्या निर्मितीची कल्पना नॉस्ट्राडेमसच्या विलक्षण भाकिताने फ्रेंच वास्तुशास्त्रविशारद लेसेप्स याला सुचलेली आहे ही वस्तुस्थिती आहे.

पाहिल्या प्रकरणातच स्पष्ट केले आहे की, १९९९ साली छेडल्या जाणाऱ्या तिसऱ्या जागतिक महायुध्दात, आज वरवर पाहता परस्पर विरोधी राष्ट्रे मित्र बनून, अमेरिका व रशिया यांचे एकत्रित बळ प्रचंड असेल. नॉस्ट्राडेमसच्या मृत्यूनंतर २०९ वर्षांनी जन्माला आलेली अमेरिका आपल्या सामर्थ्याच्या शिखरावर असेल असे, शतक २, श्लोक ४९ मध्ये हा द्रष्टा ज्योतिर्विद सांगतो हे सत्य किती चित्तथरारक आहे?

'भारत' सर्वश्रेष्ठ हिंदु राष्ट्र?

या पूर्वीच्या लेखात कै. इंदिरा गांधींचा नॉस्ट्राडेमसने केलेला उल्लेख आपण वाचला. त्या संदर्भात हेन्री सी रॉबर्टस 'कंप्लीट प्रोफेसीज ऑफ नॉस्ट्राडेमस' या १९४२ साली प्रसिध्द झालेल्या आपल्या पुस्तकात लिहितो- 'डॉमिनन्ट प्रिमियर' (म्हणजेच प्रभावी पंतप्रधान) इंदिराजी गांधी यांच्या आकस्मिक खुनानंतर दोन बदल होतील. त्यातील क्रमांक पहिल्या बदलाप्रमाणे त्यांचे पुत्र राजीव गांधी जरी पंतप्रधान झाले असले तरी दुसरा जो बदल होणार आहे तो म्हणजे एक मध्यम वयाचा नेता पाकिस्तान, ब्रह्मदेश, बांगला देश, श्रीलंका, नेपाळ, तिबेट, अफगाणिस्तान, मलाया आदी देश जिंकून हिंदुस्थानाला जगातील सर्वश्रेष्ठ हिंदुराष्ट्र म्हणून निर्माण करणार आहे. तो सार्वभौम असेल. औदार्यात अजोड व आपल्या सनातन धर्माला पुनरुज्जीवन देईल आणि भारत खंडातच नव्हे तर साऱ्या पृथ्वीवर सुवर्णयुग आणील. (सेंच्युरी शतक ५, श्लोक ४१ वा). या श्लोकाबद्दल सर्वच भाष्यकारांत एकमत आहे. वरील दोन बदलांच्या दरम्यानच्या काळात सत्ताधारी मंडळीत वावरणारी चांडाळ चौकडी सत्ताकेंद्र आपल्या ताब्यात ठेवून बराच काळ मनमानी करील. वर उल्लेख केलेला नेता फक्त जगाला अद्याप माहीत व्हायचा आहे!

...(33)...

: ४ :

थांबा, इ. स. २००६ मध्ये

रामराज्य येतेय!

हिंदु जगज्जेता भूतलावर सुवर्ण-युग आणणार आहे!

ज्योतिष हे हि एक शास्त्र आहे

'शितावरून भाताची परीक्षा' या वाकप्रचारानुसार नॉस्ट्राडेमस यांनी वर्तविलेल्या अनेक भाकितांचे खरेपण आपण गेल्या प्रकरणात पाहिले. नॉस्ट्राडेमस यांना हे सर्व ज्ञान आगामी पिढीला देणे आवश्यक वाटले; व त्याने 'सेंच्युरी' मंध्ये दहा शतके (१००० श्लोक) लिहिलीं व १५५५ साली तें पुस्तक प्रसिध्द झाले. या पुस्तकातील श्लोकांची वर्गवारी केली तर असे आढळते की पहिले सुमारे १०० श्लोक फ्रान्स व युरोपसाठी, म्हणजे नॉस्ट्राडेमसच्या काळातील घटनांबद्दल केलेल्या भाकितांवरच खर्च झाले आहेत. त्यानंतर ३५० - ४०० श्लोक १९ - २० व्या शतकातील घटनांच्या भाकितांचा ऊहापोह करण्यात लागले असून उरलेल्या ४५० - ५०० श्लोकांत २१ व्या शतकापासून इ. स. ३७९२ पर्यंतच्या कालखंडात होऊ घातलेल्या भाकितांचे विवरण आलेले आहे.

-ज्योतिष शास्त्र हे असे चमत्कारिक शास्त्र आहे की सर्वसामान्य माणसांपासून अधिकारी वर्ग, देशा-राष्ट्रांचे शास्ते, धनाढ्य, श्रीमंत, राजेरजवाड्यापर्यंत सर्वांनाच त्याचे आकर्षण आहे. उघडरीत्या त्या शास्त्राचा निषेध, परंतु खाजगीरीत्या त्याची चाचपणीच केवळ नव्हे तर आवर्जून त्या शास्त्राच्या पारंगत ज्योतिर्विदाची मनधरणी करण्याची प्रथा सर्वकाली व सर्व देशांतून रूढ असल्याचे दिसते. ज्योतिष हे शास्त्र आहे, त्याचे आकाशस्थ ग्रहांच्या गतीनुसार ठरलेले आडाखे आहेत. इथून तिथून निसर्ग हा सारखाच असल्याने त्या त्या काळच्या ग्रहस्थितीनुसार व्यक्ति, समाज, देश नि त्यांचे धर्म, संस्कृती यावर परिणाम घडत असतात. ज्योतिषी फक्त त्याने केलेल्या शास्त्राभ्यासाच्या आधाराने मिळविलेल्या ज्ञानाने जे परिणाम घडायचे असतात त्याची आगाऊ माहिती सांगतो, त्याचे आनंददायी, सुखसंवर्धक बदल स्पष्ट करतो. ते बदल केव्हा कसे होतील त्याबद्दल भाकित वर्तवतो. त्याचप्रमाणे दुःख वर्धक उलथापालथी काय होतील त्याचीही नोंद करीत असतो. जे घडायचे असते ते ज्योतिषाला टाळता येत नाही - किंवा तो ते घडवीतही नाही. म्हणून नॉस्ट्राडेमससारखे जगप्रसिध्द ज्योतिर्विद आत्मविश्वासाने म्हणतात की, 'मी लिहिले, सांगितले - त्यात काहीही बदल करण्याची माझी इच्छा नाही.'

...(40)...

गेली नऊ वर्षे इराकबरोबर विध्वंसक युध्दात गेली. जवळ जवळ एक हजार किलोमीटर प्रदेश इराकने सोडलेला नाही. युध्दकैदी सोडविता आले नसल्याने युध्द थांबले, परंतु इराणची मानहानी संपलेली नाही. या युध्दात पेट्रोलियमच्या उद्योगाची महत्त्वाची साधने उद्ध्वस्त झाली, अर्थव्यवस्था, उद्योगधंदे, रोजगार यांची झालेली हानी फार मोठी आहे. शाह यांच्या पदच्युतीच्या सुमारास जी स्थिती होती त्यापेक्षा कितीतरी पटीने सध्याची इराणची आर्थिक स्थिती ढासळली आहे.

आपले घरदार, कौटुंबिक सुख व सुरक्षितता या बाबींचा विचार टाळता येणे अशक्य झाले आहे; आणि त्याबद्दल बहुजनसमाज बोलू लागला आहे. इराणी राष्ट्रांच्या समस्यांना तोंड फुटू लागले आहे आणि त्या समस्यांची सोडवणूक करायला इस्लामची अथवा धर्माची वाढ पुरेशी पडणार नाही याची जाणीव बहुजन समाजालाच नव्हे तर सत्तारूढ पक्षातल्या मवाळांनाही होऊ लागली आहे.

नॉस्ट्राडेमस यांनी शतक १ श्लोक ७० मध्ये असे स्वच्छ लिहून ठेवले आहे की, खोमेनीच्या कडव्या हेकटपणाला विरोधकच कडवेपणाने मोडून काढतील नि खोमेनी विरोधकांची सरशी होईल; त्यांचा विजय होईल. अखेरीस फ्रान्सच मध्यस्थी करून खोमेनी व त्याचे साथीदार यांना दया दाखवावी असे सांगेल व बंडखोर फ्रान्सचा सल्ला मानतीलही! नॉस्ट्राडेमस या सर्व घडामोडींचे वर्णन करून सांगतोय. 'थांबा, रामराज्य येतेय!' जुलै १९९९ ते इ. स. २००६ पर्यंत चालणाऱ्या या सर्व संहारक युध्दाच्या शेवटी सुवर्णयुग अवतरेल; हिंदुस्थानात उगवणारा तारणहार शायरन व फ्रेंच नेता मार्स यांची युति होईल. त्यानंतर ७५ वर्षे जगात सुख-समृध्दि, व शांतता नांदेल. (१० /८९)

नॉस्ट्राडेमसने निःसंधिग्धपणे म्हटलेय, की नव्याने प्रकट होणारा शायरन (CHYREN) आजच्या घटकेला अज्ञान आहे. परंतु तो ख्रिश्चन वा मुस्लिम नसेल. पाश्चात्य विद्वानांनीही हे विधान मान्य केले आहे.

नॉस्ट्राडेमस स्वतः ज्यू वंशाचा, ख्रिश्चन धर्म स्वीकारलेला, फ्रान्सचा नागरिक. तो ४५० वर्षांनी अवतरणारा विश्वनेता हिंदूच असेल असे छातीठोकपणे सांगतो, त्या हिंदु नेत्याचा गौरव करतो तो ह्याच कारणांनी की त्या स्वातंत्र्यसूर्य शायरनच्या उदयाबरोबर आधीते नेते निष्प्रभ होऊन नम्र होतील. 'तो' शायरन तिसऱ्या जागतिक युध्दाच्या काळानंतर वाचलेल्या नागरिकांना कायद्याचे राज्य देईल. कुणावरही अन्याय होणार नाही. 'गुणाः पूजास्थानं नच लिंगम् नच वयः' बरोबरच 'नच श्रध्दास्थानः' ही त्या लोकशाही राज्याची वेदी असे. सामाजिक रचना 'गुणकर्मविभागशः' असेल. जन्मदात्या मातापित्याच्या श्रध्दास्थानांवर ती आधारलेली असणार नाही. राखीव जागा, खास हक्क ही भाषा असणार नाही. त्याचप्रमाणे दलित, मागासलेला समाज अशी विभागणीही या साम्रांज्यात असणार नाही. प्रत्येकाच्या वैयक्तिक गतिशील प्रयत्नांना प्रोत्साहन दिले जाईल; त्याच्या प्रगमनशील कर्तृत्वाला भरपूर संधि व वाव दिला जाईल, सरसकट आमिषांची खिरापत वाटली जाणार नाही. यामुळे जो मेहनत करील

...(41)...

त्याला 'संधि' मिळेलच मिळेल अशी आश्वासक खात्री पटल्याने राष्ट्रसंवर्धनाला आवश्यक असणारी चढाओढ समाजात मानवाला कार्यप्रवण करील. शासन अमानवी वागणारांना वठणीवर आणीलच, शिवाय त्यांच्यातील अतिरेक्यांचा निःपात केला गेला जाईल. सर्वांना लागू पडणारा समान कायदा राज्यभर कसोशीने पाळण्यात येईल.

आता एक गोष्ट निर्विवादपणे सिध्द झाली आहे की तिसऱ्या अतिसंहारक महायुध्दातून नव्याने दर्शन घडविणारा तारणहार 'आशिया खंडात जन्म घेतलेला असेल, (शतक २० श्लोक २५).' युरोपात नाहीच नाही! तो ख्रिश्चन नसेल, मुसलमान तर नसेलच नसेल. ज्यूही असणार नाही. तर हिंदूच असेल असे जे नॉस्ट्राडेमसने निःसंदिग्धपणे म्हटलेय् ते पाश्चात्य विद्वानांनाहि मान्य आहे. तो हिंदू-नेता अन्य सर्व भूतपूर्व नेत्यांपेक्षा महत्तर असेल, बुध्दिमान असेल, अजिंक्यही! नॉस्ट्राडेमसचा शतक ६ श्लोक ७० फार महत्त्वाचा मानावा लागेल.

The grest CHYREN will be
chief of the world.
Loved feard and unchallenged
even at the death
His name and praise will reach
beyond the skies.
And he will be content to be
known only as Victor.

महान् शायरन जगाचा प्रमुख नियंता होई ल. त्याच्यावर सर्वसामान्य जनता प्रेम करील; त्याचबरोबर त्याचा वचक येवढा असेल की प्रजाजन काहीही अपकृत्य करायला धजणार नाहीत. त्याच्या मृत्युनंतरही त्याचा दबदबा कायम राहील, त्याचे नाव आणि पराक्रम नागरिकांच्या मनावर इतके खोलवर परिणाम करतील की त्याची कीर्ति त्रिखंड पसरेल. सामर्थ्य इतके प्रचंड असेल की शत्रू त्याच्या देशाला घाबरतील, त्याच्या राज्याची, नव्हे साम्राज्याची दहशत मानतील. तो सार्वभौम असेल, त्याच्या कर्तृत्वाचा प्रभाव संपूर्ण जगावर पडेल. हा महान् हिंदु नेता भारताला भूमि आणि सागर यावर अजिंक्यपद प्राप्त करून देईल. आतापर्यंत निद्रिस्त असलेल्या हिंदूंना खडबडून जागृत करून त्यांच्याकरवी अशी काही चिरंतन कामगिरी करवील की ज्याने ते आपल्या पूर्वजांचे सार्थ वारस ठरतील.

शतक २, श्लोक ७९ द्वारा फ्रेंच द्रष्टा नॉस्ट्राडेमस स्वच्छपणे सांगतोय की, शायरन क्रूर आणि हिंसक जमातीतल्यांना ठिकाणावर आणिल आणि चंद्रकोरीच्या ताब्यातील भूमि मुक्त करील. त्याचे हे शब्दच पहा किती बोलके आहेत!

फ्रेंच - Subjuguva 10 gent crelle add fiere Le grand chyren ostera du longin Tous les captifs par seline baniaet.

...(42)...

इंग्लिशमध्ये स्वैर भाषांतरित शब्दात सांगायचे तर -

1) Will subjugate the cruel and
violent freed,
The great CHYREN will
take from distance,
All those held captive by
crescent moon

वरील श्लोकातील Cruel and Violent held captive by crescent moon म्हणजेच - हिंसक आणि क्रूरचंद्र हे शब्द इतके अर्थवाही आहेत की वरील उल्लेख मुसलमानांना उद्देशूनच आहेत याबाबत दुमत न व्हावे.

थोडक्यात सांगायचे तर शायरनच्या कारकीर्दीत या भूतलावर सुवर्णयुग अवतरेल. त्याच्या मृत्यूनंतरही त्याच्या महानतेचे व सद्‌गुणांचे आवर्जून गुणगान होत राहिल. पण त्याच्या मनाची शालिनता, विनम्रपणा व औदार्य इतके ढळढळीतपणे दिसते की यापूर्वी नमूद केलेल्या शतक ६ श्लोक ७० व्या श्लोकाच्या शेवटच्या ओळीत त्याबद्दल केलेला उल्लेख फार बोलका आहे. (शायरन म्हणतोय) 'जनतेने त्याच्याबद्दलचा उल्लेख फक्त' एक विजयी नेता या तीन शब्दात करायचा तर करावा आणखी विशेषणे त्याच्या नावाला चिकटवू नयेत.

मधल्या काळात हिंदूधर्माचे व हिंदूंच्या आदर्शवत् जीवनाचे पुसट झालेले क्षणचित्र, पुन्हा आपल्या देदिप्यमान उत्तुंग स्वरूपात प्रस्थापित होणारच, आणि मानवी संस्कृती निर्धोक बनेल हे नॉस्ट्राडेमसने पुरेशा स्पष्टपणे सुचविले आहे. त्यात संदिग्धता कुठेही नाही. हे सर्व घडवून आणणारा आज अज्ञात असणारा परंतु योग्य समयी प्रकट होणारा महापुरुष तथा शायरन हा हिंदुधर्मीयच असेल असेही नॉस्ट्राडेमस निखालसपणे सांगतो, नव्हे नव्हे, जवळ जवळ साडेचारशे वर्षापूर्वी अक्षरबध्द करतो. त्याने या शायरनच्या मनाचा घेतलेला वेधही इतका काही तर्कशुध्द व अचूक आहे की नॉस्ट्राडेमसच्या द्रष्टेपणाचे आश्चर्य वाटते! नॉस्ट्राडेमसने म्हटलेय की, शायरन बेचैन मनाने खूप प्रवास करील. या बेचैनीचे कारण काय असणे शक्य आहे? आपल्या धर्मबांधवांच्या समस्या आणि त्यांची सद्यःकालीन दयनीय अवस्था हे असू शकेल! त्या बेचैन अस्वस्थ मनाचा कानोसा आपण पुढच्या प्रकरणात घेऊ!

...(43)...

: ५ :

नॉस्ट्राडेमसच्या भाकितांना दुजोरा देणारी आणखी कांही भाकिते

उभ्या आयुष्यात भारताला कधीही भेट न दिलेल्या महर्षी नॉस्ट्राडेमसने, सुमारे ४००-४५० वर्षापुर्वी,'२००१ साली प्रलयंकारी विनाशाच्या उंबरठ्यावर असलेल्या जगाला शायरन (CHYREN) हा हिंदू नेता आपल्या क्षात्रतेजाने तारणहार होईल.' या स्वातंत्र्यसूर्याच्या आगमनाने बलाढ्य हिंदू राष्ट्राचा उदय होऊन हिंदूंचे पुनरुत्थान होईल, हिंदू साम्राज्य स्थापन होऊन 'सुवर्णयुग अवतरेल' असे भविष्य शब्दबध्द केले आहे.

१९९९ साली सुरू होणाऱ्या व इ. स. २००६ ला संपणाऱ्या महायुध्दासंबंधी अनेक श्लोकात नॉस्ट्राडेमस लिखित, 'सेंच्युरी' मध्ये 'शायरन' या टोपण नावाचा उल्लेख 'विश्वनेता' म्हणून ठिकठिकाणी केलेला आढळतो. गेली जवळ जवळ २०० वर्षे या 'शायनर' चा शोध घेण्याचे काम नॉस्ट्राडेमस विषयातील तज्ञ हिरीरीने करीत आहेत. गेल्या प्रकरणांत या विश्वनेत्याबद्दल नॉस्ट्राडेमसच्या कित्येक अभ्यासकांनी लढविलेले तर्ककुतर्क किती विसंगत आहेत हे दाखविले; आणि त्या संदर्भात सध्याचा इराणचा धर्मनेता आयातुल्ला खोमेनीचे नाव आग्रहाने घेतले जाते ते तर किती असंबध्द आहे त्याचीही चर्चा केली.

नॉस्ट्राडेमसच्या भविष्यवाणीत 'क्रम' नसतो-सकारण नसतो, त्यामुळे हे तर्काधिष्ठित घोटाळे होतात हे जरी खरे असले तरी नॉस्ट्राडेमस वेगवेगळया लोकांमधून शायरन् बाबत जे विखुरलेले उल्लेख करतो त्यावरून येऊ पाहाणाऱ्या ३ऱ्या जागतिक युध्दकालातील क्षितिजावर नव्याने उगवणारा पण आज जगाला अज्ञात असलेला जगज्जेता कोण असेल, कुठचा असेल याबाबत सुसंगत तर्ककरायला अडचण पडू नये.

पृष्ठसंख्येचे बंधन लक्षांत घेऊन आतापर्यंत नॉस्ट्राडेमसच्या श्लोकांचे 'शतक अमुक व श्लोक क्रमांक अमुक' एवढाच निर्देश करून त्याने वर्तविलेल्या भाकितांचा मागोवा घेत घेत गूढार्थांची उकल केली. परंतु, आता यापुढे महान् शायरनच्या कर्तृत्वाचा प्रकाश पाडणाऱ्या भाकितांबद्दलचे लेखन, नुसतेच शतक 'श्लोक' क्रमांक अशा संदर्भात न देता, आवश्यक तेवढे मूळ श्लोक, जसेच्या तसे, उध्दृत केल्याशिवाय वाचकांचेही समाधान होणार नाही म्हणून ते प्रसिध्द करण्याचे योजिले आहे. मूळ फ्रेंच भाषेतील श्लोक देणे अशक्य नाही. तरी ती भाषा अत्यल्प लोकांना समजणारी असल्याने त्या श्लोकांचे इंग्रजीत भाषांतर उध्दृत केले जाईल. त्यावरून नॉस्ट्राडेमसच्या एकेका विधानाचे निरुपण करणे सोपे होईल.

...(44)...

यापूर्वीच्या २ ऱ्या प्रकरणांत नॉस्ट्राडेमसचा जीवनवृतांत देतांना, त्याने गूढ भाषेत भविष्यकथन कसे केले आहे त्याचे उदाहरण म्हणून, 'सेंच्युरी' च्या शतक ४ श्लोक १४ चा पूर्वार्ध मूळ फ्रेंच व त्याचेच इंग्रजीत रुपांतरित भाग उध्दृत करून त्याबद्दल विवरण केले. तिसरे प्रकरण नॉस्ट्राडेमसच्या तंतोतंत खऱ्या झालेल्या भाकितांची ओळख वाचकांना व्हावी म्हणून लिहीले, त्यात पुन्हा वरील शतका-श्लोकाच्या आधारे भारताच्या 'डॉमिनंट प्रिमिअर' कै. इंदिरा गांधी यांच्यां अकस्मात (इंग्रजी शब्द आहे Sudden) हत्येने 'भारत' सर्वश्रेष्ठ हिंदुराष्ट्र घडविण्याच्या संभाव्य दोन बदलांचा उल्लेख केला तो असा- इंदिराजींचे पुत्र राजीव गांधी हे पंतप्रधान होतील (श्लोकातील शब्द shall cause change) हा पहिला बदल तर, वरील शब्दांपाठोपाठ त्याच श्लोकात आलेल्या 'and put another in the reign soon' या अधोरेखित शब्दांनी ध्वनित होणारे राजीव गांधींच्या पाठोपाठ २० व्या शतकाचा अस्त होण्याचे काळी उगवणारे दुसरे सत्ताधारी म्हणजेच नॉस्ट्राडेमसना अभिप्रेत असलेला 'शायरन' असेल हे सुसंगत वाटते. हेन्री सी. रॉबर्टस् नामक नॉस्ट्राडेमसचे एक प्रसिध्द भाष्यकार आहेत यांनीही वरील विधान उचलून धरले आहे.

नॉस्ट्राडेमस येवढ्यावरच थांबत नाही तर विश्वनेत्याबद्दल आणखी काही महत्त्वाच्या खुणा दाखवतो.

शतक ५ श्लोक ४१ मध्ये नॉस्ट्राडेमसने स्पष्टच सांगितले आहे की, रात्री अंधाऱ्या वेळी (त्यांचे शब्द आहेत - Noctural time) 'तो' जन्माला येईल. तो सर्वभौम असेल आणि औदार्यात त्याच्याशी कुणीही बरोबरी करू शकणार नाही. तो आपल्या सनातन धर्माचे पुनरुज्जीवन करील आणि या अवनीतलावर सुवर्णयुग आणील!

'अंधाऱ्या वेळीं' या शब्दाचे अनेक अर्थ संभवतात. पैकी एक म्हणजे श्रीकृष्णाच्या जन्माचे वेळेप्रमाणे 'तो' शायरन रात्रीच केवळ नव्हे तर अमावास्येच्या अंधःकारमय रात्रीहि जन्म पावला असेल! दुसरा असाही अर्थ होऊ शकतो की, भोवतालचे जगात जेव्हा त्या जगास 'अंधार-युग' म्हणण्याइतकी काळ्या कृत्यांची बेबंदशाही माजली असेल तशा भयंकर कालावधीत 'शायरन'ने या जगात पदार्पण केले असावे. तिसराही अर्थ या 'रात्री'च्या उल्लेखाला चिकटवला जातो, तो म्हणजे, या अवनीतलावर चालू असलेल्या 'जगा'मध्ये आणीबाणी जाहीर होऊन (उदा. २ ऱ्या महायुध्दाचे वेळी जशी अंमलात होती तशी) ब्लॅक आऊट असेल तेव्हा जन्माला आलेले हे मूल असावे! या सर्व लेखनाचा इतकाच इत्यर्थ निघतो की आगामी महासंहारक तिसऱ्या महायुध्दात अमेरिका-रशियाच्या युतिसह 'शायरन' ही तिसरी भारतीय शक्ती महान कार्य करील. आज ती अज्ञात असली तरी ती व्यक्ती आजच्या जगात वावरत असेल. अमावस्येसारख्या कुठल्या तरी अंधेऱ्या रात्री जन्म घेतलेली व आगामी महान नेता ठरणारी ही व्यक्ती तरुण १६ते२०-२५ वर्षांची तरी असेल किंवा पन्नाशीसाठी गाठलेली अनुभवी ध्येयैकशरण प्रौढ व्यक्तीही असू शकेल; यापेक्षा शायरनच्या वयावर प्रकाश पाडणारा उल्लेख नॉस्ट्राडेमसने कुठे केल्याचे आढळत नाही.

...(45)...

नाही म्हणायला नॉस्ट्राडेमस हे मात्र नमुद करतो की या नेत्याच्या नेतृत्वाखाली भारत हा जगातील सर्व-श्रेष्ठ देश बनेल. इतकेच नव्हे तर दूरवर पसरलेले हिंदूंचे साम्राज्य नव्याने आकारास येईल.

शतक १, श्लोक ५० मध्ये त्या पुरुषाचा पुन्हा उल्लेख आढळतो तो असा-

'From Peninsula of three seas will be born one who will make Thursday his day of worship. His fame praise and rule will form mighty by land, sea. There will be a tempest of India.'

तीन सागरांनी बनलेल्या व्यापक द्वीपकल्पात तो जन्म घेईल; त्याचा गुरुवार हा प्रार्थनेचा दिवस असेल. त्याची कीर्ति त्रिखंडात पसरेल. त्याचे सामर्थ्य इतके प्रभावी असेल की त्याच्या आक्रमक घोडदौडीमुळे उत्पन्न झालेल्या त्याच्या प्रभावाने वादळी वातावरण उत्पन्न होईल. द्वीपकल्प, गुरुवार प्रार्थनेचा दिवस (या संदर्भात असेही म्हटले गेले आहे की शायरनचा विश्रांती घेण्याचा दिवस सोमवार असेल). या तिन्ही लाक्षणिक शब्दांद्वारे नॉस्ट्राडेमसला काय सुचवायचे असावे त्याबद्दल यापूर्वीच्या प्रकरणांतून स्पष्टीकरण केलेच आहे. या सर्वांचा निःसंदिग्धपणे आशय स्पष्ट होतो तो हा की शायरन हा महाम नेता भारतात जन्मलेला हिंदू नेताच असेल.

वरील भाकिताला दुजोरा देणारे भाष्य नॉस्ट्राडेमसने स्वतःच शतक ५, श्लोक २५ मध्ये केले आहे तेच पहा ना -

The Arab Primer, Mars, Sol, Venus, Leo,Rule of Church will surrender to the sea towards Persia, close to a million, True serpent power invade Turkey and Egypt.'

मागे उल्लेख केलेल्या हेन्री रॉबर्टस्ने याही श्लेकाखाली, आपल्या पुस्तकात टीप दिली आहे की -

'Christian Ideal will be overcome by Oriental Ideology where serpent meaning True serpent.....'

(म्हणजेच कुंडलिनी शक्ति धारण करणारी व्यक्ति). नॉस्ट्राडेमस भविष्याचा वेध घेऊन, वरील श्लोकात स्वच्छपणे सांगून टाकतो की सागराच्या नावाचा धर्म ज्याचा आहे (म्हणजेच हिंदी महासागर त्या अनुषंगाने हिंदुधर्म-तथा हिदुस्थान!) - कुठल्याहि प्रादेशिक भूमीकडे अंगुली निर्देश करण्याकरिता असा उल्लेख कुठल्याही भौगोलिक वाङमयात आढळत नाही-तो ज्याचा आहे त्याच्या पुढाकाराने युरोपमधील नव्हेत तर ख्रिश्चन व यावनी संस्कृतीचा खातमा केला जाईल. त्यांची सारी केन्द्रे ज्या ज्या राष्ट्रात विखुरलेली आहेत ती राष्ट्रेही पादाक्रांत केली जातील. इतर, कोणत्याही धर्मात ज्याप्रमाणे गुरुवार हा प्रार्थनेचा दिवस म्हणून पाळला जात नाही त्याचप्रमाणे कुंडलिनी शक्ति कुणाही बिगर हिंदूला ज्ञात नाही. हिंदूंचे ते खास शक्तिस्थान आहे, ते हिंदुच इजिप्त, तुर्कस्तान इत्यादी मध्यपूर्वेत असलेल्या सत्ताधाऱ्यांना दूर फेकून तिथे हिंदु संस्कृति केवळ नांदू लागेल असे नाही तर तिचा अम्मल सुखेनैव चालू राहील.

...(46)...

वरील भाकितावर आणखी झगझगीत प्रकाश टाकणारे भाकीत नॉस्ट्राडेमसने शतक १०, श्लोक ९६ मध्ये प्रसिध्द केले आहे ते असे -' Religion of the name of sea will against the sect of Caliphs of the Moon vanquish. The deplorably obstinate sect shall br afraid of wounded by Alef and Alef.'

फ्रेंच द्रष्ट्या ज्योतिषवर्याने केलेले वरील भविष्य फार महत्त्वाचे आहे. कारण, यात जास्तच स्पष्टपणे सांगितले आहे की समुद्राचे (तथा हिंदी महासागराचे) नाव असलेला देश - हिंदुस्थान - खलिफाच्या प्रशंसित पंथाचा नाश करील. वरच्या श्लोकातील २ ऱ्या ओळीतील Sect हा शब्द महत्त्वाचा व नॉस्ट्राडेमसच्या मार्मिक शब्दयोजनांचा निदर्शक आहे. त्या शब्दाचा एक अर्थ जसा 'पंथ' होऊ शकतो तसाच तो शब्द फ्रेंच भाषेत वापरला जातो तो 'श्रध्दा' या अर्थाने! या दृष्टीने या काव्यपंक्तीचा अर्थ लावावयाचा तर समुद्राचे नाव असलेल्यांची श्रध्दा तथा धर्म, हा सद्धर्म आहे तर खलिफा प्रशंसित धर्म ही केवळ अंधश्रध्दा आहे. या वाक्याचा आणखी स्पष्टार्थ करायचा तर नॉस्ट्राडेमसला हिंदू हा 'धर्म' तर इस्लामला तो अंधश्रध्दा म्हणून अभिप्रेत आहे. Obstinate हे विशेषण खलिफाच्या पंथाला लावून नॉस्ट्राडेमसने हेही आडपडदा न ठेवता सांगून टाकले आहे की, 'खलिफ-प्रशंसित पंथ अपरिवर्तनशील, अतिरेकी आहे!'

या पूर्वीच्या प्रकरणात 'शायरन' म्हणून आयातुल्ला खोमेनीबद्दल लिहितांना सध्या जगभर चालू असलेल्या रश्दींच्या 'सॅटॅनिक व्हर्सेस' या कादंबरीवरून उसळलेल्या सैतानी उद्रेकाचा उल्लेख केलाच आहे. त्याला आणखी दुजोरा देणारी बातमी नुकतीच वाचण्यात आली, तीही या संदर्भात बरेच काही सांगून जाते असे वाटते म्हणून येथे तिचा उल्लेख करतो - पॅरिसहून आलेली ही सत्यकथा आहे. प्रसिध्द फ्रेंच गायिका व्हेरोनिक सान्साँ, आपल्या कार्यक्रमात 'अल्ला' हे गीत सादर करीत असे. (म. गांधी ज्याप्रमाणे त्यांच्या रामनामात - 'ईश्वर अल्ला तेरे नाम' असे खादीचे ठिगळ लावून म्हणत त्याप्रमाणे!) परंतु, गीत - गायकाला ठार मारू अशी धमकी त्यांना देण्यात आल्यावर त्यांनी ते गीत न गाण्याचे ठरविले. नभोवाणीवरील एका मुलाखतीत ही माहिती देऊन पुढे स्पष्टीकरणही केले की, 'वास्तविक या गीतात इस्लामचा अवमान करणारे काहीही नाही, ती एक प्रार्थना आहे. पण 'ज्ञानलव दुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रंजयति।।' हे जास्त अनुभवसिध्द वाक्य कुणाच्या खिजगणतीत आहे?

मुस्लिम धर्माच्या तत्त्वांना खोमेनीसारखे धर्मांध त्यांना अभिप्रेत असलेला वेगळाच रंग देण्याचा प्रयत्न करीत असतात. त्यामुळे होते काय तर काही मुस्लिम मूळ ग्रंथ न वाचताच विनाकारण कडवे धर्मांध बनत चाललेले आहेत. मशिदीमध्ये ठिय्या मारून बसलेले मुल्ला - मौलवी नि इमाम आपापले राजकारण पुढे रेटण्याचे मनसुबे उभारण्यात मश्गूल झाले आहेत. भारतीय शिक्षण यंत्रणेतून इस्लाम विरोधी (हेही त्यांनीच ठरवायचे) सारे उल्लेख काढून टाकावेत, पाठ्यपुस्तकांचे शुध्दीकरण (!) केले

...(47)...

जावे अशी मागणी करायला सुरुवात झाली आहे. या सर्वांची परिणती कशात होईल हे सांगणे आतापर्यंतच्या अतिरेकी अनुभवावरून जाणता येण्यासारखे असले तरी ज्या वेगाने १९९९ चा झंझावात समीप येत आहे त्या वेगाशी सुसंगत असा अत्याचारांचा नेहमी उसळणारा डोंब लक्षात आला की हीच वावटळ आगामी तिसऱ्या महायुध्दाची नांदी ठरण्याची शक्यता नाकारता येणार नाही.

१७ व्या शतकात ज्याप्रमाणे मुसलमानांच्या अत्याचारांनी हिंदुस्तानांत मर्यादा गाठली, तेव्हा मूठभर मावळ्यांना एकत्र करून परिस्थितीशी मुकाबला करणे अपरिहार्य झाले.

तेव्हा बाल शिवरायांनी विजापूर सोडून पुण्याच्या आपल्या जहागिरीत राहायला सुरुवात केली व आपल्या सवंगड्यांसह करंगळीचे बोट कापून श्रीशंकरावर (रोहिडेश्वर?) रक्ताचा अभिषेक करून स्वराज्याची मुहूर्तमेढ रोवली. हाताशी असलेले सीमित मनुष्यबळ, युध्दमान शस्त्रांचा तुटवडा, अर्धपोटी जेवण, आणि एकंदर समाजावर मुसलमानी अंमलाची खोलवर रूजलेली दहशत व त्यामुळे रूळलेली अगतिकता यामुळे गनिमी काव्याने या सत्तेशी दोन हात करावे लागले. पारतंत्र्याचा एक अवश्यमेव भाग असा असतो की त्याविरुध्द प्रथम उठाव करणाराला नामोहरम करणे, घरच्यापेक्षा बाहेरचा सत्ताधारी आपलासा वाटणे! घरभेदीपणा सत्कर्माचा रंग घेतो. प्रत्येक कृतीला धर्मांधता म्हणण्यात येते, जातीयतेचा छाप मारला जातो. सूर्याजी पिसाळाची अवलाद उत्तम होऊन फंद - फितुरी वाढते - या सर्वांवर मात करून शिवरायांनी राजगडावर तोरण बांधून, राज्याभिषेक करविला तेव्हाच भूषण कवींनी त्यांचा गौरव केला तो या शब्दांनी - 'शिवाजी न होता तो सब की होती सुन्ता'. इतिहासाची पुनरावृत्ती होत असते असे म्हणतात त्यानुसार आजही शायरनच्या नेतृत्त्वाने हिंदुत्वाची द्वाही फिरवण्याची नेमकी वेळ आली आहे. शिवरायांनी अनुसरलेला मार्ग धर्मांधतेचा नव्हता तर 'स्वत्व' टिकविण्याचा होता. त्याकरिता प्राणांची बाजी लावून मराठमोळ्यांनी लढा दिला होता. ती स्फूर्ति नंतर १९ व्या शतकापर्यंत कार्यरत होती. मराठ्यांचा भगवा जरिपटका अटकेपार लागला, दिल्लीचे तक्त फोडून आपल्या शौर्याची मुद्रा भारतभर पसरलेल्या भारतीयावर उमटवली. एवढी मर्दुमकी असूनही दिल्लीच्या सिंहासनावर - तक्तावर - .शेवटपर्यंत 'मराठा' न बसविता, मोगल बादशाहीच चालू राहिली. हे विषयांतर एवढ्यासाठीच केले की हिंदूंची युध्दप्रविणता ते सत्ताधीश होण्याइतकी बलशाली असूनही, त्यांच्या विशिष्ट मानसिक ठेवणीनुसार ते आक्रमक सत्ताधारी केव्हाच झाले नाहीत हे स्पष्ट व्हावे!

भारतीय हिंदू हे निसर्गतः व त्यांना मिळालेल्या धार्मिक व अध्यात्मिक वारसानुसार प्रवृत्तीने सौम्य प्रकृतीचे आहेत, आक्रमक नाहीत. परंतु, या आधी उध्दृत केलेल्या नॉस्ट्राडेमसच्या शतक १, श्लोक ५० प्रमाणे, 'शायरन' हा हिंदू नेता अखिल हिंदुविश्वाला जागृति आणून स्वतःच्या वादळी व्यक्तिमत्वाने, आपल्या भूमि नि सागरी सामर्थ्याचे दर्शन घडविणार आहे. अजिंक्य हिंदुनेता ही आपली प्रतिमा सर्व

...(52)...

प्रारंभी जगाच्या क्षितीजावर उगवणार आहे. हा जो बदल घडणार आहे तो नॉस्ट्राडेमसच्या इच्छेने घडणार नसून नियतीच्या इच्छेने हा सारा बनाव घडणार आहे. त्यातून नवीन जे घडणार आहे ते म्हणजे हिंदुस्थान हा सर्वश्रेष्ठ देश होणार आहे. आज कित्येक शतके न दिसलेले, दृष्टिआड झालेले हिंदुंचे साम्राज्य अवतरणार आहे.

आजच्या विज्ञानयुगात अणुशास्त्राचा जो अभ्यास चालू आहे, व अणु-अस्त्रे बनविण्याची वा संग्रही ठेवण्याची जी चढाओढ सर्व जगभर चालू आहे त्यावरून आगामी युध्दाची भीषणता स्पष्ट होत आहे. संयुक्त राष्ट्रसंघातर्फे तज्ज्ञांनी केलेल्या अभ्यासानंतर जो अहवाल प्रसिध्द झाला आहे त्यावरून निःसंदिग्ध शब्दात प्रामुख्याने सांगितले आहे की, आगामी युध्द हे अणुयुध्द झाल्यास - आणि आज, त्या दृष्टीने जी पावले पडत आहेत त्यानुसार ३ हे महायुद्ध अणुयुध्दच होणार याबद्दल दुमत होण्यासारखेही नाही - प्रत्यक्ष परिणाम प्रचंड मनुष्यहानी, उद्ध्वस्त झालेले देश, भस्मसात झालेली मालमत्ता व शेती या दृष्यांनी दिसतील हे तर खरेच, पण त्याहीपेक्षा त्याचे जे अप्रत्यक्ष परिणाम प्रदीर्घ कालपर्यंत जाणवतील ते मात्र फारच भयंकर स्वरूपाचे असतील.

या अणुयुध्दाने जगातील हवामानात बदल होईल. ज्या गोलार्धातील शहरांवर अणुबाँब किंवा रॉकिट्स यांचा मारा होईल - आणि उत्तर गोलार्धातील मोठ्या शहरांवर असा वर्षाव होण्याचा संभव जास्त - त्या गोलार्धातील तपमान शून्य अंश सेल्शिअस् खाली जाईल. सूर्यप्रकाश पुरेसा मिळणार नाही. पाऊस कमी पडेल. त्यामुळे शेती, वनस्पती उगवण्या - उत्पन्न होण्यावर विपरित परिणाम होईल. ओझोनचा संरक्षक थर कमी होत आहे, अशी आजच आवई उठली आहे. तो संरक्षक थरही अणुयुध्दाने आणखी कमी होऊन अतिनील किरण रोखले जाण्याचे प्रमाण कमी होईल.

नॉस्ट्राडेमसला हे सर्व प्रलयंकारी दृष्य दिसत असूनही त्याने केलेल्या ग्रहगणिताच्या आधारे तो म्हणतो की, या तिसऱ्या महायुध्दात अनेक तथाकथित प्रगत देश बेचिराख होतील. तरी त्यातून मानववंश टिकून राहील; हिंदुस्थान - म्हणजे हिंदुराष्ट्र - आणि त्या देशात जन्मलेला द्रष्टा नेताच, सर्व जगाचा तारणहार जगज्जेता असेल!

भगवान् श्री रामकृष्ण परमहंस यांचे एक फ्रेंच भक्त रीनकोर्ट नामक लेखक आहेत. त्यांनी परमहंसांचा निर्वाणापूर्वी जे सांगितले ते श्री रामकृष्णांचे शब्द उद्धृत करून म्हटले आहे की रामकृष्णांची ती भविष्यवाणी नॉस्ट्राडेमसच्या भाकितांना पुष्टीच देते. भगवान रामकृष्ण परमहंस म्हणाले होते की त्यांचा 'पुढचा जन्म भारताच्या वायव्येला होईल' हेच दुसऱ्या भाषेत विशद करून सांगायचे तर परमहंस रशियांत हिंदु संत म्हणून पुनः जन्म घेतील, नि हिंदुत्वाचे पुनरुत्थापन होईल. 'शक-हूण' आदि जमातींप्रमाणे रशियाहि हिंदुत्ववादी झालेला दिसेल, त्या जीवनपद्धतीचा स्वीकार करील कारण या आकाशाखाली सर्वकश विचारस्वातंत्र्य असलेली दुसरी जीवनपद्धतीच नाही. रशिया,

...(74)...

हिंदु संस्कृति, धर्म, व त्यांचे राष्ट्रप्रेम याबद्दल, नॉस्ट्राडेमस स्वतः ज्यू वा ख्रिश्चन असूनहि, जे उत्कटतेने उद्गार काढतो, ते त्याला काही आंतरिक साक्षात्कार झाल्यामुळें काढीत असावा असे वाटण्याइतके खणखणीत आहेत. भारतांतील हिंदु हे खरे हिंदुस्तानचे रहिवासी, भारतांतील मुस्लिम हे घुसखोर तरी किंवा बाटगे मुसलमान, त्यामुळें त्यांना, नॉस्ट्राडेमस, राष्ट्रद्रोही. म्हणतो. हिंदु धर्माशिवाय हिंदुस्तान अशक्य, आणि हिंदुस्तानची हिंदु संस्कृतीहि अशक्यच! आगामी प्रलयंकारी युद्धांतून जगाला नवा प्रकाश देणारा जगज्जेता म्हणून हिंदूच नेता असेल याबद्दल 'नॉस्ट्राडेमस' ठाम आहे!

"यथार्थ ज्ञान प्रकाश विषय"

"परमेश्वर के विषय में शास्त्र क्या बताते हैं ?"

प्रभु - स्वामी - ईश - राम - खुदा - अल्लाह - रब - मालिक - साहेब - देव - भगवान - गौड। यह सर्व शक्ति बोधक शब्द हैं जो भिन्न-भिन्न भाषाओं में उच्चारण किए व लिखे जाते हैं।

''प्रभु'' की महिमा से प्रत्येक प्राणी प्रभावित है कि कोई शक्ति है जो परम सुखदायक व कष्ट निवारक है। वह कौन है? कैसा है? कहाँ है? कैसे मिलता है? यह प्रश्नवाचक चिन्ह अभी तक पूर्ण रूप से नहीं हट पाया। यह शंका इस पुस्तक से पूर्ण रूप से समाप्त हो जाएगी।

जो शक्ति अन्धे को आँखें प्रदान करे, गूंगे को आवाज, बहरे को कानों से श्रवण करवा दे, बाँझ को पुत्र दे, निर्धन को धनवान बना दे, रोगी को स्वस्थ करे, जिस के यदि दर्शन हो जायें तो अति आनन्द हो, जो सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, पूर्ण शान्तिदायक जगत गुरु तथा सर्वज्ञ है, जिसकी आज्ञा बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता अर्थात् सर्वशक्तिमान जिसके सामने कुछ भी असम्भव नहीं है। ऐसे गुण जिसमें है वह वास्तव में प्रभु (स्वामी, ईश, राम, भगवान, खुदा, अल्लाह, रहीम, मालिक, रब, गौड) कहलाता है।

यहाँ पर एक बात विशेष विचारणीय है कि किसी भी शक्ति का ज्ञान किसी शास्त्र से ही होता है। उसी शास्त्र के आधार पर गुरुजन अपने अनुयाइयों को मार्गदर्शन करते हैं। वह शास्त्र (धार्मिक पुस्तकें) हैं चारों वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद), श्री मद् भागवत गीता, श्री मद् भागवत सुधासागर, अठारह पुराण, महाभारत, बाईबल, कुरान आदि प्रमाणित पवित्र शास्त्र हैं। चारों वेद स्वयं पूर्ण परमात्मा के आदेश से ज्योति निरंजन (काल) ने समुद्र के अन्दर अपने स्वांसों के द्वारा गुप्त छिपा दिया तथा प्रथम बार सागर मन्थन के समय यह चारों वेद श्री ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। जो ब्रह्मा जी (क्षर पुरुष के ज्येष्ठ पुत्र) ने पढ़े तथा जैसा समझ सका उसी आधार पर संसार में ज्ञान का प्रचार अपने वंशजों (ऋषियों) के द्वारा करवाया। पूर्ण परमात्मा ने पाँचवां ''स्वसम'' (सूक्ष्म) वेद भी ब्रह्म (काल) को दिया था जो इस ज्योति निरंजन ने अपने पास गुप्त रखा तथा उसे समाप्त कर दिया।

कुछ समय उपरान्त अर्थात् एक कल्प (एक हजार चतुर्युग) के बाद तीन लोक (पृथ्वी लोक, स्वर्गलोक, पाताललोक) के सर्व प्राणी प्रलय (विनाश) हो जाते हैं। फिर ज्योति निरंजन (काल) के निर्देश से ब्रह्मा अपनी रात्रि समाप्त होने पर (ब्रह्मा की रात्री एक हजार चतुर्युग की होती है तथा इतना ही दिन) जब दिन प्रारम्भ होता है, रजोगुण से प्रभावित करके प्राणियों की उत्पत्ति तीनों लोकों में शुरू करता है।

तब सतयुग की शुरुआत में वही चारों वेद काल (ब्रह्म) स्वयं ब्रह्मा को फिर प्रदान करता है तथा फिर प्राकृतिक उथल-पुथल के कारण चारों पवित्र वेदों का ज्ञान समाप्त हो जाता है। उसके पश्चात् फिर समय अनुसार अन्य ऋषियों में प्रवेश करके दोबारा

लिखवाता है। फिर भी समय अनुसार प्राकृतिक उथल-पुथल के बाद स्वार्थी लोगों के द्वारा वेदों में बदलाव करके वास्तविक ज्ञान संसार से लुप्त कर दिया जाता है। वही काल (ब्रह्म-ज्योति निरंजन) महाभारत युद्ध के समय श्री कृष्ण में प्रवेश करके चारों वेदों का संक्षिप्त विवरण श्रीमद्भागवत गीता के रूप में दिया तथा कहा कि अर्जुन यही ज्ञान मैंने पहले सूर्य से कहा था। उसने अपने पुत्र वैवश्वत् अर्थात् मनु से तथा वैवश्वत् अर्थात् मनु ने अपने पुत्र इक्ष्वाकु से कहा था। परन्तु बीच में यह उत्तम ज्ञान प्राय समाप्त हो गया था।

इस काल (ब्रह्म-ज्योति निरंजन) ने श्री वेदव्यास ऋषि के शरीर में प्रवेश करके चारों वेद, महाभारत, अठारह पुराण, श्रीमद्भागवतगीता, श्री सुधासागर को पुनः लिपिबद्ध (संस्कृत भाषा में) करवाया जो आज सभी को उपलब्ध हैं। ये सर्व शास्त्र श्रेष्ठ हैं। अब इन शास्त्रों को कलयुगी ऋषियों ने भाषा-भाष्य अर्थात् हिन्दी अनुवाद करके अपने विचार मिलाने की कोशिश की है, जो स्पष्ट गलत दिखाई देते हैं और व्याख्या से मेल नहीं खाते हैं। यह सर्व शास्त्र महर्षि व्यास जी द्वारा लगभग 5300 (पाँच हजार तीन सौ) वर्ष पूर्व दोबारा लिखे गए थे। उस समय हिन्दु धर्म, इसाई धर्म, मुसलमान धर्म व सिक्ख धर्म आदि कुछ भी नहीं थे। एक वेदों के मानने वाले आर्य ही हुआ करते थे। कर्म आधार पर जाति होती थी तथा केवल चार वर्ण (क्षत्री-वैश्य-ब्राह्मण तथा शुद्र) ही थे।

इससे एक तो यह प्रमाणित हो जाता है कि यह सर्व शास्त्र किसी धर्म या व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है। यह केवल मानव मात्र के कल्याण हेतु हैं। दूसरे यह प्रमाणित होता है कि हमारे पूर्वज एक थे। जिनके संस्कार आपस में मिले जुले हैं।

सर्व प्रथम पवित्र शास्त्र गीता जी पर विचार करते हैं।

"पवित्र गीता जी का ज्ञान किसने कहा?"

पवित्र गीता जी के ज्ञान को उस समय बोला गया था जब महाभारत का युद्ध होने जा रहा था। अर्जुन ने युद्ध करने से इन्कार कर दिया था। युद्ध क्यों हो रहा था? इस युद्ध को धर्मयुद्ध की संज्ञा भी नहीं दी जा सकती क्योंकि दो परिवारों का सम्पत्ति वितरण का विषय था। कौरवों तथा पाण्डवों का सम्पत्ति बंटवारा नहीं हो रहा था। कौरवों ने पाण्डवों को आधा राज्य भी देने से मना कर दिया था। दोनों पक्षों का बीच-बचाव करने के लिए प्रभु श्री कृष्ण जी तीन बार शान्ति दूत बन कर गए। परन्तु दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी जिद्द पर अटल थे। श्री कृष्ण जी ने युद्ध से होने वाली हानि से भी परिचित कराते हुए कहा कि न जाने कितनी बहन विधवा होंगी ? न जाने कितने बच्चे अनाथ होंगे ? महापाप के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलेगा। युद्ध में न जाने कौन मरे, कौन बचे ? तीसरी बार जब श्री कृष्ण जी समझौता करवाने गए तो दोनों पक्षों ने अपने-अपने पक्ष वाले राजाओं की सेना सहित सूची पत्र दिखाया तथा कहा कि इतने राजा हमारे पक्ष में हैं तथा इतने हमारे पक्ष में। जब श्री कृष्ण जी ने देखा कि दोनों ही पक्ष टस से मस नहीं हो

रहे हैं, युद्ध के लिए तैयार हो चुके हैं। तब श्री कृष्ण जी ने सोचा कि एक दाव और है वह भी आज लगा देता हूँ। श्री कृष्ण जी ने सोचा कि कहीं पाण्डव मेरे सम्बन्धी होने के कारण अपनी जिद्द इसलिए न छोड़ रहे हों कि श्री कृष्ण हमारे साथ हैं, विजय हमारी ही होगी (क्योंकि श्री कृष्ण जी की बहन सुभद्रा जी का विवाह श्री अर्जुन जी से हुआ था)। श्री कृष्ण जी ने कहा कि एक तरफ मेरी सर्व सेना होगी और दूसरी तरफ मैं होऊँगा और इसके साथ-साथ मैं वचन बद्ध भी होता हूँ कि मैं हथियार भी नहीं उठाऊँगा। इस घोषणा से पाण्डवों के पैरों के नीचे की जमीन खिसक गई। उनको लगा कि अब हमारी पराजय निश्चित है। यह विचार कर पाँचों पाण्डव यह कह कर सभा से बाहर गए कि हम कुछ विचार कर लें। कुछ समय उपरान्त श्री कृष्ण जी को सभा से बाहर आने की प्रार्थना की। श्री कृष्ण जी के बाहर आने पर पाण्डवों ने कहा कि हे भगवन् ! हमें पाँच गाँव दिलवा दो। हम युद्ध नहीं चाहते हैं। हमारी इज्जत भी रह जाएगी और आप चाहते हैं कि युद्ध न हो, यह भी टल जाएगा।

पाण्डवों के इस फैसले से श्री कृष्ण जी बहुत प्रसन्न हुए तथा सोचा कि बुरा समय टल गया। सभा में केवल कौरव तथा उनके समर्थक शेष थे। श्री कृष्ण जी ने कहा दुर्योधन युद्ध टल गया है। मेरी भी यह हार्दिक इच्छा थी। आप पाण्डवों को पाँच गाँव दे दो, वे कह रहे हैं कि हम युद्ध नहीं चाहते। दुर्योधन ने कहा कि पाण्डवों के लिए सुई की नोक तुल्य भी जमीन नहीं है। यदि उन्हें चाहिए तो युद्ध के लिए कुरुक्षेत्र के मैदान में आ जाऐं। इस बात से श्री कृष्ण जी ने नाराज होकर कहा कि दुर्योधन तू इंसान नहीं शैतान है। कहाँ आधा राज्य और कहाँ पाँच गाँव? मेरी बात मान ले, पाँच गाँव दे दे। श्री कृष्ण से नाराज होकर दुर्योधन ने सभा में उपस्थित योद्धाओं को आज्ञा दी कि श्री कृष्ण को पकड़ो तथा कारागार में डाल दो। आज्ञा मिलते ही योद्धाओं ने श्री कृष्ण जी को चारों तरफ से घेर लिया। श्री कृष्ण जी ने अपना विराट रूप दिखाया। जिस कारण सर्व योद्धा और कौरव डर कर कुर्सियों के नीचे घुस गए तथा शरीर के तेज प्रकाश से आँखें बंद हो गई। श्री कृष्ण जी वहाँ से निकल गए।

आओ विचार करें :- उपरोक्त विराट रूप दिखाने का प्रमाण संक्षिप्त महाभारत गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित में प्रत्यक्ष है। जब कुरुक्षेत्र के मैदान में पवित्र गीता जी का ज्ञान सुनाते समय अध्याय 11 श्लोक 32 में पवित्र गीता बोलने वाला प्रभु कह रहा है कि 'अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ। अब सर्व लोकों को खाने के लिए प्रकट हुआ हूँ।' जरा सोचें कि श्री कृष्ण जी तो पहले से ही श्री अर्जुन जी के साथ थे। यदि पवित्र गीता जी के ज्ञान को श्री कृष्ण जी बोल रहे होते तो यह नहीं कहते कि अब प्रवर्त्त हुआ हूँ। श्री कृष्ण जी काल नहीं थे, उनके दर्शन मात्र से मनुष्य, पशु (गाय आदि) प्रसन्न होकर श्री कृष्ण जी के पास आकर प्यार पाते थे। जिनके दर्शन बिना गोपियों का खाना, पीना छूट जाता था। इसलिए काल कोई और शक्ति है। वह श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी

के ज्ञान रूप में चारों पवित्र वेदों का सार बोल गया। उसकी एक हजार भुजाऐं हैं। श्री कृष्ण जी श्री विष्णु जी के अवतार थे, जिनकी चार भुजाऐं हैं। फिर अध्याय 11 श्लोक 21 व 46 में अर्जुन कह रहा है कि भगवन् ! आप तो ऋषियों, देवताओं तथा सिद्धों को भी खा रहे हो, जो आप का ही गुणगान पवित्र वेदों के मंत्रों द्वारा उच्चारण कर रहे हैं तथा अपने जीवन की रक्षा के लिए मंगल कामना कर रहे हैं। कुछ आपके दाढ़ों में लटक रहे हैं, कुछ आप के मुख में समा रहे हैं। हे सहस्त्रबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले भगवान ! आप अपने उसी चतुर्भुज रूप में आईये। मैं आपके विकराल रूप को देखकर धीरज नहीं कर पा रहा हूँ।

अध्याय 11 श्लोक 47 में पवित्र गीता जी को बोलने वाला प्रभु काल कह रहा है कि 'हे अर्जुन यह मेरा वास्तविक काल रूप है, जिसे तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा था।'

उपरोक्त विवरण से एक तथ्य तो यह सिद्ध हुआ कि कौरवों की सभा में विराट रूप श्री कृष्ण जी ने दिखाया था तथा यहाँ युद्ध के मैदान में विराट रूप काल (श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके अपना विराट रूप काल) ने दिखाया था। नहीं तो यह नहीं कहता कि यह विराट रूप तेरे अतिरिक्त पहले किसी ने नहीं देखा है। क्योंकि श्री कृष्ण जी अपना विराट रूप कौरवों की सभा में पहले ही दिखा चुके थे।

दूसरी यह बात सिद्ध हुई कि पवित्र गीता जी को बोलने वाला काल (ब्रह्म-ज्योति निरंजन) है, न कि श्री कृष्ण जी। क्योंकि श्री कृष्ण जी ने पहले कभी नहीं कहा कि मैं काल हूँ तथा बाद में कभी नहीं कहा कि मैं काल हूँ। श्री कृष्ण जी काल नहीं हो सकते। उनके दर्शन मात्र को तो दूर-दूर क्षेत्र के स्त्री तथा पुरुष तड़फा करते थे।

नोट :- विराट रूप क्या होता है ?

विराट रूप : आप दिन के समय या चाँदनी रात्री में जब आप के शरीर की छाया छोटी लगभग शरीर जितनी लम्बी हो या कुछ बड़ी हो, उस छाया के सीने वाले स्थान पर दो मिनट तक एक टक देखें, चाहे आँखों से पानी भी क्यों न गिरें। फिर सामने आकाश की तरफ देखें। आपको अपना ही विराट रूप दिखाई देगा, जो सफेद रंग का आसमान को छू रहा होगा। इसी प्रकार प्रत्येक मानव अपना विराट रूप रखता है। परन्तु जिनकी भक्ति शक्ति ज्यादा होती है, उनका उतना ही तेज अधिक होता जाता है।

इसी प्रकार श्री कृष्ण जी भी पूर्व भक्ति शक्ति से सिद्धि युक्त थे, उन्होंने भी अपनी सिद्धि शक्ति से अपना विराट रूप प्रकट कर दिया, जो काल के तेजोमय शरीर (विराट) से कम तेजोमय था। तीसरी बात यह सिद्ध हुई कि पवित्र गीता जी बोलने वाला प्रभु काल सहस्त्रबाहु अर्थात् हजार भुजा युक्त है तथा श्री कृष्ण जी तो श्री विष्णु जी के अवतार हैं जो चार भुजा युक्त हैं। श्री विष्णु जी सोलह कला युक्त हैं तथा श्री ज्योति निरंजन काल भगवान एक हजार कला युक्त है। जैसे एक

बल्ब 60 वाट का होता है, एक बल्ब 100 वाट का होता है, एक बल्ब 1000 वाट का होता है, रोशनी सर्व बल्बों की होती है, परन्तु बहुत अन्तर होता है। ठीक इसी प्रकार दोनों प्रभुओं की शक्ति तथा विराट रूप का तेज भिन्न-भिन्न था।

इस तत्वज्ञान के प्राप्त होने से पूर्व जो गीता जी के ज्ञान को समझाने वाले महात्मा जी थे, उनसे यह दास (रामपाल दास) प्रश्न किया करता था कि पहले तो भगवान श्री कृष्ण जी तीन बार शान्ति दूत बनकर गए थे तथा कहा था कि युद्ध करना महापाप है। जब श्री अर्जुन जी ने स्वयं युद्ध करने से मना करते हुए कहा कि हे देवकी नन्दन मैं युद्ध नहीं करना चाहता हूँ। सामने खड़े स्वजनों व नातियों तथा सैनिकों का होने वाला विनाश देख कर मैंने अटल फैसला कर लिया है कि मुझे तीन लोक का राज्य भी प्राप्त हो तो भी मैं युद्ध नहीं करूँगा। मैं तो चाहता हूँ कि मुझ निहत्थे को दुर्योधन आदि तीर से मार डालें, ताकि मेरी मृत्यु से युद्ध में होने वाला विनाश बच जाए। हे श्री कृष्ण ! मैं युद्ध न करके भिक्षा का अन्न खाकर भी निर्वाह करना उचित समझता हूँ। हे कृष्ण ! स्वजनों को मारकर तो पाप को ही प्राप्त होंगे। मेरी बुद्धि काम करना बंद कर गई है। आप हमारे गुरु हो, मैं आपका शिष्य हूँ। आप जो हमारे हित में हो वही सलाह दीजिए। परन्तु मैं नहीं मानता हूँ कि आपकी कोई भी सलाह मुझे युद्ध के लिए राजी कर पायेगी अर्थात् मैं युद्ध नहीं करूँगा। (प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 1 श्लोक 31 से 39, 46 तथा अध्याय 2 श्लोक 5 से 8)

फिर श्री कृष्ण जी में प्रवेश काल बार-बार कह रहे हैं कि अर्जुन कायर मत बन, युद्ध कर। या तो युद्ध में मारा जाकर स्वर्ग को प्राप्त होगा, या युद्ध जीत कर पृथ्वी के राज्य को भोगेगा, आदि-आदि कह कर ऐसा भयंकर विनाश करवा डाला जो आज तक के संत-महात्माओं तथा सभ्य लोगों के चरित्र में ढूंढने से भी नहीं मिलता है। तब वे नादान गुरु जी (नीम-हकीम) कहा करते थे कि अर्जुन क्षत्री धर्म को त्याग रहा था। इससे क्षत्रित्व को हानि तथा सुरवीरता का सदा के लिए विनाश हो जाता। अर्जुन को क्षत्री धर्म पालन करवाने के लिए यह महाभारत का युद्ध श्री कृष्ण जी ने करवाया था। पहले तो मैं उनकी इस नादानों वाली कहानी से चुप हो जाता था, क्योंकि मुझे स्वयं ज्ञान नहीं था।

पुनर् विचार करें :- भगवान श्री कृष्ण जी स्वयं क्षत्री थे। कंस के वध के उपरान्त श्री अग्रसैन जी ने मथुरा की बाग-डोर अपने दोहते श्री कृष्ण जी को संभलवा दी थी। एक दिन नारद जी ने श्री कृष्ण जी को बताया कि निकट ही एक गुफा में एक सिद्धि युक्त राक्षस राजा मुचकन्द सोया पड़ा है। वह छः महीने सोता है तथा छः महीने जागता है। जागने पर छः महीने युद्ध करता रहता है तथा छः महीने सोने के समय यदि कोई उसकी निन्द्रा भंग कर दे तो मुचकन्द की आँखों से अग्नि बाण छूटते हैं तथा सामने वाला तुरन्त मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, आप सावधान रहना। यह कह कर श्री नारद जी चले गए।

कुछ समय उपरान्त श्री कृष्ण जी को छोटी उम्र में मथुरा के सिंहासन पर बैठा

देख कर एक काल्यवन नामक राजा ने अठारह करोड़ सेना लेकर मथुरा पर आक्रमण कर दिया। श्री कृष्ण जी ने देखा कि दुश्मन की सेना बहु संख्या में है तथा न जाने कितने सैनिक मृत्यु को प्राप्त होंगे, क्यों न काल्यवन का वध मुचकन्द से करवा दूं। यह विचार कर भगवान श्री कृष्ण जी ने काल्यवन को युद्ध के लिए ललकारा तथा युद्ध छोड़ कर (क्षत्री धर्म को भूलकर विनाश टालना आवश्यक जानकर) भाग लिये और उस गुफा में प्रवेश किया जिसमें मुचकन्द सोया हुआ था। मुचकन्द के शरीर पर अपना पीताम्बर (पीली चद्दर) डाल कर श्री कृष्ण जी गुफा में गहरे जाकर छुप गए। पीछे-पीछे काल्यवन भी उसी गुफा में प्रवेश कर गया। मुचकन्द को श्री कृष्ण समझ कर मुचकन्द का पैर पकड़ कर घुमा दिया तथा कहा कि कायर तुझे छुपे हुए को थोड़े ही छोडूंगा। पीड़ा के कारण मुचकन्द की निंद्रा भंग हुई, नेत्रों से अग्नि बाण निकलें तथा काल्यवन का वध हुआ। काल्यवन के सैनिक तथा मंत्री अपने राजा के शव को लेकर वापिस चल पड़े। क्योंकि युद्ध में राजा की मृत्यु सेना की हार मानी जाती थी। जाते हुए कह गए कि हम नया राजा नियुक्त करके शीघ्र ही आयेंगे तथा श्री कृष्ण तुझे नहीं छोड़ेंगे।

श्री कृष्ण जी ने अपने मुख्य अभियन्ता (चीफ इन्जिनियर) श्री विश्वकर्मा जी को बुला कर कहा कि कोई ऐसा स्थान खोजो, जिसके तीन तरफ समुद्र हो तथा एक ही रास्ता (द्वार) हो। वहाँ पर अति शीर्घ एक द्वारिका (एक द्वार वाली) नगरी बना दो। हम शीर्घ ही यहाँ से प्रस्थान करेंगे। ये मूर्ख लोग यहाँ चैन से नहीं जीने देंगे। श्री कृष्ण जी इतने नेक आत्मा तथा युद्ध विपक्षी थे कि अपने क्षत्रीत्व को भी दाव पर रख कर युद्ध को टाला। क्या फिर वही श्री कृष्ण जी अपने प्यारे साथी व संबंधी को युद्ध करने की बुरी सलाह दे सकते हैं तथा स्वयं युद्ध न करने का वचन करने वाले दूसरे को युद्ध की प्रेरणा दे सकते हैं? अर्थात् कभी नहीं। भगवान श्री कृष्ण रूप में स्वयं श्री विष्णु जी ही अवतार धार कर आए थे।

एक समय श्री भृगु ऋषि ने आराम से बैठे भगवान श्री विष्णु जी (श्री कृष्ण जी) के सीने में लात घात किया। श्री विष्णु जी ने श्री भृगु ऋषि जी के पैर को सहलाते हुए कहा कि 'हे ऋषिवर ! आपके कोमल पैर को कहीं चोट तो नहीं आई, क्योंकि मेरा सीना तो कठोर पत्थर जैसा है।' यदि श्री विष्णु जी (श्री कृष्ण जी) युद्ध प्रिय होते तो सुदर्शन चक्र से श्री भृगु जी के इतने टुकड़े कर सकते थे कि गिनती न होती।

वास्तविकता यह है कि काल भगवान जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का प्रभु है, उसने प्रतिज्ञा की है कि मैं अपने शरीर में व्यक्त(मानव सदृश अपने वास्तविक) रूप में सबके सामने नहीं आऊँगा। उसी ने सूक्ष्म शरीर बना कर प्रेत की तरह श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके पवित्र गीता जी का ज्ञान तो सही (वेदों का सार) कहा, परन्तु युद्ध करवाने के लिए अटकल बाजी में भी कसर नहीं छोड़ी। काल (ब्रह्म) कौन है? यह जानने के लिए पढ़िए सृष्टी रचना इसी पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' के पृष्ठ 20 से 65 तक ।

जब तक महाभारत का युद्ध समाप्त नहीं हुआ तब तक ज्योति निरंजन (काल - ब्रह्म - क्षर पुरुष) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश रहा तथा युधिष्ठिर जी से झूठ बुलवाया कि कह दो कि अश्वत्थामा मर गया, भीम के पौते तथा घटोत्कछ के पुत्र बबरु भान का शीश कटवाया तथा स्वयं रथ के पहिए को हथियार रूप में उठाया, यह सर्व काल ही का किया-कराया उपद्रव था, प्रभु श्री कृष्ण जी का नहीं। महाभारत का युद्ध समाप्त होते ही काल भगवान श्री कृष्ण जी के शरीर से निकल गया। श्री कृष्ण जी ने श्री युधिष्ठिर जी को इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) की राजगद्दी पर बैठाकर स्वयं द्वारिका जाने को कहा। तब अर्जुन आदि ने प्रार्थना की कि हे श्री कृष्ण जी! आप हमारे पूज्य गुरुदेव हो, हमें एक सत्संग सुना कर जाना, ताकि हम आपके सद्वचनों पर चल कर अपना आत्म-कल्याण कर सकें।

यह प्रार्थना स्वीकार करके श्री कृष्ण जी ने तिथि, समय तथा स्थान निहित कर दिया। निश्चित तिथि को श्री अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण जी से कहा कि प्रभु आज वही पवित्र गीता जी का ज्ञान ज्यों का त्यों सुनाना, क्योंकि मैं बुद्धि के दोष से भूल गया हूँ। तब श्री कृष्ण जी ने कहा कि हे अर्जुन तू निश्चय ही बड़ा श्रद्धाहीन है। तेरी बुद्धि अच्छी नहीं है। ऐसे पवित्र ज्ञान को तूं क्यों भूल गया ? फिर स्वयं कहा कि अब उस पूरे गीता ज्ञान को मैं नहीं कह सकता अर्थात् मुझे ज्ञान नहीं। कहा कि उस समय तो मैंने योग युक्त होकर बोला था। विचारणीय विषय है कि यदि भगवान श्री कृष्ण जी युद्ध के समय योग युक्त हुए होते तो शान्ति समय में योग युक्त होना कठिन नहीं था। जबकि श्री व्यास जी ने वही पवित्र गीता जी का ज्ञान वर्षों उपरान्त ज्यों का त्यों लिपिबद्ध कर दिया। उस समय वह ब्रह्म (काल-ज्योति निरंजन) श्री व्यास जी के शरीर में प्रवेश कर गया तथा पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी को लिपिबद्ध करवा दिया, जो अब आप के कर कमलों में है।

प्रमाण के लिए संक्षिप्त महाभारत पृष्ठ नं. 667 तथा पुराने के पृष्ठ नं. 1531 पर :-

न शक्यं तन्मया भूयस्तथा वक्तुमशेषतः।। परं हि ब्रह्म कथितं योगयुक्तेन तन्मया।

(महाभारत, आश्रव 1612-13)

भगवान बोले – 'वह सब–का–सब उसी रूपमें फिर दुहरा देना अब मेरे वशकी बात नहीं है। उस समय मैंने योगयुक्त होकर परमात्मतत्वका वर्णन किया था।'

संक्षिप्त महाभारत द्वितीय भाग के

पृष्ठ नं. 1531 से सहाभार :

('श्रीकृष्णका अर्जुनसे गीता का विषय पूछना सिद्ध महर्षि वैशम्पायन और काश्यपका संवाद') – पाण्डुनन्दन अर्जुन श्रीकृष्णके साथ रहकर बहुत प्रसन्न थे। उन्होंने एक बार उस रमणीय सभाकी ओर दृष्टि डालकर भगवान्से यह वचन कहा ––'देवकीनन्दन! जब युद्धका अवसर उपस्थित था, उस समय मुझे आपके माहात्म्यका ज्ञान और ईश्वरीय स्वरूपका दर्शन हुआ था, किंतु केशव! आपने स्नेहवश पहले मुझे जो ज्ञानका उपदेश किया था, वह सब इस समय बुद्धिके दोषसे भूल गया है। उन विषयोंको सुननेके लिये बारंबार मेरे मनमें उत्कण्ठा होती है, इधर, आप जल्दी ही द्वारका जानेवाले हैं। अतः पुनः वह सब विषय मुझे सुना दीजिये।

वैशम्पायनजी कहते हैं ——अर्जुनके ऐसा कहनेपर वक्ताओं में श्रेष्ठ महातेजस्वी भगवान् श्रीकृष्णने उन्हें गलेसे लगाकर इस प्रकार उत्तर दिया।

श्रीकृष्ण बोले ——अर्जुन ! उस समय मैंने तुम्हें अत्यन्त गोपनीय विषयका श्रवण कराया था, अपने स्वरूपभूत धर्म सनातन पुरुषोत्तमतत्त्वका परिचय दिया था और (शुक्ल–कृष्ण गतिका निरूपण करते हुए) नित्य लोकोंका भी वर्णन किया था। किंतु तुमने जो अपनी नासमझीके कारण उस उपदेशको याद नहीं रखा यह जानकर मुझे बड़ा खेद हुआ है। उन बातोंका अब पूरा–पूरा स्मरण होना सम्भव नहीं जान पड़ता। पाण्डुनन्दन ! निश्चय ही तुम बड़े श्रद्धाहीन हो, तुम्हारी बुद्धि अच्छी नहीं जान पड़ती। अब मेरे लिये उस उपदेशको ज्यों–का–त्यों दुहरा देना कठिन है, क्योंकि उस समय योगयुक्त होकर मैंने परमात्मतत्त्वका वर्णन किया था। (अधिक जानकारी के लिए पढ़ें – 'संक्षिप्त महाभारत द्वितीय भाग')

"विचार करें :– उपरोक्त महाभारत के लेखों व श्री विष्णु पुराण के लेखों व श्रीमद् भगवद् गीता जी के लेखों के प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि श्री कृष्ण जी ने श्रीमद् भगवद् गीता जी का ज्ञान नहीं बोला। यह तो काल रूपी ब्रह्म (ज्योति निरंजन) अर्थात् महाविष्णु जी ने प्रेतवश श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रविष्ट होकर बोला था।"

अन्य प्रमाण :-- 1. श्री विष्णु पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) चतुर्थ अंश अध्याय दूसरा श्लोक 26 में पृष्ठ 233 पर विष्णु जी (महाविष्णु अर्थात् काल रूपी ब्रह्म) ने देव तथा राक्षसों के युद्ध के समय देवताओं की प्रार्थना स्वीकार करके कहा है कि मैं राजऋषि शशाद के पुत्र पुरन्ज्य के शरीर में अंश मात्र अर्थात् कुछ समय के लिए प्रवेश करके राक्षसों का नाश कर दूंगा।

2. श्री विष्णु पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित) चतुर्थ अंश अध्याय तीसरा श्लोक 6 में पृष्ठ 242 पर श्री विष्ण जी ने गंधर्वो व नागों के युद्ध में नागों का पक्ष लेते हुए कहा है कि "मैं (महाविष्णु अर्थात् काल रूपी ब्रह्म) मानधाता के पुत्र पुरूकुत्स में प्रविष्ट होकर उन सम्पूर्ण दुष्ट गंधर्वो का नाश कर दूंगा"।

अन्य प्रमाण :- कुछ समय उपरान्त श्री युधिष्ठिर जी को भयंकर स्वपन आने लगे। श्री कृष्ण जी से कारण तथा समाधान पूछा तो बताया कि तुमने युद्ध में जो पाप किए हैं वह नर संहार का दोष तुम्हें दुःख दाई हो रहा है। इसके लिए एक यज्ञ करो। श्री कृष्ण जी के मुख कमल से यह वचन सुन कर श्री अर्जुन को बहुत दुःख हुआ तथा मन ही मन विचार करने लगा कि भगवान श्री कृष्ण जी पवित्र गीता बोलते समय तो कह रहे थे कि अर्जुन तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा, तूं युद्ध कर ले (पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38)। यदि युद्ध में मारा भी गया तो स्वर्ग का सुख भोगेगा, अन्यथा युद्ध में जीत कर पृथ्वी के राज्य का आनन्द लेगा। अर्जुन ने विचार किया कि जो समाधान दुःख निवार्ण का श्री कृष्ण जी ने बताया है इसमें करोड़ों रूपया व्यय होना है। जिससे बड़े भाई युधिष्ठिर का कष्ट निवार्ण होगा। यदि मैं श्री कृष्ण जी से वाद-विवाद करूंगा कि आप पवित्र गीता जी का ज्ञान देते समय तो कह रहे थे कि तुम्हें पाप नहीं लगेगा। अब उसके विपरीत कह रहे हो। इससे मेरा बड़ा भाई यह न सोच बैठे कि करोड़ों रूपये के खर्च को देख कर अर्जुन बौखला गया है तथा मेरे कष्ट निवार्ण से प्रसन्न नहीं है। इसलिए मौन रहना उचित

जान कर सहर्ष स्वीकृति दे दी कि जैसा आप कहोगे वैसा ही होगा। श्री कृष्ण जी ने उस यज्ञ की तिथि निर्धारित कर दी। वह यज्ञ भी श्री सुदर्शन स्वपच के भोजन खाने से सफल हुई।

कुछ समय उपरान्त ऋषि दुर्वासा जी के शापवश सर्व यादव कुल विनाश हो गया, श्री कृष्ण भगवान के पैर के तलुवे में एक शिकारी (जो त्रेतायुग में सुग्रीव के भाई बाली की ही आत्मा थी) ने विषाक्त तीर मार दिया। तब पाँचों पाण्डवों के घटना स्थल पर पहुँच जाने के उपरान्त श्री कृष्ण जी ने कहा कि आप मेरे शिष्य हो मैं आप का धार्मिक गुरु भी हूँ। इसलिए मेरी अन्तिम आज्ञा सुनो। एक तो यह है कि अर्जुन, द्वारिका की सर्व स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) ले जाना, क्योंकि यहाँ कोई नर नहीं बचा है तथा दूसरे आप सर्व पाण्डव राज्य त्याग कर हिमालय में साधना करके शरीर को गला देना। क्योंकि तुमने महाभारत के युद्ध के दौरान जो हत्याऐं की थी, तुम्हारे शीश पर वह पाप बहुत भयंकर है। उस समय अर्जुन अपने आप को नहीं रोक सका तथा कहा प्रभु वैसे तो आप ऐसी स्थिति में हैं कि मुझे ऐसी बातें नहीं करनी चाहिऐं, परन्तु प्रभु यदि आज मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ तो मैं चैन से मर भी नहीं पाऊँगा। पूरा जीवन रोता रहूँगा। श्री कृष्ण जी ने कहा अर्जुन पूछ ले जो कुछ पूछना है, मेरी अन्तिम घड़ियाँ हैं। श्री अर्जुन ने आँखों में आंसू भर कर कहा कि प्रभु बुरा न मानना। जब आपने पवित्र गीता जी का ज्ञान कहा था उस समय मैं युद्ध करने से मना कर रहा था। आपने कहा था कि अर्जुन तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। यदि युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को प्राप्त होगा और यदि विजयी हुआ तो पृथ्वी का राज्य भोगेगा तथा तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा। हमने आप ही की देख-रेख व आज्ञानुसार युद्ध किया (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 37-38)। हे भगवन ! हमारे तो एक हाथ में भी लड्डू नहीं रहा। न तो युद्ध में मर कर स्वर्ग प्राप्ति हुई तथा अब राज्य त्यागने का आदेश आप दे रहे हैं, न ही पृथ्वी के राज्य का आनन्द ही भोग पाए। ऐसा छल युक्त व्यवहार करने में आपका क्या स्वार्थ था? अर्जुन के मुख से यह वचन सुन कर युधिष्ठिर जी ने कहा कि अर्जुन ऐसी स्थिति में जब कि भगवान अन्तिम स्वांस गिन रहे हैं आपका शिष्टाचार रहित व्यवहार शोभा नहीं देता। श्री कृष्ण जी ने कहा अर्जुन आज मैं अन्तिम स्थिति में हूँ, तुम मेरे अत्यन्त प्रिय हो, आज वास्तविकता बताता हूँ कि कोई खलनायक जैसी ओर शक्ति है जो अपने को यन्त्र की तरह नचाती रही, मुझे कुछ मालूम नहीं मैंने गीता में क्या बोला था। परन्तु अब मैं जो कह रहा हूँ वह तुम्हारे हित में है। श्री कृष्ण जी यह वचन अश्रुयुक्त नेत्रों से कह कर प्राण त्याग गए। उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि पवित्र गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण जी ने नहीं कहा। यह तो ब्रह्म (ज्योति निरंजन-काल) ने बोला है, जो इक्कीश ब्रह्मण्ड का स्वामी है। काल (ब्रह्म) कौन है? यह जानने के लिए कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक में पृष्ठ 20 से 65 तक।

श्री कृष्ण सहित सर्व यादवों का अन्तिम संस्कार कर अर्जुन को छोड़ कर चारों

भाई इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) चले गए। पीछे से अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों को लिए आ रहा था। रास्ते में जंगली लोगों ने सर्व गोपियों को लूटा तथा कुछेक को भगा ले गए तथा अर्जुन को पकड़ कर पीटा। अर्जुन के हाथ में वही गांडीव धनुष था जिससे महाभारत के युद्ध में अनगिनत हत्याऐं कर डाली थी, वह भी नहीं चला। तब अर्जुन ने कहा कि यह श्री कृष्ण वास्तव में झूठा तथा कपटी था। जब युद्ध में पाप करवाना था तब तो मुझे शक्ति प्रदान कर दी, एक तीर से सैकड़ों योद्धाओं को मार गिराता था और आज वह शक्ति छीन ली, खड़ा-खड़ा पिट रहा हूँ। इसी विषय में पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब (कविर्देव) जी का कहना है कि श्री कृष्ण जी कपटी व झूठे नहीं थे। यह सर्व जुल्म काल (ज्योति निरंजन) कर रहा है। जब तक यह आत्मा कबीर परमेश्वर (सतपुरुष) की शरण में पूरे सन्त (तत्वदर्शी) के माध्यम से नहीं आ जाएगी, तब तक काल इसी तरह कष्ट पर कष्ट देता रहेगा। पूर्ण जानकारी तत्वज्ञान से होती है। इसीलिए काल कौन है ? यह जानने के लिए कृप्या पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 20 से 65 तक।

विशेष विचार :- उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान श्री कृष्ण ने नहीं बोला, यह तो श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश होकर ब्रह्म (काल अर्थात् ज्योति निरंजन) ने बोला था।

“श्रीमद् भगवत् गीता सार”

परमेश्वर की खोज में आत्मा युगों से लगी है। जैसे प्यासे को जल की चाह होती है। जीवात्मा परमात्मा से बिछुड़ने के पश्चात् महा कष्ट झेल रही है। जो सुख पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) के सतलोक (ऋतधाम) में था, वह सुख यहाँ काल (ब्रह्म) प्रभु के लोक में नहीं है। चाहे कोई करोड़पति है, चाहे पृथ्वीपति(सर्व पृथ्वी का राजा) है, चाहे सुरपति(स्वर्ग का राजा इन्द्र) है, चाहे श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव त्रिलोकपति हैं। क्योंकि जन्म तथा मृत्यु तथा किये कर्म का भोग अवश्य ही प्राप्त होता है (प्रमाण गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5)। इसीलिए पवित्र श्रीमद् भगवद् गीता के ज्ञान दाता प्रभु (काल भगवान) ने अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि अर्जुन सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उसकी कृपा से ही तू परम शांति को तथा सतलोक (शाश्वतम् स्थानम्) को प्राप्त होगा। उस परमेश्वर के तत्व ज्ञान व भक्ति मार्ग को मैं (गीता ज्ञान दाता) नहीं जानता। उस तत्व ज्ञान को तत्वदर्शी संतों के पास जा कर उनको दण्डवत प्रणाम कर तथा विनम्र भाव से प्रश्न कर, तब वे तत्वदृष्टा संत आपको परमेश्वर का तत्व ज्ञान बताएंगे। फिर उनके बताए भक्ति मार्ग पर सर्व भाव से लग जा (प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34)। तत्वदर्शी संत की पहचान गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में बताते हुए कहा है कि यह संसार उल्टे लटके हुए वृक्ष की तरह है। जिसकी ऊपर को मूल तथा नीचे को शाखा है। जो इस संसार रूपी वृक्ष के विषय में जानता है वह तत्वदर्शी संत है। गीता अध्याय 15 श्लोक 2 से 4 में कहा

है कि उस संसार रूपी वृक्ष की तीनों गुण (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) रूपी शाखा है। जो (स्वर्ग लोक, पाताल लोक तथा पृथ्वी लोक) तीनों लोकों में ऊपर तथा नीचे फैली हैं। उस संसार रूपी उल्टे लटके हुए वृक्ष के विषय में अर्थात् सृष्टी रचना के बारे में मैं इस गीता जी के ज्ञान में नहीं बता पाऊंगा। यहां विचार काल में (गीता ज्ञान) जो ज्ञान आपको बता रहा हूँ यह पूर्ण ज्ञान नहीं है। उसके लिए गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में संकेत किया है जिसमें कहा है कि पूर्ण ज्ञान (तत्व ज्ञान) के लिए तत्वदर्शी संत के पास जा, वही बताएंगे। मुझे पूर्ण ज्ञान नहीं है। गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत की प्राप्ति के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर (जिसके विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है) की खोज करनी चाहिए। जहां जाने के पश्चात् साधक पुनर् लौटकर वापिस नहीं आता अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करता है। जिस पूर्ण परमात्मा से उल्टे संसार रूपी वृक्ष की प्रवृत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है। भावार्थ है कि जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है तथा मैं (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म) भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर अर्थात् पूर्ण परमात्मा की शरण हूँ। उसकी साधना करने से अनादि मोक्ष (पूर्ण मोक्ष) प्राप्त होता है।

तत्वदर्शी संत वही है जो ऊपर को मूल तथा नीचे को तीनों गुण (रजगुण-ब्रह्म जी, सतगुण-विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) रूपी शाखाओं तथा तना व मोटी डार की पूर्ण जानकारी प्रदान करता है। (कृप्या देखें उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र)

अपने द्वारा रची सृष्टी का पूर्ण ज्ञान (तत्वज्ञान) स्वयं ही पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने तत्वदर्शी संत की भूमिका करके (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी द्वारा बताया है (प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 से 20 तक तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 1 से 5 तथा अथर्ववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मंत्र 1 से 7 में)।

कबीर, अक्षर पुरुष एक पेड़ है, ज्योति निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

पवित्र गीता जी में भी तीन प्रभुओं (1. क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म, 2. अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म तथा 3. परम अक्षर पुरुष अर्थात् पूर्णब्रह्म) के विषय में वर्णन है। प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17, अध्याय 8 श्लोक 1 का उत्तर श्लोक 3 में है वह परम अक्षर ब्रह्म है तथा तीन प्रभुओं का एक और प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 25 में गीता ज्ञान दाता काल (ब्रह्म) ने अपने विषय में कहा है कि मैं अव्यक्त हूँ। यह प्रथम अव्यक्त प्रभु हुआ। फिर गीता अध्याय 8 श्लोक 18 में कहा है कि यह संसार दिन के समय अव्यक्त(परब्रह्म) से उत्पन्न हुआ है। फिर रात्री के समय उसी में लीन हो जाता है। यह दूसरा अव्यक्त हुआ। अध्याय 8 श्लोक 20 में कहा है कि उस अव्यक्त से भी दूसरा जो अव्यक्त(पूर्णब्रह्म) है वह परम दिव्य पुरुष सर्व प्राणियों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। यह तीसरा अव्यक्त हुआ। यही प्रमाण गीता अध्याय 2 श्लोक
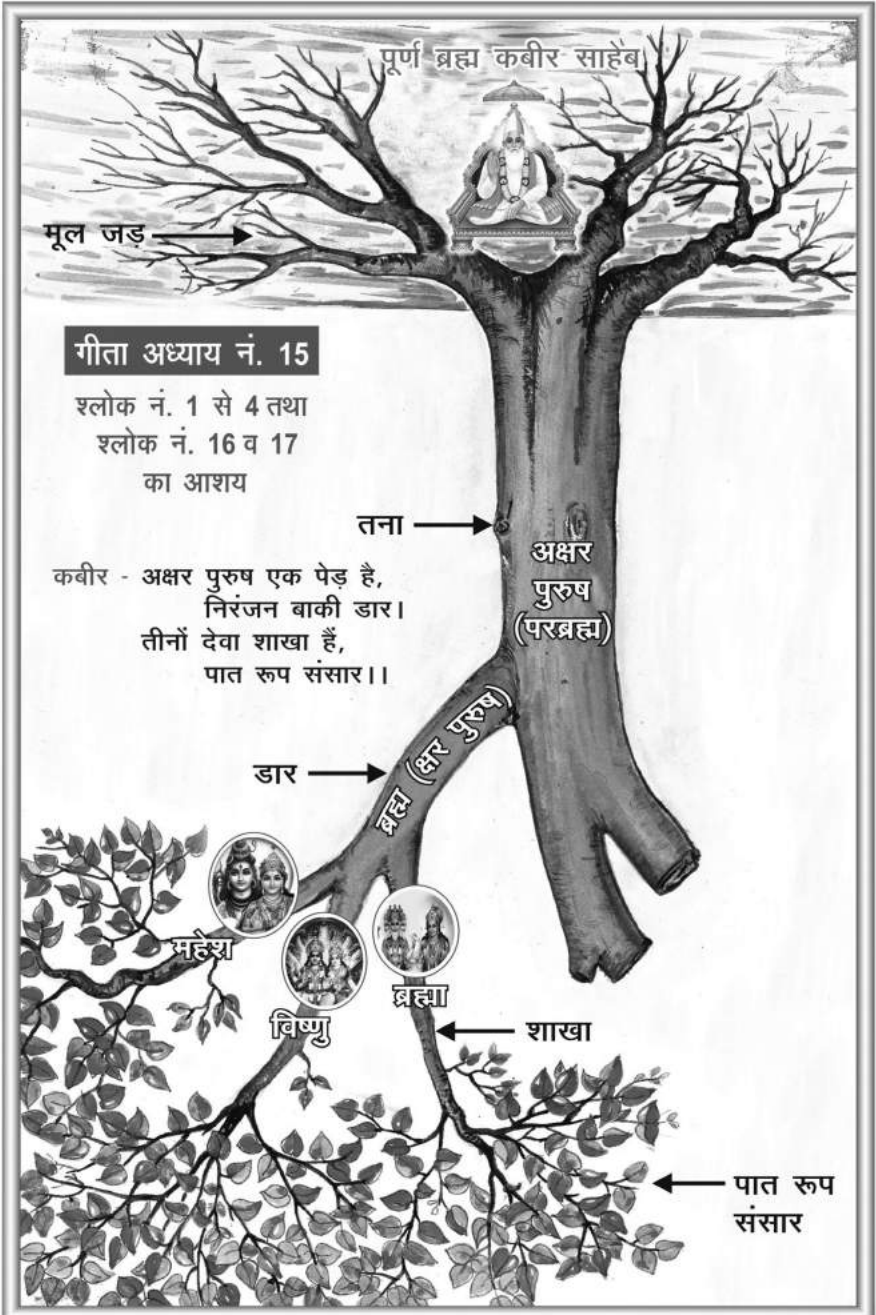
ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

17 में भी है कि नाश रहित उस परमात्मा को जान जिसका नाश करने में कोई समर्थ नहीं है। अपने विषय में गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) प्रभु अध्याय 4 मंत्र 5 तथा अध्याय 2 श्लोक 12 में कहा है कि मैं तो जन्म-मृत्यु में अर्थात् नाशवान हूँ।

उपरोक्त संसार रूपी वृक्ष की मूल (जड़) तो परम अक्षर पुरुष अर्थात् पूर्ण ब्रह्म कविर्देव है। इसी को तीसरा अव्यक्त प्रभु कहा है। वृक्ष की मूल से ही सर्व पेड़ को आहार प्राप्त होता है। इसीलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि वास्तव में परमात्मा तो क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म तथा अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म से भी अन्य ही है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है वही वास्तव में अविनाशी है।

1. क्षर का अर्थ है नाशवान। क्योंकि ब्रह्म अर्थात् गीता ज्ञान दाता ने तो स्वयं कहा है कि अर्जुन तू तथा मैं तो जन्म-मृत्यु में हैं (प्रमाण गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5 में)।

2. अक्षर का अर्थ है अविनाशी। यहां परब्रह्म को भी स्थाई अर्थात् अविनाशी कहा है। परंतु यह भी वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह चिर स्थाई है जैसे एक मिट्टी का प्याला है जो सफेद रंग का चाय पीने के काम आता है। वह तो गिरते ही टूट जाता है। ऐसी स्थिति ब्रह्म (काल अर्थात् क्षर पुरुष) की जानें। दूसरा प्याला इस्पात (स्टील) का होता है। यह मिट्टी के प्याले की तुलना में अधिक स्थाई (अविनाशी) लगता है परंतु इसको भी जंग लगता है तथा नष्ट हो जाता है, भले ही समय ज्यादा लगे। इसलिए यह भी वास्तव में अविनाशी नहीं है। तीसरा प्याला सोने (स्वर्ण) का है। स्वर्ण धातु वास्तव में अविनाशी है जिसका नाश नहीं होता।

जैसे परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को अविनाशी भी कहा है तथा वास्तव में अविनाशी तो इन दोनों से अन्य है, इसलिए अक्षर पुरुष को अविनाशी भी नहीं कहा है । कारण :- सात रजगुण ब्रह्मा की मृत्यु के पश्चात् एक सतगुण विष्णु की मृत्यु होती है। सात सतगुण विष्णु की मृत्यु के पश्चात् एक तमगुण शिव की मृत्यु होती है। जब तमगुण शिव की 70 हजार बार मृत्यु हो जाती है तब एक क्षर पुरुष (ब्रह्म) की मृत्यु होती है। यह परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का एक युग होता है। ऐसे एक हजार युग का परब्रह्म का एक दिन तथा इतनी ही रात्री होती है। तीस दिन रात का एक महीना, बारह महीनों का एक वर्ष तथा सौ वर्ष की परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की आयु है। तब यह परब्रह्म तथा सर्व ब्रह्मण्ड जो सतलोक से नीचे के हैं नष्ट हो जाते हैं। कुछ समय उपरांत सर्व नीचे के ब्रह्मण्डों (ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों) की रचना पूर्ण ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर पुरुष करता है। इस प्रकार यह तत्व ज्ञान समझना है। परन्तु परम अक्षर पुरुष अर्थात् पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) तथा उसका सतलोक (ऋतधाम) सहित ऊपर के अलखलोक, अगम लोक तथा अनामी लोक कभी नष्ट नहीं होते।

इसीलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि वास्तव में उत्तम प्रभु अर्थात् पुरुषोत्तम तो ब्रह्म (क्षर पुरुष) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) से अन्य ही है जो

पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) है। वही वास्तव में अविनाशी है। वही सर्व का धारण-पोषण करने वाला संसार रूपी वृक्ष की मूल रूपी पूर्ण परमात्मा है। वृक्ष का जो भाग जमीन के तुरंत बाहर नजर आता है वह तना कहलाता है। उसे अक्षर पुरुष (परब्रह्म) जानो। तने को भी आहार मूल (जड़) से प्राप्त होता है। फिर तने से आगे वृक्ष की कई डार होती हैं उनमें से एक डार ब्रह्म (क्षर पुरुष) है। इसको भी आहार मूल (जड़) अर्थात् परम अक्षर पुरुष से ही प्राप्त होता है। उस डार (क्षर पुरुष/ब्रह्म) की मानों तीन गुण (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु तथा तमगुण-शिव) रूपी शाखाएं हैं। इन्हें भी आहार मूल (परम अक्षर पुरुष अर्थात् पूर्णब्रह्म) से ही प्राप्त होता है। इन तीनों शाखाओं से पात रूप में अन्य प्राणी आश्रित हैं। उन्हें भी वास्तव में आहार मूल (परम अक्षर पुरुष अर्थात् पूर्णब्रह्म) से ही प्राप्त होता है। इसीलिए सर्व को पूज्य पूर्ण परमात्मा ही सिद्ध हुआ। यह भी नहीं कहा जा सकता कि पत्तों तक आहार पहुंचाने में तना, डार तथा शाखाओं का कोई योगदान नहीं है। इसलिए सर्व आदरणीय हैं, परन्तु पूजनीय तो केवल मूल (जड़) ही होती है। आदर तथा पूजा में अंतर होता है। जैसे पतिव्रता स्त्री सत्कार तो सर्व का करती है, जैसे जेठ का बड़े भाई सम, देवर का छोटे भाई सम, परन्तु पूजा अपने पति की ही करती है अर्थात् जो भाव अपने पति में होता है ऐसा अन्य पुरुष में पतिव्रता स्त्री का नहीं हो सकता।

दूसरा उदाहरण - एक समय हरियाणा प्रांत में बाढ़ आई थी। उस समय छः सौ करोड़ का नुकसान हुआ था। उसकी पूर्ति हरियाणा सरकार नहीं कर सकती थी, क्योंकि हरियाणा सरकार का पूरे वर्ष का बजट ही नौ सौ करोड़ रूपये का था। देश के प्रधान मंत्री जी ने वह क्षति पूर्ति की थी। उस छः सौ करोड़ रूपयों का वितरण हरियाणा सरकार के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने किया था। राहत प्राप्तकर्ता जो अनजान हैं, वे उस वितरण कर्ता को ही राहत कर्ता मान लेते हैं। उन्हीं से भविष्य में भी अन्य राहत की आशा करते रहते हैं। उसी की पूजा (रिश्वत आदि देना) करते रहते हैं। परन्तु जो शिक्षित हैं वे जानते हैं कि इस कर्मचारी का कितना योगदान है। वे आदर तो करते हैं परन्तु पूजा (रिश्वत आदि देना) नहीं करते। न ही अन्य कार्य की सिद्धि की आशा करते।

बाढ़ राहत राशि वितरण के पश्चात् उसी क्षेत्र में प्रांत के मंत्री जी आए, उन्होंने कहा कि मैंने आप के क्षेत्र में दस लाख रूपया दिया। उसी गाँव की सूची से नाम पढ़कर सुनाए 1. रामअवतार को दस हजार रूपये ... आदि दिया। फिर प्रांत के मुख्यमंत्री जी उसी गाँव में आए। उन्होंने भी वही सूची पढ़ी तथा कहा कि मैंने आपके गाँव में दस लाख रूपये दिये 1. रामअवतार को दस हजार रूपये .. ... आदि दिए। फिर उसी गाँव में देश के प्रधानमंत्री जी आए। उन्होंने भी कहा मैंने आपके गाँव को दस लाख रूपये दिए तथा वही सूची पढ़कर सुनाई जिसमें लिखा था 1. रामअवतार को दस हजार रूपये दिए। रामअवतार कह रहा है कि यह सब झूठ बोल रहे हैं। मुझे तो रूपये पटवारी ने दिए हैं। वह अनजान

रामअवतार अज्ञानता वश गाँव के पटवारी जी की ही पूजा कर अपने अन्य सर्व कार्यों की सिद्धि चाहता है। जो शिक्षित हैं वे जान लेते हैं कि प्रधानमंत्री जी राहत नहीं देते तो मुख्यमंत्री जी, मंत्री जी तथा पटवारी जी कुछ नहीं दे सकते थे। यदि मुख्यमंत्री जी भी अपने राहत कोश से राशी वितरण करते तो सौ-सौ रूपये कठिनता से बाढ़ पीड़ितों को दे पाते जो नाम मात्र होती। इस प्रकार समझदार व्यक्ति जान लेता है कि किसकी कितनी औकात (क्षमता) है। उसी आधार से उनमें आस्था रहती है। अनादरणीय कोई नहीं होता, परन्तु पूजा के लिए सोच-समझ कर चयन करता है। ठीक इसी प्रकार गीता अध्याय 2 श्लोक 46 में कहा है कि अर्जुन बहुत बड़े जलाशय की (जिसका जल दस वर्ष भी वर्षा न हो तो भी समाप्त नहीं होता) प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाशय (जिसका जल एक वर्षा न होने से ही समाप्त हो जाता है) में जैसी आस्था रह जाती है, इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा से मिलने वाले लाभ के ज्ञान से परिचित होने के पश्चात् तेरी आस्था अन्य प्रभुओं में वैसी ही रह जाएगी। वह छोटा जलाशय बुरा नहीं लगता, परन्तु उसकी क्षमता का पता है कि यह तो काम चलाऊ है।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में कहा है कि तीनों गुणों से जो कुछ भी हो रहा है (जैसे रजगुण-ब्रह्मा से जीवों की उत्पत्ति, सतगुण-विष्णु से स्थिति तथा तमगुण-शिव से संहार) इसका मुख्य कारण मैं (ब्रह्म/काल) ही हूँ। जो साधक तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की पूजा करते हैं वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझ ब्रह्म की भक्ति भी नहीं करते। फिर अपनी भक्ति को अति घटिया (अनुत्तमाम्) कहा है। गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में, इसीलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा की भक्ति करने से ही पूर्ण लाभ पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है। जो शास्त्र विधि अनुसार भक्ति है तथा अन्य प्रभुओं की ईष्ट रूप में साधना शास्त्र विधि के विरुद्ध होने से व्यर्थ है (प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में)।

जैसे आम का पौधा नर्सरी से ला कर उसके मूल को जमीन में गड्डा खोद कर दबाएगें। फिर मूल की सिंचाई (पूजा) करेंगे तो पौधा बड़ा होगा तथा पेड़ बन जाएगा। फिर शाखाओं को फल लगेंगे। यदि कोई शाखाओं को जमीन में दबा कर, मूल ऊपर को करके पौधे की सिंचाई करेगा तो पौधा सूख जाएगा। (कृप्या देखें सीधा बीजा हुआ व उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधे का चित्र इसी पुस्तक के पृष्ठ 197-198 पर)

भावार्थ है कि साधक को पूर्ण परमात्मा (मूल) की साधना (पूजा) ईष्ट रूप में करने से उसका फल तीनों ब्रह्मा, विष्णु, शिव (शाखाऐं) ही प्रदान करेंगे। क्योंकि यह भगवान किए कर्म का फल ज्यों का त्यों ही देते हैं।

यदि आपको किसी कंपनी में नौकरी प्राप्त करनी है तो पूजा कंपनी (फैक्ट्री) के मालिक की करनी होती है। उसे प्रार्थना पत्र द्वारा याचना करके नौकरी प्राप्त करनी होती है। फिर भी नौकरी (पूजा) मालिक की ही करता है। जैसे जो कार्य

उस नौकर को बताया जाता है वह अपने सेवा काल में करता है। यह पूजा (नौकरी) मालिक की हुई। नौकरी (पूजा) का किया मेहनताना उस मालिक के अन्य नौकर (कर्मचारी या अधिकारी) देता है। जैसे शिफ्ट ऑफिसर उपस्थिति के आधार पर मेहनताना (किया कर्म का फल) बना कर खजाँची (कैशियर) के पास भेजता है। वहाँ से उस नौकर (सेवक) को सेवा (पूजा) का फल प्राप्त होता है। शिफ्ट ऑफिसर तथा कैशियर केवल किया कर्म ही देते हैं। उसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। न तो एक रूपया अधिक दे सकते हैं तथा न ही कम कर सकते हैं। यदि वह कंपनी के मालिक का नौकर (पुजारी) नेक नीति से नौकरी (पूजा) मालिक की करता है तो मालिक ही उसी सेवा की धनराशि में वृद्धि कर देता है तथा अलग से ईनाम रूप में धन राशि अधिक दे देता है। यदि कोई मालिक की नौकरी (पूजा) त्याग कर अन्य अधिकारियों की नौकरी (पूजा) करने लग जाए तो उसको मालिक से मिलने वाला धन लाभ बंद हो जाता है। जिस कारण से वह नादान निर्धन हो जाता है। अधिकारीगण उसे उतना मेहनताना नहीं दे सकते। फैक्ट्री मालिक की तुलना में बहुत कम सुविधा मिलने के कारण वह अन्य अधिकारियों का सेवक अर्थात् एक मालिक को त्याग कर आन उपासना करने वाला व्यक्ति महादुःखी हो जाता है।कृप्या इसी प्रकार तत्वज्ञान के आधार से पवित्र श्रीमद् भगवत गीता जी के ज्ञान को समझें।

पूर्णब्रह्म कुल मालिक की पूजा त्याग कर अन्य देवताओं की पूजा करने से साधक को पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं होता तथा साधक साधना करते-करते भी महाकष्ट उठाता रहता है।

इसीलिए पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 तक तीनों गुणों अर्थात् तीनों देवताओं (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु तथा तमगुण-शिवजी) की पूजा करने वालों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख कहा है कि वे मेरी (ब्रह्म क्षर पुरुष अर्थात् फैक्ट्री मालिक के शिफ्ट ऑफिसर की) पूजा (नौकरी) नहीं करते। भावार्थ है कि जो तीनों देवताओं तथा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं (कैशियर की नौकरी करते हैं) उन्हें मूर्ख तथा राक्षस स्वभाव वाले राक्षस कहा है। जैसे जिस व्यक्ति की आय का साधन कम होता है वह कुछ हेरा-फेरी अवश्य करता है। कभी चोरी या मिलावट आदि छल-कपट का मार्ग अपनाता है। जिस कारण समाज में हेय हो जाता है तथा दारिद्र हो जाता है। इसी प्रकार तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिवजी) व अन्य देवताओं की पूजा से पूर्ण लाभ प्राप्त नहीं होता। जिस कारण से साधक झूठ कपट तथा अन्य विकार भी करता रहता है। फिर पाप कर्म का दण्ड भी भोगना पड़ता है। इसलिए ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष (शिफ्ट ऑफिसर) कह रहा है कि ये नादान साधक मेरी पूजा (नौकरी) भी नहीं करते। मैं इन ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव से अधिक मेहनताना (किया कर्म का धन) दे सकता हूँ जो उपरोक्त प्रभुओं से ज्यादा होता है। फिर गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि मेरी पूजा (नौकरी) भी पूर्ण

लाभदायक नहीं है। इसलिए अपनी पूजा को भी गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म/ क्षर पुरुष) प्रभु ने (अनुत्तमाम्) अति घटिया अर्थात् अति निम्न स्तर की कहा है। इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से तू परम शांति को तथा सतलोक (शाश्वत् स्थान) को प्राप्त होगा। वहाँ जाने के बाद साधक का पुनर् जन्म नहीं होता अर्थात् अनादि मोक्ष (पूर्ण मोक्ष) प्राप्त हो जाता है तथा गीता ज्ञान दाता प्रभु (क्षर पुरुष/ ब्रह्म) कह रहा है कि मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ। गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 18 व 20 से 23 को समझने के लिए कृप्या निम्न विवरण ध्यान पूवर्क पढें।

''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टी-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा – अहम् महेश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा (42)।

हिन्दी अनुवाद :- (विष्णु जी ने कहा) हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही

प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, हम सर्व की जननी अर्थात् उत्पन्न करने वाली माता हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।(42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

तीसरा स्कंद पृष्ठ 14, अध्याय 5 श्लोक 43 :- एकमेवा द्वितीयं यत् ब्रह्म वेदा वदंति वै। सा किं त्वम् वाऽप्यसौ वा किं संदेहं विनिवर्तय (43)

अनुवाद :- जो कि वेदों में अद्वितीय केवल एक पूर्ण ब्रह्म कहा है क्या वह आप ही हैं या कोई और है? मेरी इस शंका का निवार्ण करें। ब्रह्मा जी की प्रार्थना पर देवी ने कहा -

देव्युवाच सदैकत्वं न भेदोऽस्ति सर्वदैव ममास्य च।। योऽसौ साऽहमहं योऽसौ भेदोऽस्ति मतिविभ्रमात्।।2।। आवयोरंतरं सूक्ष्मं यो वेद मतिमान्हि सः।। विमुक्तः स तू संसारान्मुच्यते नात्र संशयः।।3।।

अनुवाद - देवी ने कहा :- यह है सो मैं हूँ, जो मैं हूँ सो यह है, मति के विभ्रम होनेसे भेद भासता है।।2।। हम दोनों का जो सूक्ष्म अन्तर है इसको जो जानता है वही मतिमान अर्थात् तत्वदर्शी है, वह संसार से पृथक् होकर मुक्त होता है, इसमें संदेह नहीं।।3।।

सुमरणाद्दर्शनं तुभ्यं दास्येऽहं विषमे स्थिते।। स्वर्तव्याऽहं सदा देवाः परमात्मा सनातनः।।80।। उभयोः सुमरणादेव कार्यसिद्धिर संशयम् ।।ब्रह्मोवाच।।इत्युक्त्वा विससर्जास्मान्द त्त्वा शक्तीः सुसंस्कृतान् ।।81।। विष्णवेऽथ महालक्ष्मी महाकालीं शिवाय च।। महासरस्वतीं मह्यं स्थानात्तस्माद्विसर्जिताः।।82।।

अनुवाद - संकट उपस्थित होने पर सुमरण से ही मैं तुमको दर्शन दूंगी, देवताओं ! परमात्मा सनातन देवकी शक्तिरूपसे मेरा सदा सुमरण करना।।80।। दोनों के सुमरण से अवश्य कार्यसिद्धि होगी, ब्रह्माजी बोले इस प्रकार संस्कार कर शक्ति देकर हमको विदा किया।।81।। विष्णु के निमित्त महालक्ष्मी, शिव के निमित्त महाकाली, और हमको महासरस्वती देकर विदा किया।।82।।

मम चैव शरीरं वै सूत्रमित्याभिधीयते।। स्थूलं शरीरं वक्ष्यामि ब्रह्मणः परमात्मनः।।83।।

अनुवाद - मेरा शरीर सूत्ररूप कहा जाता है, परमात्मा ब्रह्म का स्थूलशरीर कहाता है।।83।।

"उपरोक्त पुराण वाक्यों का सार"

स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी रजगुण है, श्री विष्णु जी सतगुण है तथा श्री शिव जी तमगुण है। तीनों प्रभु नाशवान हैं तथा इनका जन्म-मृत्यु होता है। दुर्गा को प्रकृति भी कहा जाता है। दुर्गा का पति ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) है। यह उसके साथ पति-पत्नी व्यवहार (रमण/विलास) करती रहती है। दुर्गा तथा ब्रह्म दोनों स्थूल शरीर में आकार में हैं।

यही प्रमाण गीता अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 में है। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है। मैं इसकी योनी (गर्भाधान स्थान) में बीज स्थापना करता हूँ, जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। मैं सर्व (इक्कीस ब्रह्मण्ड के प्राणियों) का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा/अष्टांगी) सर्व की माता है। इसी दुर्गा (प्रकृति/अष्टांगी) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) अन्य प्राणियों को कर्मों के बंधन में बांधते हैं।

।। त्रिगुण माया (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) जीव को मुक्त नहीं होने देते।।

पवित्र गीता जी के अ. 7 श्लोक 1 व 2 में ब्रह्म कह रहा है कि अर्जुन! अब तुझे वह ज्ञान सुनाऊँगा जिसके जानने के बाद और कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता।

गीता अध्याय 7 श्लोक 12 : गीता ज्ञान दाता ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) कह रहा है कि तीनों गुणों से जो कुछ हो रहा है वह मुझ से ही हुआ जान। जैसे रजगुण (ब्रह्मा) से उत्पत्ति, सतगुण (विष्णु) से पालन-पोषण स्थिति तथा तमगुण (शिव) से प्रलय (संहार) का कारण काल भगवान ही है। फिर कहा है कि मैं इन में नहीं हूँ। क्योंकि काल बहुत दूर (इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में निज लोक में रहता है) है परंतु मन रूप में मौज काल ही मनाता है तथा रिमोट से सर्व प्राणियों तथा ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी को यन्त्र की तरह चलाता है। गीता बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि मेरे इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों के प्राणियों के लिए मेरी पूजा से ही शास्त्र अनुकूल साधना प्रारम्भ होती है, जो वेदों में वर्णित है। मेरे अन्तर्गत जितने प्राणी हैं उनकी बुद्धि मेरे हाथ में है। मैं केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों में ही मालिक हूँ। इसलिए (गीता अ. 7 श्लोक 12 से 15 तक) जो भी तीनों गुणों से (रजगुण-ब्रह्मा से जीवों की उत्पत्ति, सतगुण-विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण-शिव जी से संहार) जो कुछ भी हो रहा है उसका मुख्य कारण मैं (ब्रह्म/काल) ही हूँ। (क्योंकि काल को एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के शरीर को मार कर मैल को खाने का शाप लगा है) जो साधक मेरी (ब्रह्म की) साधना न करके त्रिगुणमयी माया (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) की साधना करके क्षणिक लाभ प्राप्त करते हैं, जिससे ज्यादा कष्ट उठाते रहते हैं, साथ में संकेत किया है कि इनसे ज्यादा लाभ

मैं (ब्रह्म-काल) दे सकता हूँ, परन्तु ये मूर्ख साधक तत्वज्ञान के अभाव से इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) तक की साधना करते रहते हैं। इनकी बुद्धि इन्हीं तीनों प्रभुओं तक सीमित है। इसलिए ये राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, शास्त्र विरूद्ध साधना रूपी दुष्कर्म करनेवाले, मूर्ख मुझे (ब्रह्म को) नहीं भजते। यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 4 से 20 व 23, 24 तक अध्याय 17 श्लोक 2 से 14 तथा 19 व 20 में भी है।

विचार करें :- रावण ने भगवान शिव जी को मृत्युंजय, अजर-अमर, सर्वेश्वर मान कर भक्ति की, दस बार शीश काट कर समर्पित कर दिया, जिसके बदले में युद्ध के समय दस शीश रावण को प्राप्त हुए, परन्तु मुक्ति नहीं हुई, राक्षस कहलाया। यह दोष रावण के गुरुदेव का है जिस नादान (नीम-हकीम) ने वेदों को ठीक से न समझ कर अपनी सोच से तमोगुण युक्त भगवान शिव को ही पूर्ण परमात्मा बताया तथा भोली आत्मा रावण ने झूठे गुरुदेव पर विश्वास करके जीवन व अपने कुल का नाश किया।

1. एक भस्मागिरी नाम का साधक था, जिसने शिव जी (तमोगुण) को ही ईष्ट मान कर शीर्षासन (ऊपर को पैर नीचे को शीश) करके 12 वर्ष तक साधना की, भगवान शिव को वचन बद्ध करके भस्मकण्डा ले लिया। भगवान शिव जी को ही मारने लगा। उद्देश्य यह था कि भस्मकण्डा प्राप्त करके भगवान शिव जी को मार कर पार्वती जी को पत्नी बनाऊँगा। भगवान श्री शिव जी डर के मारे भाग गए, फिर श्री विष्णु जी ने उस भस्मासुर को गंडहथ नाच नचा कर उसी भस्मकण्डे से भस्म किया। वह शिव जी (तमोगुण) का साधक राक्षस कहलाया। हरिण्यकशिपु ने भगवान ब्रह्मा जी (रजोगुण) की साधना की तथा राक्षस कहलाया।

2. एक समय आज (सन् 2006) से लगभग 335 वर्ष पूर्व हरिद्वार में हर की पैड़ियों पर (शास्त्र विधि रहित साधना करने वालों के) कुम्भ पर्व की परबी का संयोग हुआ। वहाँ पर सर्व (त्रिगुण उपासक) महात्मा जन स्नानार्थ पहुँचे। गिरी, पुरी, नाथ, नागा आदि भगवान श्री शिव जी (तमोगुण) के उपासक तथा वैष्णों भगवान श्री विष्णु जी (सतोगुण) के उपासक हैं। प्रथम स्नान करने के कारण नागा तथा वैष्णों साधुओं में घोर युद्ध हो गया। लगभग 25000 (पच्चीस हजार) त्रिगुण उपासक मृत्यु को प्राप्त हुए। जो व्यक्ति जरा-सी बात पर नरसंहार (कत्ले आम) कर देता है वह साधु है या राक्षस स्वयं विचार करें। आम व्यक्ति भी कहीं स्नान कर रहे हों और कोई व्यक्ति आ कर कहे कि मुझे भी कुछ स्थान स्नान के लिए देने की कृपा करें। शिष्टाचार के नाते कहते हैं कि आओ आप भी स्नान कर लो। इधर-उधर हो कर आने वाले को स्थान दे देते हैं। इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में कहा है कि जिनका मेरी त्रिगुणमई माया (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) की पूजा के द्वारा ज्ञान हरा जा चुका है, वे केवल मान बड़ाई के भूखे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच अर्थात् आम व्यक्ति से भी पतित स्वभाव वाले, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मेरी भक्ति भी नहीं करते। गीता

अध्याय 7 श्लोक 16 से 18 तक पवित्र गीता जी के बोलने वाला (ब्रह्म) प्रभु कह रहा है कि मेरी भक्ति (ब्रह्म साधना) भी चार प्रकार के साधक करते हैं। एक तो अर्थार्थी (धन लाभ चाहने वाले) जो वेद मंत्रों से ही जंत्र-मंत्र, हवन आदि करते रहते हैं। दूसरे आर्त्त (संकट निवार्ण के लिए वेदों के मंत्रों का जन्त्र-मंत्र हवन आदि करते रहते हैं) तीसरे जिज्ञासु जो परमात्मा के ज्ञान को जानने की इच्छा रखने वाले केवल ज्ञान संग्रह करके वक्ता बन जाते हैं तथा दूसरों में ज्ञान श्रेष्ठता के आधार पर उत्तम बन कर ज्ञानवान बनकर अभिमानवश भक्ति हीन हो जाते हैं, चौथे ज्ञानी। वे साधक जिनको यह ज्ञान हो गया कि मानव शरीर बार-बार नहीं मिलता, इससे प्रभु साधना नहीं बन पाई तो जीवन व्यर्थ हो जाएगा। फिर वेदों को पढ़ा, जिनसे ज्ञान हुआ कि (ब्रह्मा-विष्णु-शिवजी) तीनों गुणों व ब्रह्म (क्षर पुरुष) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) से ऊपर पूर्ण ब्रह्म की ही भक्ति करनी चाहिए, अन्य देवताओं की नहीं। उन ज्ञानी उदार आत्माओं को मैं अच्छा लगता हूँ तथा मुझे वे इसलिए अच्छे लगते हैं कि वे तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिवजी) से ऊपर उठ कर मेरी (ब्रह्म) साधना तो करने लगे जो अन्य देवताओं से अच्छी है परन्तु वेदों में 'ओ३म्' नाम जो केवल ब्रह्म की साधना का मंत्र है उसी को वेद पढ़ने वाले विद्वानों ने अपने आप ही विचार - विमर्श करके पूर्ण ब्रह्म का मंत्र जान कर वर्षों तक साधना करते रहे। प्रभु प्राप्ति हुई नहीं। अन्य सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। क्योंकि पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 में वर्णित तत्वदर्शी संत नहीं मिला, जो पूर्ण ब्रह्म की साधना तीन मंत्र से बताता है, इसलिए ज्ञानी भी ब्रह्म (काल) साधना करके जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए।

एक ज्ञानी उदारात्मा महर्षि चुणक जी ने वेदों को पढ़ा तथा एक पूर्ण प्रभु की भक्ति का मंत्र ओ३म् जान कर इसी नाम के जाप से वर्षों तक साधना की। एक मानधाता चक्रवर्ती राजा था। (चक्रवर्ती राजा उसे कहते हैं जिसका पूरी पृथ्वी पर शासन हो।) उसने अपने अन्तर्गत राजाओं को युद्ध के लिए ललकारा, एक घोड़े के गले में पत्र बांध कर सारे राज्य में घुमाया। शर्त थी कि जिसने राजा मानधाता की गुलामी (आधीनता) स्वीकार न हो उसे युद्ध करना पड़ेगा। वह इस घोड़े को पकड़ कर बांध ले। किसी ने घोड़ा नहीं पकड़ा। महर्षि चुणक जी को इस बात का पता चला कि राजा बहुत अभिमानी हो गया है। कहा कि मैं इस राजा के युद्ध को स्वीकार करता हूँ युद्ध शुरू हुआ। मानधाता राजा के पास 72 करोड़ सेना थी। उसके चार भाग करके एक भाग (18 करोड़) सेना से महर्षि चुणक पर आक्रमण कर दिया। दूसरी ओर महर्षि चुणक जी ने अपनी साधना की कमाई से चार पूतलियाँ (बम्ब) बनाई तथा राजा की चारों भाग सेना का विनाश कर दिया।

विशेष :- श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म की भक्ति से पाप तथा पुण्य दोनों का फल भोगना पड़ता है, पुण्य स्वर्ग में तथा पाप नरक में व चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में नाना यातनाऐं भोगनी पड़ती हैं। जैसे ज्ञानी आत्मा श्री चुणक जी ने जो ओ३म् नाम के जाप की कमाई की उससे कुछ

तो सिद्धि शक्ति (चार पुतलियाँ बनाकर) में समाप्त कर दिया जिससे महर्षि कहलाया। कुछ साधना फल को महास्वर्ग में भोग कर फिर नरक में जाएगा तथा फिर चौरासी लाख प्राणियों के शरीर धारण करके कष्ट पर कष्ट सहन करेगा। जो 72 करोड़ प्राणियों (सैनिकों) का संहार वचन से किया था, उसका भोग भी भोगना होगा। चाहे कोई हथियार से हत्या करे, चाहे वचन रूपी तलवार से दोनों को समान दण्ड प्रभु देता है। जब उस महर्षि चुणक जी का जीव कुत्ते के शरीर में होगा उसके सिर में जख्म होगा, उसमें कीड़े बनकर उन सैनिकों के जीव अपना प्रतिशोध लेंगे। कभी टांग टूटेगी, कभी पिछले पैरों से अर्धंग हो कर केवल अगले पैरों से घिसड़ कर चलेगा तथा गर्मी-सर्दी का कष्ट असहनीय पीड़ा नाना प्रकार से भोगनी ही पड़ेगी।

इसलिए पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) गीता अ. 7 श्लोक 18 में स्वयं कह रहा है कि ये सर्व ज्ञानी आत्माऐं हैं तो उदार (नेक)। परन्तु पूर्ण परमात्मा की तीन मंत्र की वास्तविक साधना बताने वाला तत्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण ये सब मेरी ही (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ मुक्ति (गती) की आस में ही आश्रित रहे अर्थात् मेरी साधना भी अश्रेष्ठ है। इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्व भाव से उस पूर्ण परमात्मा की शरण में चला जा। जिसकी कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सनातन परम धाम (सतलोक) को प्राप्त होगा। पवित्र गीता जी को श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके ब्रह्म (काल) ने बोला, फिर कई वर्षों उपरांत पवित्र गीता जी तथा पवित्र चारों वेदों को महर्षि व्यास जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके स्वयं ब्रह्म (क्षर पुरुष) द्वारा लिपिबद्ध भी स्वयं ही किए हैं। इनमें परमात्मा कैसा है, कैसे उसकी भक्ति करनी है तथा क्या उपलब्धि होगी, ज्ञान तो पूर्ण वर्णन है। परन्तु पूजा की विधि केवल ब्रह्म (क्षर पुरुष) अर्थात् ज्योति निरंजन-काल तक की ही है।

पूर्ण ब्रह्म की भक्ति के लिए पवित्र गीता अ. 4 श्लोक 34 में पवित्र गीता बोलने वाला (ब्रह्म) प्रभु स्वयं कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा की भक्ति व प्राप्ति के लिए किसी तत्वज्ञानी सन्त को ढूंढ ले फिर जैसे वह विधि बताएं वैसे कर। पवित्र गीता जी को बोलने वाला प्रभु कह रहा है कि पूर्ण परमात्मा का पूर्ण ज्ञान व भक्ति विधि मैं नहीं जानता। अपनी साधना के बारे में गीता अ. 8 के श्लोक 13 में कहा है कि मेरी भक्ति का तो केवल एक 'ओ३म् ' अक्षर है जिसका उच्चारण करके अन्तिम स्वांस (त्यजन् देहम्) तक जाप करने से मेरी वाली परमगति को प्राप्त होगा। फिर गीता अ. 7 श्लोक 18 में कहा है कि जिन प्रभु चाहने वाली आत्माओं को तत्वदर्शी सन्त नहीं मिला जो पूर्ण ब्रह्म की साधना जानता हो, इसलिए वे उदारात्माऐं मेरे वाली (अनुत्तमाम्) अति अनुत्तम परमगति में ही आश्रित हैं।(पवित्र गीता जी बोलने वाला प्रभु स्वयं कह रहा है कि मेरी साधना से होने वाली गति अर्थात् मुक्ति भी अति अश्रेष्ठ है।)

"अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिवजी) की पूजा अनजान ही करते हैं"

अध्याय 7 के श्लोक 20 में कहा है कि जिसका सम्बन्ध अध्याय 7 के श्लोक 15 से लगातार है - श्लोक 15 में कहा है कि त्रिगुणमई माया (जो रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी की पूजा तक सीमित हैं तथा इन्हीं से प्राप्त क्षणिक सुख) के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है ऐसे असुर स्वभाव को धारण किए हुए नीच व्यक्ति दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझे नहीं भजते। अध्याय 7 के श्लोक 20 में उन-उन भोगों की कामना के कारण जिनका ज्ञान हरा जा चुका है वे अपने स्वभाव वश प्रेरित हो कर अज्ञान अंधकार वाले नियम के आश्रित अन्य देवताओं को पूजते हैं। अध्याय 7 के श्लोक 21 में कहा है कि जो-जो भक्त जिस-जिस देवता के स्वरूप को श्रद्धा से पूजना चाहता है उस-उस भक्त की श्रद्धा को मैं उसी देवता के प्रति स्थिर करता हूँ।

अध्याय 7 के श्लोक 22 में कहा है कि वह जिस श्रद्धा से युक्त हो कर जिस देवता का पूजन करता है क्योंकि उस देवता से मेरे द्वारा ही विधान किए हुए कुछ इच्छित भोगों को प्राप्त करते हैं। जैसे मुख्य मन्त्री कहे कि नीचे के अधिकारी मेरे ही नौकर हैं। मैंनें उनको कुछ अधिकार दे रखे हैं जो उनके (अधिकारियों के) ही आश्रित हैं वह लाभ भी मेरे द्वारा ही दिया जाता है, परंतु पूर्ण लाभ नहीं है। अध्याय 7 के श्लोक 23 में वर्णन है कि परंतु उन मंद बुद्धि वालों का वह फल नाशवान होता है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं। (मदभक्त) मतावलम्बी जो वेदों में वर्णित भक्ति विधि अनुसार भक्ति करने वाले भक्त भी मुझको प्राप्त होते हैं अर्थात् काल के जाल से कोई बाहर नहीं है।

विशेष : अध्याय 7 के श्लोक 20 से 23 में कहा है कि वे जो भी साधना किसी भी पित्र, भूत, देवी-देवता आदि की पूजा स्वभाव वश करते हैं। मैं (ब्रह्म-काल) ही उन मन्द बुद्धि लोगों (भक्तों) को उसी देवता के प्रति आसक्त करता हूँ। वे नादान साधक देवताओं से जो लाभ पाते हैं मैंने (काल ने) ही देवताओं को कुछ शक्ति दे रखी है। उसी के आधार पर उनके (देवताओं के) पूजारी देवताओं को प्राप्त हो जाएंगे। परंतु उन बुद्धिहीन साधकों की वह पूजा चौरासी लाख योनियों में शीघ्र ले जाने वाली है तथा जो मुझे (काल को) भजते हैं वे तप्त शिला पर फिर मेरे महास्वर्ग (ब्रह्म लोक) में चले जाते हैं और उसके बाद जन्म-मरण में ही रहेंगे, मोक्ष प्राप्त नहीं होगा। भावार्थ है कि देवी-देवताओं व ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा माता से भगवान ब्रह्म की साधना अधिक लाभदायक है। भले ही महास्वर्ग में गए साधक का स्वर्ग समय एक महाकल्प तक भी हो सकता है, परन्तु महास्वर्ग में शुभ कर्मों का सुख भोगकर फिर नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीर में भी कष्ट बना रहेगा, पूर्ण मोक्ष नहीं अर्थात् काल जाल से मुक्ति नहीं।

गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर - अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
ब्रह्मा
शिव
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा
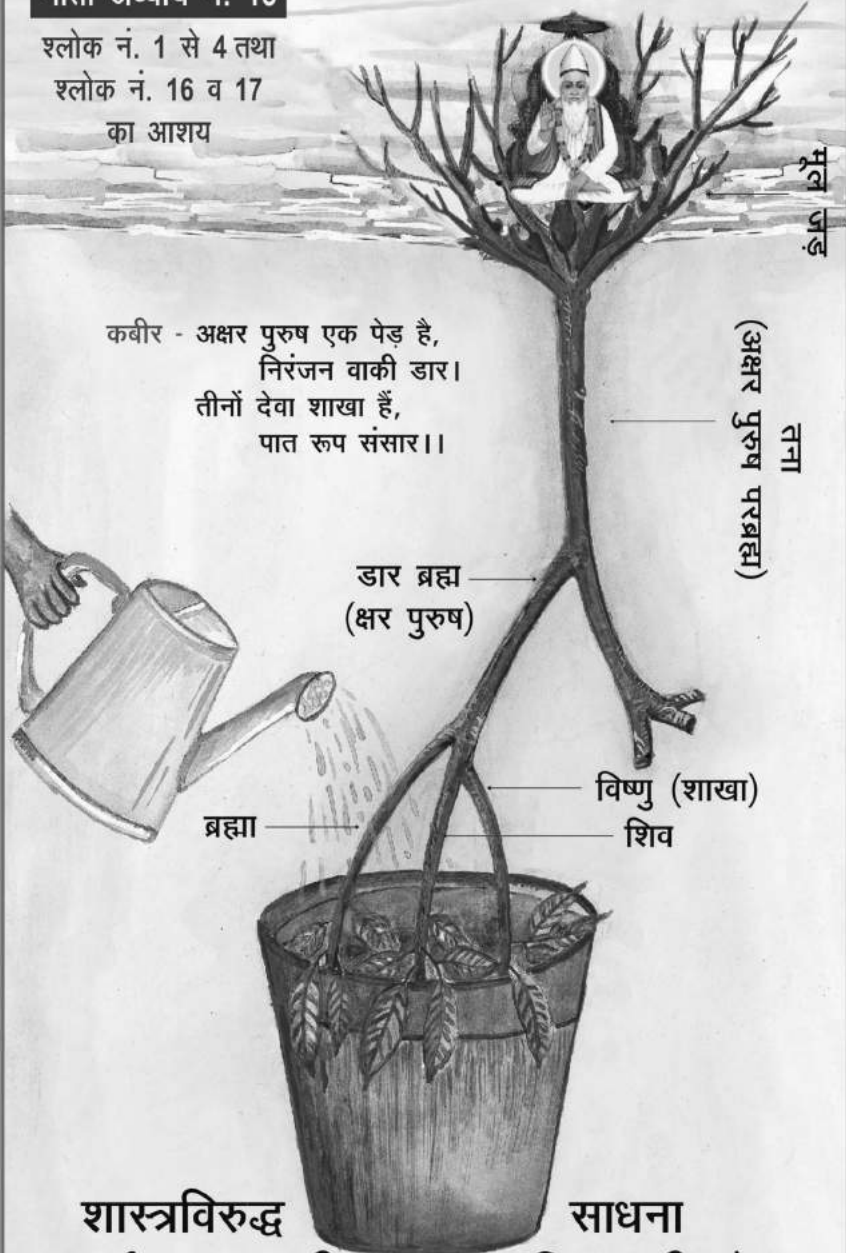
ब्रह्मा
शिव
विष्णु
गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
कबीर-अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
कबीर साहेब
(मूल जड़)
शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा
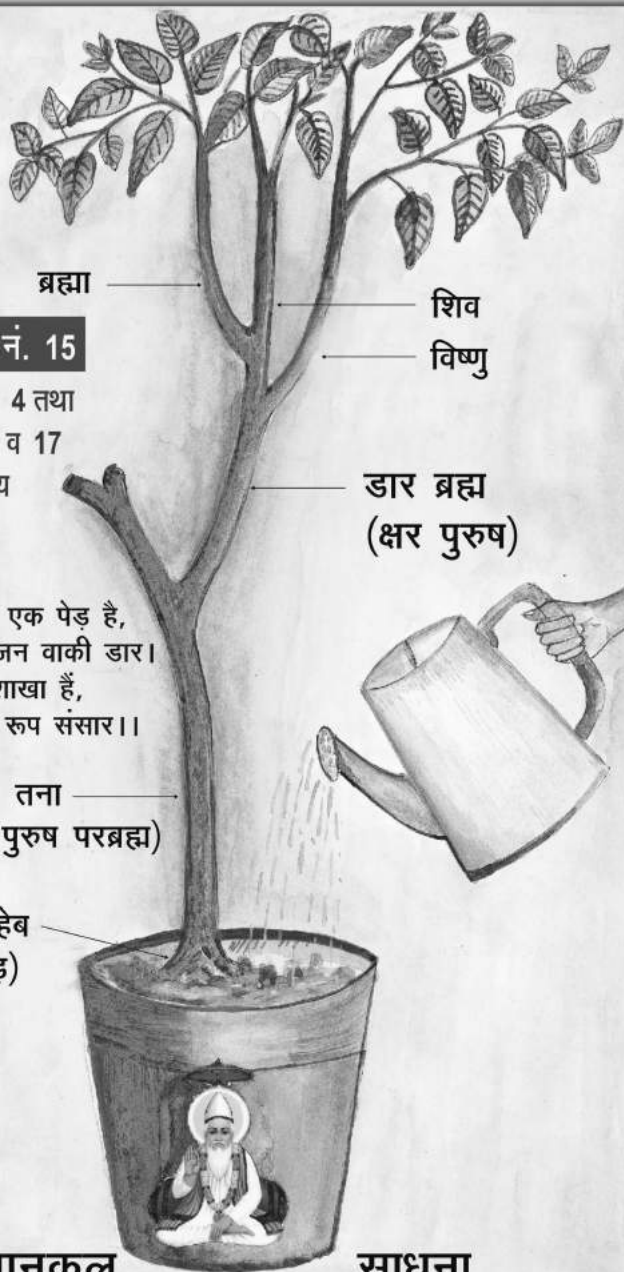
"अन्य प्रमाण"

पवित्र गीता व पवित्र वेदों में अन्य देवताओं की पूजा तथा पितर पूजा (श्राद्ध) निकालना तथा भूत पूजा (अस्थियाँ उठाना अर्थात् फूल उठाना, पिण्ड भरवाना, मंढियों की पूजा) करना मना किया है।

"पवित्र चारों वेदों अनुसार साधना का परिणाम केवल स्वर्ग-महास्वर्ग प्राप्ति, मुक्ति नहीं"

पवित्र गीता अध्याय 9 के श्लोक 20, 21 में कहा है कि जो मनोकामना (सकाम) सिद्धि के लिए मेरी पूजा तीनों वेदों में वर्णित साधना शास्त्र अनुकूल करते हैं वे अपने कर्मों के आधार पर महास्वर्ग में आनन्द मना कर फिर जन्म-मरण में आ जाते हैं अर्थात् यज्ञ चाहे शास्त्रानुकूल भी हो उनका एक मात्र लाभ सांसारिक भोग, स्वर्ग, और फिर नरक व चौरासी लाख जूनियाँ ही हैं। जब तक तीनों मंत्र (ओ३म तथा तत् व सत् सांकेतिक) पूर्ण संत से प्राप्त नहीं होते। अध्याय 9 के श्लोक 22 में कहा है कि जो निष्काम भाव से मेरी शास्त्रानुकूल पूजा करते हैं, उनकी पूजा की साधना की रक्षा मैं स्वयं करता हूँ, मुक्ति नहीं।

"शास्त्र विधि विरुद्ध साधना पतन का कारण"

पवित्र गीता अध्याय 9 के श्लोक 23, 24 में कहा है कि जो व्यक्ति अन्य देवताओं को पूजते हैं वे भी मेरी (काल जाल में रहने वाली) पूजा ही कर रहे हैं। परंतु उनकी यह पूजा अविधिपूर्वक है (अर्थात् शास्त्रविरूद्ध है भावार्थ है कि अन्य देवताओं को नहीं पूजना चाहिए)। क्योंकि सम्पूर्ण यज्ञों का भोक्ता व स्वामी मैं ही हूँ। वे भक्त मुझे अच्छी तरह नहीं जानते। इसलिए पतन को प्राप्त होते हैं। नरक व चौरासी लाख जूनियों का कष्ट। जैसे गीता अध्याय 3 श्लोक 14-15 में कहा है कि सर्व यज्ञों में प्रतिष्ठित अर्थात् सम्मानित, जिसको यज्ञ समर्पण की जाती है वह परमात्मा (सर्व गतम् ब्रह्म) पूर्ण ब्रह्म है। वही कर्माधार बना कर सर्व प्राणियों को प्रदान करता है। परन्तु पूर्ण सन्त न मिलने तक सर्व यज्ञों का भोग (आनन्द) काल (मन रूप में) ही भोगता है, इसलिए कह रहा है कि मैं सर्व यज्ञों का भोक्ता व स्वामी हूँ।

"श्राद्ध निकालने (पितर पूजने) वाले पितर बनेंगे, मुक्ति नहीं"

गीता अध्याय 9 के श्लोक 25 में कहा है कि देवताओं को पूजने वाले देवताओं को प्राप्त होते हैं, पितरों को पूजने वाले पितरों को प्राप्त होते हैं, भूतों को पूजने (पिण्ड दान करने) वाले भूतों को प्राप्त होते हैं अर्थात् भूत बन जाते हैं, शास्त्रानुकूल (पवित्र वेदों व गीता अनुसार) पूजा करने वाले मुझको ही प्राप्त होते हैं अर्थात् काल द्वारा निर्मित स्वर्ग व महास्वर्ग आदि में कुछ ज्यादा समय मौज कर लेते हैं।

विशेष :- जैसे कोई तहसीलदार की नौकरी (सेवा-पूजा) करता है तो वह

तहसीलदार नहीं बन सकता। हाँ उससे प्राप्त धन से रोजी-रोटी चलेगी अर्थात् उसके आधीन ही रहेगा। ठीक इसी प्रकार जो जिस देव (श्री ब्रह्मा देव, श्री विष्णु देव तथा श्री शिव देव अर्थात् त्रिदेव) की पूजा (नौकरी) करता है तो उन्हीं से मिलने वाला लाभ ही प्राप्त करता है। त्रिगुणमई माया अर्थात् तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की पूजा का निषेध पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 तक में भी है। इसी प्रकार कोई पितरों की पूजा (नौकरी-सेवा) करता है तो पितरों के पास छोटा पितर बन कर उन्हीं के पास कष्ट उठाएगा। इसी प्रकार कोई भूतों (प्रेतों) की पूजा (सेवा) करता है तो भूत बनेगा क्योंकि सारा जीवन जिसमें आश्क्तता बनी है अन्त में उन्हीं में मन फंसा रहता है। जिस कारण से उन्हीं के पास चला जाता है। कुछेक का कहना है कि पितर-भूत-देव पूजाऐं भी करते रहेंगे, आप से उपदेश लेकर साधना भी करते रहेंगे। ऐसा नहीं चलेगा। जो साधना पवित्र गीता जी में व पवित्र चारों वेदों में मना है वह करना शास्त्र विरुद्ध हुआ। जिसको पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में मना किया है कि जो शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करते हैं वे न तो सुख को प्राप्त करते हैं न परमगति को तथा न ही कोई कार्य सिद्ध करने वाली सिद्धि को ही प्राप्त करते हैं अर्थात् जीवन व्यर्थ कर जाते हैं। इसलिए अर्जुन तेरे लिए कर्तव्य (जो साधना के कर्म करने योग्य हैं) तथा अकर्तव्य (जो साधना के कर्म नहीं करने योग्य हैं) की व्यवस्था (नियम में) में शास्त्र ही प्रमाण हैं। अन्य साधना वर्जित हैं।

इसी का प्रमाण मार्कण्डे पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित पृष्ठ 237 पर है, जिसमें मार्कण्डे पुराण तथा ब्रह्म पुराणांक इक्ट्ठा ही जिल्द किया है) में भी है कि एक रूची नाम का साधक ब्रह्मचारी रह कर वेदों अनुसार साधना कर रहा था। जब वह 40(चालीस) वर्ष का हुआ तब उस को अपने चार पूर्वज जो शास्त्र विरुद्ध साधना करके पितर बने हुए थे तथा कष्ट भोग रहे थे, दिखाई दिए। "पितरों ने कहा कि बेटा रूची शादी करवा कर हमारे श्राद्ध निकाल, हम तो दुःखी हो रहे हैं। रूची ऋषि ने कहा पित्रमहो वेद में कर्म काण्ड मार्ग (श्राद्ध, पिण्ड भरवाना आदि) को मूर्खों की साधना कहा है। फिर आप मुझे क्यों उस गलत(शास्त्र विधि रहित) साधना पर लगा रहे हो। पितर बोले बेटा यह बात तो तेरी सत है कि वेद में पितर पूजा, भूत पूजा, देवी-देवताओं की पूजा (कर्म काण्ड) को अविद्या ही कहा है इसमें तनिक भी मिथ्या नहीं है।" इसी उपरोक्त मार्कण्डे पुराण में इसी लेख में पितरों ने कहा कि फिर पितर कुछ तो लाभ देते हैं।

विशेष :- यह अपनी अटकलें पितरों ने लगाई है, वह हमने नहीं पालन करना, क्योंकि पुराणों में आदेश किसी ऋषि विशेष का है जो पितर पूजने, भूत या अन्य देव पूजने को कहा है। परन्तु वेदों में प्रमाण न होने के कारण प्रभु का आदेश नहीं है। इसलिए किसी संत या ऋषि के कहने से प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करने से सजा के भागी होंगे।

एक समय एक व्यक्ति की दोस्ती एक पुलिस थानेदार से हो गई। उस व्यक्ति

ने अपने दोस्त थानेदार से कहा कि मेरा पड़ौसी मुझे बहुत परेशान करता है। थानेदार (S.H.O.) ने कहा कि मार लट्ठ, मैं आप निपट लूंगा। थानेदार दोस्त की आज्ञा का पालन करके उस व्यक्ति ने अपने पड़ौसी को लट्ठ मारा, सिर में चोट लगने के कारण पड़ौसी की मृत्यु हो गई। उसी क्षेत्र का अधिकारी होने के कारण वह थाना प्रभारी अपने दोस्त को पकड़ कर लाया, कैद में डाल दिया तथा उस व्यक्ति को मृत्यु दण्ड मिला। उसका दोस्त थानेदार कुछ मदद नहीं कर सका। क्योंकि राजा का संविधान है कि यदि कोई किसी की हत्या करेगा तो उसे मृत्यु दण्ड प्राप्त होगा। उस नादान व्यक्ति ने अपने दोस्त दरोगा की आज्ञा मान कर राजा का संविधान भंग कर दिया। जिससे जीवन से हाथ धो बैठा। ठीक इसी प्रकार पवित्र गीता जी व पवित्र वेद यह प्रभु का संविधान है। जिसमें केवल एक पूर्ण परमात्मा की पूजा का ही विधान है, अन्य देवताओं - पितरों - भूतों की पूजा करना मना है। पुराणों में ऋषियों (थानेदारों) का आदेश है। जिनकी आज्ञा पालन करने से प्रभु का संविधान भंग होने के कारण कष्ट पर कष्ट उठाना पड़ेगा। इसलिए आन उपासना पूर्ण मोक्ष में बाधक है।

"सत्य कथा"

मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी लगभग सोलह वर्ष की आयु में पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति के लिए अचानक घर त्याग कर निकल गए। प्रतिदिन पहनने वाले वस्त्रों को अपने ही खेतों के निकट घने जंगल में किसी मृत पशु की अस्थियों के पास डाल गए। शाम को घर न पहुँचने के कारण घर वालों ने जंगल में तलाश की। रात्री का समय था। कपड़े पहचान कर दुःखी मन से पशु की अस्थियों को बच्चे की अस्थियाँ जान कर उठा लाए तथा यह सोचा कि बच्चा जंगल में चला गया, किसी हिंसक जानवर ने खा लिया। अन्तिम संस्कार कर दिया। सर्व क्रियाऐं की, तेरहवीं - बरसी आदि की तथा श्राद्ध भी निकालते रहे। लगभग 104 वर्ष की आयु प्राप्त होने के उपरान्त स्वामी जी अचानक अपने गाँव बड़ा पैंतावास जिला भिवानी, त. चरखीदादरी, हरियाणा में पहुँच गए। स्वामी जी का बचपन का नाम श्री हरिद्वारी जी था तथा पवित्र ब्राह्मण कुल में जन्म था। मुझ दास को पता चला तो मैं भी दर्शनार्थ पहुँच गया। स्वामी जी की भाभी जी जो लगभग 92 वर्ष की आयु की थी। मैंने उस वृद्धा से पूछा कि हमारे गुरु जी के घर त्याग जाने के उपरान्त क्या महसूस किया ? उस वृद्धा ने बताया कि मेरा विवाह हुआ तब मुझे बताया गया कि इनका एक भाई हरिद्वारी था जो किसी हिंसक जानवर ने जंगल में खा लिया था। उसके श्राद्ध निकाले जा रहे हैं। मुझे भी इनके श्राद्ध निकालने को कहा गया। वृद्धा ने बताया कि 70 श्राद्ध तो मैं अपने हाथों निकाल चुकी हूँ। जब कभी फसल अच्छी नहीं होती या कोई घर का सदस्य बीमार हो जाता तो अपने पुरोहित (गुरु जी) से कारण पूछते तो वह कहा करता कि हरद्वारी पितर बना है, वह तुम्हें दुःखी कर रहा है। श्राद्धों के निकालने में कोई अशुद्धि रही है। अब की बार सर्व क्रिया मैं स्वयं अपने हाथों से करूंगा। पहले मुझे समय नहीं मिला था,

क्योंकि एक ही दिन में कई जगह श्राद्ध क्रियाऐं करने जाना पड़ा। इसलिए बच्चे को भेजा था। तब तक कुछ भेंट चढ़ाओ ताकि उसे शान्त किया जाए। तब उसे 21 या 51 जो भी कहता था डरते भेंट करते थे, फिर श्राद्धों के समय गुरु जी स्वयं श्राद्ध करते थे। तब मैंने कहा माता जी अब तो छोड़ दो इस गीता जी विरुद्ध साधना को, नहीं तो आप भी प्रेत बनोगी। गीता अध्याय 9 श्लोक 25 सुनाया। तब वह वृद्धा कहने लगी गीता मैं भी पढती हूँ। दास ने कहा आपने पढा है, समझा नहीं। आगे से तो बन्द कर दो इस नादान साधना को। वृद्धा ने उत्तर दिया न भाई, कैसे छोड़ दें श्राद्ध निकालना, यह तो सदियों पुरानी (लाग) परम्परा है। यह दोष भोली आत्माओं का नहीं है। यह दोष मुर्ख गुरुओं (नीम हकीमों) का है, जिन्होंने अपने पवित्र शास्त्रों को समझे बिना मनमाना आचरण (पूजा का मार्ग) बता दिया। जिस कारण न तो कोई कार्य सिद्ध होता है, न परमगति तथा न कोई सुख ही प्राप्त होता है। प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 ।

अब दास की प्रार्थना है कि शिक्षित वर्ग अवश्य ध्यान दें तथा शास्त्र विधि अनुसार साधना करके पूर्ण परमात्मा के सनातन परमधाम (शाश्वतम् स्थानम्) अर्थात् सतलोक को प्राप्त करें, जिससे पूर्ण मोक्ष तथा परम शान्ति प्राप्त होती है।(गीता अध्याय 18 श्लोक 62) इसके लिए तत्वदर्शी संत की तलाश करो। गीता अध्याय 4 श्लोक 34 ।

एक श्रद्धालु ने कहा कि मैं आप से उपदेश लेकर आप द्वारा बताई साधना भी करता रहूँगा तथा श्राद्ध भी निकालता रहूँगा तथा अपने घरेलू देवी-देवताओं को भी उपरले मन से पूजता रहूँगा। इसमें क्या दोष है।

मुझ दास की प्रार्थना :- संविधान की किसी भी धारा का उल्लंघन कर देने पर सजा अवश्य मिलेगी। इसलिए पवित्र गीता जी व पवित्र चारों वेदों में वर्णित व वर्जित विधि के विपरीत साधना करना व्यर्थ है (प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 16 श्लोक 23-24 में)। यदि कोई कहे कि मैं कार में पैंचर उपरले मन से कर दूंगा। नहीं, राम नाम की गाड़ी में पैंचर करना मना है। ठीक इसी प्रकार शास्त्र विरुद्ध साधना हानिकारक ही है।

एक श्रद्धालु ने कहा कि मैं और कोई विकार (मदिरा-मास आदि सेवन) नहीं करता। केवल तम्बाखु (बीड़ी-सिगरेट-हुक्का) सेवन करता हूँ। आपके द्वारा बताई पूजा व ज्ञान अतिउत्तम है। मैंने गुरु जी भी बनाया है, परन्तु यह ज्ञान आज तक किसी संत के पास नहीं है, मैं 25 वर्ष से घूम रहा हूँ तथा तीन गुरुदेव बदल चुका हूँ। कृप्या मुझे तम्बाखु सेवन की छूट दे दो, शेष सर्व शर्ते मंजूर हैं। तम्बाखु से भक्ति में क्या बाधा आती है?

दास की प्रार्थना :- दास ने प्रार्थना की कि अपने शरीर को ऑक्सीजन की आवश्यकता है। तम्बाखु का धुआँ कार्बन-डाई-ऑक्साइड है जो फेफड़ों को कमजोर व रक्त दूषित करता है। मानव शरीर प्रभु प्राप्ति व आत्म कल्याण के लिए ही प्राप्त हुआ है। इसमें परमात्मा पाने का रस्ता सुष्मना नाड़ी से प्रारम्भ होता है। जो नाक के दोनों छिद्र हैं उन्हें दायें को ईड़ा तथा बाऐं को पिंगुला कहते हैं। इन दोनों के

मध्य में सुष्मणा नाड़ी है जिसमें एक छोटी सुई (needle) में धागा पिरोने वाले छिद्र के समान द्वार होता है, जो तम्बाखु के धुऐं से बंध हो जाता है। जिससे प्रभु प्राप्ति के मार्ग में अवरोध हो जाता है। यदि प्रभु पाने का रस्ता ही बन्द हो गया तो मानव शरीर व्यर्थ हुआ। इसलिए प्रभु भक्ति करने वाले साधक को प्रत्येक नशीले व अखाद्य (मांस आदि) पदार्थों का सर्वदा निषेध है।

एक श्रद्धालु ने कहा कि मैं तम्बाखु प्रयोग नहीं करता। मांस व मदिरा सेवन जरूर करता हूँ। इससे भक्ति में क्या बाधा है? यह तो खाने - पीने के लिए ही बनाई है तथा पेड़-पौधों में भी तो जीव है, वह खाना भी तो मांस भक्षण तुल्य ही है।

दास की प्रार्थना :- यदि कोई हमारे माता-पिता-भाई-बहन व बच्चों आदि को मार कर खाए तो कैसा लगे? ''जैसा दर्द आपने होवै, वैसा जान बिराने। कहै कबीर वे जाऐं नरक में, जो काटें शिश खुरांनें'' जो व्यक्ति पशुओं को मारते समय खुरों तथा शीश को बेरहमी से काट कर मांस खाते हैं वे नरक के भागी होंगे। जैसा दुःख अपने बच्चों व सम्बन्धियों की हत्या का होता है ऐसा ही दूसरे को जानना चाहिए। रही बात पेड़-पौधों को खाने की। इनको खाने का प्रभु का आदेश है तथा ये जड़ जूनी के हैं। अन्य चेतन प्राणियों का वध प्रभु आदेश विरुद्ध है, इसलिए अपराध (पाप) है।

मदिरा सेवन भी प्रभु आदेश नहीं है, परन्तु स्पष्ट मना है तथा मानव जीवन को बर्बाद करने का है। शराब पान किया हुआ व्यक्ति कुछ भी गलती कर सकता है। मदिरा पान धन - तन व पारिवारिक शान्ति तथा समाज सभ्यता की महा शत्रु है। प्यारे बच्चों के भावी चरित्र पर कुप्रभाव पड़ता है। मदिरा पान करने वाला व्यक्ति कितना ही नेक हो परन्तु उसकी न तो इज्जत रहती है तथा न ही विश्वास।

एक समय यह दास एक गाँव में सत्संग करने गया हुआ था। उस दिन नशा निषेध पर सत्संग किया। सत्संग के उपरान्त एक ग्यारह वर्षीय कन्या फूट-फूट कर रोने लगी। पूछने पर उस बेटी ने बताया कि महाराज जी मेरे पिता जी पालम हवाई अड्डे पर बढ़िया नौकरी करते हैं। परन्तु सर्व पैसे की शराब पी जाते हैं। मेरी मम्मी के मना करने पर इतना पीटते हैं कि शरीर पर नीले दाग बन जाते हैं। एक दिन मेरे पापा जी मेरी मम्मी को पीटने लगे। मैं अपनी मम्मी के ऊपर गिर कर बचाव करने लगी तो मुझे भी पीटा। मेरा होंठ सूज गया। दस दिन में ठीक हुआ। मेरी मम्मी जी हमें छोड़ कर मेरे मामा जी के घर चली गई। छः महीने में मेरी दादी जी जाकर लाई। तब तक हम अपनी दादी जी के पास रहे। पापा जी ने दवाई भी नहीं दिलाई। सुबह शीघ्र ही उठकर नौकरी पर चला गया। शाम को शराब पीकर आता। हम तीन बहनें हैं, दो मेरे से छोटी हैं। अब जब पापा जी शाम को आते हैं तो हम तीनों बहनें चारपाई के नीचे छुप जाती हैं।

विचार करो पुण्यात्माओं, जिन बच्चों को पिताजी ने सीने से लगाना चाहिए था तथा बच्चे पिता जी के घर आने की राह देखते हैं कि पापा जी घर आयेंगे, फल लायेंगे। आज इस मानव समाज की दुश्मन शराब ने क्या घर घाल दिए। शराबी व्यक्ति अपनी तो हानि करता है साथ में बहुत व्यक्तियों की आत्मा दुखाने

का भी पाप सिर पर रखता है। जैसे पत्नी के दुःख में उसके माता-पिता, बहन-भाई दुःखी, फिर स्वयं के माता-पिता, भाई-बहन, दादा-दादी आदि परेशान। एक शराबी व्यक्ति आस पास के भद्र व्यक्तियों की अशान्ति का कारण बनता है। क्योंकि घर में झगड़ा करता है। पत्नी व बच्चों की चिल्लाहट सुनकर पड़ौसी बीच-बचाव करें तो शराबी गले पड़ जाऐं, नहीं करें तो नेक व्यक्तियों को नींद नहीं आए। इस दास से उपदेश लेने के उपरान्त प्रतिदिन शराब पीने वाले लगभग एक लाख व्यक्तियों ने सर्व नशीले पदार्थ व मांस भक्षण पूर्ण रूप से त्याग दिया है तथा जिस समय शाम को शराब प्रेतनी का नृत्य होता था अब वे पुण्यात्मायें अपने बच्चों सहित बैठकर संध्या आरती करते हैं। हरियाणा प्रदेश व निकटवर्ती प्रान्तों में लगभग दस हजार गाँवों व शहरों में आज भी प्रत्येक में चार -पाँच चैम्पियन (एक नम्बर के शराबी) उदाहरण हैं जो सर्व विकारों से रहित होकर अपना मानव जीवन सफल कर रहे हैं। कुछ कहते हैं कि हम इतनी नहीं पीते-खाते, बस कभी ले लेते हैं। जहर तो थोड़ा ही बुरा है, जो भक्ति व मुक्ति में बाधक है।

मान लिजिए दो किलो ग्राम घी का हलवा बनाया (सतभक्ति की)। फिर 250 ग्राम बालु रेत(तम्बाखु-मांस-मदिरा सेवन व आन उपासना कर ली) भी डाल दिया। वह तो किया कराया व्यर्थ हुआ। इसलिए पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की पूजा पूर्ण संत से प्राप्त करके आजीवन मर्यादा में रह कर करते रहने से ही पूर्ण मोक्ष लाभ होता है।

"तत्वज्ञान प्राप्ति के पश्चात् ही भक्ति प्रारम्भ होती है"

अध्याय 9 के श्लोक 26, 27, 28 का भाव है कि जो भी आध्यात्मिक या सांसारिक काम करें, सब मेरे मतानुसार वेदों में वर्णित पूजा विधि अनुसार ही कर्म करें, वह उपासक मुझ(काल) से ही लाभान्वित होता है। इसी का वर्णन इसी अध्याय के श्लोक 20, 21 में किया है। अध्याय 9 के श्लोक 29 में भगवान कहते हैं कि मुझे किसी से द्वेष या प्यार नहीं है। परंतु तुरंत ही कह रहे हैं कि जो मुझे प्रेम से भजते हैं वे मुझे प्यारे हैं तथा मैं उनको प्रिय हूँ अर्थात् मैं उनमें और वे मेरे में हैं। राग व द्वेष का प्रत्यक्ष प्रमाण है - जैसे प्रहलाद विष्णु जी के आश्रित थे तथा हिरणाकशिपु द्वेष करता था। तब नरसिंह रूप धार कर भगवान ने अपने प्यारे भक्त की रक्षा की तथा राक्षस हिरणाकशिपु की आँतें निकाल कर समाप्त किया। प्रहलाद से प्रेम तथा हिरणाकशिपु से द्वेष प्रत्यक्ष सिद्ध है।

इसीलिए पवित्र श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 2 श्लोक 53 में कहा है कि तत्व ज्ञान हो जाने पर नाना प्रकार के भ्रमित करने वाले वचनों से विचलित हुई तेरी बुद्धि एक पूर्ण परमात्मा में दृढता से स्थिर हो जाएगी। तब तू योगी बनेगा अर्थात् तब तेरी अनन्य मन से निःशंस्य हो कर एक पूर्ण प्रभु की भक्ति प्रारम्भ होगी।

पवित्र गीता अध्याय 2 श्लोक 46 में कहा है कि जैसे बहुत बड़े जलाशय (जिसका जल 10 वर्ष तक वर्षा न हो तो भी समाप्त न हो) के प्राप्त हो जाने के पश्चात् छोटा जलाशय (जिसका जल एक वर्ष तक वर्षा न हो तो समाप्त हो जाता

है) में जितना प्रयोजन रह जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा (परम अक्षर पुरुष) के गुणों का ज्ञान तत्व ज्ञान द्वारा हो जाने पर आपकी आस्था अन्य ज्ञानों में तथा अन्य भगवानों (अन्य देवताओं में जैसे ब्रह्मा, विष्णु, शिव में तथा क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म में तथा अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म) में उतनी ही रह जाती है। जैसे छोटा जलाशय बुरा नहीं लगता परंतु उसकी क्षमता (औकात) का पता लग जाता है कि यह काम चलाऊ सहारा है जो जीवन के लिए पर्याप्त नहीं है तथा बहुत बड़ा जलाशय प्राप्त होने पर पता चल जाता है कि यदि अकाल गिरेगा तो भी समस्या नहीं आएगी तथा तुरंत छोटे जलाशय को त्याग कर बड़े जलाशय पर आश्रित हो जाएगा।

इसी प्रकार तत्वदर्शी संत से पूर्ण परमात्मा के तत्व ज्ञान के द्वारा पूर्णब्रह्म की महिमा से परीचित हो जाने के पश्चात् साधक पूर्ण रूप से (अनन्य मन से) उस पूर्ण परमात्मा (परमेश्वर) पर सर्व भाव से आश्रित हो जाता है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे अर्जुन तू सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमात्मा की कृपा से ही परम शांति को प्राप्त होगा तथा शाश्वत् स्थान अर्थात् सनातन परम धाम अर्थात् कभी न नष्ट होने वाले सतलोक को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 18 श्लोक 63 में कहा है कि मैंने तेरे से यह रहस्यमय अति गोपनिय (गीता का) ज्ञान कह दिया। अब जैसे तेरा मन चाहे वैसा कर। (क्योंकि यह गीता के अंतिम अध्याय अठारह के अंतिम श्लोक चल रहे हैं इसलिए कहा है।)

"गीता ज्ञान दाता ब्रह्म का ईष्ट (पूज्य) देव पूर्णब्रह्म है"

गीता अध्याय 18 श्लोक 64 में कहा है कि एक सर्व गुप्त से गुप्त ज्ञान एक बार फिर सुन कि यही पूर्ण परमात्मा (जिसके विषय में अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है) मेरा पक्का पूज्य देव है अर्थात् मैं (ब्रह्म क्षर पुरुष) भी उसी की पूजा करता हूँ। यह तेरे हित में कहूँगा। (क्योंकि यही जानकारी गीता ज्ञान दाता प्रभु ने गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में भी दी है। जिसमें कहा है कि मैं उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ। इसलिए यहाँ कहा कि यही गुप्त से भी अतिगुप्त ज्ञान फिर सुन।)

विशेष - अन्य गीता के अनुवाद कर्ताओं ने गलत अनुवाद किया है। ''इष्टः असि मे दृढ़म् इति'' का अर्थ किया है कि तू मेरा प्रिय है। जबकि अर्थ बनता है

अध्याय 18 का श्लोक 64

सर्वगुह्यतमम्, भूयः, श्रृणु, मे, परमम्, वचः, इष्टः, असि, मे, दृढम्, इति, ततः, वक्ष्यामि, ते, हितम् ।।

अनुवाद : (सर्वगुह्यतमम्) सम्पूर्ण गोपनीयोंसे अति गोपनीय (मे) मेरे (परमम्) परम रहस्ययुक्त (हितम्) हितकारक (वचः) वचन (ते) तुझे (भूयः) फिर (वक्ष्यामि) कहूँगा (ततः) इसे (श्रृणु) सुन (इति) यह पूर्ण ब्रह्म (मे) मेरा (दृढम्) पक्का निश्चित (इष्टः) पूज्यदेव (असि) है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 65 में गीता ज्ञान दाता प्रभु (काल भगवान क्षर पुरुष) कह रहा है कि यदि मेरी शरण में रहना है तो मेरी पूजा अनन्य मन से कर। अन्य देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) तथा पितरों आदि की पूजा त्याग दे। फिर मुझे

ही प्राप्त ही होगा अर्थात् ब्रह्म लोक बने महास्वर्ग में चला जाएगा। मैं तुझे सत प्रतिज्ञा करता हूँ। तू मेरा प्रिय है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 66 में कहा है कि यदि (एकम्) उस अद्वितीय अर्थात् जिसकी तुलना में अन्य न हो उस एक सर्व शक्तिमान, सर्व ब्रह्मण्डों के रचनहार, सर्व के धारण-पोषण करने वाले परमेश्वर की शरण में जाना है तो मेरे स्तर की साधना जो ॐ नाम के जाप की कमाई तथा अन्य धार्मिक शास्त्र अनुकूल यज्ञ साधनाएँ मुझ में छोड़ (जिससे तू मेरे ऋण से मुक्त हो जाएगा)। उस (एकम्) अद्वितीय अर्थात् जिसका कोई सानी नहीं है, की शरण में (व्रज) जा। मैं तुझे सर्व पापों (काल के ऋणों) से मुक्त कर दूंगा, तू चिंता मत कर।

विशेष - गीता के अन्य अनुवाद कर्ताओं ने श्लोक 66 का अनुवाद गलत किया है। व्रज का अर्थ आना किया है जबकि व्रज का अर्थ जाना होता है। कृपया वास्तविक अनुवाद निम्न पढ़ें -

अध्याय 18 का श्लोक 66

सर्वधर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम्, व्रज,

अहम्, त्वा, सर्वपापेभ्यः, मोक्षयिष्यामि, मा, शुचः ।।

अनुवाद : (माम्) मेरी (सर्वधर्मान्) सम्पूर्ण पूजाओंको (परित्यज्य) त्यागकर तू केवल (एकम्) एक उस पूर्ण परमात्मा की (शरणम्) शरणमें (व्रज) जा। (अहम्) मैं (त्वा) तुझे (सर्वपापेभ्यः) सम्पूर्ण पापोंसे (मोक्षयिष्यामि) छुड़वा दूँगा तू (मा,शुचः) शोक मत कर।

"ब्रह्म का साधक ब्रह्म को तथा पूर्णब्रह्म का साधक पूर्णब्रह्म को ही प्राप्त होता है"

गीता अध्याय 8 श्लोक 5 से 10 व 13 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में निर्णायक ज्ञान है। गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना का तो केवल एक ॐ अक्षर है जो उच्चारण करके जाप करने का है। जो साधक अंतिम स्वांस तक जाप करता है वह मेरी परम गति को प्राप्त करता है। (अपनी परम गति को गीता ज्ञान दाता प्रभु ने अध्याय 7 श्लोक 18 में अति अनुत्तम अर्थात् अति घटिया कहा है।)

गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का केवल तीन मंत्र ॐ तत् सत् के जाप का ही निर्देश है। (जिसमें ॐ जाप ब्रह्म का है, तत् यह सांकेतिक है जो परब्रह्म का जाप है तथा सत् यह भी सांकेतिक है जो पूर्णब्रह्म का जाप है)। उस पूर्ण परमात्मा के तत्व ज्ञान को तत्वदर्शी संत ही जानता है, उससे प्राप्त कर। मैं (गीता ज्ञान दाता क्षर पुरुष) नहीं जानता।

गीता अध्याय 8 श्लोक 6 में कहा है कि यह विधान है कि अंत समय में साधक जिस भी प्रभु का नाम जाप करता हुआ शरीर त्याग कर जाता है उसी को प्राप्त होता है।

गीता अध्याय 8 श्लोक 5 से 7 में कहा है कि जो अंत समय में मेरा स्मरण करता हुआ शरीर त्याग कर जाता है वह मेरे (ब्रह्म के) भाव में भावित रहता है।

फिर कभी मनुष्य जन्म होता है तो वह साधक अपनी साधना ब्रह्म से ही प्रारम्भ करता है। उसका स्वभाव वैसा ही हो जाता है। (इसी का प्रमाण गीता अध्याय 16-17 में भी है कि जो साधक पूर्व जन्म में जैसी भी साधना करके आया है अगले जन्म में भी स्वभाववस वैसी ही साधना करता है)।

गीता अध्याय 8 श्लोक 7 में कहा है कि सब समय में मेरा स्मरण कर तथा युद्ध भी कर निःसंदेह मुझ को ही प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 8 श्लोक 8 से 10 तक में स्पष्ट किया है कि जो साधक अनन्य मन से परमेश्वर के नाम का जाप करता है वह सदा उसी को स्मरण करने वाला (परम दिव्यम् पुरुष याति) उस परम दिव्य पुरुष अर्थात् परमेश्वर (पूर्णब्रह्म) को प्राप्त होता है। (अध्याय 8 श्लोक 8)।

जो साधक अनादि सर्व के नियन्ता सूक्ष्म से अति सूक्ष्म सबके धारण पोषण करने वाले सूर्य की तरह स्वप्रकाशित अर्थात् तेजोमय शरीर युक्त, अज्ञान रूप अंधकार से परे (कविम्) कविर्देव सच्चिदानन्दघन परमेश्वर का स्मरण करता है। (अध्याय 8 श्लोक 9)

वह भक्ति युक्त साधक तीन मंत्र के जाप की साधना की शक्ति(नाम जाप की कमाई) से अंत समय में शरीर त्याग कर जाते समय त्रिकुटी पर पहुंच कर अभ्यासवश सार नाम का स्मरण करता हुआ उस दिव्य रूप अर्थात् तेजोमय अर्थात् साकार (परम पुरुष)परमेश्वर को ही प्राप्त होता है। (अध्याय 8 श्लोक 10)

"ब्रह्म (क्षर पुरुष) की साधना अनुत्तम (घटिया) है"

गीता अध्याय 2 श्लोक 12 तथा अध्याय 4 श्लोक 5 तथा अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि मैं (गीता ज्ञान दाता) नाशवान हूँ। जन्म मृत्यु मेरी तथा तेरी सदा होती रहेगी। केवल किया हुआ कर्म ही प्राप्त होगा, मोक्ष नहीं होता। मेरी साधना करने वाले भले ही उद्धार साधक हैं परन्तु वे भी मेरी अति घटिया (अनुत्तमाम्) साधना में ही व्यस्त हैं। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62, 64, 66 में कहा है कि उस परमेश्वर की शरण में जा तथा मेरा पूज्य देव भी वही है।

प्रार्थना :- उपरोक्त तीन मंत्र की साधना मुझ दासों के भी दास (रामपाल दास) के पास उपलब्ध है जो स्वयं पूर्ण परमात्मा कविर्देव ने अपनी आत्माओं पर रहम (दया) करके प्रदान की है। क्योंकि अब बिचली (मध्य वाली) पीढी चल रही है। क्योंकि कलयुग के प्रारम्भ में अपने पूर्वज अशिक्षित थे। उस समय परमेश्वर के तत्व ज्ञान को नकली संतों, गुरुओं, महंतों तथा आचार्यों ने ऊपर नहीं आने दिया तथा कलयुग के अंत में सर्व व्यक्ति भक्तिहीन तथा महाविकारी हो जाएंगे। अब यह वर्तमान का समय 20वीं सदी से शिक्षित समाज प्रारम्भ हुआ है। यह बिचली (मध्य वाली) पीढ़ी अर्थात् मनुष्य वंश चल रहा है।

वास्तविक ज्ञान अपने सद्ग्रन्थों में विद्यमान है, जिसे नकली संत, गुरु, आचार्य तथा महन्त नहीं समझ सके। जिस कारण से सर्व भक्त समाज शास्त्र विरुद्ध ज्ञान के आधार से दंत कथाओं (लोकवेद) पर आधारित होकर शास्त्र विधि

त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करके अनमोल मानव जीवन व्यर्थ कर रहा है।

शास्त्र विधि अनुसार साधना :-

1. प्रथम चरण में ब्रह्म गायत्री मंत्र दिया जाता है, जो कमलों को खोलने का है।

उपदेश प्राप्त करने वाला भक्तात्मा यह सोचेगा कि गुरु जी कह तो रहे थे कि तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) की पूजा नहीं करनी है। मन्त्र जाप उन्हीं के दिए हैं। उनके लिए निवेदन है कि यह पूजा नहीं है। हम काल के लोक में रह रहे हैं। यहाँ हमें जिस सुविधा की चाह होगी, वह ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि ही प्रदान करेंगे।

जैसे हमने बिजली का कनेक्शन (लाभ) ले रखा है। उसका बिल (खर्चा) भरना है। हम बिजली वाले मन्त्री की या विभाग की पूजा नहीं कर रहे। हम उनका बिल भरेंगे तो बिजली का लाभ मिलता रहेगा। इसी प्रकार टेलीफोन (दूरभाष) का बिल व पानी का बिल आदि अदा करते रहेंगे तो हमें सुविधाएँ मिलती रहेंगी। आप शास्त्र विरुद्ध साधना करके भक्ति हीन हो गए हो अर्थात् आप पुण्य हीन हो गए हो। जिस कारण से आपको धन लाभ आदि नहीं हो रहा। यह दास (रामपाल दास) आप का गारन्टर (जिम्मेदार) बनकर इस काल लोक की एक ब्रह्मण्ड की शक्तियों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-गणेश-माता आदि) से आप को सर्व सुविधाएँ पुनः प्रारम्भ करवायेगा तथा आप ने इस मन्त्र के जाप से इन का बिल भरते रहना है। जो मन्त्र प्रथम (सत सुकृत अविगत कबीर) है यह आपकी पूजा है, यह पूर्ण परमात्मा है तथा सतम् लाभ (फल) प्राप्त होगा। सतम् का अर्थ अविनाशी अर्थात् हमें अविनाशी पद प्राप्त करना है। इस मन्त्र के चार महीने के बाद आप को सतनाम (सच्चानाम) और मिलेगा, जो दो मंत्र का होगा। उसका एक मंत्र काल के इक्किस ब्रह्मण्ड का ऋण उतारने का है। उस की कमाई करके हमने ब्रह्म (क्षर पुरुष) अर्थात् काल का ऋण उतारना है। फिर यह काल हमें सर्व पापों से मुक्त कर देगा।

गीता अ. नं. 18 के श्लोक नं. 62-66 में वर्णन है :-

अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 62

तम्, एव, शरणम्, गच्छ, सर्वभावेन, भारत,
तत्प्रसादात्, पराम्, शान्तिम्, स्थानम्, प्राप्स्यसि, शाश्वतम्।।

अनुवाद : (भारत) हे भारत! तू (सर्वभावेन) सब प्रकारसे (तम्) उस अज्ञान अंधकार में छुपे हुए परमेश्वरकी (एव) ही (शरणम्) शरणमें (गच्छ) जा। (तत्प्रसादात्) उस परमात्माकी कृपासे ही तू (पराम्) परम (शान्तिम्) शान्तिको तथा (शाश्वतम्) सदा रहने वाला सत (स्थानम्) स्थान–धाम–लोक को (प्राप्स्यसि) प्राप्त होगा।

अनुवाद : हे भारत! तू सब प्रकारसे उस अज्ञान अंधकार में छुपे हुए परमेश्वरकी ही शरणमें जा। उस परमात्माकी कृपासे ही तू परम शांतिको तथा सदा रहने वाला सत स्थान-धाम-लोक को प्राप्त होगा।

अध्याय नं. 18 का श्लोक नं. 66

सर्वधर्मान्, परित्यज्य, माम्, एकम्, शरणम्, व्रज,
अहम्, त्वा, सर्वपापेभ्यः, मोक्षयिष्यामि, मा, शुचः।।

अनुवाद : (माम्) मेरी (सर्वधर्मान्) सम्पूर्ण पूजाओंको (परित्यज्य) त्यागकर तू केवल (एकम्) एक उस पूर्ण परमात्मा की (शरणम्) शरणमें (व्रज) जा। (अहम्) मैं (त्वा) तुझे (सर्वपापेभ्यः) सम्पूर्ण पापोंसे (मोक्षयिष्यामि) छुड़वा दूँगा तू (मा,शुचः) शोक मत कर।

अनुवाद : मेरी सम्पूर्ण पूजाओंको त्यागकर तू केवल एक उस पूर्ण परमात्मा की शरणमें जा। मैं तुझे सम्पूर्ण पापोंसे छुड़वा दूँगा तू शोक मत कर।

उपरोक्त श्लोकों का भावार्थ है कि काल (ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष) कह रहा है कि अर्जुन तू मेरी शरण में रहना चाहता है तो जन्म तथा मृत्यु बनी रहेगी। यदि परमशान्ति तथा सतलोक जाना चाहता है तो उस पूर्ण परमात्मा की शरण में चला जा। उसके लिए मेरी सर्व धार्मिक पूजाएँ अर्थात् सतनाम के प्रथम मन्त्र के जाप की कमाई मुझ में छोड़ कर फिर सर्वभाव से उस एक (सर्वशक्तिमान अर्थात् जिसके बराबर दूसरा न हो उस अद्वितीय परमेश्वर) की शरण में चला जा फिर मैं तुझे सर्व पापों (ऋणों) से मुक्त कर दूंगा, तू चिन्ता मत कर तथा सतनाम के दूसरे मन्त्र की कमाई हम परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष को छोड़ देंगे, क्योंकि हमने अक्षर पुरुष के लोक से होकर सतलोक जाना है, उसका किराया देना है। फिर तीसरा मन्त्र सतशब्द अर्थात् सारनाम मिलेगा जो सतलोक में स्थाईत्व प्राप्त करायेगा।

यदि कोई व्यक्ति विदेश गया हो। वहाँ उस पर सरकार का ऋण हो। फिर वापिस स्वदेश आना चाहेगा तो उसे पहले उस देश के ऋण से मुक्ति लेनी होगी। फिर (No Due Certificate) ऋण मुक्त प्रमाण-पत्र प्राप्त करना होगा, तब उस का वापिस आने का पासपोर्ट बनेगा, नहीं तो उसे वापिस नहीं आने दिया जायेगा।

इसी प्रकार आप इस काल के लोक में शास्त्र विरुद्ध साधना करके भक्ति हीन होकर ऋणी हो गए हो। पहले आपको साहूकार बनाया जायेगा। उसके लिए कविर्देव (कबीर साहेब या कबिर् साहेब) ने मुझ दास (संत रामपाल दास) को अपना प्रतिनिधि (Representative)बनाकर भेजा है। उस परमेश्वर की तरफ से यह दास आपका (Guaranter)जिम्मेवार बनेगा तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव आदि शक्तियों से आप के पुनः कनेक्शन (सम्पर्क का लाभ) को प्रारम्भ करवाएगा। जो आपने इनके मन्त्र की कमाई करके किश्तों में बिल भरना है। जब तक आप यहाँ से मुक्त नहीं होते तब तक आप को सर्व भौतिक सुविधाएँ जोर-शोर से मिलती रहेंगी तथा आप पुण्यदान आदि करके अधिक भक्ति धनी बन सकोगे। दूसरे शब्दों में जैसे हमारे शरीर में कमल बने हैं। जब हम शरीर त्याग कर परमात्मा के पास जायेंगे तो हमें इन कमलों में से होकर जाना है। जैसे 1. मूल कमल में गणेश जी 2. स्वाद कमल में सावित्री-ब्रह्मा जी 3. नाभि कमल में लक्ष्मी तथा विष्णु जी 4. हृदय कमल में पार्वती और शिव जी 5. कण्ठ कमल में दुर्गा (अष्टंगी) है। इन कमलों से हम तब ही जा सकेंगे जब हम इनका ऋण अदा कर देंगे। प्रथम उपदेश से आप के सर्व कमल खिल जायेंगे अर्थात् आप ऋण मुक्त हो जाओगे। जब आप अन्त समय में शरीर छोड़कर चलोगे तो आप का रास्ता साफ मिलेगा अर्थात् आप के सर्व ऋण मुक्त प्रमाण-पत्र तैयार मिलेगा।

परन्तु हमने पूजा अपने मूल मालिक कविर्देव (कबिर साहेब) की करनी है। जैसे पतिव्रता पत्नी पूजा तो अपने पति की करती है, परन्तु यथोचित आदर सब का करती

है। जैसे देवर को पुत्रवत तथा जेठ को बड़े भाई की तरह तथा सास व ससुर को माता-पिता की तरह। परन्तु जो भाव अपने पति में होता है वह अन्य में नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार कबीर परमेश्वर के भक्त को अपनी भक्ति सफल करनी है। इसलिए किसी अनजान के बहकावे में मत आना। पूर्ण विश्वास के साथ इस दास के द्वारा बताए भक्ति मार्ग पर लगे रहना। यह भक्ति सर्व शास्त्रों के आधार पर है।

2. दूसरे चरण में सतनाम प्रदान किया जाता है। जो दो मंत्र का है। एक ॐ (ओ३म्)+दूसरा तत् जो सांकेतिक है, केवल साधक को ही बताया जाता है।

3. तीसरे चरण में सार नाम दिया जाता है जो तीन मंत्र का है। ओ३म्-तत्-सत् (तत्-सत् सांकेतिक हैं जो साधक को ही बताए जायेंगे)।

इस प्रकार सारनाम (जो तीन मंत्र का बन जाएगा) के स्मरण अभ्यास से साधक परम दिव्य पुरुष अर्थात् परमेश्वर कविर्देव को प्राप्त होगा तथा सतलोक में परम शान्ति अर्थात् पूर्णमोक्ष को प्राप्त हो जायेगा।

विशेष - वर्तमान में यह वास्तविक साधना मुझ दास के अतिरिक्त किसी के पास नहीं है। यदि कोई मुझ दास से चुराकर स्वयं गुरु बनकर नकली शिष्य बना रहा हो तो उस मनुष्य जीवन के दुश्मन से सावधान रहें। वह अनअधिकारी होने के कारण अपना जीवन भी नष्ट कर रहा है तथा नादान अनुयाइयों को भी नरक का भागी बना रहा है, उसे काल का भेजा दूत जानें।

"शंका समाधान"

1. प्रश्न उपरोक्त गीता सार से तो सिद्ध होता है कि ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी की पूजा व्यर्थ है। परन्तु मैं तो तीस वर्ष से श्री शिव जी की पूजा कर रहा हूँ तथा भगवान श्री कृष्ण जी मेरे बहुत प्रिय हैं। मैं इन प्रभुओं को नहीं छोड़ सकता, मेरा इनसे विशेष लगाव हो चुका है। श्री गीता जी का नित्य पाठ करता हूँ। हरे राम, हरे कृष्ण, राधेश्याम, सीता राम, ओ३म् नमः शिवाय, ओ३म् नमो भगवते वासुदेवाय आदि नाम जाप करता हूँ। सोमवार का व्रत भी रखता हूँ। कावड़ भी लाता हूँ तथा धामों पर भी दान करने जाता हूँ। मन्दिर में मूर्ति पूजा करने भी जाता हूँ। स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा करता हूँ तथा परम्परागत पूजा के कारण एक महन्त से उपदेश भी ले रखा है।

उत्तर :- कृपया आप पुनर् उपरोक्त 'गीता सार' को पढ़ो, जब तक तत्व ज्ञान से पूर्ण परिचित आप नहीं होगे, तब तक यह शंका रूपी कांटा खटकता ही रहेगा। जैसे ऊपर उदाहरण है कि उलटा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष है, जिसकी मूल (जड़) तो पूर्ण परमात्मा परमेश्वर है। तीनों गुण रूपी (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) शाखाऐं है। आपने कोई आम का पौधा लगाया है, यदि पौधे की जड़ (मूल) की सिंचाई (पूजा) करोगे जिससे वृक्ष बनेगा, फिर उसकी शाखाओं को फल लगेंगे। शाखा तोड़ने को थोड़े ही कहा जाता है। यह देखें 'सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा अर्थात् शास्त्रविधि अनुसार साधना'।

इसी प्रकार पूजा तो पूर्ण परमात्मा अर्थात् मूल की करनी है, फिर कर्मफल

तीनों गुण (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) रूपी शाखाओं को लगेंगे। इसलिए कुछ भी नहीं छोड़ना है, केवल अपना भक्ति रूपी पौधा सीधा बीजना है अर्थात् शास्त्र विधि अनुसार साधना प्रारम्भ करनी है।

वर्तमान में सर्व पवित्र भक्त समाज शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर रहा है अर्थात् भक्ति रूपी पौधा उलटा लगा रखा है। यदि किसी ने ऐसे पौधा बीज रखा हो तो उसे मूर्ख ही कहा जाता है। (कृप्या देखें उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधे का चित्र)

इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 18 तक में तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की पूजा तक ही सीमित बुद्धि रखने वाले जो इनके अतिरिक्त किसी को नहीं पूजते हैं उनको राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख कहा है तथा कहा है कि ये मुझे भी नहीं पूजते। फिर अपनी साधना को भी गीता ज्ञान दाता प्रभु (ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष) ने अति घटिया (अनुत्तमाम्) अर्थात् व्यर्थ कहा है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62, 64, 66 तथा अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में कहा है कि उस पूर्ण परमात्मा (उलटे लटके वृक्ष की मूल की पूजा कर) की शरण में जा, उसकी पूजा तत्वदर्शी संत के बताए मार्ग से कर (गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में तत्वदर्शी संत की तरफ संकेत किया है)। उसी पूर्ण परमात्मा की शास्त्र विधि अनुसार साधना करने से ही साधक परम शान्ति तथा सतलोक को प्राप्त होता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष को प्राप्त करता है। गीता ज्ञान दाता प्रभु (क्षर पुरुष-काल) कह रहा है कि मैं भी उसी की शरण हूँ अर्थात् मेरा भी ईष्ट देव वही पूर्ण परमात्मा है, मैं भी उसी की पूजा करता हूँ, अन्य को भी उसी की पूजा करनी चाहिए। आप गीता जी का नित्य पाठ भी करते हो तथा साधना गीता जी में वर्णित विधि के विरुद्ध करते हो। जिन मंत्रों का (हरे राम, हरे कृष्ण, राधेश्याम, सीताराम, ओ३म् नमो शिवाय, ओम नमो भगवते वासुदेवाय आदि मंत्रों का) आप जाप करते हो तथा अन्य साधनाऐं व्रत करना, कावड़ लाना, तीर्थों व धामों पर दान तथा पूजा के लिए जाना, गंगा स्नान तथा तीर्थों पर लगने वाली प्रभी में स्नान पवित्र गीता जी में वर्णित न होने के कारण शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) हुआ। जिसे पवित्र गीता जी अध्याय 16 श्लोक 23-24 में व्यर्थ कहा है।

"गद्दी तथा महन्त परम्परा की जानकारी"

महन्त व गद्दी परम्परा की जानकारी :- किसी एकांत स्थान पर या शहर व किसी गाँव में कोई महान आत्मा सन्त या साधक रहा करता था। उसके शरीर त्यागने के पश्चात् उसकी याद बनाए रखने के लिए उनके शरीर के अन्तिम संस्कार स्थल पर एक पत्थर या ईंटों की यादगार बना दी जाती है। फिर उस पवित्रात्मा के अनुयाई या वंशज उसकी पत्थर की मूर्ति रख लेते हैं। कुछ समय उपरान्त श्रद्धालु जाते हैं। कुछ धन दान करने लग जाते हैं। उसे मन्दिर का रूप दे देते हैं तथा उस संत व ऋषि के वंशजों को धन उपार्जन का लालच हो जाता

है। वे बहकाना प्रारम्भ करते हैं कि जो यहाँ दर्शन करने आता है उसको पूर्ण मोक्ष प्राप्त होता है। सर्व लाभ मिलते हैं जो इसी महापुरूष के जीवन काल में शिष्यों को मिलते थे। यह मूर्ति साक्षात् उसी संत जी को ही जानों। जो यहाँ नहीं आएगा उसका मोक्ष संभव नहीं आदि-आदि।

उन नादानों को कोई पूछे कि जैसे कोई वैद्य था, वह नाड़ी देखकर दवाई देता था, रोगी स्वस्थ हो जाता था। उस वैद्य की मृत्यु के पश्चात् उसकी मूर्ति बनाकर स्थापित करके कोई लालची कहे कि यह मूर्ति उसी वैद्य वाला कार्य करती है, जो इसके दर्शन करने आएगा वह पूर्ण स्वस्थ हो जायेगा या स्वयं नकली वैद्य बन कर कोई बैठ जाए कि मैं भी दवाई देता हूँ। परन्तु सर्व उपचार औषधि के ग्रन्थ के विपरीत दे रहा है। वह धोखा दे रहा है क्योंकि केवल धन उपार्जन उसका उद्देश्य है। किसी भी सन्त या प्रभु की मूर्ति आदरणीय यादगार तो है परन्तु पूजनीय नहीं है।

ऐसे ही किसी संत या प्रभु की मूर्ति बनाकर उसकी आड़ में कोई पुजारी व महन्त कहे कि मैं भी नाम देता हूँ। वह महानुभाव सर्व साधना उसी पवित्र शास्त्र के विपरीत दे रहा है जो उस महान संत ने अपने अनुभव का लिखा है। तो वह नकली संत व महंत स्वयं भी दोषी है तथा अनुयाइयों का भी जीवन व्यर्थ करने का भार अपने शीश पर ले रहा है। संत तो एक समय में एक ही आता है। उसके मार्ग में करोड़ों नकली संत, महन्त तथा आचार्य बाधक बनते हैं।

किसी संत जी के शरीर त्यागने के बाद संत या महन्त परम्परा प्रारम्भ होती है। पूर्व संत के स्थान की रक्षार्थ एक प्रबन्धक चुना जाता है, जिसे महन्त कहा जाता है। वह केवल उस पवित्र यादगार की देखभाल करने के लिए ही नियुक्त किया जाता है। फिर लालच वश वह स्वयं ही गुरु बन बैठता है तथा भक्ति चाहने वाली प्यारी आत्मायें उस पर आधरित होकर अपना जीवन व्यर्थ कर जाती हैं। महन्त परम्परा का नियम बना रखा है कि पूर्व महन्त का प्रथम पुत्र महन्त पद का अधिकारी होगा, चाहे वह शराबी हो, चाहे वह अज्ञानी हो। यह भक्ति मार्ग है, इसमें केवल पूर्ण संत ही जीव उद्धार कर सकता है। दास ने दो-तीन महन्त परम्परा की पुस्तक पढ़ी। उनमें देखा कि 1. एक दो वर्ष का बच्चा गद्दी पर बैठा दिया। फिर वह बड़ा होकर नाम दान करने लग गया। दूसरी पुस्तक में पढ़ा कि एक पाँच वर्ष के बच्चे का पिता जी जो महन्त जी था अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गया। बाद में संगत ने तथा उसकी माता जी ने उस पाँच वर्षीय बच्चे को महंत पद पर नियुक्त कर दिया। कुछ वर्ष पर्यन्त वह गुरु जी बन गया। 2. एक महन्त परम्परा के इतिहास को पढ़ा कि महन्त को कोई संतान नहीं हुई। उसकी मृत्यु हो गई। भाई की मृत्यु पहले हो चुकी थी। कोई संतान नहीं थी। गद्दी की रखवाली के लिए एक सेवक को उस कुल में संतान होने तक अस्थाई महन्त नियुक्त कर दिया। कुछ समय उपरान्त महन्त कुल में किसी के लड़का हुआ, अस्थाई महंत गद्दी लेकर भाग गया। किसी अन्य शहर में स्वयं ही गद्दी स्थापना करके महन्त बन बैठा वहाँ नई दुकान खोल ली तथा पूर्व स्थान पर एक अढाई वर्ष का बच्चा महन्त बना

दिया।

3. एक महन्त परम्परा का इतिहास देखा कि बड़ा बेटा घर त्याग गया। उस से छोटे को महन्त पद पर नियुक्त कर दिया। कुछ समय पर्यन्त वहाँ मन्दिर बन गया तथा अधिक चढ़ावा (भेंट पूजा का धन) आने लगा। उस बड़े वाले की संतान ने कहा कि इस मन्दिर पर हमारा अधिकार है, इस कारण झगड़ा प्रारम्भ हुआ। गद्दी पर विराजमान महन्त जी की हत्या कर दी गई। फिर उसका बड़ा बेटा महन्त अर्थात् गद्दी का अधिकारी नियुक्त कर दिया। उसकी भी हत्या कर दी गई। फिर उसका दूसरा भाई गद्दी पर बैठाया गया। दूसरे जो अपने को अधिकारी बताते थे उन्होंने नया स्थान बना कर नई दुकान खोल ली। एक दूसरे पर मुकदमें करके सुखमय जीवन को लालच में नरक बना लिया। वह धाम कहां रहा? वह तो कुरूक्षेत्र वाला महाभारत के युद्ध का मैदान हो गया। कुछ महन्तों ने सन्त बनाने की एजेंसी ले रखी है। लाल वस्त्र धारण करवाते हैं। पूर्व नाम को बदल कर अन्य नाम रख देते हैं। फिर वह बनावटी महन्त का बनावटी शिष्य नकली सन्त बनकर भोली आत्माओं के जीवन के साथ खिलवाड़ करता है तथा अनमोल मनुष्य जीवन को स्वयं भी व्यर्थ कर रहा है तथा भोली आत्माओं के जीवन को भी नाश कर रहा है तथा महापाप का भागी बन रहा है।

जिस समय राजा परिक्षित जी को सर्प ने डसना था। उस समय पूर्ण गुरु की आवश्यकता पड़ी क्योंकि पूर्ण सन्त बिना जीव का कल्याण असम्भव है। उस समय पृथ्वी के सर्व ऋषियों ने राजा परिक्षित को दीक्षा देने तथा सात दिन श्रीमदभागवत सुधसागर की कथा सुनाने से मना कर दिया। क्योंकि सातवें दिन पोल खुलनी थी इसी कारण से कोई सामने नहीं आया। स्वयं श्री मद्भागवत सुधासागर के लेखक महर्षि वेदव्यास जी ने भी असमर्थता व्यक्त की। क्योंकि वे ऋषिजन प्रभु से डरने वाले थे। इसलिए भी राजा परिक्षित के जीवन से खिलवाड़ करना उचित नहीं समझा।

राजा परिक्षित जी के कल्याण के लिए महर्षि सुखदेव जी को स्वर्ग से बुलाया गया। जिसने राजा को दीक्षा दी तथा सात दिन तक कथा सुनाकर राजा परिक्षित जी का जितना उद्धार ऋषि सुखदेव जी कर सकते थे, किया। वर्तमान के गुरु, सन्त, महन्त तथा आचार्य स्वयं ही प्रभु के संविधान से अपरिचित हैं। इसलिए भयंकर दोष के पात्र बनकर दोषी हो रहे हैं।

ओरों पंथ बतावहीं, स्वयं न जाने राह।
अनअधिकारी कथा–पाठ करे व दीक्षा देवें, बहुत करत गुनाह।

वर्तमान में कथा व ग्रन्थों का पाठ करने वालों व नाम दान करने वालों की बाढ़ सी आई हुई है। क्योंकि सर्वपवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं व सन्तों तथा महन्तों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा, पलायन करके पीछा छुड़वाना पड़ेगा।

"पवित्र तीर्थ तथा धाम की जानकारी"

किसी साधक ऋषि जी ने किसी स्थान या जलाशय पर बैठ कर साधना की या अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया। वह अपनी भक्ति कमाई करके साथ ले गया तथा अपने ईष्ट लोक को प्राप्त हुआ। उस साधना स्थल का बाद में तीर्थ या धाम नाम पड़ा। अब कोई उस स्थान को देखने जाए कि यहां कोई साधक रहा करता था। उसने बहुतों का कल्याण किया। अब न तो वहाँ संत जी है, जो उपदेश दे। वह तो अपनी कमाई करके चला गया।

विचार करें :- कृपया तीर्थ व धाम को हमोमदस्ता जानें। (एक डेढ़ फुट का लोहे का गोल पात्र लगभग नौ इंच परिधि का उखल जैसा होता है तथा डेढ़ फुट लम्बा तथा दो इन्च परिधि का गोल लोहे का डंडा-सा मूसल जैसा होता है जो सामग्री व दवाईंयां आदि कूटने के काम आता है, उसे हमोम दस्ता कहते हैं।) एक व्यक्ति अपने पड़ौसी का हमोम दस्ता मांग कर लाया। उसने हवन की सामग्री कूटी तथा मांज धोयकर लौटा दिया। जिस कमरे में हमोम दस्ता रखा था उस कमरे में सुगंध आने लगी। घर के सदस्यों ने देखा कि यह सुगन्ध कहां से आ रही है तो पता चला कि हमोम दस्ते से आ रही है। वे समझ गए कि पड़ौसी ले गया था, उसने कोई सुगंध युक्त वस्तु कूटी है। कुछ दिन बाद वह सुगंध भी आनी बंद हो गई।

इसी प्रकार तीर्थ व धाम को एक हमोम दस्ता जानों। जैसे सामग्री कूटने वाले ने अपनी सर्व वस्तु पोंछ कर रख ली। खाली हमोम दस्ता लौटा दिया। अब कोई उस हमोम दस्ते को सूंघकर ही कृत्यार्थ माने तो नादानी है। उसको भी सामग्री लानी पड़ेगी, तब पूर्ण लाभ होगा।

ठीक इसी प्रकार किसी धाम व तीर्थ पर रहने वाला पवित्र आत्मा तो राम नाम की सामग्री कूट कर झाड़-पौंछ कर अपनी सर्व कमाई को साथ ले गया। बाद में अनजान श्रद्धालु, उस स्थान पर जाने मात्र से कल्याण समझें तो उनके मार्ग दर्शकों (गुरुओं) की शास्त्र विधि रहित बताई साधना का ही परिणाम है। उस महान आत्मा सन्त की तरह प्रभु साधना करने से ही कल्याण सम्भव है। उसके लिए तत्वदर्शी संत की खोज करके उससे उपदेश लेकर आजीवन भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुकूल सत साधना मुझ दास के पास उपलब्ध है कृपया निःशुल्क प्राप्त करें।

"श्री अमरनाथ धाम की स्थापना कैसे हुई?"

भगवान शंकर जी ने पार्वती जी को एकांत स्थान पर उपेदश दिया था जिस कारण से माता पार्वती जी इतनी मुक्त हो गई कि जब तक प्रभु शिव जी (तमोगुण) की मृत्यु नहीं होगी, तब तक उमा जी की भी मृत्यु नहीं होगी। सात ब्रह्मा जी (रजोगुण) की मृत्यु के उपरान्त भगवान विष्णु (सतोगुण) की मृत्यु होगी। सात विष्णु जी की मृत्यु के पश्चात् शिवजी की मृत्यु होगी। तब माता पार्वती जी भी मृत्यु को

प्राप्त होगी, पूर्ण मोक्ष नहीं हुआ। फिर भी जितना लाभ पार्वती जी को हुआ वह भी अधिकारी से उपदेश मंत्र ले कर हुआ। बाद में श्रद्धालुओं ने उस स्थान की याद बनाए रखने के लिए उसको सुरक्षित रखा तथा दर्शक जाने लगे।

जैसे यह दास (सन्त रामपाल) स्थान-स्थान पर जा कर सत्संग करता है। वहाँ पर खीर व हलवा भी बनाया जाता है। जो भक्तात्मा उपदेश प्राप्त कर लेता है, उसका कल्याण हो जाता है। सत्संग समापन के उपरान्त सर्व टैंट आदि उखाड़ कर दूसरे स्थान पर सत्संग के लिए चले गये, पूर्व स्थान पर केवल मिट्टी या ईंटों की बनाई भट्ठी व चूल्हे शेष छोड़ दिए। फिर कोई उसी शहर के व्यक्ति से कहे कि आओ आप को वह स्थान दिखा कर लाता हूँ, जहां संत रामपाल दास जी का सत्संग हुआ था, खीर बनाई थी। बाद में उन भट्ठियों को देखने जाने वाले को न तो खीर मिले, न ही सत्संग के अमृत वचन सुनने को मिले, न ही उपदेश प्राप्त हो सकता जिससे कल्याण हो सके। उसके लिए संत ही खोजना पड़ेगा, जहां सत्संग चल रहा हो, वहाँ पर सर्व कार्य सिद्ध होंगे।

ठीक इसी प्रकार तीर्थों व धामों पर जाना तो उस यादगार स्थान रूपी भट्ठी को देखना मात्र ही है। यह पवित्र गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरूद्ध हुई। जिससे कोई लाभ नहीं (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)।

तत्व ज्ञान हीन सन्तों व महंतों तथा आचार्यों द्वारा भ्रमित श्रद्धालु तीर्थों व धामों पर आत्म कल्याणार्थ जाते हैं। श्री अमरनाथ जी की यात्रा पर गए श्रद्धालु तीन-चार बार बर्फानी तुफान में दब कर मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रत्येक बार मरने वालों की संख्या हजारों होती थी। विचारणीय विषय है कि यदि श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजा लाभदायक होती तो क्या भगवान शिव उन श्रद्धालुओं की रक्षा नहीं करते? अर्थात् प्रभु शिव जी भी शास्त्र विरूद्ध साधना से अप्रसन्न हैं।

''वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना कैसे हुई?''

जब सती जी (उमा देवी) अपने पिता राजा दक्ष के हवन कुण्ड में छलांग लगाने से जलकर मृत्यु को प्राप्त हुई। भगवान शिव जी उसकी अस्थियों के कंकाल को मोहवश सती जी (पार्वती जी) जान कर दस हजार वर्ष तक कंधे पर लिए पागलों की तरह घूमते रहे। भगवान विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से सती जी के कंकाल को छिन्न-भिन्न कर दिया। जहां धड़ गिरा वहाँ पर उस को जमीन में गाढ़ दिया गया। इस धार्मिक घटना की याद बनाए रखने के लिए उसके उपर एक मन्दिर जैसी यादगार बना दी कि कहीं आने वाले समय में कोई यह न कह दे कि पुराण में गलत लिखा है। उस मन्दिर में एक स्त्री का चित्र रख दिया उसे वैष्णो देवी कहने लगे। उसकी देख-रेख व श्रद्धालु दर्शकों को उस स्थान की कहानी बताने के लिए एक नेक व्यक्ति नियुक्त किया गया। उसको अन्य धार्मिक व्यक्ति कुछ वेतन देते थे। बाद में उसके वंशजों ने उस पर भेंट (दान) लेना प्रारम्भ कर दिया तथा कहने लगे कि एक व्यक्ति का व्यापार ठप्प हो गया था, माता के सौ

रूपये संकल्प किए, एक नारियल चढ़ाया। वह बहुत धनवान हो गया। एक निःसन्तान दम्पति था, उसने माता के दो सौ रूपए, एक साड़ी, एक सोने का गले का हार चढ़ाने का संकल्प किया। उसको पुत्र प्राप्त हो गया।

इस प्रकार भोली आत्माऐं इन दन्त कथाओं पर आधारित होकर अपनी पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों को भूल गए, जिसमें वह सर्व साधनाएं शास्त्र विधि रहित लिखी हैं। जिसके कारण न कोई सुख होता है, न कोई कार्य सिद्ध होता है, न ही परम गति अर्थात् मुक्ति होती है। (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)। इसी प्रकार जहां देवी की आँखे गिरी वहाँ नैना देवी का मन्दिर व जहां जिह्वा गिरी वहाँ श्री ज्वाला जी के मन्दिर तथा जहां धड़ गिरा वहाँ वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना हुई।

"पुरी में श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम कैसे बना"

उड़ीसा प्रांत में एक इन्द्रदमन नाम का राजा था। वह भगवान श्री कृष्ण जी का अनन्य भक्त था। एक रात्री को श्री कृष्ण जी ने राजा को स्वपन में दर्शन देकर कहा कि जगन्नाथ नाम से मेरा एक मन्दिर बनवा दे। श्री कृष्ण जी ने यह भी कहा था कि इस मन्दिर में मूर्ति पूजा नहीं करनी है। केवल एक संत छोड़ना है जो दर्शकों को पवित्र गीता अनुसार ज्ञान प्रचार करे। समुद्र तट पर वह स्थान भी दिखाया जहाँ मन्दिर बनाना था। सुबह उठकर राजा इन्द्रदमन ने अपनी पत्नी को बताया कि आज रात्री को भगवान श्री कृष्ण जी दिखाई दिए। मन्दिर बनवाने के लिए कहा है। रानी ने कहा शुभ कार्य में देरी क्या? सर्व सम्पत्ति उन्हीं की दी हुई है। उन्हीं को समर्पित करने में क्या सोचना है? राजा ने उस स्थान पर मन्दिर बनवा दिया जो श्री कृष्ण जी ने स्वपन में समुद्र के किनारे पर दिखाया था। मन्दिर बनने के बाद समुद्री तुफान उठा, मन्दिर को तोड़ दिया। निशान भी नहीं बचा कि यहाँ मन्दिर था। ऐसे राजा ने पाँच बार मन्दिर बनवाया। पाँचों बार समुद्र ने तोड़ दिया।

राजा ने निराश होकर मन्दिर न बनवाने का निर्णय ले लिया। यह सोचा कि न जाने समुद्र मेरे से कौन-से जन्म का प्रतिशोध ले रहा है। कोष रिक्त हो गया, मन्दिर बना नहीं। कुछ समय उपरान्त पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) ज्योति निरंजन (काल) को दिए वचन अनुसार राजा इन्द्रदमन के पास आए तथा राजा से कहा आप मन्दिर बनवाओ। अब के समुद्र मन्दिर (महल) नहीं तोड़ेगा। राजा ने कहा संत जी मुझे विश्वास नहीं है। मैं भगवान श्री कृष्ण (विष्णु) जी के आदेश से मन्दिर बनवा रहा हूँ। श्री कृष्ण जी समुद्र को नहीं रोक पा रहे हैं। पाँच बार मन्दिर बनवा चुका हूँ, यह सोच कर कि कहीं भगवान मेरी परीक्षा ले रहे हों। परन्तु अब तो परीक्षा देने योग्य भी नहीं रहा हूँ क्योंकि कोष भी रिक्त हो गया है। अब मन्दिर बनवाना मेरे वश की बात नहीं। परमेश्वर ने कहा इन्द्रदमन जिस परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है, वही सर्व कार्य करने में सक्षम है, अन्य प्रभु नहीं। मैं उस

परमेश्वर की वचन शक्ति प्राप्त हूँ। मैं समुद्र को रोक सकता हूँ (अपने आप को छुपाते हुए सत कह रहे थे)। राजा ने कहा कि संत जी मैं नहीं मान सकता कि श्री कृष्ण जी से भी कोई प्रबल शक्ति युक्त प्रभु है। जब वे ही समुद्र को नहीं रोक सके तो आप कौन से खेत की मूली हो। मुझे विश्वास नही होता तथा न ही मेरी वितिय स्थिति मन्दिर (महल) बनवाने की है। संत रूप में आए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा राजन् यदि मन्दिर बनवाने का मन बने तो मेरे पास आ जाना मैं अमूक स्थान पर रहता हूँ। अब के समुद्र मन्दिर को नहीं तोड़ेगा। यह कह कर प्रभु चले आए।

उसी रात्री में प्रभु श्री कृष्ण जी ने फिर राजा इन्द्रदमन को दर्शन दिए तथा कहा इन्द्रदमन एक बार फिर महल बनवा दे। जो तेरे पास संत आया था उससे सम्पर्क करके सहायता की याचना कर ले। वह ऐसा वैसा संत नहीं है। उसकी भक्ति शक्ति का कोई वार-पार नहीं है।

राजा इन्द्रदमन नींद से जागा, स्वपन का पूरा वृतान्त अपनी रानी को बताया। रानी ने कहा प्रभु कह रहे हैं तो आप मत चुको। प्रभु का महल फिर बनवा दो। रानी की सद्भावना युक्त वाणी सुन कर राजा ने कहा अब तो कोष भी खाली हो चुका है। यदि मन्दिर नहीं बनवाऊंगा तो प्रभु अप्रसन्न हो जायेंगे। मैं तो धर्म संकट में फंस गया हूँ। रानी ने कहा मेरे पास गहने रखे हैं। उनसे आसानी से मन्दिर बन जायेगा। आप यह गहने लो तथा प्रभु के आदेश का पालन करो, यह कहते हुए रानी ने सर्व गहने जो घर रखे थे तथा जो पहन रखे थे निकाल कर प्रभु के निमित अपने पति के चरणों में समर्पित कर दिये। राजा इन्द्रदमन उस स्थान पर गया जो परमेश्वर ने संत रूप में आकर बताया था। कबीर प्रभु अर्थात् अपरिचित संत को खोज कर समुद्र को रोकने की प्रार्थना की। प्रभु कबीर जी (कविर्देव) ने कहा कि जिस तरफ से समुद्र उठ कर आता है, वहाँ समुद्र के किनारे एक चौरा (चबूतरा) बनवा दे। जिस पर बैठ कर मैं प्रभु की भक्ति करूंगा तथा समुद्र को रोकूंगा। राजा ने एक बड़े पत्थर को कारीगरों से चबूतरा जैसा बनवाया, परमेश्वर कबीर उस पर बैठ गए। छटी बार मन्दिर बनना प्रारम्भ हुआ। उसी समय एक नाथ परम्परा के सिद्ध महात्मा आ गए। नाथ जी ने राजा से कहा राजा बहुत अच्छा मन्दिर बनवा रहे हो, इसमें मूर्ति भी स्थापित करनी चाहिए। मूर्ति बिना मन्दिर कैसा? यह मेरा आदेश है। राजा इन्द्रदमन ने हाथ जोड़ कर कहा नाथ जी प्रभु श्री कृष्ण जी ने मुझे स्वपन में दर्शन दे कर मन्दिर बनवाने का आदेश दिया था तथा कहा था कि इस महल में न तो मूर्ति रखनी है, न ही पाखण्ड पूजा करनी है। राजा की बात सुनकर नाथ ने कहा स्वपन भी कोई सत होता है। मेरे आदेश का पालन कीजिए तथा चन्दन की लकड़ी की मूर्ति अवश्य स्थापित कीजिएगा। यह कह कर नाथ जी बिना जल पान ग्रहण किए उठ गए। राजा ने डर के मारे चन्दन की लकड़ी मंगवाई तथा कारीगर को मूर्ति बनाने का आदेश दे दिया। एक मूर्ति श्री कृष्ण जी की स्थापित करने का आदेश श्री नाथ जी का था। फिर अन्य गुरुओं-संतों ने राजा को राय दी कि अकेले प्रभु कैसे रहेंगे? वे तो श्री बलराम को

सदा साथ रखते थे। एक ने कहा बहन सुभद्रा तो भगवान श्री कृष्ण जी की लाड़ली बहन थी, वह कैसे अपने भाई बिना रह सकती है? तीन मूर्तियाँ बनवाने का निर्णय लिया गया। तीन कारीगर नियुक्त किए। मूर्तियाँ तैयार होते ही टुकड़े-टुकड़े हो गई। ऐसे तीन बार मूर्तियाँ खण्ड हो गई। राजा बहुत चिन्तित हुआ। सोचा मेरे भाग्य में यह यश व पुण्य कर्म नहीं है। मन्दिर बनता है वह टूट जाता है। अब मूर्तियाँ टूट रही हैं। नाथ जी रूष्ट हो कर गए हैं। यदि कहूँगा कि मूर्तियाँ टूट जाती हैं तो सोचेगा कि राजा बहाना बना रहा है, कहीं मुझे शाप न दे दे। चिन्ता ग्रस्त राजा न तो आहार कर रहा है, न रात्री भर निन्द्रा आई। सुबह बेचैन अवस्था में राज दरबार में गया। उसी समय पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर प्रभु एक अस्सी वर्षीय कारीगर का रूप बनाकर राज दरबार में उपस्थित हुआ। कमर पर एक थैला लटकाए हुए था जिसमें आरी बाहर स्पष्ट दिखाई दे रही थी, मानों बिना बताए कारीगर का परिचय दे रही थी तथा अन्य बसोला व बरमा आदि थेले में भरे थे। कारीगर वेश में प्रभु ने राजा से कहा मैंने सुना है कि प्रभु के मन्दिर के लिए मूर्तियाँ पूर्ण नहीं हो रही हैं। मैं 80 वर्ष का वृद्ध हो चुका हूँ तथा 60 वर्ष का अनुभव है। चन्दन की लकड़ी की मूर्ति प्रत्येक कारीगर नहीं बना सकता। यदि आप की आज्ञा हो तो सेवक उपस्थित है। राजा ने कहा कारीगर आप मेरे लिए भगवान ही कारीगर बन कर आये लगते हो। मैं बहुत चिन्तित था। सोच ही रहा था कि कोई अनुभवी कारीगर मिले तो समस्या का समाधान बने। आप शीघ्र मूर्तियाँ बना दो। वृद्ध कारीगर रूप में आए कविर्देव (कबीर प्रभु) ने कहा राजन मुझे एक कमरा दे दो, जिसमें बैठ कर प्रभु की मूर्ति तैयार करूंगा। मैं अंदर से दरवाजा बंद करके स्वच्छता से मूर्ति बनाऊंगा। ये मूर्तियां जब तैयार हो जायेंगी तब दरवाजा खुलेगा, यदि बीच में किसी ने खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनेगी उतनी ही रह जायेंगी। राजा ने कहा जैसा आप उचित समझो वैसा करो।

बारह दिन मूर्तियाँ बनाते हो गए तो नाथ जी आ गए। नाथ जी ने राजा से पूछा इन्द्रदमन मूर्तियाँ बनाई क्या? राजा ने कर बद्ध हो कर कहा कि आप की आज्ञा का पूर्ण पालन किया गया है महात्मा जी। परन्तु मेरा दुर्भाग्य है कि मूर्तियाँ बन नहीं पा रही हैं। आधी बनते ही टुकड़े-टुकड़े हो जाती हैं नौकरों से मूर्तियों के टुकड़े मंगवाकर नाथ जी को विश्वास दिलाने के लिए दिखाए। नाथ जी ने कहा कि मूर्ति अवश्य बनवानी है। अब बनवाओं मैं देखता हूँ कैसे मूर्ति टूटती है। राजा ने कहा नाथ जी प्रयत्न किया जा रहा है। प्रभु का भेजा एक अनुभवी 80 वर्षीय कारीगर बन्द कमरें में मूर्ति बना रहा है। उसने कहा है कि मूर्तियाँ बन जाने पर मैं अपने आप द्वार खोल दूंगा। यदि किसी ने बीच में द्वार खोल दिया तो जितनी मूर्तियाँ बनी होंगी उतनी ही रह जायेंगी। आज उसे मूर्ति बनाते बारह दिन हो गये। न तो बाहर निकला है, न ही जल पान तथा आहार ही किया है। नाथ जी ने कहा कि मूर्तियाँ देखनी चाहिये, कैसी बना रहा है? बनने के बाद क्या देखना है। ठीक नहीं बनी होंगी तो ठीक बनायेंगे। यह कहकर नाथ जी राजा इन्द्रदमन को साथ लेकर उस कमरे के सामने गए जहाँ मूर्ति बनाई जा रही थी तथा आवाज लगाई

परमेश्वर कबीर जी द्वारा समुन्द्र से जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने से बचाया
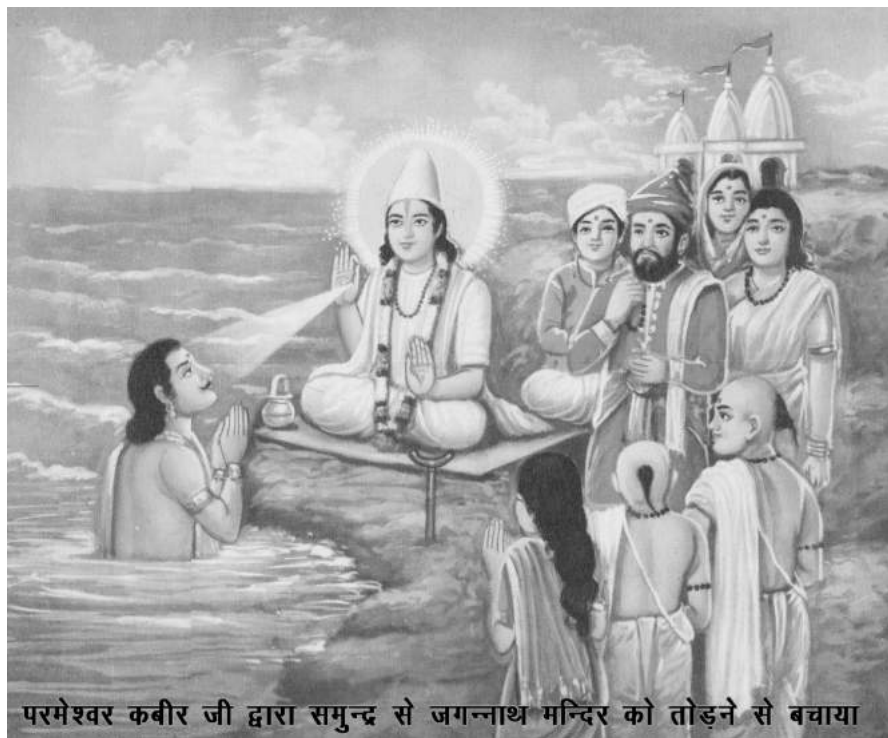
कारीगर द्वार खोलो। कई बार कहा परन्तु द्वार नहीं खुला तथा जो खट-खट की आवाज आ रही थी, वह भी बन्द हो गई। नाथ जी ने कहा कि 80 वर्षीय वृद्ध बता रहे हो, बारह दिन खाना-पिना भी नहीं किया है। अब आवाज भी बंद है, कहीं मर न गया हो। धक्का मार कर दरवाजा तोड़ दिया, देखा तो तीन मूर्तियाँ रखी थी, तीनों के हाथ के व पैरों के पंजे नहीं बने थे। कारीगर अन्तर्ध्यान था।

मन्दिर बन कर तैयार हो गया और चारा न देखकर अपने हठ पर अडिग नाथ जी ने कहा ऐसी ही मूर्तियों को स्थापित कर दो, हो सकता है प्रभु को यही स्वीकार हो, लगता है श्री कृष्ण ही स्वयं मूर्तियां बना कर गए हैं।

मुख्य पांडे ने शुभ मूहूर्त निकाल कर अगले दिन ही मूर्तियों की स्थापना कर दी। सर्व पाण्डे तथा मुख्य पांडा व राजा तथा सैनिक व श्रद्धालु मूर्तियों में प्राण स्थापना करने के लिए चल पड़े। पूर्ण परमेश्वर (कविर्देव) एक शुद्र का रूप धारण करके मन्दिर के मुख्य द्वार के मध्य में मन्दिर की ओर मुख करके खड़े हो गए। ऐसी लीला कर रहे थे मानों उनको ज्ञान ही न हो कि पीछे से प्रभु की प्राण स्थापना की सेना आ रही है। आगे-आगे मुख्य पांडा चल रहा था। परमेश्वर फिर भी द्वार के मध्य में ही खड़े रहे। निकट आ कर मुख्य पांडे ने शुद्र रूप में खड़े परमेश्वर को ऐसा धक्का मारा कि दूर जा कर गिरे तथा एकान्त स्थान पर शुद्र लीला करते हुए बैठ गए। राजा सहित सर्व श्रद्धालुओं ने मन्दिर के अन्दर जा कर देखा तो सर्व मूर्तियाँ उसी द्वार पर खड़े शुद्र रूप परमेश्वर का रूप धारण किए हुए थी। इस कौतूक को देखकर उपस्थित व्यक्ति अचम्भित हो गए। मुख्य पांडा कहने लगा प्रभु क्षुब्ध हो गया है क्योंकि मुख्य द्वार को उस शुद्र ने अशुद्ध कर दिया है। इसलिए सर्व मूर्तियों ने शुद्र रूप धारण कर लिया है। बड़ा अनिष्ठ हो गया है। कुछ समय उपरान्त मूर्तियों का वास्तविक रूप हो गया। गंगा जल से कई बार स्वच्छ करके प्राण स्थापना की गई। {कविर्देव ने कहा अज्ञानता व पाखण्ड वाद की चरम सीमा देखें। कारीगर मूर्ति का भगवान बनता है। फिर पूजारी या अन्य संत उस मूर्ति रूपी प्रभु में प्राण डालता है अर्थात् प्रभु को जीवन दान देता है। तब वह मिट्टी या लकड़ी का प्रभु कार्य सिद्ध करता है, वाह रे पाखण्डियों खूब मूर्ख बनाया प्रभु प्रेमी आत्माओं को।}

मूर्ति स्थापना हो जाने के कुछ दिन पश्चात् लगभग 40 फूट ऊँचा समुद्र का जल उठा जिसे समुद्री तुफान कहते हैं तथा बहुत वेग से मन्दिर की ओर चला। सामने कबीर परमेश्वर चौरा (चबुतरे) पर बैठे थे। अपना एक हाथ उठाया जैसे आशीर्वाद देते हैं, समुद्र उठा का उठा रह गया तथा पर्वत की तरह खड़ा रहा, आगे नहीं बढ़ सका। विप्र रूप बना कर समुद्र आया तथा चबूतरे पर बैठे प्रभु से कहा कि भगवन आप मुझे रास्ता दे दो, मैं मन्दिर तोड़ने जाऊंगा। प्रभु ने कहा कि यह मन्दिर नहीं है। यह तो महल (आश्रम) है। इस में विद्वान पुरुष रहा करेगा तथा पवित्र गीता जी का ज्ञान दिया करेगा। आपका इसको विधवंश करना शोभा नहीं देता। समुद्र ने कहा कि मैं इसे अवश्य तोडूंगा। प्रभु ने कहा कि जाओ कौन रोकता है? समुद्र ने कहा कि मैं विवश हो गया हूँ। आपकी शक्ति अपार है। मुझे रस्ता

दे दो प्रभु। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पूछा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हो? विप्र रूप में उपस्थित समुद्र ने कहा कि जब यह श्री कृष्ण जी त्रेतायुग में श्री रामचन्द्र रूप में आया था तब इसने मुझे अग्नि बाण दिखा कर बुरा भला कह कर अपमानित करके रास्ता मांगा था। मैं वह प्रतिशोध लेने जा रहा हूँ।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि प्रतिशोध तो आप पहले ही ले चुके हो। आपने द्वारिका को डूबो रखा है। समुद्र ने कहा कि अभी पूर्ण नहीं डूबा पाया हूँ, आधी रहती है। वह भी कोई प्रबल शक्ति युक्त संत सामने आ गया था जिस कारण से मैं द्वारिका को पूर्ण रूपेण नहीं समा पाया। अब भी कोशिश करता हूँ तो उधर नहीं जा पा रहा हूँ। उधर से मुझे बांध रखा है।

तब परमेश्वर कबीर (कविर्देव) ने कहा वहाँ भी मैं ही पहुँचा था। मैंने ही वह अवशेष बचाया था। अब जा शेष बची द्वारिका को भी निगल ले, परन्तु उस यादगार को छोड़ देना, जहाँ श्री कृष्ण जी के शरीर का अन्तिम संस्कार किया गया था (श्री कृष्ण जी के अन्तिम संस्कार स्थल पर बहुत बड़ा मन्दिर बना दिया गया। यह यादगार प्रमाण बना रहेगा कि वास्तव में श्री कृष्ण जी की मृत्यु हुई थी तथा पंच भौतिक शरीर छोड़ गये थे। नहीं तो आने वाले समय में कहेंगे कि श्री कृष्ण जी की तो मृत्यु ही नहीं हुई थी)। आज्ञा प्राप्त कर शेष द्वारिका को भी समुद्र ने डूबो लिया। परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने कहा अब आप आगे से कभी भी इस जगन्नाथ मन्दिर को तोड़ने का प्रयत्न नहीं करना तथा इस महल से दूर चला जा। ऐसी आज्ञा प्रभु की मान कर प्रणाम करके मन्दिर से दूर लगभग डेढ़ किलोमीटर हट गया। ऐसे श्री जगन्नाथ जी का मन्दिर अर्थात् धाम स्थापित हुआ।

"श्री जगन्नाथ के मन्दिर में छुआछात प्रारम्भ से ही नहीं है"

कुछ दिन पश्चात जिस पांडे ने प्रभु कबीर जी को शुद्र रूप में धक्का मारा था उसको कुष्ट रोग हो गया। सर्व औषधी करने पर भी स्वस्थ नहीं हुआ। कुष्ट रोग का कष्ट अधिक से अधिक बढ़ता ही चला गया। सर्व उपासनायें भी की, श्री जगन्नाथ जी से रो-रोकर संकट निवार्ण के लिए प्रार्थना की, परन्तु सर्व निष्फल रही। स्वपन में श्री कृष्ण जी ने दर्शन दिए तथा कहा पांडे उस संत के चरण धोकर चरणामृत पान कर जिसको तुने मन्दिर के मुख्य द्वार पर धक्का मारा था। तब उसके आशीर्वाद से तेरा कुष्ट रोग ठीक हो सकता है। यदि उसने तुझे हृदय से क्षमा किया तो, अन्यथा नहीं। मरता क्या नहीं करता?

वह मुख्य पांडा सवेरे उठा। कई सहयोगी पांडों को साथ लेकर उस स्थान पर गया जहाँ पर प्रभु कबीर शूद्र रूप में विराजमान थे। ज्यों ही पांडा प्रभु के निकट आया तो परमेश्वर उठ कर चल पड़े तथा कहा हे पांडा मैं तो अछूत हूँ मेरे से दूर रहना, कहीं आप अपवित्र न हो जायें। पांडा निकट पहुँचा, परमेश्वर और आगे चल पड़े। तब पांडा फूट-फूट कर रोने लगा तथा कहा परवरदीगार मेरा दोष क्षमा कर दो। तब दयालु प्रभु रूक गए। पांडे ने आदर के साथ एक स्वच्छ वस्त्र जमीन पर बिछा कर प्रभु को बैठने की प्रार्थना की। प्रभु उस वस्त्र पर बैठ गए।

तब उस पांडे ने स्वयं चरण धोए तथा चरणामृत को पात्र में वापिस डाल लिया। प्रभु कबीर जी ने कहा पांडे चालीस दिन तक इसे पीना भी तथा स्नान करने वाले जल में कुछ डाल कर स्नान करते रहना। चालीसवें दिन तेरा कुष्ट रोग समाप्त होगा तथा कहा कि भविष्य में भी इस जगन्नाथ जी के मन्दिर में किसी ने छूआछात किया तो उसको भी दण्ड मिलेगा। सर्व उपस्थित व्यक्तियों ने वचन किए कि आज के बाद इस पवित्र स्थान पर कोई छुआ-छात नहीं की जायेगी।

विचार करें :- हिन्दुस्तान का एक ही मन्दिर ऐसा है जिसमें प्रारम्भ से ही छूआ-छात नहीं रही है।

मुझ दास को भी उस स्थान को देखने का अवसर प्राप्त हुआ। कई सेवकों के साथ उस स्थल को देखने के लिए गया था कि कुछ प्रमाण प्राप्त करूं। वहाँ पर सर्व प्रमाण आज भी साक्षी मिले। जिस पत्थर (चौरा) पर बैठ कर कबीर परमेश्वर जी ने मन्दिर को बचाने के लिए समुद्र को रोका था वह आज भी विद्यमान है। उसके ऊपर एक यादगार रूप में गुमज बना रखा है। वहाँ पर बहुत पुरातन महन्त(रखवाला) परम्परा से एक आश्रम भी विद्यमान है। वहाँ पर लगभग 70 वर्षीय वृद्ध महन्त जी से उपरोक्त मन्दिर की समुद्र से रक्षा की जानकारी चाही तो उसने भी यही बताया तथा कहा कि मेरे पूर्वज कई पीढ़ी से यहाँ पर महन्त (रखवाले) रहे हैं। यहाँ पर ही श्री धर्मदास साहेब व उनकी पत्नी भक्तमति आमनी देवी ने शरीर त्यागा था। दोनों की समाधियाँ भी साथ-साथ बनी दिखाई।

फिर हम श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर में गए। वहाँ पर मूर्ति पूजा आज भी नहीं है। परन्तु प्रदर्शनी अवश्य लगा रखी है।

जो तीन मूर्तियाँ भगवान श्री कृष्ण जी तथा श्री बलराम जी व बहन सुभद्रा जी की मन्दिर के अन्दर स्थापित हैं उनके दोनों हाथों के पंजे नहीं हैं, दोनों हाथ टूंडे हैं। उन मूर्तियों की भी पूजा नहीं होती, केवल दर्शनार्थ रखी हैं। वहाँ पर एक गाईड पांडे से पूछा कि सुना है कि यह मन्दिर पाँच बार समुद्र ने तोड़ा था पुनर बनवाया था। समुद्र ने क्यों तोड़ा? फिर किसने समुद्र को रोका। पांडे ने कहा इतना तो मुझे पता नहीं। यह सर्व कृपा जगन्नाथ जी की थी, उन्होंने ही समुद्र को रोका था, सुना तो है कि समुद्र ने तीन बार मन्दिर को तोड़ा था। मैंने फिर प्रश्न किया कि प्रथम वार ही क्यों न समुद्र रोका प्रभु ने। पांडे ने उत्तर दिया कि लीला है जगन्नाथ की।

मैंने फिर पूछा कि इस मन्दिर में छूआछात है या नहीं? उसने कहा जब से मन्दिर बना है यहाँ कोई छूआछात नहीं है। मन्दिर में शुद्र तथा पांडा एक थाली या पतल में खाना खा सकते हैं कोई मना नहीं करता। मैंने प्रश्न किया पांडे जी अन्य हिन्दु मन्दिरों में तो पहले बहुत छुआछात थी, इसमें क्यों नहीं? प्रभु तो वही है। पांडे का उतर था लीला है जगन्नाथ की।

अब पुण्यात्माऐं विचार करें कि सत को कितना दबाया गया है, एक लीला जगन्नाथ की कह कर। पवित्र यादगारें आदरणीय हैं, परन्तु आत्म कल्याण तो केवल पवित्र गीता जी व पवित्र वेदों में वर्णित तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए

तत्वज्ञान के अनुसार भक्ति साधना करने मात्र से ही सम्भव है, अन्यथा शास्त्र विरुद्ध होने से मानव जीवन व्यर्थ हो जाएगा। प्रमाण गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24 श्री जगन्नाथ के मन्दिर में प्रभु के आदेशानुसार पवित्र गीता जी के ज्ञान की महिमा का गुणगान होना ही श्रेयकर है तथा जैसा श्रीमद्भगवत गीता जी में भक्ति विधि है उसी प्रकार साधना करने मात्र से ही आत्म कल्याण संभव है, अन्यथा जगन्नाथ जी के दर्शन मात्र या खिचड़ी प्रसाद खाने मात्र से कोई लाभ नहीं, क्योंकि यह क्रिया श्री गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरुद्ध हुई, जो अध्याय 16 मंत्र 23-24 में प्रमाण है।

"स्वर्ग की परिभाषा है ?"

उदाहरणार्थ स्वर्ग को एक होटल (रेस्टोरेंट) जानों। जैसे कोई धनी व्यक्ति गर्मियों के मौसम में शिमला या कुल्लु मनाली जैसे शहरों में ठण्डे स्थानों पर जाता है। वहाँ किसी होटल में ठहरता है। जिसमें कमरे का किराया तथा खाने का खर्चा अदा करना होता है। दो या तीन महीने में बीस या तीस हजार रूपये खर्च करके वापिस अपने कर्म क्षेत्र में आना होता है। फिर दस महीने मजदूरी मेहनत करो। फिर दो महीने अपनी ही कमाई खर्च कर वापिस आओ। यदि किसी वर्ष कमाई अच्छी नहीं हुई तो उस दो महीने के सुख को भी तरसो।

ठीक इसी प्रकार स्वर्ग जानों :- इस पृथ्वी लोक पर साधना करके कुछ समय स्वर्ग रूपी होटल में चला जाता है। फिर अपनी पुण्य कमाई खर्च करके वापिस नरक तथा चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में कष्ट पाप कर्म के आधार पर भोगना पड़ता है।

जब तक तत्वदर्शी संत नहीं मिलेगा तब तक उपरोक्त जन्म-मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक व चौरासी लाख योनियों का कष्ट बना ही रहेगा। क्योंकि केवल पूर्ण परमात्मा का सतनाम तथा सारनाम ही पापों को नाश करता है। अन्य प्रभुओं की पूजा से पाप नष्ट नहीं होते। सर्व कर्मों का ज्यों का त्यों (यथावत्) फल ही मिलता है।

इसीलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक (महास्वर्ग) तक सर्वलोक नाशवान हैं। जब स्वर्ग-महास्वर्ग ही नहीं रहेंगे तब साधक का कहां ठीकाना होगा, कृपया विचार करें।

प्रश्न - क्या गीता जी का नित्य पाठ करने का कोई लाभ नहीं ? जो दान करते हैं जैसे कुत्ते को रोटी, भूखे को भोजन, चिटियों को आटा, तीर्थों पर भण्डारा आदि करते हैं, क्या यह भी व्यर्थ है ?

उत्तर - धार्मिक सद्ग्रन्थों के पठन-पाठन से ज्ञान यज्ञ का फल मिलता है। यज्ञ का फल कुछ समय स्वर्ग या जिस उद्देश्य से किया उसका फल मिल जाता है, परन्तु मोक्ष नहीं। नित्य पाठ करने का मुख्य कारण यह होता है कि सद्ग्रन्थों में जो साधना करने का निर्देश है तथा जो न करने का निर्देश है उसकी याद ताजा रहे। कभी कोई गलती न हो जाए। जिस से हम वास्तविक उद्देश्य त्याग कर गफलत करके शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) न करने लग जाऐं

तथा मनुष्य जीवन के मुख्य उद्देश्य की याद बनी रहे कि मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य आत्म कल्याण ही है जो शास्त्र अनुकूल साधना से ही संभव है।

जैसे एक जमींदार को वृद्धावस्था में पुत्र की प्राप्ति हुई। किसान ने सोचा जब तक बच्चा जवान होगा, अपने खेती-बाड़ी के कार्य को संभालने योग्य होगा, कहीं मेरी मृत्यु न हो जाए। इसलिए किसान ने अपना अनुभव लिख कर छोड़ दिया तथा अपने पुत्र से कहा कि पुत्र जब तू जवान हो, तब अपने खेती-बाड़ी के कार्य को समझने के लिए इस मेरे अनुभव के लेख को प्रतिदिन पढ़ लेना तथा अपनी कृषि करना। पिता जी की मृत्यु के उपरान्त किसान का पुत्र प्रतिदिन पिता जी के द्वारा लिखे अनुभव के लेख को पढ़ता। परन्तु जैसा उसमें लिखा है वैसा कर नहीं रहा है। वह किसान का पुत्र क्या धनी हो सकता है ? कभी नहीं। वैसे ही करना चाहिए जो पिता जी ने अपना अनुभव लेख में लिखा है।

ठीक इसी प्रकार पवित्र गीता जी के पाठ को तो श्रद्धालु नित्य कर रहे हैं परन्तु साधना सद्ग्रन्थ के विपरीत कर रहे हैं। इसलिए गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 के अनुसार व्यर्थ साधना है।

जैसे तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की पूजा गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 में मना है तथा श्राद्ध निकालना अर्थात् पितर पूजा, पिण्ड भरवाना, फूल (अस्थियां) उठा कर गंगा में क्रिया करवाना, तेरहवीं, सतरहवीं, महीना, छःमाही, वर्षी आदि करना गीता अध्याय 9 श्लोक 25 में मना है। व्रत रखना गीता अध्याय 6 श्लोक 16 में मना है। लिखा है कि हे अर्जुन ! योग (भक्ति) न तो बिल्कुल न खाने वाले (व्रत रखने वाले) का सिद्ध होता है, ... अर्थात् व्रत रखना मना है।

भूखों को भोजन देना, कुत्तों आदि जीव-जन्तुओं व पशुओं को आहार कराना आदि बुरा नहीं है, परन्तु पूर्ण संत के माध्यम से उनकी आज्ञा अनुसार दान तथा यज्ञ आदि करना ही पूर्ण लाभदायक है।

जैसे एक कुत्ता कार के अंदर मालिक वाली सीट पर बैठकर यात्रा करता है। कुत्ते का ड्राईवर मनुष्य होता है। उस पशु को आम मनुष्य से भी अधिक सुविधाऐं प्राप्त होती हैं। अलग से कमरा, पंखा तथा कुलर लगा होता है आदि-आदि।

जब वह नादान प्राणी मनुष्य शरीर में था, दान भी किया परन्तु मनमाना आचरण (पूजा) के माध्यम से किया जो शास्त्र विधि के विपरीत होने के कारण लाभदायक नहीं हुआ। प्रभु का विधान है कि जैसा भी कर्म प्राणी करेगा उसका फल अवश्य मिलेगा। यह विधान तब तक लागू है जब तक तत्वदर्शी संत पूर्ण परमात्मा का मार्ग दर्शक नहीं मिलता।

जैसा कर्म प्राणी करता है वैसा ही फल प्राप्त होता है। इस विद्यान के अनुसार वह तीर्थों तथा धामों पर या अन्य स्थानों पर भण्डारे द्वारा तथा कुत्ते आदि को रोटी डालने के कर्म के आधार पर कुत्ते की योनी में चला गया। वहाँ पर भी किया कर्म मिला। कुत्ते के जीवन में अपनी पूर्व जन्म की शुभ कर्म की कमाई को समाप्त करके गधे की योनी में चला जाएगा। उस गधे के जीवन में सर्व सुविधाऐं छीन ली

जायेंगी। सारा दिन मिट्टी, कच्ची-पक्की ईंटे ढोएगा। तत्पश्चात् अन्य प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाएगा तथा नरक भी भोगना पड़ेगा। चौरासी लाख योनियों का कष्ट भोग कर फिर मनुष्य शरीर प्राप्त करता है। फिर क्या जाने भक्ति बने या न बने। जैसे धाम तथा तीर्थ पर जाने वाले के पैरों नीचे या जिस सवारी द्वारा जाता है उसके पहियों के नीचे जितने भी जीव जंतु मरते हैं उनका पाप भी तीर्थ व धाम यात्री को भोगना पड़ता है। जब तक पूर्ण संत जो पूर्ण परमात्मा की सत साधना बताने वाला नहीं मिले तब तक पाप नाश (क्षमा) नहीं हो सकते, क्योंकि ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की साधना से पाप नाश (क्षमा) नहीं होते, पाप तथा पुण्य दोनों का फल भोगना पड़ता है। यदि वह प्राणी गीता ज्ञान अनुसार पूर्ण संत की शरण प्राप्त करके पूर्ण परमात्मा की साधना करता तो या तो सतलोक चला जाता या दोबारा मनुष्य शरीर प्राप्त करता। पूर्व पुण्यों के आधार से फिर कोई संत मिल जाता है। वह प्राणी फिर शुभ कर्म करके पार हो जाता है।

इसलिए उपरोक्त मनमाना आचरण लाभदायक नहीं है।

प्रश्न - गीता अध्याय 3 श्लोक 35 तथा अध्याय 18 श्लोक 47 में कहा है कि अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरे के धर्म से गुणरहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में मरना भी कल्याण कारक है, दूसरे का धर्म भय को देने वाला है। इससे सिद्ध होता है कि जो भी जैसी पूजा करता है उसे त्यागना नहीं चाहिए। अपने धर्म में मरना भी कल्याण कारक है।

उत्तर - यदि गीता अध्याय 3 श्लोक 35 तथा अध्याय 18 श्लोक 47 का अर्थ यही है कि जो जैसी पूजा करता है करता रहे, उसे मत त्यागो तो पवित्र श्रीमद् भगवद् गीता जी के ज्ञान की क्या आवश्यकता थी ? एक श्लोक बहुत था। श्री गीता जी के इन श्लोकों का भावार्थ सही है, परन्तु अनुवाद कर्ताओं ने विपरीतार्थ किया है। कृपया निम्न पढ़ें उपरोक्त दोनों श्लोकों का वास्तविक अर्थ -

अध्याय 3 का श्लोक 35

श्रेयान्, स्वधर्मः, विगुणः, परधर्मात्, स्वनुष्ठितात्,
स्वधर्मे, निधनम्, श्रेयः, परधर्मः, भयावहः ।।

अनुवाद : (विगुणः) गुणरहित अर्थात् शास्त्र विधि त्याग कर (स्वनुष्ठितात्) स्वयं मनमाना अच्छी प्रकार आचरणमें लाये हुए (परधर्मात्) दूसरोंकी धार्मिक पूजासे (स्वधर्मः) अपनी शास्त्र विधि अनुसार पूजा (श्रेयान्) अति उत्तम है। शास्त्रानुकूल (स्वधर्मे) अपनी पूजा में तो (निधनम्) मरना भी (श्रेयः) कल्याणकारक है और (परधर्मः) दूसरेकी पूजा (भयावहः) भयको देनेवाली है।

अध्याय 18 का श्लोक 47

श्रेयान्, स्वधर्मः, विगुणः, परधर्मात्, स्वनुष्ठितात्,
स्वभावनियतम्, कर्म, कुर्वन्, न, आप्नोति, किल्बिषम् ।।

अनुवाद : (विगुणः) गुण रहित (स्वनुष्ठितात्) स्वयं मनमाना अर्थात् शास्त्र विधि रहित अच्छी प्रकार आचरण किए हुए (परधर्मात्) दूसरेके धर्म अर्थात् धार्मिक पूजा से (स्वधर्मः) अपना धर्म अर्थात् शास्त्र विधि अनुसार धार्मिक पूजा (श्रेयान्) श्रेष्ठ है (स्वभावनियतम्) स्वयं ही अपने स्वभाव अनुसार

बनाए मनमाने आचरण से (कर्म) भक्ति कर्म (न) मत (कुर्वन्) करो (किल्बिषम्) जिससे पापको (आप्नोति) प्राप्त होता है। विशेष : इसी का प्रमाण गीता अ. 17 के श्लोक 1 से 6 में स्पष्ट है।

उपरोक्त श्लोकों में स्पष्ट है कि अपनी शास्त्र विधि अनुसार साधना श्रेष्ठ है चाहे दूसरों की चमक-धमक वाली साधना कितनी ही सुनियोजित लगे, वह हानिकारक होती है।

जैसे माता का जागरण करने वाले बहुत सुरीली आवाज में गाना गाकर माता की स्तुति मन घडंत कविताओं द्वारा पूरे साज-बाज के साथ करते हैं। उस (स्वनुष्ठितात्) स्वयं निर्मित शास्त्र विधि रहित साधना पर आकर्षित होकर अपनी शास्त्र अनुकूल साधना नहीं त्यागनी चाहिए। जैसे कोई साधक सत साधना पर लगता है तो वह पूर्व की शास्त्र विरुद्ध पुजाओं को त्याग देता है, जैसे पितर पूजा, मन्दिर आदि में जाना आदि। तब अन्य शास्त्र विधि विरुद्ध साधना करने वाले कहते हैं कि आपने सर्व पूर्व पूजाऐं त्याग दी हैं। आप से सर्व देव रुष्ट हो जायेंगे। एक व्यक्ति ने ऐसा ही किया था, उसका इकलौता पुत्र मर गया। इस तरह यह दूसरों की शास्त्र विरूद्ध साधना भय पैदा करती हैं, परन्तु अपनी शास्त्र अनुकूल साधना को अन्तिम स्वांस तक करते रहना ही कल्याणकारक है।

प्रश्न - मैं गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 में वर्णित विधि अनुसार एक आसन पर बैठकर सिर आदि अंगों को सम करके ध्यान करता हूँ, एकादशी का व्रत भी रखता हूँ इस प्रकार शान्ति को प्राप्त हो जाऊँगा।

उत्तर - कृप्या आप गीता अध्याय 6 श्लोक 16 को भी पढ़े जिसमें लिखा है कि हे अर्जुन यह योग (साधना) न तो अधिक खाने वाले का, न बिल्कुल न खाने (व्रत रखने) वाले का सिद्ध होता है। न अधिक जागने वाले का न अधिक श्यन करने (सोने) वाले का सिद्ध होता है न ही एक स्थान पर बैठकर साधना करने वाले का सिद्ध होता है। गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 तक वर्णित विधि का खण्डन गीता अध्याय 3 का श्लोक 5 से 9 में किया है कि जो मूर्ख व्यक्ति समस्त कर्म इन्द्रियों को हठपूर्वक रोक कर अर्थात् एक स्थान पर बैठकर चिन्तन करता है वह पाखण्डी कहलाता है। इसलिए कर्मयोगी (कार्य करते-2 साधना करने वाला साधक) ही श्रेष्ठ है। वास्तविक भक्ति विधि के लिए गीता ज्ञान दाता प्रभु (ब्रह्म) किसी तत्वदर्शी की खोज करने को कहता है (गीता अध्याय 4 श्लोक 34) इस से सिद्ध है गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) द्वारा बताई गई भक्ति विधि पूर्ण नहीं है। इसलिए गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 तक ब्रह्म (क्षर पुरुष-काल) द्वारा अपनी साधना का वर्णन है तथा अपनी साधना से होने वाली शान्ति को अति घटिया (अनुत्तमाम्) गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है। उपरोक्त अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 में कहा हैकि मन और इन्द्रियों को वश में रखने वाला साधक एक विशेष आसन तैयार करे। जो न अधिक ऊंचा हो, न अधिक नीचा। उस आसन पर बैठ कर चित तथा इन्द्रियों को वश में रखकर मन को एकाग्र करके अभ्यास करे। सीधा बैठकर ब्रह्मचर्य का पालन करता हुआ मन को रोक कर प्रयाण होवे। इस प्रकार साधना में लगा साधक मुझमें रहने वाली (निर्वाणपरमाम्) अति बेजान अर्थात् बिल्कुल मरी हुई (नाम मात्र)

शान्ति को प्राप्त होता है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना से होने वाली गति (लाभ) को अति घटिया (अनुत्तमाम्) कहा है। इसी गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि हे अर्जुन ! तू परम शान्ति तथा सतलोक को प्राप्त होगा, फिर पुनर् जन्म नहीं होता, पूर्ण मोक्ष प्राप्त हो जाता है। मैं (गीता ज्ञान दाता प्रभु) भी उसी आदि नारायण पुरुष परमेश्वर की शरण हूँ, इसलिए दृढ़ निश्चय करके उसी की साधना व पूजा करनी चाहिए।

अपनी साधना के अटकल युक्त ज्ञान के आधार पर बताए मार्ग को अध्याय 6 श्लोक 47 में भी स्वयं (युक्ततमः मतः) अर्थात् अज्ञान अंधकार वाले विचार कहा है। अन्य अनुवाद कर्ताओं ने 'मे युक्ततमः मतः' का अर्थ 'परम श्रेष्ठ मान्य है' किया है, जबकि करना था कि यह मेरा अटकल लगाया अज्ञान अंधकार के आधार पर दिया मत है। क्योंकि यथार्थ ज्ञान के विषय में किसी तत्वदर्शी सन्त से जानने को कहा है (गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में) वास्तविक अनुवाद गीता अध्याय 6 श्लोक 47 का -

अध्याय 6 का श्लोक 47

योगिनाम्, अपि, सर्वेषाम्, मद्गतेन, अन्तरात्मना,
श्रद्धावान्, भजते, यः, माम्, सः, मे, युक्ततमः, मतः ।।

अनुवाद : मेरे द्वारा दिए भक्ति विचार जो अटकल लगाया हुआ उपरोक्त श्लोक 10 से 15 में वर्णित पूजा विधि जो मैंने अनुमान सा बताया है, पूर्ण ज्ञान नहीं है, क्योंकि (सर्वेषाम्) सर्व (योगिनाम्) साधकों में (यः) जो (श्रद्धावान्) पूर्ण आस्था से (अन्तरात्मना) सच्ची लगन से (मद्गतेन्) मेरे द्वारा दिए भक्ति मत के अनुसार (माम्) मुझे (भजते) भजता है (सः) वह (अपि) भी (युक्ततमः) अज्ञा अंधकार से जन्म–मरण स्वर्ग–नरक वाली साधना में ही लीन है। यह (मे) मेरा (मतः) विचार है।

इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में तथा गीता अध्याय 5 श्लोक 29 तथा गीता अध्याय 6 श्लोक 15 में स्पष्ट है। इसीलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे भारत, तू सर्व भाव से उस परमात्मा की शरण में जा, उसकी कृपा से ही तू परमशान्ति को तथा सनातन परम धाम अर्थात् सतलोक को प्राप्त होगा। गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि जब तुझे गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में वर्णित तत्वदर्शी संत मिल जाए उसके पश्चात उस परमपद परमेश्वर को भली भाँति खोजना चाहिए, जिसमें गए हुए साधक फिर लौट कर इस संसार में नहीं आते अर्थात् जन्म-मृत्यु से सदा के लिए मुक्त हो जाते हैं। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है, मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ। उसी की भक्ति करनी चाहिए।

गीता अध्याय 3 श्लोक 5 से 9 में भी गीता अध्याय 6 श्लोक 10 से 15 के ज्ञान को गलत सिद्ध किया है। अर्जुन ने पूछा प्रभु मन को रोकना बहुत कठिन है। भगवान ने उत्तर दिया अर्जुन मन को रोकना तो वायु को रोकने के समान है। फिर यह भी कहा है कि निःसंदेह कोई भी व्यक्ति किसी भी समय क्षण मात्र भी कर्म किए बिना नहीं रहता। जो महामूर्ख मनुष्य समस्त कर्म इन्द्रियों को हठपूर्वक ऊपर से रोककर मन से कुछ न कुछ सोचता रहता है। इसलिए एक स्थान पर हठयोग करके न बैठ कर

सांसारिक कार्य करते-करते (कर्मयोग) साधना करना ही श्रेष्ठ है। कर्म न करने अर्थात् हठ योग से एक स्थान पर बैठ कर साधना करने की अपेक्षा कर्म करते-करते साधना श्रेष्ठ है। एक स्थान पर बैठ कर साधना (अकर्मणा) करने से तेरा जीवन निर्वाह कैसे होगा ? शास्त्र विधि त्याग कर साधना (हठयोग एक आसन पर बैठकर) करने से कर्म बन्धन का कारण है, दूसरा जो शास्त्र अनुकूल कर्म करते-करते साधना करना ही श्रेष्ठ है। इसलिए सांसारिक कार्य करता हुआ साधना कर। गीता अध्याय 8 श्लोक 7 में कहा है कि युद्ध भी कर, मेरा स्मरण भी कर, इस प्रकार मुझे ही प्राप्त होगा। गीता अध्याय7 श्लोक 18 में तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि परन्तु मेरी साधना से होने वाली (गति) लाभ अति घटिया (अनुत्तमाम्) है। इसलिए उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से तू परमशान्ति तथा (शाश्वतम् स्थानम्) सतलोक को प्राप्त होगा। उस परमेश्वर की भक्ति विधि तथा पूर्ण ज्ञान (तत्वज्ञान) किसी तत्वदर्शी संत की खोज करके उससे पूछ, मैं (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म/क्षर पुरुष) भी नहीं जानता।

प्रश्न - गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में कहा है कि मैं लोक में, वेद में पुरुषोत्तम नाम से प्रसिद्ध हूँ। इस से तो यही सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता प्रभु ही सर्व शक्ति मान है तथा गीता अध्याय 12 पूर्ण ही गीता ज्ञान दाता की ही महिमा कह रहा है।

उत्तर - गीता जी में गीता ज्ञान दाता प्रभु अपनी साधना तथा समर्थता भी कह रहा है तथा साथ-साथ उस पूर्ण परमात्मा की महिमा भी कह रहा है तथा उस परमेश्वर की साधना के लिए तत्वदर्शी संत की ओर संकेत भी कर रहा है। गीता अध्याय 12 पूरा ब्रह्म (क्षर पुरुष - काल) की महिमा से परिपूर्ण है तथा गीता अध्याय 13 सारा उस पूर्ण परमात्मा अर्थात् आदि पुरुष परमेश्वर की महिमा से परिपूर्ण है। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16 से 17 में पूर्ण परमात्मा तथा परब्रह्म, ब्रह्म आदि का निर्णायक ज्ञान है।

श्लोक 16 में कहा है कि पृथ्वी तत्व से निर्मित लोक (ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड पृथ्वी तत्व से बने होने के कारण एक लोक भी कहा जाता है) में दो प्रभु है। एक क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म, दूसरा अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म। इन दोनों प्रभुओं के अन्तर्गत जितने भी प्राणी हैं उनका तथा इन दोनों प्रभुओं के स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी कही गई है।

श्लोक 17 में कहा है कि वास्तव में पुरुषोत्तम अर्थात् सर्व शक्तिमान परमेश्वर तो उपरोक्त दोनों से अन्य ही है, जो परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर कहा जाता है।

अध्याय 15 के ही श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता (क्षर पुरुष - ब्रह्म) अपनी स्थिति बताते हुए कह रहा है कि मुझे तो लोकवेद (दंत कथा) के आधार से पुरुषोत्तम कहते हैं, क्योंकि मैं अपने इक्कीस ब्रह्मण्डों में जितने भी प्राणी मेरे आधीन हैं, वे चाहे स्थूल शरीर में नाशवान है, चाहे आत्मा रूप में अविनाशी हैं, मैं उनसे उत्तम (श्रेष्ठ) हूँ। इसलिए मैं लोकवेद के आधार से पुरुषोत्तम प्रसिद्ध हूँ। वास्तव में पुरुषोत्तम तो कोई और ही परमेश्वर है जो गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है।

प्रश्न - गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में तथा 3 में कहा है कि मेरी उत्पत्ति को कोई

नहीं जानता। जो मुझे अनादि अजन्मा तत्व से जानता है वह सर्व पापों से मुक्त हो जाता है। इससे स्पष्ट है कि ब्रह्म का जन्म नहीं है तथा सर्व पाप नष्ट कर देता है।

उत्तर - गीता अध्याय 10 श्लोक 2 को पुनर् पढ़ें जिसमें कहा है कि मेरी उत्पत्ति को न देवता (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि) तथा न महर्षि जानते हैं क्योंकि वे सर्व मुझ से उत्पन्न हुए हैं।

इस श्लोक से स्वतः सिद्ध है कि गीता ज्ञान दाता प्रभु की उत्पत्ति अर्थात् जन्म तो हुआ है परन्तु काल (ब्रह्म) से उत्पन्न देवता तथा ऋषिजन नहीं जानते, क्योंकि वे काल से उत्पन्न हुए हैं। जैसे पिता के जन्म के विषय में बच्चे नहीं जानते, परन्तु पिता का पिता अर्थात् दादा जी ही बताता है। पूर्ण परमात्मा ने स्वयं काल लोक में प्रकट होकर ब्रह्म की उत्पत्ति के विषय में बताया है। कृपया पढ़ें सृष्टी रचना इसी पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' के पृष्ठ 20-65 तक।

गीता अध्याय 10 श्लोक 3 का अनुवाद गलत किया है। जैसे गीता अध्याय 2 श्लोक 12 तथा अध्याय 4 श्लोक 5 में अपने आप को नाशवान तथा जन्म-मृत्यु को बार-बार प्राप्त होने वाला कहा है तथा अध्याय 2 श्लोक 17 तथा अध्याय 8 श्लोक 3, 8 से 10 तथा 20 व अध्याय 15 श्लोक 4, 16-17 में किसी अन्य अविनाशी अनादि परमात्मा के विषय में कहा है।

इसलिए गीता अध्याय 10 श्लोक 3 में कहा है कि जो मनुष्यों में विद्वान अर्थात् तत्वदर्शी संत मुझे तथा उस अनादि, वास्तव में जन्म रहित, सर्व लोकों के महेश्वर अर्थात् परमेश्वर को तत्व से जानता है वह तत्वदर्शी संत सत ज्ञान उच्चारण करता है, जिससे सत साधना करके पाप से मुक्त हो जाता है। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में भी है। कृपया पढ़ें गीता अध्याय 10 श्लोक 3 का यथार्थ अनुवाद -

अध्याय 10 का श्लोक 2

न, मे, विदुः, सुरगणाः, प्रभवम्, न, महर्षयः,
अहम्, आदिः, हि, देवानाम्, महर्षीणाम्, च, सर्वशः ।।

अनुवाद : (मे) मेरी (प्रभवम्) उत्पतिको (न) न (सुरगणाः) देवतालोग जानते हैं और (न) न (महर्षयः) महर्षिजन ही (विदुः) जानते हैं, (हि) क्योंकि (अहम्) मैं (सर्वशः) सब प्रकारसे (देवानाम्) देवताओंका (च) और (महर्षीणाम्) महर्षियोंका भी (आदिः) आदि अर्थात् उत्पत्ति का कारण हूँ।

अध्याय 10 का श्लोक 3

यः, माम्, अजम्, अनादिम्, च, वेत्ति, लोकमहेश्वरम्,
असम्मूढः, सः, मर्त्येषु, सर्वपापैः,प्रमुच्यते ।।

अनुवाद : (यः) जो विद्वान व्यक्ति (माम्) मुझको (च) तथा (अनादिम्) सदा रहने वाले अर्थात् पुरातन (अजम्) जन्म न लेने वाले (लोक महेश्वरम्) सर्व लोकों के महान ईश्वर अर्थात् सर्वोच्च परमेश्वर को (वेत्ति) जानता है (सः) वह (मर्त्येषु) शास्त्रों को सही जानने वाला अर्थात् वेदों के अनुसार ज्ञान रखने वाला (असम्मूढः) अर्थात् तत्वदर्शी विद्वान् (सर्वपापैः) सम्पूर्ण पापोंको (प्रमुच्यते) विस्तृत वर्णन के साथ कहता है अर्थात् वही सृष्टी ज्ञान व कर्मों का सही वर्णन करता है अर्थात् अज्ञान से पूर्ण रूप से मुक्त कर देता है। जिस कारण तत्वदर्शी सन्त द्वारा बताई वास्तविक साधना के आधार पर भक्ति करने वाले के सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं।

"गीता ज्ञान दाता ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति का संकेत"

अध्याय 10 के श्लोक 2 में कहा है कि अर्जुन मेरी उत्पत्ति (जन्म) को न तो देवता जानते हैं, न ही महर्षि जन जानते हैं क्योंकि यह सब मेरे से पैदा हुए हैं। इससे स्वसिद्ध है कि ब्रह्म (काल) की उत्पति तो हुई है परंतु देवता व ऋषि नहीं जानते। जैसे पिता जी की उत्पत्ति को बच्चे नहीं बता सकते, परन्तु दादा जी जानता है। इसी प्रकार इक्कीस ब्रह्मण्ड में सर्व देव-ऋषि आदि ज्योति निरंजन - ब्रह्म अर्थात् काल तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से उत्पन्न हुए हैं। इसलिए कह रहा है कि मेरी उत्पत्ति को इक्कीस ब्रह्मण्डों में कोई नहीं जानता, क्योंकि सर्व की उत्पत्ति मेरे से हुई है। केवल पूर्ण ब्रह्म ही काल (ब्रह्म) की उत्पत्ति बता सकता है। क्योंकि ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति परम अक्षर ब्रह्म (पूर्ण ब्रह्म) से हुई है। जिसका गीता जी के अध्याय 3 के श्लोक 14,15 में ब्रह्म की उत्पत्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण है। अध्याय 10 के श्लोक 3 जो तत्वदर्शी अर्थात् विद्वान व्यक्ति मुझे तथा कभी न जन्म लेने वाले सर्व लोकों के महेश्वर अर्थात् अविनाशी परमात्मा को जानता है वह तीनों वेदों (ऋग्वेद, सामवेद तथा यजुर्वेद) को जानता है वह तत्वदर्शी सन्त है। उस के द्वारा बताए भक्ति मार्ग से साधना करने से सर्व पाप नष्ट हो जाते हैं। गीता जी के अध्याय 15 के श्लोक 16,17,18 में वर्णन है कि पूर्ण परमात्मा अविनाशी तो अन्य ही है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। मुझ (काल) को तो केवल इसलिए पुरुषोत्तम कहते हैं क्योंकि मैं इक्कीस ब्रह्मण्डों में मेरे आधीन स्थूल शरीर में नाशवान प्राणियों तथा अविनाशी जीवात्मा से उत्तम हूँ। इसलिए मुझे लोक वेद अर्थात् दन्त कथाओं के आधार से पुरुषोत्तम कहा है परंतु वास्तव में मैं अविनाशी या पालन कर्त्ता नहीं हूँ। गीता जी के अध्याय नं. 3 के श्लोक 14,15 में कहा है कि सर्वजीव अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न वर्षा से होता है, वर्षा यज्ञ से होती है, यज्ञ शुभकर्मों से, कर्म ब्रह्म से उत्पन्न हुए। ब्रह्म अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ। वही अविनाशी सर्वव्यापक परमात्मा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है, यज्ञों में पूज्य है, वही यज्ञों का फल भी देता है अर्थात् वास्तव में अधियज्ञ भी वही है।

फिर गीता जी के अध्याय 10 के श्लोक नं 2 में कहा है कि मेरी उत्पत्ति (प्रभवम्) को कोई नहीं जानता है। इससे सिद्ध है कि काल (ब्रह्म) भी उत्पन्न हुआ है। इसलिए यह कहीं पर आकार में भी है। नहीं तो कृष्ण जी तो अर्जुन के सामने ही खड़े थे। वे तो कह ही नहीं सकते कि मैं अनादि अजम (अजन्मा) हूँ। यह सर्व काल (अदृश ब्रह्म) ही श्री कृष्ण जी के शरीर में जीवस्थ रूप (प्रेतवत् प्रवेश करके) से बोल कर अपनी प्रतिष्ठा (स्थिति) की सही जानकारी गीता रूप में दे गया।

उपरोक्त विवरण से गीता जी में सिद्ध हुआ कि ब्रह्म की उत्पत्ति पूर्णब्रह्म से हुई है। यही प्रमाण अथर्ववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मंत्र 3 में भी है, कृपया निम्न पढ़ें-

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।
ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः—उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्मण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) सर्व की उत्पत्ति कर्त्ता अपने द्वारा सृजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक—ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म—क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सतलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्मण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्रतस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष-काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्मण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पितरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पितरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च—गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पितरम्) जगत पिता (देवबन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः कविर्—देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सतलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही

परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पितरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

प्रश्न - वेदों में कविर् अर्थात् कबीर नाम का विवरण कैसे आया ? वेद तो सृष्टी के प्रारम्भ में प्राप्त हुए थे। कविर्देव (कबीर परमेश्वर) तो सन् 1398 में उत्पन्न हुए हैं?

उत्तर - पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव है तथा उपमात्मक नाम सतपुरुष, परम अक्षर ब्रह्म, पूर्ण ब्रह्म आदि हैं। जैसे देश के प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम कुछ और होता है तथा प्रधानमंत्री, प्राईममिनिस्टर आदि पद के नाम हैं। यही पूर्ण परमात्मा कविर्देव नामान्तरण करके चारों युगों में आए है तथा सृष्टी व वेदों की रचना से पूर्व भी अनामी (अनामय) लोक में मानव सदृश शरीर में कविर्देव नाम से विद्यमान थे। वहीं कविर्देव फिर सतलोक की रचना करके सतलोक में विराजमान हो गए। तत् पश्चात् परब्रह्म तथा ब्रह्म के सर्व लोकों व वेदों की रचना की इसलिए वेदों में कविर्देव का विवरण है।

"कबीर साहेब द्वारा विभीषण तथा मंदोदरी को शरण में लेना"

परमेश्वर मुनिन्द्र अनल अर्थात् नल तथा अनील अर्थात् नील को शरण में लेने के उपरान्त श्री लंका में गए। वहाँ पर एक परम भक्त चन्द्रविजय जी का सोलह सदस्यों का पुण्य परिवार रहता था। वह भाट जाति में उत्पन्न पुण्यकर्मी प्राणी थे। परमेश्वर मुनिन्द्र (कविर्देव) जी का उपदेश सुन कर पूरे परिवार ने नाम दान प्राप्त किया। परम भक्त चन्द्रविजय जी की पत्नी भक्तमति कर्मवती लंका के राजा रावण की रानी मन्दोदरी के पास नौकरी (सेवा) करती थी। रानी मंदोदरी को हँसी-मजाक अच्छे-मंदे चुटकुले सुना कर उसका मनोरंजन कराया करती थी। भक्त चन्द्रविजय राजा रावण के पास दरबार में नौकरी (सेवा) करता था। राजा की बड़ाई के गाने सुना कर प्रसन्न करता था।

भक्त चन्द्रविजय की पत्नी भक्तमति कर्मवती परमेश्वर से उपदेश प्राप्त करने के उपरान्त रानी मंदोदरी को प्रभु चर्चा जो सृष्टी रचना अपने सतगुरुदेव मुनिन्द्र जी से सुनी थी प्रतिदिन सुनाने लगी।

भक्तमति मंदोदरी रानी को अति आनन्द आने लगा। कई-कई घण्टों तक प्रभु की सत कथा को भक्तमति कर्मवती सुनाती रहती तथा मंदोदरी की आँखों से आंसु बहते रहते। एक दिन रानी मंदोदरी ने कर्मवती से पूछा आपने यह ज्ञान किससे सुना? आप तो बहुत अनाप-शनाप बातें किया करती थी। इतना बदलाव परमात्मा तुल्य संत बिना नहीं हो सकता। तब कर्मवती ने बताया कि हमने एक परम संत से अभी-अभी उपदेश लिया है। रानी मंदोदरी ने संत के दर्शन की अभिलाषा व्यक्त

करते हुए कहा, आप के गुरु अब की बार आयें तो उन्हें हमारे घर बुला कर लाना। अपनी मालकिन का आदेश प्राप्त करके शीश झुकाकर सत्कार पूर्वक कहा कि जो आप की आज्ञा, आप की नौकरानी वही करेगी। मेरी एक विनती है कहते हैं कि संत को आदेश पूर्वक नहीं बुलाना चाहिए। स्वयं जा कर दर्शन करना श्रेयकर होता है और जैसे आप की आज्ञा वैसा ही होगा। महारानी मंदोदरी ने कहा कि अब के आपके गुरुदेव जी आयें तो मुझे बताना मैं स्वयं दर्शन करूंगी। परमेश्वर ने फिर श्री लंका में कृपा की। मंदोदरी रानी ने उपदेश प्राप्त किया। कुछ समय उपरान्त अपने प्रिय देवर श्री भक्त विभीषण जी को उपदेश दिलाया। भक्तमति मंदोदरी उपदेश प्राप्त करके अहर्निश प्रभु स्मरण में लीन रहने लगी। अपने पति रावण को भी सतगुरु मुनिन्द्र जी से उपदेश प्राप्त करने की कई बार प्रार्थना की परन्तु रावण नहीं माना तथा कहा करता था कि मैंने परम शक्ति महेश्वर मृत्युंज्य शिव जी की भक्ति की है। इसके तुल्य कोई शक्ति नहीं है। आपको किसी ने बहका लिया है।

कुछ ही समय उपरान्त वनवास प्राप्त श्री सीता जी का अपहरण करके रावण ने अपने नौ लखा बाग में कैद कर लिया। भक्तमति मंदोदरी के बार-बार प्रार्थना करने से भी रावण ने माता सीता जी को वापिस छोड़ कर आना स्वीकार नहीं किया। तब भक्तमति मंदोदरी जी ने अपने गुरुदेव मुनिन्द्र जी से कहा महाराज जी, मेरे पति ने किसी की औरत का अपहरण कर लिया है। मुझ से सहन नहीं हो रहा है। वह उसे वापिस छोड़ कर आना किसी कीमत पर भी स्वीकार नहीं कर रहा है। आप दया करो मेरे प्रभु। आज तक जीवन में मैंने ऐसा दुःख नहीं देखा था।

परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने कहा कि बेटी मंदोदरी यह औरत कोई आम स्त्री नहीं है। श्री विष्णु जी को शापवश पृथ्वी पर आना पड़ा है, वे श्री राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र अयोध्यावासी हैं। इनको 14 वर्ष का वनवास प्राप्त है तथा लक्ष्मी जी स्वयं सीता रूप बनाकर इनकी पत्नी रूप में वनवास में थी। उसे रावण एक साधु वेश बना कर धोखा देकर उठा लाया है। यह स्वयं लक्ष्मी ही सीता जी है। इसे शीघ्र वापिस करके क्षमा याचना करके अपने जीवन की भिक्षा याचना रावण करें तो इसी में इसका शुभ है।

भक्तमति मंदोदरी के अनेकों बार प्रार्थना करने से रावण नहीं माना तथा कहा कि वे दो मस्करे जंगल में घूमने वाले मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं। मेरे पास अनगिनत सेना है। मेरे एक लाख पुत्र तथा सवा लाख नाती हैं। मेरे पुत्र मेघनाद ने स्वर्ग राज इन्द्र को पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह कर रखा है। तेतीस करोड़ देवताओं को हमने कैद कर रखा है। तू मुझे उन दो बेसहारा फिर रहे बनवासियों को भगवान बता कर डराना चाहती है। इस स्त्री को वापिस नहीं करूंगा।

मंदोदरी ने भक्ति मार्ग का ज्ञान जो अपने पूज्य गुरुदेव से सुना था, रावण को बहुत समझाया। विभीषण ने भी अपने बड़े भाई को समझाया। रावण ने अपने भाई विभीषण को पीटा तथा कहा कि तू ज्यादा श्री रामचन्द्र का पक्षपात कर रहा है, उसी के पास चला जा।

एक दिन भक्तमति मंदोदरी ने अपने पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना की कि हे गुरुदेव

मेरा सुहाग उजड़ रहा है। एक बार आप भी मेरे पति को समझा दो। यदि वह आप की बात को नहीं मानेगा तो मुझे विधवा होने का दुःख नहीं होगा।

अपनी बेटी मंदोदरी की प्रार्थना स्वीकार करके राजा रावण के दरबार के समक्ष खड़े होकर द्वारपालों से राजा रावण से मिलने की प्रार्थना की। द्वारपालों ने कहा ऋषि जी इस समय हमारे राजा जी अपना दरबार लगाए हुए हैं। इस समय अन्दर का संदेश बाहर आ सकता है, बाहर का संदेश अन्दर नहीं जा सकता। हम विवश हैं। तब पूर्ण प्रभु अंतर्ध्यान हुए तथा राजा रावण के दरबार में प्रकट हो गए। रावण की दृष्टि ऋषि पर गई तो गरज कर पूछा कि इस ऋषि को मेरी आज्ञा बिना किसने अन्दर आने दिया है। उसे लाकर मेरे सामने कत्ल कर दो। तब परमेश्वर ने कहा राजन आप के द्वारपालों ने स्पष्ट मना किया था। उन्हें पता नहीं कि मैं कैसे अन्दर आ गया। रावण ने पूछा कि तू अन्दर कैसे आया? तब पूर्ण प्रभु मुनिन्द्र वेश में अदृश होकर पुनर् प्रकट हो गए तथा कहा कि मैं ऐसे आ गया। रावण ने पूछा कि आने का कारण बताओ। तब प्रभु ने कहा कि आप योद्धा हो कर एक अबला का अपहरण कर लाए हो। यह आप की शान व शूरवीरता के विपरीत है। यह कोई आम औरत नहीं है। यह स्वयं लक्ष्मी जी अवतार है। श्री रामचन्द्र जी जो इसके पति हैं वे स्वयं विष्णु हैं। इसे वापिस करके अपने जीवन की भिक्षा मांगों। इसी में आप का श्रेय है। इतना सुन कर तमोगुण (भगवान शिव) का उपासक रावण क्रोधित होकर नंगी तलवार लेकर सिंहासन से दहाड़ता हुआ कूदा तथा उस नादान प्राणी ने तलवार के अंधा धुंध सत्तर वार ऋषि जी को मारने के लिए किए। परमेश्वर मुनिन्द्र जी ने एक झाडू की सींक हाथ में पकड़ी हुई थी उसको ढाल की तरह आगे कर दिया। रावण के सत्तर वार उस नाजुक सींक पर लगे। ऐसे आवाज हुई जैसे लोहे के खम्बे (पीलर) पर तलवार लग रही हो। सिंक टस से मस नहीं हुई। रावण को पसीने आ गए। फिर भी अपने अहंकारवश नहीं माना। यह तो जान लिया कि यह कोई आम ऋषि नहीं है। कहा कि मैंने आप की एक भी बात नहीं सुननी, आप जा सकते हैं। परमेश्वर अंतरध्यान हो गए तथा मंदोदरी को सर्व वृतान्त सुनाकर प्रस्थान किया रानी मंदोदरी ने कहा गुरुदेव अब मुझे विधवा होने में कोई कष्ट नहीं होगा।

श्री रामचन्द्र व रावण का युद्ध हुआ। रावण का वध हुआ। जिस लंका के राज्य को रावण ने तमोगुण भगवान शिव की कठिन साधना करके, दस बार शीश न्यौछावर करके प्राप्त किया था वह क्षणिक सुख भी रावण का चला गया तथा नरक का भागी हुआ। इसके विपरीत पूर्ण परमात्मा के सतनाम साधक विभीषण को बिना कठिन साधना किए पूर्ण प्रभु की कृपा से लंकादेश का राज्य भी प्राप्त हुआ। हजारों वर्षों तक विभीषण ने लंका का राज्य का सुख भोगा तथा प्रभु कृपा से राज्य में पूर्ण शान्ति रही। सभी राक्षस वृति के व्यक्ति विनाश को प्राप्त हो चुके थे। भक्तमति मंदोदरी तथा भक्त विभीषण तथा परम भक्त चन्द्रविजय जी के परिवार के पूरे सोलह सदस्य तथा अन्य जिन्होंने पूर्ण परमेश्वर का उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादावत् सतभक्ति की वे सर्व साधक यहाँ पृथ्वी पर भी सुखी रहे तथा अन्त समय

में परमेश्वर के विमान में बैठ कर सतलोक (शाश्वतम् स्थानम्) में चले गए। इसीलिए पवित्र गीता अध्याय 7 मंत्र 12 से 15 में कहा है कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की साधना से मिलने वाली क्षणिक सुविधाओं के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है, वे राक्षस स्वभाव वाले, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मुझ (काल-ब्रह्म) को भी नहीं भजते।

फिर गीता अध्याय 7 मंत्र 18 में गीता बोलने वाला (काल-ब्रह्म) प्रभु कह रहा है कि कोई एक उदार आत्मा मेरी (ब्रह्म की) ही साधना करता है क्योंकि उनको तत्वदर्शी संत नही मिला। वे भी नेक आत्माऐं मेरी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ (गतिम्) मुक्ति की स्थिति में आश्रित रह गए। वे भी पूर्ण मुक्त नहीं हैं। इसलिए पवित्र गीता अध्याय 18 मंत्र 62 में कहा है कि हे अर्जुन तू सर्व भाव से उस परमेश्वर (पूर्ण परमात्मा तत् ब्रह्म) की शरण में जा। उसकी कृपा से ही तू परम शान्ति तथा सतलोक अर्थात् सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।

इसलिए पुण्यात्माओं से निवेदन है कि आज इस दासन के भी दास के पास पूर्ण परमात्मा प्राप्ति की वास्तविक विधि प्राप्त है। निःशुल्क उपदेश लेकर लाभ उठाऐं।

"द्वापर युग में इन्द्रमति को शरण में लेना"

द्वापरयुग में चन्द्रविजय नाम का एक राजा था। उसकी पत्नी इन्द्रमति बहुत ही धार्मिक प्रवृति की औरत थी। संत-महात्माओं का बहुत आदर किया करती थी। उसने एक गुरुदेव भी बना रखा था। उनके गुरुदेव ने बताया था कि बेटी साधु-संतों की सेवा करनी चाहिए। संतों को भोजन खिलाने से बहुत लाभ होता है। एकादशी का व्रत, मन्त्र के जाप आदि साधनायें जो गुरुदेव ने बताई थी, वह भगवत् भक्ति में बहुत दृढता से लगी हुई थी। गुरुदेव ने बताया था कि संतों को भोजन खिलाया करेगी तो तू आगे भी रानी बन जाएगी और तुझे स्वर्ग प्राप्ति होगी। रानी ने सोचा कि प्रतिदिन एक संत को भोजन अवश्य खिलाया करूँगी। उसने यह प्रतिज्ञा मन में ठान ली कि मैं खाना बाद में खाया करूँगी, पहले संत को खिलाया करूँगी। इससे मुझे याद बनी रहेगी। कहीं मुझे भूल न पड़ जाये। रानी प्रतिदिन पहले एक संत को भोजन खिलाती फिर स्वयं खाती। वर्षों तक ये क्रम चलता रहा।

एक समय हरिद्वार में कुम्भ के मेले का संयोग हुआ। जितने भी त्रिगुण माया के उपासक संत थे सभी गंगा में स्नान के लिए (परभी लेने के लिए) प्रस्थान कर गये। इस कारण से कई दिन रानी को भोजन कराने के लिए कोई संत नहीं मिला। रानी इन्द्रमति ने स्वयं भी भोजन नहीं किया। चौथे दिन अपनी बांदी से कहा कि बांदी देख ले कोई संत मिल जाए तो। नहीं तो आज तेरी रानी जीवित नहीं रहेगी। आज मेरे प्राण निकल जाएँगे परन्तु मैं खाना नहीं खाऊँगी। वह दीन दयाल कबीर परमेश्वर अपने पूर्व वाले भक्त को शरण में लेने के लिए न जाने क्या कारण बना देता है ? बांदी ने ऊपर अटारी पर चढ़कर देखा कि सामने से एक संत आ रहा था। सफेद कपड़े थे। द्वापर युग में परमेश्वर कबीर करूणामय नाम से आये थे। बांदी नीचे आई और रानी

से कहा कि एक व्यक्ति है जो साधु जैसा नजर आता है। रानी ने कहा कि जल्दी से बुला ला। बांदी महल से बाहर गई तथा प्रार्थना की कि साहेब आपको हमारी रानी ने याद किया है। करूणामय साहेब ने कहा कि रानी ने मुझे क्यों याद किया है, मेरा और रानी का क्या सम्बन्ध? नौकरानी ने सारी बात बताई। करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि रानी को आवश्यकता पड़े तो यहाँ आ जाए, मैं यहाँ खड़ा हूँ। तू बांदी और वह रानी। मैं वहाँ जाऊँ और यदि वह कह दे कि तुझे किसने बुलाया था या उसका राजा ही कुछ कह दे और बेटी संतों का अनादर बहुत पापदायक होता है। बांदी फिर वापिस आई और रानी से सब वार्ता कह सुनाई। तब रानी ने कहा कि बांदी मेरा हाथ पकड़ और चल। जाते ही रानी ने दण्डवत् प्रणाम करके प्रार्थना की कि हे परवरदिगार! चाहती तो ये हूँ कि आपको कंधे पर बैठा लूं। करूणामय साहेब ने कहा बेटी ! मैं यही देखना चाहता था कि तेरे में कोई श्रद्धा भी है या वैसे ही भूखी मर रही है। रानी ने अपने हाथों खाना बनाया। करूणामय रूप में आए कविर्देव ने कहा कि मैं खाना नहीं खाता। मेरा शरीर खाना खाने का नहीं है। तो रानी ने कहा कि मैं भी खाना नहीं खाऊँगी। करूणामय साहेब जी ने कहा कि ठीक है बेटी लाओ खाना खाते हैं, क्योंकि समर्थ उसी को कहते हैं जो, जो चाहे, सो करे। करूणामय साहेब ने खाना खा लिया, फिर रानी से पूछा कि जो यह तू साधना कर रही है यह तेरे को किसने बताई है? रानी ने कहा कि मेरे गुरुदेव ने आदेश दिया है? कबीर साहेब ने पूछा क्या आदेश दिया है तेरे गुरुदेव ने? इन्द्रमती ने कहा कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश की पूजा, एकादशी का व्रत, तीर्थ भ्रमण, देवी पूजा, श्राद्ध निकालना, मन्दिर में जाना, संतों की सेवा करना। करूणामय (कबीर) साहेब ने कहा कि जो साधना तेरे गुरुदेव ने दी है तेरे को जन्म और मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक व चौरासी लाख योनियों के कष्ट से मुक्त नहीं हो सकती। रानी ने कहा कि महाराज जी जितने भी संत हैं, अपनी-अपनी प्रभुता आप ही बनाने आते हैं। मेरे गुरुदेव के बारे में कुछ नहीं कहोगे। मैं चाहे मुक्त होऊँ या न होऊँ।

अब करूणामय (कबीर) साहेब सोचते हैं कि इस भोले जीव को कैसे समझाए? इन्होंने जो पूछ पकड़ ली उसको छोड़ नहीं सकते, मर सकते हैं। करूणामय साहेब ने कहा कि बेटी वैसे तो तेरी ईच्छा है, मैं निंदा नहीं कर रहा। क्या मैंने आपके गुरुदेव को गाली दी है या कोई बुरा कहा है? मैं तो भक्तिमार्ग बता रहा हूँ कि यह भक्ति शास्त्र विरूद्ध है। तुझे पार नहीं होने देगी और न ही तेरा कोई आने वाला कर्म दण्ड कटेगा और सुन ले आज से तीसरे दिन तेरी मृत्यु हो जाएगी। न तेरा गुरु बचा सकेगा और न तेरी यह नकली साधना बचा सकेगी। (जब मरने की बारी आती है फिर जीव को डर लगता है। वैसे तो नहीं मानते) रानी ने सोचा कि संत झूठ नहीं बोलते। कहीं ऐसा न हो कि मैं परसों ही मर जाऊँ। इस डर से करूणामय साहेब से पूछा कि साहेब क्या मेरी जान बच सकती है? कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि बच सकती है। अगर तू मेरे से उपदेश लेगी, मेरी शिष्या बनेगी, पिछली पूजाएँ त्यागेगी, तब तेरी जान बचेगी। इन्द्रमति ने कहा मैंने सुना है कि गुरुदेव नहीं बदलना चाहिए, पाप लगता है। कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि नहीं पुत्री यह भी तेरा भ्रम है। एक

वैद्य (डाक्टर) से दवाई न लगे तो क्या दूसरे से नहीं लेते? एक पाँचवीं कक्षा का अध्यापक होता है। फिर एक उच्च कक्षा का अध्यापक होता है। बेटी अगली कक्षा में जाना होगा। क्या सारी उम्र पाँचवीं कक्षा में ही लगी रहेगी। इसको छोड़ना पड़ेगा। तू अब आगे की पड़ाई पढ़, मैं पढाने आया हूँ। वैसे तो नहीं मानती परन्तु मृत्यु दिखने लगी कि संत कह रहा है तो कहीं बात न बिगड़ जाए। ऐसा विचार करके इन्द्रमति ने कहा कि जैसे आप कहोगे मैं वैसे ही करूँगी। करूणामय (कबीर) साहेब ने उपदेश दिया। कहा कि तीसरे दिन मेरे रूप में काल आयेगा, तू उससे बोलना मत। जो मैंने नाम दिया है दो मिनट तक इसका जाप करना। दो मिनट के बाद उसको देखना है। उसके बाद सत्कार करना है। वैसे तो गुरुदेव आए तो अति शीघ्र चरणों में गिर जाना चाहिए। ये मेरा केवल इस बार आदेश है। रानी ने कहा ठीक है जी।

अब रानी को तो चिंता बनी हुई थी। श्रद्धा से जाप कर रही थी। (कबीर साहेब) करूणामय साहेब का रूप बना कर गुरुदेव रूप में काल आया, आवाज लगाई इन्द्रमति, इन्द्रमति। अब उसको तो पहले ही डर था, स्मरण करती रही थी। काल की तरफ नहीं देखा। दो मिनट के बाद जब देखा तो काल का स्वरूप बदल गया। काल का ज्यों का त्यों चेहरा दिखाई देने लगा। करूणामय साहेब का स्वरूप नहीं रहा। जब काल ने देखा कि तेरा तो स्वरूप बदल गया। वह जान गया कि इसके पास कोई शक्ति युक्त मंत्र है। यह कहकर चला गया कि तुझे फिर देखूँगा। अब तो बच गई। रानी बहुत खुश हुई, फूली नहीं समाई। कभी अपनी बांदियों को कहने लगी कि मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने मुझे बचा दिया। राजा के पास गई तथा कहा कि आज मेरी मृत्यु होनी थी, मेरे गुरुदेव ने रक्षा कर दी। मुझे लेने के लिए काल आया था। राजा ने कहा कि तू ऐसे ही ड्रामें करती रहती है। काल आता तो क्या तुझे छोड़ जाता? ये संत वैसे बहका देते हैं। अब इस बात को वह कैसे माने? खुशी-खुशी में रानी लेट गई। कुछ देर के बाद सर्प बनकर काल फिर आया और रानी को डस लिया। ज्यों ही सर्प ने डसा रानी को पता चल गया। रानी जोर से चिल्लाई। मुझे साँप ने डंस लिया। नौकर भागे। देखते ही देखते एक मोरी (पानी निकलने का छोटा छिद्र) में से वह सर्प निकल गया। अपने गुरुदेव को पुकार कर रानी बेहोश हो गई। करूणामय (कबीर) साहेब वहाँ प्रकट हो गए। लोगों को दिखाने के लिए मंत्र बोला। (वे तो बिना मंत्र भी जीवित कर सकते हैं, किसी जंत्र-मंत्र की आवश्यकता नहीं) इन्द्रमति को जीवित कर दिया। रानी ने बड़ा शुक्र मनाया कि हे बंदी छोड़ यदि आज आपकी शरण में नहीं होती तो मेरी मृत्यु हो जाती। साहेब ने कहा कि ईन्द्रमति इस काल को मैं तेरे घर में घुसने भी नहीं देता। तेरे पर यह हमला भी नहीं करता। परन्तु तुझे विश्वास नहीं होता। तू यह सोचती कि मेरे ऊपर कोई आपत्ति नहीं आनी थी। गुरुजी ने मुझे बहका कर नाम दे दिया। इसलिए तेरे को थोड़ा-सा झटका दिखाया है। नहीं तो बेटी तेरे को विश्वास नहीं होता।

धर्मदास यहाँ घना अंधेरा, बिन परचय जीव जम का चेरा।।

कबीर साहेब (करूणामय) ने कहा कि अब जब मैं चाहूँगा, तब तेरी मृत्यु होगी। गरीबदास जी कहते हैं कि :-

गरीब, काल डरै करतार से, जय जय जय जगदीश।
जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारे शीश।।

यह काल, कबीर भगवान (कबीर परमेश्वर) से डरता है और यह मौत कबीर साहेब के जूते झाड़ती है अर्थात् नौकर तुल्य है। फिर उस धूल को अपने सिर पर लगाती है कि आप जिसको मारने का आदेश दोगे उसके पास जाऊँगी, नहीं मैं नहीं जाऊँगी।

गरीब, काल जो पीसै पीसना, जौरा है पनिहार।
ये दो असल मजूर हैं, मेरे साहेब के दरबार।।

यह काल जो यहाँ का 21 ब्रह्मण्ड का भगवान (ब्रह्म) है जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश का पिता है। ये तो मेरे कबीर साहेब का आटा पीसता है अर्थात पक्का नौकर है और जौरा (मौत) मेरे कबीर साहेब का पानी भरती है अर्थात् एक विशेष नौकरानी है। यह दो असल मजूर मेरे साहेब के दरबार में है। कुछ दिनों के बाद साहेब फिर आए। रानी इन्द्रमति को सतनाम प्रदान किया।

फिर कुछ समय के उपरान्त करूणामय साहेब ने रानी इन्द्रमति की अति श्रद्धा देखकर सारनाम दिया। शब्द की उपलब्धि करवाई। जब साहेब जाते रहते थे तो इन्द्रमति प्रार्थना किया करती थी कि मेरे पति राजा को समझाओ मालिक, यह भी मान जाये। आपके चरणों में आ जाये तो मेरा जीवन सफल हो जाये। चन्द्रविजय से कबीर साहेब ने प्रार्थना की कि चन्द्रविजय आप भी नाम लो, यह दो दिन का राज और ठाठ है। फिर चौरासी लाख योनियों में प्राणी चला जाएगा। चन्द्रविजय ने कहा कि भगवन मैं तो नाम लूं नहीं और आपकी शिष्या को मना करूँ नहीं, चाहे सारे खजाने को ही दान करो, चाहे किसी प्रकार का सत्संग करवाओ, मैं मना नहीं करूँगा। कबीर साहेब (करूणामय) ने पूछा आप नाम क्यों नहीं लोगे? चन्द्रविजय राजा ने कहा कि मैंने तो बड़े-बड़े राजाओं की पार्टियों में जाना पड़ता है। करूणामय (कबीर साहेब) ने कहा कि पार्टियों में जाने में नाम क्या बाधा करेगा? सभा में जाओ, वहाँ काजू खाओ, दूध पी लो, शरबत(जूस) पी लो, शराब मत प्रयोग करो। शराब पीना महापाप है। परन्तु राजा नहीं माना।

रानी की प्रार्थना पर करूणामय (कबीर) साहेब ने राजा को फिर समझाया कि नाम के बिना ये जीवन ऐसे ही व्यर्थ हो जायेगा। आप नाम ले लो। राजा ने फिर कहा कि गुरू जी मुझे नाम के लिए मत कहना। आपकी शिष्या को मैं मना नहीं करूँगा। चाहे कितना दान करे, कितना सत्संग करवाए। साहेब ने कहा कि बेटी इस दो दिन के सुख को देखकर इसकी बुद्धि भ्रष्ट हो चुकी है। तू प्रभु के चरणों में लगी रह। अपना आत्मकल्याण करवा। यहाँ कोई किसी का पति नहीं, कोई किसी की पत्नी नहीं। दो दिन का सम्बन्ध है। अपना कर्म बना बेटी। जब इन्द्रमति 80 वर्ष की बुढिया हो जाती है, कहाँ 40 साल की उम्र में मर जाना था। जब शरीर भी हिलने लगा, तब करूणामय साहेब बोले अब बोल इन्द्रमति क्या चाहती है? चलना चाहती है सतलोक? इन्द्रमति ने कहा कि साहेब तैयार हूँ। बिल्कुल तैयार हूँ दाता। करूणामय साहेब ने कहा कि तेरी पोते या पोती में कोई ममता तो नहीं है? रानी ने कहा बिल्कुल नहीं साहेब। आपने

ज्ञान ही ऐसा निर्मल दे दिया। इस गंदे लोक की क्या इच्छा करूँ? कबीर साहेब (करूणामय) जी ने कहा कि चल बेटी। रानी प्राण त्याग गई। साहेब कबीर (करूणामय) रानी इन्द्रमती की आत्मा को ऊपर ले गए। इसी ब्रह्मण्ड में एक मानसरोवर है। उस मान सरोवर पर जाकर इस आत्मा को स्नान कराना होता है। इस प्राणी को वहाँ साहेब कुछ समय तक रखते हैं। अब पूछते हैं कि अब फिर बता दे कि तेरी कुछ इच्छा हो तो दुबारा जन्म लेना पड़ेगा। यदि मन में इच्छा रह गई तो सतलोक नहीं जा सकती। इन्द्रमति ने कहा साहेब आप तो अंतर्यामी हो, कोई इच्छा नहीं है। आपके चरणों की इच्छा है। लेकिन एक मन में शंका बनी हुई है कि मेरा जो पति था, उसने मुझे किसी भी धार्मिक कर्म में कभी मना नहीं किया। नहीं तो आजकल के पति अपनी पत्नियों को बाधा कर देते हैं। यदि वह मुझे मना कर देता तो मैं आपके चरणों में नहीं लग पाती। मेरा कल्याण नहीं होता। उसका इस शुभ कर्म में सहयोग का कुछ लाभ मिलता हो तो कभी उस पर भी दया करना दाता। अब साहेब ने देखा कि यह नादान इसके पीछे फिर लटक गई। साहेब बोले ठीक है बेटी, अभी तू दो चार वर्ष यहाँ रह।

अब दो वर्ष के बाद राजा भी मरने लगा। क्योंकि नाम ले नहीं रखा था। यम के दूत आए। राजा चौक में चक्कर खाकर गिर गया। यम के दूतों ने उसकी गर्दन को दबाया। राजा की टट्टी और पेशाब निकल गया। करूणायम (कबीर) साहेब ने रानी को कहा कि देख तेरे राजा की क्या हालत हो रही है? वहाँ से साहेब दिखा रहे हैं। तब रानी ने कहा कि देख लो दाता यदि उसका भक्ति में सहयोग का कोई फल बनता हो तो दया कर लो। रानी को फिर भी थोड़ी-सी ममता बनी थी। साहेब कबीर (करूणामय) ने सोचा की यह फिर काल जाल में फंसेगी। यह सोचकर मानसरोवर से वहाँ गए जहाँ राजा चन्द्रविजय अपने महल में अचेत पड़ा था। यमदूत उसके प्राण निकाल रहे थे। कबीर साहेब के आते ही यमदूत ऐसे आकाश में उड़ गए जैसे मुर्दे से गिद्ध उड़ जाते हैं। चन्द्रविजय होश में आ गया। सामने करूणामय साहेब खड़े थे। केवल चन्द्रविजय को दिखाई दे रहे थे, किसी अन्य को दिखाई नहीं दे रहे थे। चन्द्रविजय चरणों में गिर कर याचना करने लगा मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचाओ। क्योंकि अब उसने देखा कि तेरी जान जाने वाली है। (जब इस जीव की आँख खुलती है कि यह तो बात बिगड़ गई) मुझे क्षमा कर दो दाता, मेरी जान बचा लो मालिक। कबीर साहेब ने कहा राजा आज भी वही बात है, उस दिन भी वही बात थी, नाम लेना होगा। राजा ने कहा मैं नाम ले लूँगा जी, अभी ले लूँगा नाम। कबीर साहेब ने नाम उपदेश दिया तथा कहा कि अब मैं तुझे दो वर्ष की आयु दूँगा, यदि इसमें एक स्वांस भी खाली चला गया तो फिर कर्मदण्ड रह जागा।

कबीर, जीवन तो थोड़ा भला, जै सत सुमरण हो। लाख वर्ष का जीवना, लेखे धरे ना को।।

शुभ कर्म में सहयोग दिया हुआ पिछला कर्म और साथ में श्रद्धा से दो वर्ष के स्मरण से तथा तीनों नाम प्रदान करके कबीर साहेब चन्द्रविजय को भी पार कर ले गये। बोलो सतगुरु देव की जय ''जय बन्दी छोड़।''

परमेश्वर कबीर साहेब जी सच्चे श्रद्धालु की आयु बढ़ा देता है तथा उसके परिवार

की भी रक्षा करता है, उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ। यह प्रमाण बहुत पहले के हैं। वर्तमान में साधारण व्यक्ति विश्वास नहीं करता। वर्तमान में पूज्य कबीर परमेश्वर की शक्ति से मुझ दास के द्वारा हुए कष्ट निवार्ण तथा आयु वृद्धि के ढेर सारे प्रमाण पढ़ें पुस्तक ''परमेश्वर का सार संदेश''।

''पवित्र पुराणों का रहस्य''

पुराणों को समझने के लिए कृपया ध्यान रहे कि श्री ब्रह्मा पुराण, श्री विष्णु पुराण तथा श्री शिव पुराण ब्रह्म की लीला से प्रारम्भ होते हैं, जिसे प्रथम अव्यक्त गीता अध्याय 7 श्लोक 25 में कहा है। जो गीता अध्याय 11 श्लोक 32 में कहता है कि ''मैं काल हूँ''। इसी को क्षर पुरुष तथा ज्योति निरंजन भी कहा जाता है, यही सदाशिव, कालरूपी ब्रह्म भी कहलाता है। यही ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना करके उसके ऊपरी हिस्से में रहता है।

यही महाविष्णु, महाब्रह्मा तथा महाशिव कहलाता है तथा उस क्षेत्र को काशी भी कहते हैं। उसी में रजगुण प्रधान, सतगुण प्रधान, तमगुण प्रधान तीन स्थान बनाकर अपनी पत्नी दुर्गा (महालक्ष्मी) को साथ रख कर तीन पुत्रों रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी, तमगुण श्री शिव जी की उत्पत्ति करके अचेत कर देता है। अचेत अवस्था में ही इनकी परवरिश करता रहता है। जवान होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग पर तथा श्री शिव को कैलाश पर्वत पर चेत कर देता है। इन तीनों प्रभुओं को स्वयं ज्ञान नहीं कि हमारा उत्पत्ति कर्ता कौन है ? यही काल रूपी ब्रह्म ही विष्णु रूप धारण करके अपनी नाभि से कमल उत्पन्न करके उस पर श्री ब्रह्मा जी को रखकर होश में कर देता है। यही जब चाहे श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री शिव रूप धारण करके दृष्टिगोचर होता है। यह काल अपने वास्तविक रूप में कभी प्रकट नहीं होता जो काल ने श्रीमद् भगवत गीता जी का ज्ञान देते समय दिखाया था। गीता अध्याय 10 तथा 11 में प्रमाण है। श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 11 श्लोक 47-48 में कहा है कि हे अर्जुन यह मेरा वास्तविक काल रूप तेरे अतिरिक्त न तो पहले किसी ने देखा है तथा न ही आगे कोई देख सकता है। यह तो मैंने तेरे ऊपर अनुग्रह करके दिखाया है। यह मुझ ब्रह्म का हजार भुजाओं व नेत्रों आदि वाला काल रूप वेदों में वर्णित विधि से जैसे यज्ञ, ओ3म् नाम के जाप आदि से कभी नहीं देखा जा सकता। भावार्थ है कि वेदों में वर्णित विधि से प्रभु प्राप्ति नहीं है। इसीलिए ऋषियों-महर्षियों ने वेदों में ''ओम'' नाम को प्रभु प्राप्ति का जान कर प्रभु प्राप्ति के लिए यज्ञ तथा ओ3म् नाम के जाप की घोर साधनाऐं की, परन्तु ''ब्रह्म'' के दर्शन नहीं हुए। किसी ने कमलों का प्रकाश देख लिया। किसी ने शरीर में ज्योति देखी तथा धुनें सुनी, जो काल (ब्रह्म) का छल है। किसी-किसी ने सहस्त्र कमल की एक हजार ज्योतियों से निकल रहा प्रकाश देखकर प्रभु की प्राप्ति मान ली। जैसे किसी स्थान पर एक ही रंग के हजार बल्ब एक-दूसरे के साथ सटा कर गोलाकार में जगा रखे हों। दूर से देखने वाले को एक प्रकाश समूह ही दिखाई देता है। अतिनिकट जाने पर पता लगता है कि यह तो बल्बों (लटुओं) का प्रकाश है।

इसी प्रकार कुछ साधक हठयोग करके शरीर में अर्न्तमुख होकर, कुछ आतिशबाजी को देखकर प्रभु की प्राप्ति मान लेते है। उसी काल जाल को आनन्द मान कर अपना अनमोल जीवन नष्ट कर जाते हैं। वेदों में स्पष्ट लिखा है कि परमेश्वर सशरीर है। यजुर्वेद अध्याय 1 मंत्र 15 तथा अध्याय 5 मंत्र 1 में प्रमाण है -

अग्ने तनूर् असि। विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि।

जिसका शब्दार्थ है कि - परमेश्वर सशरीर है। उस सर्व पालन कर्ता अमर पुरुष (सतपुरुष) का शरीर है अर्थात् परमेश्वर आकार में है। इसी लिए ऋषियों ने प्रभु दर्शन के लिए घोर साधनाऐं की। परन्तु वेदों में वर्णित विधि से प्रभु प्राप्ति नहीं हो सकती। इसलिए आज तक सर्व साधकों, ऋषियों आदि ने अपने अनुभव की पुस्तकों की रचना कर दी जो वेद ज्ञान विरुद्ध है। अब सर्व भक्त समाज पवित्र वेदों के स्थान पर अन्य महर्षियों या संतों के अनुभव से बनी पुस्तकों के ज्ञान पर आधारित हो चुका है।

पवित्र वेदों तथा श्रीमद् भगवत गीता जी का ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) ईष्ट रूप में पूजा के योग्य नहीं हैं, क्योंकि यह भी नाशवान हैं तथा कर्म का फल ज्यों का त्यों ही देते हैं। पाप क्षमा (नाश) नहीं कर सकते। इनके पुजारी भक्तों को प्रारब्ध में लिखे कष्ट को भोगना ही पड़ता है। इन तीनों प्रभुओं की साधना से क्षणिक सांसारिक सुख तो प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु पूर्ण मोक्ष नहीं होता तथा इन तीनों प्रभुओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) से मिलने वाले क्षणिक लाभ पर जिनकी आस्था बनी है, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले, मूर्ख मुझ (काल-ब्रह्म) को भी नहीं भजते (प्रमाण श्रीमद् भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तक)। क्योंकि ब्रह्म साधक अधिक समय तक ब्रह्मलोक में बने महास्वर्ग में अपनी नाम व पुण्यों की कमाई के आधार पर रहता है। इसलिए काल कह रहा है कि तीनों प्रभुओं से कुछ ज्यादा राहत मैं दे सकता हूँ। परन्तु यह ब्रह्म लोक तथा काल (ब्रह्म) भी नाशवान हैं। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में कहा है कि ब्रह्मलोक तक सर्व लोक नाशवान हैं तथा गीता अध्याय 2 श्लोक 12 तथा अध्याय 4 श्लोक 5 में स्वयं गीता ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि मेरी भी जन्म-मृत्यु होती है अर्थात् नाशवान हूँ। इसलिए पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि जो चौथे प्रकार के मेरे (ब्रह्म के) साधक जो ज्ञानी हैं वे वेदों के ज्ञान के आधार पर जान लेते हैं कि केवल एक पूर्ण परमात्मा ही ईष्ट रूप में पूज्य है, वही पापनाशक, पूर्ण मोक्ष दायक है तथा मानव शरीर प्रभु प्राप्ति के लिए ही मिला है। उन्होंने वेदों का स्वयं ही निष्कर्ष निकाल लिया कि ''ओ३म् (ॐ)'' यही एक मंत्र है जो प्रभु प्राप्ति का है। इसी 'ॐ' मंत्र के जाप से हजारों वर्ष साधना करके अपने शरीर को भी न्यौछावर कर दिया। परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, अन्य उपलब्धियां हो गई। कुछ सिद्धियां प्राप्त हो गई तथा स्वर्ग-महास्वर्ग आदि में उच्च पद प्राप्त हो गए। फिर भजन कमाई तथा पुण्यों की कमाई समाप्त होने पर पुनर् जन्म-मृत्यु तथा चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में घोर कष्ट तथा नरक में पाप कर्म का फल भोग भी बना रहा।

पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 तथा पवित्र गीता अध्याय 4 मंत्र 34 में उपरोक्त दोनों शास्त्रों का ज्ञान दाता ब्रह्म कह रहा है कि उस पूर्ण परमात्मा के विषय में मैं

(काल रूपी ब्रह्म) नहीं जानता। उस परमेश्वर के विषय में पूर्ण जानकारी अर्थात् तत्वज्ञान तथा उस परमेश्वर की प्राप्ति की विधि अर्थात् पूर्ण मोक्ष मार्ग की जानकारी के लिए तत्वदर्शी संतों की खोज कर। फिर वे जैसे साधना बताऐं वैसे कर। उसके पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जिसमें गए हुए साधक फिर लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करके सदा के लिए जन्म-मृत्यु तथा चौरासी लाख योनियों के कष्ट तथा नरक की पीड़ा के कष्ट से मुक्त हो जाते हैं तथा पूर्ण शांन्ति प्राप्त करके (शाश्वतम् स्थानम्) अविनाशी लोक अर्थात् सतलोक को प्राप्त हो जाते हैं (प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा गीता अध्याय 18 श्लोक 62 तथा ऋग्वेद मण्डल 1 सूक्त 24 मंत्र 1-2)।

तत्वदर्शी संत के न मिलने के कारण सर्व ऋषिजन वेदों अनुसार साधना करके भी महाकष्ट में ही रह जाते हैं। इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में कहा है कि जो ज्ञानी आत्मा हैं, वे हैं तो उदार, क्योंकि प्रभु प्राप्ति के लिए तन-मन-धन से वेदों अनुसार साधना करते हैं, परन्तु वे भी मुझ (काल) ब्रह्म की (अनुतमाम्) अति घटिया गति अर्थात् साधना से मिलने वाले लाभ पर ही आश्रित हैं, जिससे इनका पूर्ण मोक्ष नहीं हो सकता। जन्म-मृत्यु तथा नाना प्राणियों के शरीर में तथा नरक में कर्माधार से कष्ट कभी समाप्त नहीं हो सकता।

ज्योति निरंजन (काल रूपी ब्रह्म) ने कसम खाई है कि मैं कभी भी किसी को किसी भी साधना से अपने वास्तविक काल रूप में दर्शन नहीं दूंगा। इसलिए यही काल रूपी ब्रह्म ही अपने पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) के रूप में दिखाई देकर नाना चरित्र करता है। जिस कारण से अन्य जन सोचते हैं कि यह लीला भगवान विष्णु ने की, कभी कहते हैं कि यह लीला श्री ब्रह्मा ने की, कभी कहते हैं कि यह लीला श्री शिव ने की। जैसे आम व्यक्ति कहता है कि श्री ब्रह्मा जी की उत्पत्ति श्री विष्णु जी की नाभि से कमल पर हुई। उस समय श्री विष्णु जी के रूप में काल ने अपनी नाभि से कमल प्रकट किया था।

ब्रह्मा पुराण (सृष्टी का वर्णन नामक अध्याय) में श्री लोमहर्षण ऋषि (जिसे सूत जी भी कहा जाता है) ने अपने गुरुदेव श्री व्यास ऋषि से सुना ज्ञान कहा है। श्री व्यास जी ने श्री नारद जी से सुना तथा श्री नारद जी ने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से जानकारी प्राप्त की थी। श्री ब्रह्मा जी को स्वयं ज्ञान नहीं मैं कहाँ से उत्पन्न हुआ (श्री देवीमहापुराण तीसरा स्कंद)। इसका भावार्थ यह नहीं है कि पुराणों का ज्ञान गलत है। जो ज्ञान श्री ब्रह्मा जी ने होश में आने के पश्चात् कहा है वह उसी स्तर तक तो सही है। परन्तु चेत होने से पूर्व का ज्ञान दंत कथा (लोकवेद) है। जो पूर्ण परमेश्वर ने प्रथम सतयुग में सत् सुकृत नाम से प्रकट होकर तत्वदर्शी संत रूप से तत्वज्ञान तथा वास्तविक सृष्टी रचना का ज्ञान श्री ब्रह्मा जी तथा श्री मनु जी आदि को दिया था। इन्होंने सुनकर भी अनसुना कर दिया था। तत् पश्चात् जब श्री ब्रह्मा जी से इसी के वंशज पूछने लगे तो उस सुने सुनाए ज्ञान के आधार से कुछ मिलावट करके पूर्व का ज्ञान कहा है, जिस कारण कोई पुराण निर्णायक ज्ञान युक्त नहीं है। किसी पुराण के आधार से सिद्ध होता है कि श्री विष्णु जी की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी से हुई, किसी पुराण

से सिद्ध होता है कि श्री ब्रह्मा जी की उत्पत्ति श्री विष्णु जी से हुई आदि-आदि। इसी कारण सभी ऋषिजन तथा श्री ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी भी संशय में ही हैं।

''श्री ब्रह्मा जी तथा श्री विष्णु जी का युद्ध''

श्री शिव पुराण (विद्येश्वर संहिता अध्याय 6 अनुवादक दीन दयाल शर्मा, प्रकाशक रामायण प्रैस मुम्बई, पृष्ठ 67 तथा सम्पादक पंडित रामलग्न पाण्डेय ''विशारद'' प्रकाशक सावित्र ठाकुर, प्रकाशन रथयात्रा वाराणसी, ब्रांच - नाटी इमली वाराणसी के विद्येश्वर संहिता अध्याय 6, पृष्ठ 54 तथा टीकाकार डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी साहित्य आयुर्वेद ज्योतिष आचार्य, एम.ए.,पी.एच.डी.,डी.एस.,सी.ए. । प्रकाशक चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, 38 यू.ए., जवाहर नगर, बंगलो रोड़, दिल्ली, संस्कृत सहित शिव पुराण के विद्येश्वर संहिता अध्याय 6 पृष्ठ 45 पर)

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी के पास आए। उस समय श्री विष्णु जी लक्ष्मी सहित शेष शैय्या पर सोए हुए थे। साथ में अनुचर भी बैठे थे। श्री ब्रह्मा जी ने श्री विष्णु जी से कहा बेटा, उठ देख तेरा बाप आया हूँ। मैं तेरा प्रभु हूँ। इस पर विष्णु जी ने कहा आओ, बैठो मैं तुम्हारा पिता हूँ। तेरा मुख टेढ़ा क्यों हो गया। ब्रह्मा जी ने कहा - हे पुत्र! अब तुझे अभिमान हो गया है, मैं तेरा संरक्षक ही नहीं हूँ। परंतु समस्त जगत् का पिता हूँ। श्री विष्णु जी ने कहा रे चोर ! तू अपना बड़प्पन क्या दिखाता है ? सर्व जगत् तो मुझमें निवास करता है। तू मेरी नाभि कमल से उत्पन्न हुआ और मुझ से ही ऐसी बातें कर रहा है। इतना कह कर दोनों प्रभु आपस में हथियारों से लड़ने लगे। एक-दूसरे के वक्षस्थल पर आघात किए। यह देखकर सदाशिव (काल रूपी ब्रह्म) ने एक तेजोमय लिंग उन दोनों के मध्य खड़ा कर दिया, तब उनका युद्ध समाप्त हुआ। (यह उपरोक्त विवरण गीता प्रैस गोरखपुर वाली शिव पुराण से निकाल रखा है। परन्तु मूल संस्कृत सहित जो ऊपर लिखी है तथा अन्य दो सम्पादकों तथा प्रकाशकों वाली शिव पुराण में सही है।)

विचार करें - श्री शिव पुराण, श्री विष्णु पुराण तथा श्री ब्रह्मा पुराण तथा श्री देवी महापुराण में तीनों प्रभुओं तथा सदाशिव (काल रूपी ब्रह्म) तथा देवी (शिवा-प्रकृति) की जीवन लीलाऐं हैं। इन्हीं के आधार से सर्व ऋषिजन व गुरुजन ज्ञान सुनाया करते थे। यदि कोई पवित्र पुराणों से भिन्न ज्ञान कहता है वह पाठ्य क्रम के विरुद्ध ज्ञान होने से व्यर्थ है।

उपरोक्त युद्ध का विवरण पवित्र शिव पुराण से है, जिसमें दोनों प्रभु पाँच वर्ष के बच्चों की तरह झगड़ रहे हैं। वे कहा करते हैं कि तू मेरा बेटा, दूसरा कहा करता है तू मेरा बेटा, मैं तेरा बाप। फिर एक - दूसरे का गिरेबान पकड़ कर मुक्कों व लातों से झगड़ा करते हैं। यही चरित्र त्रिलोक नाथों का है।

उपरोक्त तीनों पुराणों (श्री ब्रह्मा पुराण, श्री विष्णु पुराण तथा श्री शिवपुराण) का प्रारम्भ तो काल रूपी ब्रह्म अर्थात् ज्योति निरंजन से ही होता है जो ब्रह्मलोक में महाब्रह्मा, महाविष्णु तथा महाशिव रूप धारण करके रहता है तथा अपनी लीला भी उपरोक्त रूप में करता है। अपने वास्तविक काल रूप को छुपा कर रखता है तथा बाद

में विवरण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी की लीलाओं का है। उपरोक्त ज्ञान के आधार से पवित्र पुराणों को समझना अति आसान हो जाएगा।

''श्री विष्णु पुराण''

(अनुवादक श्री मुनिलाल गुप्त, प्रकाशक - गोविन्द भवन कार्यालय, गीताप्रैस गोरखपुर)

श्री विष्णुपुराण का ज्ञान श्री पारासर ऋषि ने अपने शिष्य श्री मैत्रेय ऋषि जी को कहा है।

श्री पारासर ऋषि जी ने शादी होते ही गृह त्याग कर वन में साधना करने का दृढ़ संकल्प किया। उसकी धर्मपत्नी ने कहा अभी तो शादी हुई है, अभी आप घर त्याग कर जा रहे हो। संतान उत्पत्ति करके फिर साधना के लिए जाना। तब श्री पारासर ऋषि ने कहा कि साधना करने के पश्चात् संतान उत्पन्न करने से नेक संस्कार की संतान उत्पन्न होगी। मैं कुछ समय उपरान्त आपके लिए अपनी शक्ति (वीर्य) किसी पक्षी के द्वारा भेज दूंगा, आप उसे ग्रहण कर लेना। यह कह कर घर त्याग कर वान प्रस्थ हो गया। एक वर्ष साधना के उपरान्त अपना वीर्य निकाल कर एक वृक्ष के पत्र में बंद करके अपनी मंत्र शक्ति से शुक्राणु रक्षा करके एक कौवे से कहा कि यह पत्र मेरी पत्नी को देकर आओ। कौवा उसे लेकर दरिया के ऊपर से उड़ा जा रहा था। उसकी चोंच से वह पत्र दरिया में गिर गया। उसे एक मछली ने खा लिया। कुछ महिनों उपरांत उस मछली को एक मलहा ने पकड़ कर काटा, उसमें से एक लड़की निकली। मलहा ने लड़की का नाम सत्यवती रखा वही लड़की (मछली के उदर से उत्पन्न होने के कारण) मछोदरी नाम से भी जानी जाती थी नाविक ने सत्यवती को अपनी पुत्री रूप में पाला।

कौवे ने वापिस जा कर श्री पारासर जी को सर्व वृतान्त बताया। जब साधना समाप्त करके श्री पारासर जी सोलह वर्ष उपरान्त वापिस आ रहे थे, दरिया पार करने के लिए मलाह को पुकार कर कहा कि मुझे शीघ्र दरिया से पार कर। मेरी पत्नी मेरी प्रतिक्षा कर रही है। उस समय मलाह खाना खा रहा था तथा श्री पारासर ऋषि के बीज से मछली से उत्पन्न चौदह वर्षीय युवा कन्या अपने पिता का खाना लेकर वहीं पर उपस्थित थी। मलाह को ज्ञान था कि साधना तपस्या करके आने वाला ऋषि सिद्धि युक्त होता है। आज्ञा का शीघ्र पालन न करने के कारण शाप दे देता है। मलाह ने कहा ऋषिवर मैं खाना खा रहा हूँ, अधूरा खाना छोड़ना अन्नदेव का अपमान होता है, मुझे पाप लगेगा। परन्तु श्री पारासर जी ने एक नहीं सुनी। ऋषि को अति उतावला जानकर मल्लाह ने अपनी युवा पुत्री से ऋषि जी को पार छोड़ने को कहा। पिता जी का आदेश प्राप्त कर पुत्री नौका में ऋषि पारासर जी को लेकर चल पड़ी। दरिया के मध्य जाने के पश्चात् ऋषि पारासर जी ने अपने ही बीज शक्ति से मछली से उत्पन्न लड़की अर्थात् अपनी ही पुत्री से दुष्कर्म करने की इच्छा व्यक्त की। लड़की भी अपने पालक पिता मलाह से ऋषियों के क्रोध से दिए शाप से हुए दुःखी व्यक्तियों की कथाऐं सुना करती थी। शाप के डर से कांपती हुई कन्या ने कहा ऋषि जी आप ब्राह्मण हो, मैं

एक शुद्र की पुत्री हूँ। ऋषि पारासर जी ने कहा कोई चिंता नहीं। लड़की ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए फिर बहाना किया हे ऋषिवर मेरे शरीर से मछली की दुर्गन्ध निकल रही है। ऋषि पारासर जी ने अपनी सिद्धि शक्ति से दुर्गन्ध समाप्त कर दी। फिर लड़की ने कहा दोनों किनारों पर व्यक्ति देख रहे हैं। ऋषि पारासर जी ने गंगा दरिया का जल हाथ में उठा कर आकाश में फैंका तथा अपनी सिद्धि शक्ति से धूंध उत्पन्न कर दी। अपना मनोरथ पूरा किया। लड़की ने अपने पालक पिता को अपनी पालक माता के माध्यम से सर्व घटना से अवगत करा दिया तथा बताया कि ऋषि ने अपना नाम पारासर बताया तथा ऋषि वशिष्ठ जी का पौत्र (पोता) बताया था। समय आने पर कंवारी के गर्भ से श्री व्यास ऋषि उत्पन्न हुए।

उसी श्री पारासर जी के द्वारा श्री विष्णु पुराण की रचना हुई है। श्री पारासर जी ने बताया कि हे मैत्रेय जो ज्ञान मैं तुझे सुनाने जा रहा हूँ, यही प्रसंग दक्षादि मुनियों ने नर्मदा तट पर राजा पुरुकुत्स को सुनाया था। पुरुकुत्स ने सारस्वत से और सारस्वत ने मुझ से कहा था। श्री पारासर जी ने श्री विष्णु पुराण के प्रथम अध्याय श्लोक संख्या 31, पृष्ठ संख्या 3 में कहा है कि यह जगत विष्णु से उत्पन्न हुआ है, उन्हीं में स्थित है। वे ही इसकी स्थिति और लय के कर्ता हैं। अध्याय 2 श्लोक 15-16 पृष्ठ 4 में कहा है कि हे द्विज ! परब्रह्म का प्रथम रूप पुरुष अर्थात् भगवान जैसा लगता है, परन्तु व्यक्त (महाविष्णु रूप में प्रकट होना) तथा अव्यक्त (अदृश रूप में वास्तविक काल रूप में इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में रहना) उसके अन्य रूप हैं तथा 'काल' उसका परम रूप है। भगवान विष्णु जो काल रूप में तथा व्यक्त और अव्यक्त रूप से स्थित होते हैं, यह उनकी बालवत लीला है।

अध्याय 2 श्लोक 27 पृष्ठ 5 में कहा है - हे मैत्रेय ! प्रलय काल में प्रधान अर्थात् प्रकृति के साम्य अवस्था में स्थित हो जाने पर अर्थात् पुरुष के प्रकृति से पृथक स्थित हो जाने पर विष्णु भगवान का काल रूप प्रवृत होता है।

अध्याय 2 श्लोक 28 से 30 पृष्ठ 5 - तदन्तर (सर्गकाल उपस्थित होने पर) उन परब्रह्म परमात्मा विश्व रूप सर्वव्यापी सर्वभूतेश्वर सर्वात्मा परमेश्वर ने अपनी इच्छा से विकारी प्रधान और अविकारी पुरुष में प्रविष्ट होकर उनको क्षोभित किया।।28-29।। जिस प्रकार क्रियाशील न होने पर भी गंध अपनी सन्निधि मात्र से ही प्रधान व पुरुष को प्रेरित करते हैं।

विशेष - श्लोक संख्या 28 से 30 में स्पष्ट किया है कि प्रकृति (दुर्गा) तथा पुरुष (काल-प्रभु) से अन्य कोई और परमेश्वर है जो इन दोनों को पुनर् सृष्टी रचना के लिए प्रेरित करता है।

अध्याय 2 पृष्ठ 8 पर श्लोक 66 में लिखा है वेही प्रभु विष्णु सृष्टा (ब्रह्मा) होकर अपनी ही सृष्टी करते हैं। श्लोक संख्या 70 में लिखा है। भगवान विष्णु ही ब्रह्मा आदि अवस्थाओं द्वारा रचने वाले हैं। वेही रचे जाते हैं और स्वयं भी संहृत अर्थात् मरते हैं। अध्याय 4 श्लोक 4 पृष्ठ 11 पर लिखा है कि कोई अन्य परमेश्वर है जो ब्रह्मा, शिव आदि ईश्वरों के भी ईश्वर हैं। अध्याय 4 श्लोक 14-15, 17, 22 पृष्ठ 11, 12 पर लिखा है। पृथ्वी बोली - हे काल स्वरूप ! आपको नमस्कार हो। हे प्रभो ! आप ही जगत की

सृष्टी आदि के लिए ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र रूप धारण करने वाले हैं। आपका जो रूप अवतार रूप में प्रकट होता है उसी की देवगण पूजा करते हैं। आप ही ओंकार हैं। अध्याय 4 श्लोक 50 पृष्ठ 14 पर लिखा है - फिर उन भगवान हरि ने रजोगुण युक्त होकर चतुर्मुख धारी ब्रह्मा रूप धारण कर सृष्टी की रचना की।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि ऋषि पारासर जी ने सुना सुनाया ज्ञान अर्थात् लोकवेद के आधार पर श्री विष्णु पुराण की रचना की है। क्योंकि वास्तविक ज्ञान पूर्ण परमात्मा ने प्रथम सतयुग में स्वयं प्रकट होकर श्री ब्रह्मा जी को दिया था। श्री ब्रह्मा जी ने कुछ ज्ञान तथा कुछ स्वनिर्मित काल्पनिक ज्ञान अपने वंशजों को बताया। एक दूसरे से सुनते-सुनाते ही लोकवेद श्री पारासर जी को प्राप्त हुआ। श्री पारासर जी ने विष्णु को काल भी कहा है तथा परब्रह्म भी कहा है। उपरोक्त विवरण से यह भी सिद्ध हुआ कि विष्णु अर्थात् ब्रह्म स्वरूप काल अपनी उत्पत्ति ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप से करके सृष्टी उत्पन्न करते हैं। ब्रह्म (काल) ही ब्रह्म लोक में तीन रूपों में प्रकट हो कर लीला करके छल करता है। वहाँ स्वयं भी मरता है (विशेष जानकारी के लिए कृप्या पढ़ें 'प्रलय की जानकारी' पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' अध्याय 8 श्लोक 17 की व्याख्या में) उसी ब्रह्म लोक में तीन स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान उसमें यही काल रूपी ब्रह्म अपना ब्रह्मा रूप धारण करके रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को साथ रख कर एक रजोगुण प्रधान पुत्र उत्पन्न करता है। उसका नाम ब्रह्मा रखता है। उसी से एक ब्रह्मण्ड में उत्पत्ति करवाता है। इसी प्रकार उसी ब्रह्म लोक एक सतगुण प्रधान स्थान बना कर स्वयं अपना विष्णु रूप धारण करके रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकति) को पत्नी रूप में रख कर एक सतगुण युक्त पुत्र उत्पन्न करता है। उसका नाम विष्णु रखता है। उस पुत्र से एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (पृथ्वी, पाताल, स्वर्ग) में स्थिति बनाए रखने का कार्य करवाता है। (प्रमाण शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित अनुवाद हनुमान प्रसाद पौद्दार चिमन लाल गौस्वामी रूद्र संहिता अध्याय 6, 7 पृष्ठ 102-103)

ब्रह्मलोक में ही एक तीसरा स्थान तमगुण प्रधान रच कर उसमें स्वयं शिव रूप धारण करके रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) को साथ रख कर पति-पत्नी के व्यवहार से उसी तरह तीसरा पुत्र तमोगुण युक्त उत्पन्न करता है। उसका नाम शंकर (शिव) रखता है। इस पुत्र से तीन लोक के प्राणियों का संहार करवाता है।

विष्णु पुराण में अध्याय 4 तक जो ज्ञान है वह काल रूप ब्रह्म अर्थात् ज्योति निरंजन का है। अध्याय 5 से आगे का मिला-जुला ज्ञान काल के पुत्र सतगुण विष्णु की लीलाओं का है तथा उसी के अवतार श्री राम, श्री कृष्ण आदि का ज्ञान है।

विशेष विचार करने की बात है कि श्री विष्णु पुराण का वक्ता श्री पारासर ऋषि है। यही ज्ञान दक्षादि ऋषियों से पुरुकुत्स ने सुना, पुरुकुत्स से सारस्वत ने सुना तथा सारस्वत से श्री पारासर ऋषि ने सुना। वह ज्ञान श्री विष्णु पुराण में लिपि बद्ध किया गया जो आज अपने करकमलों में है। इसमें केवल एक ब्रह्मण्ड का ज्ञान भी अधुरा है। श्री देवीपुराण, श्री शिवपुराण आदि पुराणों का ज्ञान भी ब्रह्मा जी का दिया हुआ है। श्री पारासर वाला ज्ञान श्री ब्रह्मा जी द्वारा दिए ज्ञान के समान नहीं हो सकता। इसलिए

श्री विष्णु पुराण को समझने के लिए देवी पुराण तथा श्री शिव पुराण का सहयोग लिया जाएगा। क्योंकि यह ज्ञान दक्षादि ऋषियों के पिता श्री ब्रह्मा जी का दिया हुआ है। श्री देवी पुराण तथा श्री शिवपुराण को समझने के लिए श्रीमद् भगवद् गीता तथा चारों वेदों का सहयोग लिया जाएगा। क्योंकि यह ज्ञान स्वयं भगवान काल रूपी ब्रह्म द्वारा दिया गया है। जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी का उत्पन्न कर्ता अर्थात् पिता है। पवित्र वेदों तथा पवित्र श्रीमद् भगवद् गीता जी के ज्ञान को समझने के लिए स्वसम वेद अर्थात् सूक्ष्म वेद का सहयोग लेना होगा जो काल रूपी ब्रह्म के उत्पत्ति कर्ता अर्थात् पिता परम अक्षर ब्रह्म (कविर्देव) का दिया हुआ है। जो (कविर्गीर्भिः) कविर्वाणी द्वारा स्वयं सतपुरुष ने प्रकट हो कर बोला था। (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 से 20 तक प्रमाण है।)

"श्री ब्रह्मा पुराण"

इस पुराण के वक्ता श्री लोमहर्षण ऋषि जी हैं। जो श्री व्यास ऋषि के शिष्य हुए हैं जिन्हें सूत जी भी कहा जाता है। श्री लोमहर्षण जी (सूत जी) ने बताया कि यह ज्ञान पहले श्री ब्रह्मा जी ने दक्षादि श्रेष्ठ मुनियों को सुनाया था। वही मैं सुनाता हूँ। इस पुराण के सृष्टी के वर्णन नामक अध्याय में (पृष्ठ 277 से 279 तक) कहा है कि श्री विष्णु जी सर्व विश्व के आधार हैं जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप से जगत की उत्पत्ति तथा पालन तथा संहार करते हैं। उस भगवान विष्णु को मेरा नमस्कार है।

जो नित्य सद्सत स्वरूप तथा कारणभूत अव्यक्त प्रकृति है उसी को प्रधान कहते हैं। उसी से पुरुष ने इस विश्व का निर्माण किया है। अमित तेजस्वी ब्रह्मा जी को ही पुरुष समझो। वे समस्त प्राणियों की सृष्टी करने वाले तथा भगवान नारायण के आश्रित हैं।

स्वयंभू भगवान नारायण ने जल की सृष्टी की। नारायण से उत्पन्न होने के कारण जल को नार कहा जाने लगा। भगवान ने सर्व प्रथम जल पर विश्राम किया। इसलिए भगवान को नारायण कहा जाता है। भगवान ने जल में अपनी शक्ति छोड़ी उससे एक सुवर्णमय अण्ड प्रकट हुआ। उसी में स्वयंभू ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई ऐसा सुना जाता है। एक वर्ष तक अण्डे में निवास करके श्री ब्रह्मा जी ने उसके दो टुकड़े कर दिए। एक से धूलोक बन गया और दूसरे से भूलोक।

तत्पश्चात् ब्रह्मा जी ने अपने रोष से रूद्र को प्रकट किया। उपरोक्त ज्ञान ऋषि लोमहर्षण (सूत जी) का कहा हुआ है जो सुना सुनाया (लोक वेद) है जो पूर्ण नहीं है। क्योंकि वक्ता कह रहा है कि ऐसा सुना है। इसलिए पूर्ण जानकारी के लिए श्री देवीमहापुराण, श्री शिवमहापुराण, श्रीमद् भगवद् गीता तथा चारों वेद और पूर्ण परमात्मा द्वारा तत्व ज्ञान जो स्वसम वेद अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) कहा जाता है। उसके लिए कृप्या पढ़ें 'गहरी नजर गीता में', परमेश्वर का सार संदेश', परिभाषा प्रभु की तथा पुस्तक 'यथार्थ ज्ञान प्रकाश में'।

(वास्तविक ज्ञान को स्वयं कलयुग में प्रकट होकर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने अपने खास सेवक श्री धर्मदास साहेब जी (बांधवगढ़ वाले) को पुनर् ठीक-ठीक

बताया। जो इसी पुस्तक में सृष्टी रचना में वर्णित है, कृप्या वहाँ पढ़ें।)।

श्री पारासर जी ने काल ब्रह्म को परब्रह्म भी कहा है तथा ब्रह्म भी तथा विष्णु भी कहा है तथा इसी को अनादि अर्थात् अमर भी कहा है। इस ब्रह्म अर्थात् काल का जन्म - मृत्यु नहीं होती। इसी से ऋषि की बाल बुद्धि सिद्ध होती है।

विचार करें - विष्णु पुराण का ज्ञान एक ऋषि द्वारा कहा है जिसने लोकवेद (सुने सुनाऐं ज्ञान अर्थात् दंत कथा) के आधार से कहा है तथा ब्रह्मा पुराण का ज्ञान श्री लोमहर्षण ऋषि ने दक्षादि ऋषियों से सुना था, वह लिखा है। इसलिए उपरोक्त दोनों (विष्णु पुराण व ब्रह्मा पुराण) को समझने के लिए श्री देवी पुराण तथा श्री शिव पुराण का सहयोग लिया जाएगा, जो स्वयं श्री ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद जी को सुनाया, जो श्री व्यास ऋषि के द्वारा ग्रहण हुआ तथा लिखा गया। अन्य पुराणों का ज्ञान श्री ब्रह्मा जी के ज्ञान के समान नहीं हो सकता। इसलिए अन्य पुराणों को समझने के लिए देवी पुराण तथा श्री शिव पुराण का सहयोग लिया जाएगा। क्योंकि यह ज्ञान दक्षादि ऋषियों के पिता श्री ब्रह्मा जी का दिया हुआ है। श्री देवी पुराण तथा श्री शिवपुराण को समझने के लिए श्रीमद् भगवद् गीता तथा चारों वेदों का सहयोग लिया जाएगा। क्योंकि यह ज्ञान स्वयं भगवान काल रूपी ब्रह्म द्वारा दिया गया है। जो ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी का उत्पन्न कर्ता अर्थात् पिता है। पवित्र वेदों तथा पवित्र श्रीमद् भगवद् गीता जी के ज्ञान को समझने के लिए स्वसम वेद अर्थात् सूक्ष्म वेद का सहयोग लेना होगा जो काल रूपी ब्रह्म के उत्पत्ति कर्ता अर्थात् पिता परम अक्षर ब्रह्म (कविर्देव) का दिया हुआ है। जो (कविर्गीभिः) कविर्वाणी द्वारा स्वयं सतपुरुष ने प्रकट हो कर बोला था। (ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16 से 20 तक प्रमाण है।) तथा श्रीमद् भगवत गीता में भगवान काल अर्थात् ब्रह्म ने अपनी स्थिति स्वयं बताई है जो सत है।

गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में कहा है कि मैं (काल रूपी ब्रह्म) अपने इक्कीस ब्रह्मण्डों में जितने भी प्राणी हैं उनसे श्रेष्ठ हूँ। वे चाहे स्थूल शरीर में नाशवान हैं, चाहे आत्मा रूप में अविनाशी हैं। इसलिए लोकवेद (सुने सुनाए ज्ञान) के आधार से मुझे पुरुषोत्तम मानते हैं। वास्तव में पुरुषोत्तम तो मुझ (क्षर पुरुष अर्थात् काल) से तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) से भी अन्य है। वही वास्तव में परमात्मा अर्थात् भगवान कहा जाता है। तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है, वही वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17)। गीता ज्ञान दाता ब्रह्म स्वयं कह रहा है कि हे अर्जुन ! तेरे तथा मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। श्रीमद् भगवद् गीता अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 2 श्लोक 12 में प्रमाण है तथा अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी साधना को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है। इसलिए अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि हे अर्जुन ! सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कृपा से ही तू परमशांति को प्राप्त होगा तथा कभी न नष्ट होने वाले लोक अर्थात् सतलोक को प्राप्त होगा। अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि जब तुझे तत्वदर्शी प्राप्त हो जाए (जो गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में तथा अध्याय 15 श्लोक 1 में वर्णित है) उसके पश्चात् उस परम पद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जिसमें गए साधक फिर लौट कर संसार में नहीं आते अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करते हैं। जिस

परमेश्वर से यह सर्व संसार उत्पन्न हुआ तथा वही सर्व का धारण-पोषण करने वाला है। मैं (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म रूपी काल) भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ। पूर्ण विश्वास के साथ उसी की भक्ति साधना अर्थात् पूजा करनी चाहिए।

''श्री देवी महापुराण से ज्ञान ग्रहण करें''

''श्री देवी महापुराण से आंशिक लेख तथा सार विचार''
(संक्षिप्त श्रीमद्देवीभागवत, सचित्र, मोटा टाइप, केवल हिन्दी, सम्पादक-हनुमान प्रसाद पोद्दार, चिम्मनलाल गोस्वामी,
प्रकाशक-गोबिन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर)

।।श्रीजगदम्बिकायै नमः।।
श्री देवी मद्भागवत
तीसरा स्कन्ध

राजा परीक्षित ने श्री व्यास जी से ब्रह्मण्ड की रचना के विषय में पूछा। श्री व्यास जी ने कहा कि राजन मैंने यही प्रश्न ऋषिवर नारद जी से पूछा था, वह वर्णन आपसे बताता हूँ। मैंने (श्री व्यास जी ने) श्री नारद जी से पूछा एक ब्रह्मण्ड के रचियता कौन हैं? कोई तो श्री शंकर भगवान को इसका रचियता मानते हैं। कुछ श्री विष्णु जी को तथा कुछ श्री ब्रह्मा जी को तथा बहुत से आचार्य भवानी को सर्व मनोरथ पूर्ण करने वाली बतलाते हैं। वे आदि माया महाशक्ति हैं तथा परमपुरुष के साथ रहकर कार्य सम्पादन करने वाली प्रकृति हैं। ब्रह्म के साथ उनका अभेद सम्बन्ध है।(पृष्ठ 114)

नारद जी ने कहा - व्यास जी ! प्राचीन समय की बात है - यही संदेह मेरे हृदय में भी उत्पन्न हो गया था। तब मैं अपने पिता अमित तेजस्वी ब्रह्मा जी के स्थानपर गया और उनसे इस समय जिस विषय में तुम मुझसे पूछ रहे हो, उसी विषय में मैंने पूछा। मैंने कहा - पिताजी ! यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड कहां से उत्पन्न हुआ ? इसकी रचना आपने की है या श्री विष्णु जी ने या श्री शंकर जी ने - कृपया सत-सत बताना।

ब्रह्मा जी ने कहा - (पृष्ठ 115 से 120 तथा 123, 125, 128, 129) बेटा ! मैं इस प्रश्न का क्या उत्तर दूँ ? यह प्रश्न बड़ा ही जटिल है। पूर्वकाल में सर्वत्र जल-ही-जल था। तब कमल से मेरी उत्पत्ति हुई। मैं कमल की कर्णिकापर बैठकर विचार करने लगा - 'इस अगाध जल में मैं कैसे उत्पन्न हो गया ? कौन मेरा रक्षक है ? कमलका डंठल पकड़कर जल में उतरा। वहाँ मुझे शेषशायी भगवान् विष्णु का मुझे दर्शन हुआ। वे योगनिद्रा के वशीभूत होकर गाढ़ी नींद में सोये हुए थे। इतने में भगवती योगनिद्रा याद आ गयीं। मैंने उनका स्तवन किया। तब वे कल्याणमयी भगवती श्रीविष्णु के विग्रहसे निकलकर अचिन्त्य रूप धारण करके आकाश में विराजमान हो गयीं। दिव्य आभूषण उनकी छवि बढ़ा रहे थे। जब योगनिद्रा भगवान् विष्णुके शरीर से अलग होकर आकाश में विराजने लगी, तब तुरंत ही श्रीहरि उठ

बैठे। अब वहाँ मैं और भगवान् विष्णु - दो थे। वहीं रूद्र भी प्रकट हो गये। हम तीनों को देवी ने कहा - ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ! तुम भलीभांति सावधान होकर अपने-अपने कार्यमें संलग्न हो जाओ। सृष्टी, स्थिति और संहार - ये तुम्हारे कार्य हैं। इतनेमें एक सुन्दर विमान आकाश से उतर आया। तब उन देवी नें हमें आज्ञा दी - 'देवताओं ! निर्भीक होकर इच्छापूर्वक इस विमान में प्रवेश कर जाओ। ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र ! आज मैं तुम्हें एक अद्‌भुत दृश्य दिखलाती हूँ।'

हम तीनों देवताओं को उस पर बैठे देखकर देवी ने अपने सामर्थ्य से विमान को आकाश में उड़ा दिया

इतने में हमारा विमान तेजी से चल पड़ा और वह दिव्यधाम- ब्रह्मलोक में जा पहुंचा। वहाँ एक दूसरे ब्रह्मा विराजमान थे। उन्हें देखकर भगवान् शंकर और विष्णु को बड़ा आश्चर्य हुआ। भगवान् शंकर और विष्णुने मुझसे पूछा-'चतुरानन ! ये अविनाशी ब्रह्मा कौन हैं ?' मैंने उत्तर दिया-'मुझे कुछ पता नहीं, सृष्टीके अधिष्ठाता ये कौन हैं। भगवन् ! मैं कौन हूँ और हमारा उद्देश्य क्या है - इस उलझन में मेरा मन चक्कर काट रहा है।'

इतने में मनके समान तीव्रगामी वह विमान तुरंत वहाँ से चल पड़ा और कैलास के सुरम्य शिखरपर जा पहुंचा। वहाँ विमान के पहुंचते ही एक भव्य भवन से त्रिनेत्रधारी भगवान् शंकर निकले। वे नन्दी वृषभपर बैठे थे।

क्षणभर के बाद ही वह विमान उस शिखर से भी पवन के समान तेज चाल से उड़ा और वैकुण्ठ लोकमें पहुंच गया, जहां भगवती लक्ष्मीका विलास-भवन था। बेटा नारद ! वहाँ मैंने जो सम्पति देखी, उसका वर्णन करना मेरे लिए असम्भव है। उस उत्तम पुरी को देखकर विष्णु का मन आश्चर्य के समुद्र में गोता खाने लगा। वहाँ कमललोचन श्रीहरि विराजमान थे। चार भुजाएं थीं।

इतने में ही पवनसे बातें करता हुआ वह विमान तुरंत उड़ गया। आगे अमृत के समान मीठे जल वाला समुद्र मिला। वहीं एक मनोहर द्वीप था। उसी द्वीपमें एक मंगलमय मनोहर पलंग बिछा था। उस उत्तम पलंगपर एक दिव्य रमणी बैठी थीं। हम आपसमें कहने लगे - 'यह सुन्दरी कौन है और इसका क्या नाम है, हम इसके विषय में बिलकुल अनभिज्ञ हैं।

नारद ! यों संदेहग्रस्त होकर हमलोग वहाँ रूके रहे। तब भगवान् विष्णु ने उन चारुसाहिनी भगवती को देखकर विवेकपूर्वक निश्चय कर लिया कि वे भगवती जगदम्बिका हैं। तब उन्होंने कहा कि ये भगवती हम सभीकी आदि कारण हैं। महाविद्या और महामाया इनके नाम हैं। ये पूर्ण प्रकृति हैं। ये 'विश्वेश्वरी', 'वेदगर्भा' एवं 'शिवा' कहलाती हैं।

ये वे ही दिव्यांगना हैं, जिनके प्रलयार्णवमें मुझे दर्शन हुए थे। उस समय मैं बालकरूपमें था। मुझे पालनेपर ये झुला रही थीं। वटवृक्षके पत्रपर एक सुदृढ़ शैय्या बिछी थी। उसपर लेटकर मैं पैरके अंगूठेको अपने कमल-जैसे मुख में लेकर चूस रहा था तथा खेल रहा था। ये देवी गा-गाकर मुझे झुलाती थीं। वे ही ये देवी हैं। इसमें कोई संदेहकी बात नहीं रही। इन्हें देखकर मुझे पहले की बात याद आ गयी। ये

हम सबकी जननी हैं।

श्रीविष्णु ने समयानुसार उन भगवती भुवनेश्वरी की स्तुति आरम्भ कर दी।

भगवान विष्णु बोले - प्रकृति देवीको नमस्कार है। भगवती विधात्रीको निरन्तर नमस्कार है। तुम शुद्धस्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हींसे उद्‌भासित हो रहा है। मैं, ब्रह्मा और शंकर - हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव और तिरोभाव हुआ करता है। केवल तुम्हीं नित्य हो, जगतजननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो।

भगवान शंकर बोले - 'देवी ! यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ - अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो। इस संसार की सृष्टी, स्थिति और संहार में तुम्हारे गुण सदा समर्थ हैं। उन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर नियमानुसार कार्यमें तत्पर रहते हैं। मैं, ब्रह्मा और शिव विमान पर चढ़कर जा रहे थे। हमें रास्तेमें नये-नये जगत् दिखायी पड़े। भवानी ! भला, कहिये तो उन्हें किसने बनाया है ?

इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्‌देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाश मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् इश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो। (42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

ब्रह्मा जी कहते हैं - मैं भी महामाया जगदम्बिकाके चरणों पर गिर पड़ा और मैंने उनसे कहा माता ! वेद कहते हैं 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म' है तो क्या वह आत्मस्वरूपा तुम्हीं हो अथवा वह कोई और ही पुरुष है ?

देवी ने कहा - मैं और ब्रह्म एक ही हैं। मुझमें और इन ब्रह्ममें कभी किंचितमात्र भी भेद नहीं है। गौरी, ब्राह्मी, रौद्री, वाराही, वैष्णवी, शिवा, वारुणी, कौबेरी, नारसिंही और वासबी - सभी मेरे रूप हैं। ब्रह्मा जी ! इस शक्तिको तुम अपनी स्त्री बनाओ। 'महासरस्वती' नाम से विख्यात यह सुन्दरी अब सदा तुम्हारी स्त्री होकर

रहेगी। भगवती जगदम्बा ने भगवान् विष्णु से कहा - ''विष्णो ! मनको मुग्ध करनेवाली इस 'महालक्ष्मी को लेकर अब तुम भी पधारो। यह सदा तुम्हारे वक्षःस्थल में विराजमान रहेगी।

देवी ने कहा-शंकर ! मन को मुग्ध करने वाली यह 'महाकाली' गौरी-नाम से विख्यात है। तुम इसे पत्नीरूप से स्वीकार करो।

अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिये विमान पर बैठकर तुमलोग शीघ्र पधारो। कोई कठिन कार्य उपस्थित होनेपर जब तुम मुझे स्मरण करोगे, तब मैं सामने आ जाऊंगी। देवताओ ! मेरा तथा सनातन परमात्मा का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिये। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में किंचितमात्र भी संदेह नहीं रहेगा।

ब्रह्मा जी कहते हैं - इस प्रकार कहकर भगवती जगदम्बिका ने हमें विदा कर दिया। उन्होंने शुद्ध आचारवाली शक्तियों में से भगवान् विष्णु के लिये महालक्ष्मी को, शंकरके लिये महाकाली को और मेरे लिये महासरस्वती को पत्नी बनने की आज्ञा दे दी। अब उस स्थान से हम चल पडे।

सार विचार :- एक ब्रह्मण्ड की वास्तविक स्थिति से महर्षि व्यास जी, महर्षि नारद जी तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शंकर जी भी अनभिज्ञ हैं। यह भी स्पष्ट है कि श्री दुर्गा को प्रकृति भी कहते हैं तथा दुर्गा तथा ब्रह्म (ज्योति निरंजन-काल) का पति पत्नी का सम्बन्ध भी है। इसलिए लिखा है कि ब्रह्म के साथ प्रकृति का अभेद सम्बन्ध है, जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं। श्री ब्रह्मा जी को स्वयं नहीं पता मैं कहां से उत्पन्न हुआ। हजार वर्ष तक जल में पृथ्वी की खोज की, परन्तु नहीं मिली। तब आकाशवाणी के आधार पर हजार वर्ष तक तप किया। कमल का डंठल पकड कर नीचे उतरा तो वहाँ शेष नाग की शैय्या पर भगवान विष्णु बेहोश पड़े थे। श्री विष्णु के शरीर में से एक देवी निकली (प्रेतनी की तरह) जो सुन्दर आभूषण पहने आकाश में विराजमान हो गई। तब श्री विष्णु जी होश में आए। इतने में शंकर जी भी वहीं आ गए।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध है कि तीनों भगवान बेहोश कर रखे थे। फिर सचेत किए। आकाश से विमान आया। देवी ने तीनों प्रभुओं को विमान में बैठने का आदेश दिया। विमान को आकाश में उड़ाया। ऊपर एक ब्रह्मा, एक शिव तथा एक विष्णु और देखा जो ब्रह्मलोक में थे।

विचार करें - ब्रह्मलोक में दूसरे ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव दिखाई दिए थे, यह ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की ही कलाबाजी है, वही अन्य तीन रूप धारण करके ब्रह्मलोक में तीन गुप्त स्थान (एक रजोगुण प्रधान क्षेत्र, एक सतोगुण प्रधान क्षेत्र, एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र) बनाकर रहता है तथा प्रकृति (दुर्गा-अष्टंगी) को अपनी पत्नी रूप में रखता है। जब ये दोनों रजोगुण प्रधान क्षेत्र में होते हैं तब यह महाब्रह्मा तथा दुर्गा महासावित्री कहलाते हैं। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस रजोगुण प्रधान क्षेत्र में उत्पन्न होता है वह रजोगुण प्रधान होता है, उसका नाम ब्रह्मा रख देते हैं तथा जवान होने तक अचेत करके परवरिश करते रहते हैं। फिर

कमल के फूल पर रखकर सचेत कर देते हैं। जब ये दोनों महाविष्णु तथा महालक्ष्मी रूप में (काल-ब्रह्म तथा दुर्गा) सतोगुण प्रधान क्षेत्र में रहते हैं तब दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है वह सतोगुण प्रधान होता है, उसका नाम विष्णु रख देते हैं। कुछ दिन के पश्चात् बालक को अचेत करके जवान होने तक परवरिश करते रहते हैं। फिर शेष नाग की शैय्या पर सुला देते हैं। फिर सचेत कर देते हैं। इसी प्रकार जब ये दोनों तमोगुण प्रधान क्षेत्र में रहते हैं तब शिवा अर्थात् दुर्गा तथा महाशिव अर्थात् सदाशिव के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र इस क्षेत्र में उत्पन्न होता है, वह तमोगुण प्रधान होता है। इसका नाम शिव रख देते हैं, इसे भी जवान होने तक अचेत रखते हैं, फिर जवान होने पर सचेत करते हैं। फिर तीनों को इक्ट्ठा करके विमान में बैठा कर ऊपर के लोकों का दृश्य दिखाते हैं। कहीं ये अपने आप को सर्वेस्वा न मान बैठें। गुण प्रधान क्षेत्र को समझने के लिए एक उदाहरण है - किसी मकान में तीन कमरे हैं। एक कमरे में देश भक्त शहीदों के चित्र लगे हों, जब व्यक्ति उस कमरे में जाता है तो उसके विचार भी देश भक्तों जैसे हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-संतों, ऋषियों आदि के चित्र लगे हों। उस कमरे में प्रवेश करते ही मन शान्त तथा प्रभु भक्ति की तरफ लग जाता है। तीसरे कमरे में अश्लील, अर्धनग्न स्त्री-पुरुषों के चित्र लगे हो तो मन में स्वतः बकवास घर करने लग जाती हैं। इसी प्रकार ऊपर ब्रह्मलोक में काल रूपी ब्रह्म ने तीन स्थान एक-एक गुण प्रधान बनाऐं हैं। तीनों प्रभु (रजगुण ब्रह्माजी, सतगुण विष्णुजी तथा तमगुण शिव जी) अपने गुणों का प्रभाव कैसे डालते हैं। उदाहरण - जैसे रसोईघर में मिर्चों का छोंक सब्जी में लगाया। मिर्च के गुण से सभी कमरों के व्यक्तियों को छींके आने लगी। जैसे साकार वस्तु मिर्च तो रसोई में थी, परन्तु उसकी निराकार शक्ति अर्थात् गुण ने दूर बैठे व्यक्तियों को भी प्रभावित कर दिया। ठीक इसी प्रकार तीनों प्रभु (श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण तथा श्री शिव जी तमगुण) अपने-अपने लोक में रहते हुए तीन लोक (पृथ्वी लोक, पाताल लोक तथा स्वर्ग लोक) के प्राणियों को प्रभावित रखते हैं। जैसे मोबाईल फोन की रेंज से फोन कार्य करता है। इस प्रकार अदृश शक्ति रूपी गुणों से तीनों देवता अपने पिता काल की सृष्टी उसके आहार के लिए चला रहे हैं। दुर्गा का अपना अलग लोक भी है, जिसमें यह अपने वास्तविक रूप में दर्शन देती है। फिर इनका विमान दुर्गा के द्वीप में पहुंचा। तब ज्योति निरंजन अर्थात् कालरूपी ब्रह्म ने विष्णु जी को बचपन की याद प्रदान कर दी। तब श्री विष्णु जी ने बताया कि यह दुर्गा अपनी तीनों की माता है। मैं बालक रूप में पालने में लेटा था, यह मुझे लोरी देकर झुला रही थी। तब श्री विष्णु जी ने कहा कि हे दुर्गा आप हमारी माता हो। मैं (विष्णु) ब्रह्मा तथा शंकर तो जन्मवान हैं। हमारा तो आविर्भाव अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मृत्यु होती है, हम अविनाशी नहीं हैं। आप प्रकृति देवी हो। यह बात श्री शंकर जी ने भी स्वीकार की तथा कहा कि मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर भी आपका ही पुत्र हूँ। श्री विष्णु जी तथा श्री ब्रह्मा जी भी आप से ही उत्पन्न हुए हैं।

फिर इन तीनों देवताओं की शादी दुर्गा ने की। प्रकृति देवी (दुर्गा) ने अपनी शब्द शक्ति से अपने ही अन्य तीन रूप धारण किए। श्री ब्रह्मा जी की शादी सावित्री से, श्री विष्णु जी की शादी लक्ष्मी से तथा श्री शिव जी की शादी उमा अर्थात् काली से करके विमान में बैठाकर इन के अलग-अलग द्वीपों (लोकों) में भेज दिया।

ज्योति निरंजन (काल-ब्रह्म) ने अपने स्वांसों द्वारा समुद्र में चार वेद छुपा दिए। फिर प्रथम सागर मंथन के समय ऊपर प्रकट कर दिए। ज्योति निरंजन (काल) के आदेश से दुर्गा ने चारों वेद श्री ब्रह्मा जी को दिए। ब्रह्मा ने दुर्गा (अपनी माता) से पूछा कि वेदों में जो ब्रह्म (प्रभु) कहा है वे आप ही हो या कोई अन्य पुरुष है।

दुर्गा ने काल के डर से वास्तविकता छुपाने की चेष्टा करते हुए कहा कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं, कोई भेद नहीं। फिर भी वास्तविकता नहीं छुपी। दुर्गा ने फिर कहा कि तुम तीनों मेरा तथा ब्रह्म का सदा स्मरण करते रहना। हम दोनों का स्मरण करते रहने से यदि कोई कठिन कार्य होगा तो मैं तुरन्त सामने आ जाऊंगी।

विशेष - क्योंकि काल ने दुर्गा से कह रखा है कि मेरा भेद किसी को नहीं कहना है। इस डर से दुर्गा सर्व जगत् को वास्तविकता से अपरिचित रखती है। ये अपने पुत्रों को भी धोखे में रखते हैं। इसका कारण है कि काल को शाप लगा है एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों का आहार नित्य करने का। इसलिए अपने तीनों पुत्रों से अपना आहार तैयार करवाता है। श्री ब्रह्मा जी के रजगुण से प्रभावित करके सर्व प्राणियों से संतान उत्पति करवाता है। श्री विष्णु जी के सतोगुण से एक दूसरे में मोह उत्पन्न करके स्थिति अर्थात् काल जाल में रोके रखता है तथा श्री शंकर जी के तमोगुण से संहार करवा कर अपना आहार तैयार करवाता है।

फिर तीनों प्रभुओं को भी मार कर खाता है तथा नए पुण्य कर्मी प्राणियों में से तीन पुत्र उत्पन्न करके अपना कार्य जारी रखता है तथा पूर्व वाले तीनों ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव चौरासी लाख योनियों तथा स्वर्ग-नरक में कर्म आधार से चक्र लगाते रहते हैं। यही प्रमाण शिव महापुराण, रूद्र संहिता, प्रथम (सृष्टी) खण्ड, अध्याय 6, 7 तथा 8, 9 में भी है।

''श्री शिव महापुराण से सार विचार''

''शिव महापुराण''

''श्री शिव महापुराण (अनुवादक : श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार। प्रकाशक : गोबिन्द भवन कार्यालय, गीताप्रैस गोरखपुर) मोटा टाइप, अध्याय 6, रूद्रसंहिता, प्रथम खण्ड(सृष्टी) से निष्कर्ष''

अपने पुत्र श्री नारद जी के श्री शिव तथा श्री शिवा के विषय में पूछने पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा (पृष्ठ 100 से 102) जिस परब्रह्म के विषय में ज्ञान और अज्ञान से पूर्ण युक्तियों द्वारा इस प्रकार विकल्प किये जाते हैं, जो निराकार परब्रह्म है वही साकार रूप में सदाशिव रूप धारकर मनुष्य रूप में प्रकट हुआ। सदा शिव ने अपने शरीर से एक स्त्री को उत्पन्न किया जिसे प्रधान, प्रकृति, अम्बिका, त्रिदेवजननी (ब्रह्मा, विष्णु, शिव की माता) कहा जाता है। जिसकी आठ भुजाऐं हैं।

''श्री विष्णु की उत्पत्ति''

जो वे सदाशिव हैं उन्हें परम पुरुष, ईश्वर, शिव, शम्भु और महेश्वर कहते हैं। वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक (ब्रह्मलोक में तमोगुण प्रधान क्षेत्र) धाम बनाया। उसे काशी कहते हैं। शिव तथा शिवा ने पति-पत्नी रूप में रहते हुए एक पुत्र की उत्पत्ति की, जिसका नाम विष्णु रखा। अध्याय 7, रूद्र संहिता, शिव महापुराण (पृष्ठ 103, 104)।

"श्री ब्रह्मा तथा शिव की उत्पत्ति"

अध्याय 7, 8, 9 (पृष्ठ 105-110) श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि श्री शिव तथा शिवा (काल रूपी ब्रह्म तथा प्रकृति-दुर्गा-अष्टंगी) ने पति-पत्नी व्यवहार से मेरी भी उत्पति की तथा फि मुझे अचेत करके कमल पर डाल दिया। यही काल महाविष्णु रूप धारकर अपनी नाभि से एक कमल उत्पन्न कर लेता है। ब्रह्मा आगे कहता है कि फिर होश में आया। कमल की मूल को ढूंढना चाहा, परन्तु असफल रहा। फिर तप करने की आकाशवाणी हुई। तप किया। फिर मेरी तथा विष्णु की किसी बात पर लड़ाई हो गई। (विवरण इसी पुस्तक के पृष्ठ 549 पर) तब हमारे बीच में एक तेजोमय लिंग प्रकट हो गया तथा ओ३म्-ओ३म् का नाद प्रकट हुआ तथा उस लिंग पर अ-उ-म तीनों अक्षर भी लिखे थे। फिर रूद्र रूप धारण करके सदाशिव पाँच मुख वाले मानव रूप में प्रकट हुए, उनके साथ शिवा (दुर्गा) भी थी।

फिर शंकर को अचानक प्रकट किया (क्योंकि यह पहले अचेत था, फिर सचेत करके तीनों को इक्कठे कर दिया) तथा कहा कि तुम तीनों सृष्टी-स्थिति तथा संहार का कार्य संभालो।

रजगुण प्रधान ब्रह्मा जी, सतगुण प्रधान विष्णु जी तथा तमगुण प्रधान शिव जी हैं। इस प्रकार तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल रूपी ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं (पृष्ठ 110 पर)।

सार विचार :- उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि काल रूपी ब्रह्म अर्थात् सदाशिव तथा प्रकृति (दुर्गा) श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव के माता पिता हैं। दुर्गा इसे प्रकृति तथा प्रधान भी कहते हैं, इसकी आठ भुजाऐं हैं। यह सदाशिव अर्थात् ज्योति निरंजन काल के शरीर अर्थात् पेट से निकली है। ब्रह्म अर्थात् काल तथा प्रकृति (दुर्गा) सर्व प्राणियों को भ्रमित रखते हैं। अपने पुत्रों को भी वास्तविकता नहीं बताते। कारण है कि कहीं काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्ड के प्राणियों को पता लग जाए कि हमें तप्तशिला पर भून कर काल (ब्रह्म-ज्योति निरंजन) खाता है। इसीलिए जन्म-मृत्यु तथा अन्य दुःखदाई योनियों में पीड़ित करता है तथा अपने तीनों पुत्रों रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी से उत्पत्ति, स्थिति, पालन तथा संहार करवा कर अपना आहार तैयार करवाता है। क्योंकि काल को एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है, कृपया श्रीमद् भगवत गीता जी में भी देखें 'काल (ब्रह्म) तथा प्रकृति (दुर्गा) के पति-पत्नी कर्म से रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की उत्पत्ति।

''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टी-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-

ब्रह्मा - अहम् इश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा (42)।

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।(42)

पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांऽबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

''निष्कर्ष''

श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान भी इसी काल रूपी ब्रह्म ने श्री कृष्ण जी के

शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके बोला है। उपरोक्त पवित्र पुराणों ने प्रमाणित कर दिया कि प्रकृति, दुर्गा को कहते हैं तथा सदाशिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा प्रकृति से रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी की उत्पत्ति पति-पत्नी व्यवहार से हुई है। इसी की साक्षी श्रीमद्भगवत गीता जी भी है। श्री गीता जी सर्व शास्त्रों का सार है, इसलिए इसमें संक्षिप्त विवरण सांकेतिक शब्दों (कोड वर्डस) में है। जिसे तत्वदर्शी संत ही समझा सकता है। अब कृपया प्रवेश करें 'पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी' में।

अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 में पवित्र श्रीमद्भगवत गीता बोलने वाले काल ब्रह्म ने श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके कहा है कि प्रकृति(दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म इसकी योनी में बीज स्थापना करता हूँ, जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। मैं सर्व का पिता तथा प्रकृति (दुर्गा) सर्व की माता कहलाती है। प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) जीवात्मा को कर्माधार से शरीरों में बांधते हैं अर्थात् ये तीनों ही सर्व प्राणियों को संस्कार के आधार से उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार करके फंसा कर रखते हैं।

अध्याय 11 श्लोक 32 में कहा है कि मैं काल हूँ, सर्व को खाने के लिए प्रकट हुआ हूँ। अध्याय 11 श्लोक 21 में अर्जुन कह रहा है कि आप तो ऋषियों को भी खा रहे हो, देवताओं तथा सिद्ध भी आपसे मंगल अर्थात् रक्षा की याचना कर रहे हैं। वेदों के स्त्रोतों द्वारा आप की स्तुति कर रहे हैं। परन्तु आप सर्व को खा रहे हो। कुछ आपकी दाढ़ी में लटके दिखाई देते हैं। कुछ आप में प्रवेश कर रहे हैं।

''रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी तथा तमगुण श्री शिव जी त्रिदेवों की पूजा व्यर्थ कही है''

यही गीता ज्ञान दाता प्रभु (श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तक में) कह रहा है कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की पूजा करने वालों का ज्ञान हरा जा चुका है, ये तो इनसे ऊपर मेरी भक्ति पूजा भी नहीं करते। तीनों प्रभुओं (ब्रह्मा-विष्णु-शिव) तक की साधना करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख इन तीनों से ऊपर मुझ ब्रह्म की पूजा भी नहीं करते।

श्रीमद्भगवत गीता के ज्ञान दाता प्रभु ने अध्याय 7 श्लोक 18 में अपनी भक्ति को भी अनुत्तम (घटिया) कहा है।

इसलिए अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 व 66 में किसी अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है।

जिस समय गीता जी का ज्ञान बोला जा रहा था, उससे पहले न तो अठारह पुराण थे और न ही कोई ग्यारह उपनिषद् व छः शास्त्र ही थे। जो बाद में ऋषियों ने अपने-अपने अनुभवों की पुस्तकें रची हैं। उस समय केवल पवित्र चारों वेद ही शास्त्र रूप में प्रमाणित थे और उन्हीं पवित्र चारों वेदों का सारांश पवित्र गीता जी में वर्णित है।

"शास्त्रार्थ विषय"

"शास्त्रार्थ ने परमेश्वर के तत्वज्ञान को उलझाया"

शास्त्रार्थ कैसे होता था ? -

दो विद्वान प्रश्न-उत्तर किया करते थे तथा श्रोतागण भी बहु संख्या में शास्त्रार्थ (प्रश्नोत्तर) सुनने के लिए विराजमान होते थे। हार जीत का फैसला श्रोताओं के हाथ में होता था, जिन्हें स्वयं ज्ञान नहीं कि ये क्या कह रहे हैं? जिसने ज्यादा संस्कृत लगातार उच्चारण की तो श्रोतागण ताली बजाकर विजयी होने का प्रमाण देते थे। इस तरह विद्वानों की हार - जीत का फैसला अविद्वानों के हाथ में था।

प्रमाण :– पुस्तक '' श्री मद् दयानन्द प्रकाश'' लेखक श्री सत्यानन्द जी महाराज, प्रकाशकः– सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, राम लीला मैदान नई दिल्ली–2, गंगा काण्ड आठवां सर्ग पृष्ठ 89 पर से ज्यों का त्यों लेखः– तीन दिन तक, प्रतिसायं कृष्णानन्द जी और स्वामी जी का शास्त्रार्थ होता रहा। एक दिन शास्त्रार्थ के समय किसी ने कृष्णानन्द जी से साकारवाद का अवलम्बन किया और इसी पर शास्त्रार्थ चलाया। स्वामी जी का तो यह मन–चाहता विषय था। उन्होंने धाराप्रवाह संस्कृत बोलते हुए निराकार सिद्धान्त पर वेदों और उपनिषदों के प्रमाणों की एक लड़ी पिरोदी, और कृष्णानन्द जी को उनका अर्थ मानने के लिए बाधित किया। कृष्णानन्द कोई प्रमाण न दे सका। केवल गीता का यह श्लोक '' यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत'' लोगों की ओर मुंह करके पढ़ने लगा। स्वामी जी ने गर्ज कर कहा कि '' आप वाद मेरे साथ करते हैं, इसलिए मुझे ही अभिमुख कीजियें।'' परन्तु उसके तो विचार ही उखड़ गये थे, वह चौकड़ी ही भूल चुका था। मुख में झाग आ गए। गले में घिग्घी बँध गई। चेहरा फीका पड़ गया। किसी प्रकार लाज रह जाए, इससे उसने तर्क–शास्त्र की शरण लेकर स्वामी जी को कहा कि ''अच्छा, लक्षण का लक्षण बताइये?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया कि''जैसे कारण का कारण नहीं वैसे ही लक्षण का लक्षण भी नहीं है।'' लोगों ने अपनी हंसी से कृष्णानन्द की हार प्रकाशित कर दी और वह घबड़ाकर वहाँ से चलता बना।

उपरोक्त लेख में स्पष्ट है कि विद्वानों की हार जीत का निर्णय अविद्वान करते थे। स्वामी दयानन्द जी ने लगातार संस्कृत बोल दी श्रोताओं ने हंसी कर दी तथा महर्षि दयानन्द जी को विजेता घोषित कर दिया तथा परमात्मा निराकार मान लिया। जबकि यजुर्वेद अध्याय 1 मंत्र 15 तथा यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में स्पष्ट है कि परमात्मा सशरीर है तथा साकार है।

स्वामी दयानन्द जी संस्कृत भाषा में प्रवचन करते थे का प्रमाण :-- 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका पृष्ठ 8 पर स्वामी दयानन्द जी ने कहा है कि पहली बार सत्यार्थ प्रकाश छपा था। उस समय मुझे हिन्दी अच्छी तरह नहीं आती थी। क्योंकि बचपन से सन् 1882 (संवत् 1939) तक संस्कृत में भाषण करता रहा। इससे सिद्ध हुआ कि स्वामी दयानन्द जी संस्कृत भाषा में शास्त्रार्थ करते थे। संवत् 1939 (सन्

1882) में सत्यार्थ प्रकाश को दोबारा छपवाने के एक वर्ष पश्चात् सन् 1883 में स्वामी जी का निधन हो गया। स्पष्ट हुआ कि निधन के एक वर्ष पूर्व ही स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दी भाषा को जाना। इससे पूर्व संस्कृत में प्रवचन (व्याख्यान) करते थे। श्रोतागण संस्कृत से अपरिचित होते थे और वे ही विद्वानों की हार-जीत का फैसला करते थे।

अब यह दासों का भी दास (रामपाल दास) चाहता है कि सर्व पवित्र धर्मों की प्रभु चाहने वाली पुण्यात्माऐं तत्वज्ञान से परिचित हो जाऐं, तब स्वयं लाल व लालड़ी की परख (पहचान) कर लिया करेंगे।

कथा :- एक सेठ के दो पुत्र थे। एक सोलह वर्ष का दूसरा अठारह वर्ष का। पिता जी का देहांत हो गया। बच्चों की माता जी ने एक कपड़े में लिपटे लाल अपने बच्चों के हाथ में रखे तथा कहा पुत्रो यह लाल ले जाओ तथा अपने ताऊ जी (पिता जी के बड़े भाई) को कहना कि हमारे पास पैसे नहीं हैं। यह लाल अपने पास रख लो तथा व्यापार में हमारा हिस्सा कर लो। हम अकेले बालक व्यापार नहीं कर सकते। दोनों बच्चे माता जी के दिए हुए लालों को लेकर अपने ताऊ जी के पास गए तथा जो माता जी ने कहा था प्रार्थना की। उस सेठ(ताऊ जी) ने लालों को देखा तथा बच्चों की प्रार्थना स्वीकार करके कहा पुत्र इन लालों को अपनी माता जी को दे आओ, संभाल कर रख लेगी। आप मेरे साथ दूसरे शहर में चलो, मुझे बहुत उधार माल मिल जाता है, वापिस आकर इन लालों को प्रयोग कर लेंगे।

दोनों बालक ताऊ जी के साथ दूसरे शहर में गए। एक दिन ताऊ जी ने एक लाल बच्चों को दिया तथा कहा पुत्रो यह लाल है, इसे उस सेठ को देकर आना, जिससे कल पचास हजार का माल उधार लिया था तथा कहना कि यह लाल रख लो, हम वापिस आकर आप का ऋण चुका देंगे तथा अपना लाल वापिस ले लेंगे।

दोनों बच्चों ने सेठ को उपरोक्त विवरण कहा तब सेठ ने एक जौहरी बुलाया। जौहरी ने लाल को परख कर बताया कि यह लाल नहीं है, यह तो लालड़ी है, जो सौ रूपये की भी नहीं है, लाल की कीमत तो नौ लाख रूपये होती है। सेठ ने भली-बुरी कहते हुए उस लालड़ी को गली में दे मारा। बच्चे उस लालड़ी को उठा कर अपने ताऊ जी (अंकल) के पास आए। आँखों में आँसु भरे हुए सर्व वृतान्त सुनाया कि एक व्यक्ति ने बताया कि यह लाल नहीं है यह तो लालड़ी है।

ताऊ जी (अंकल) ने कहा पुत्र वह जौहरी था। वह सही कह रहा था, यह तो वास्तव में लालड़ी है, इसकी कीमत तो सौ रूपया भी नहीं है। पुत्रो मेरे से धोखा हुआ है। लाल तो यह है, गलती से मैंने ही आप को लालड़ी दे दी। अब जाओ तथा सेठ से कहना मेरे ताऊजी (अंकल जी) धोखेबाज नहीं हैं। लाल के धोखे में लालड़ी दे दी। दोनों भाई फिर गए उसी व्यापारी के पास तथा कहा कि मेरे ताऊ जी ऐसे धोखेबाज व्यक्ति नहीं हैं सेठ जी, गलती से लाल के स्थान पर लालड़ी दे दी थी, यह लो लाल। जौहरी ने बताया कि वास्तव में यह लाल है वह लालडी थी।

सामान ले कर वापिस अपने शहर लौट आए। तब ताऊ(अंकल जी) ने कहा

पुत्रो अपनी माता जी से लाल ले आओ, उधार ज्यादा हो गई है। दोनों बच्चों ने अपनी माता जी से लाल लेकर कपड़े में से निकाल कर देखा तो वे लालड़ी थी, लाल एक भी नहीं था। ताऊजी ने बच्चों को लाल तथा लालड़ी की पहचान करवा दी थी। दोनों पुत्रों ने अपनी माता जी से कहा कि माता जी यह तो लालड़ी है, लाल नहीं है। दोनों बच्चे वापिस ताऊ जी के पास आए तथा कहा कि मेरी माँ बहुत भोली है। उसे लाल व लालड़ी का ज्ञान नहीं है। वे लाल नहीं हैं, लालड़ी हैं। सेठ ने कहा पुत्रो ये उस दिन भी लालड़ी ही थी जिस दिन मेरे पास ले कर आए थे। यदि मैं लालड़ी कह देता तो आप की माता जी कहती कि मेरा पति नहीं रहा, इसलिए अब मेरे लालों को भी लालड़ी बता रहा है। पुत्रो आज मैंने आपको ही लाल तथा लालड़ी की परख (पहचान) करने योग्य बना दिया। आपने स्वयं फैसला कर लिया।

विशेष :- इसी प्रकार आज यह दास यही चाहता है कि तत्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाऊँ तथा शास्त्रों के प्रमाण देख कर आप स्वयं परख (पहचान) करने योग्य हो कर संत-असंत को पहचान सकें।

शास्त्रार्थ विद्वान किया करते थे तथा हार जीत का फैसला अविद्वानों के हाथों में था। यह दास चाहता है कि पहले प्रभु प्रेमी पुण्यात्माऐं शास्त्र समझें फिर स्वयं जान जायेंगे कि ये संत व महर्षि जी क्या पढ़ाई पढ़ा रहे हैं।

"शास्त्रार्थ महर्षि सर्वानन्द तथा परमेश्वर कबीर (कविर्देव) का"

एक सर्वानन्द नाम के महर्षि थे। उसकी पूज्य माता श्रीमति शारदा देवी पाप कर्म फल से पीड़ित थी। उसने सर्व पुजाऐं व जन्त्र-मन्त्र कष्ट निवारण के लिए वर्षो किए। शारीरिक पीड़ा निवारण के लिए वैद्यों की दवाईयाँ भी खाई, परन्तु कोई राहत नहीं मिली। उस समय के महर्षियों से उपदेश भी प्राप्त किया, परन्तु सर्व महर्षियों ने कहा कि बेटी शारदा यह आप का पाप कर्म दण्ड प्रारब्ध कर्म का है, यह क्षमा नहीं हो सकता, यह भोगना ही पड़ता है। भगवान श्री राम ने बाली का वध किया था, उस पाप कर्म का दण्ड श्री राम (विष्णु) वाली आत्मा ने श्री कृष्ण बन कर भोगा। श्री बाली वाली आत्मा शिकारी बनी। जिसने श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। इस प्रकार गुरु जी व महन्तों व संतों - ऋषियों के विचार सुनकर दुःखी मन से भक्तमति शारदा अपना प्रारब्ध पापकर्म का कष्ट रो-रो कर भोग रही थी। एक दिन किसी निजी रिश्तेदार के कहने पर काशी में (स्वयंभू) स्वयं सशरीर प्रकट हुए (कविर्देव) कविर परमेश्वर अर्थात् कबीर प्रभु से उपदेश प्राप्त किया तथा उसी दिन कष्ट मुक्त हो गई। क्योंकि पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में लिखा है कि ''कविरंघारिरसि'' अर्थात् (कविर्) कबीर (अंघारि) पाप का शत्रु (असि) है। फिर इसी पवित्र यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में लिखा है कि परमात्मा (एनसः एनसः) अधर्म के अधर्म अर्थात् पापों के भी पाप घोर पाप को भी समाप्त कर देता है। प्रभु कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा बेटी

शारदा यह सुख आप के भाग्य में नहीं था, मैंने अपने कोष से प्रदान किया है तथा पाप विनाशक होने का प्रमाण दिया है। आप का पुत्र महर्षि सर्वानन्द जी कहा करता है कि प्रभु पाप क्षमा (विनाश) नहीं कर सकता तथा आप मेरे से उपदेश प्राप्त करके आत्म कल्याण करो। भक्तमति शारदा जी ने स्वयं आए परमेश्वर कबीर प्रभु (कविर्देव) से उपदेश लेकर अपना कल्याण करवाया। महर्षि सर्वानन्द जी को जो भक्तमति शारदा का पुत्र था, शास्त्रार्थ का बहुत चाव था। उसने अपने समकालीन सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ करके पराजित कर दिया। फिर सोचा कि जन - जन को कहना पड़ता है कि मैंने सर्व विद्वानों पर विजय प्राप्त कर ली है। क्यों न अपनी माता जी से अपना नाम सर्वाजीत रखवा लूं। यह सोच कर अपनी माता श्रीमति शारदा जी के पास जाकर प्रार्थना की। कहा कि माता जी मेरा नाम बदल कर सर्वाजीत रख दो। माता ने कहा कि बेटा सर्वानन्द क्या बुरा नाम है ? महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा माता जी मैंने सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया है। इसलिए मेरा नाम सर्वाजीत रख दो। माता जी ने कहा कि बेटा एक विद्वान मेरे गुरु महाराज कविर्देव (कबीर प्रभु) को भी पराजित कर दे, फिर अपने पुत्र का नाम आते ही सर्वाजीत रख दूंगी। माता के ये वचन सुन कर श्री सर्वानन्द पहले तो हँसा, फिर कहा माता जी आप भी भोली हो। वह जुलाहा (धाणक) कबीर तो अशिक्षित है। उसको क्या पराजित करना? अभी गया, अभी आया।

महर्षि सर्वानन्द जी सर्व शास्त्रों को एक बैल पर रख कर कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की झौंपड़ी के सामने गया। परमेश्वर कबीर जी की धर्म की बेटी कमाली पहले कूएँ पर मिली, फिर द्वार पर आकर कहा आओ महर्षि जी यही है परमपिता कबीर का घर। श्री सर्वानन्द जी ने लड़की कमाली से अपना लोटा पानी से इतना भरवाया कि यदि जरा-सा जल और डाले तो बाहर निकल जाए तथा कहा कि बेटी यह लोटा धीरे-धीरे ले जाकर कबीर को दे तथा जो उत्तर वह देवें वह मुझे बताना। लड़की कमाली द्वारा लाए लोटे में परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी ने एक कपड़े सीने वाली बड़ी सुई डाल दी, कुछ जल लोटे से बाहर निकल कर पृथ्वी पर गिर गया तथा कहा पुत्री यह लोटा श्री सर्वानन्द जी को लौटा दो। लोटा वापिस लेकर आई लड़की कमाली से सर्वानन्द जी ने पूछा कि क्या उत्तर दिया कबीर ने? कमाली ने प्रभु द्वारा सुई डालने का वृतांत सुनाया। तब महर्षि सर्वानन्द जी ने परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) से पूछा कि आपने मेरे प्रश्न का क्या उत्तर दिया? प्रभु कबीर जी ने पूछा कि क्या प्रश्न था आपका?

श्री सर्वानन्द महर्षि जी ने कहा ''मैंने सर्व विद्वानों को शास्त्रार्थ में पराजित कर दिया है। मैंने अपनी माता जी से प्रार्थना की थी कि मेरा नाम सर्वाजीत रख दो। मेरी माता जी ने आपको पराजीत करने के पश्चात् मेरा नाम परिवर्तन करने को कहा है। आपके पास लोटे को पूर्ण रूपेण जल से भर कर भेजने का तात्पर्य है कि मैं ज्ञान से ऐसे परिपूर्ण हूँ जैसे लोटा जल से। इसमें और जल नहीं समाएगा, वह बाहर ही गिरेगा अर्थात् मेरे साथ ज्ञान चर्चा करने से कोई लाभ नहीं होगा।

आपका ज्ञान मेरे अन्दर नहीं समाएगा, व्यर्थ ही थूक मथोगे। इसलिए हार लिख दो, इसी में आपका हित है।

पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि आपके जल से परिपूर्ण लोटे में लोहे की सूई डालने का अभिप्राय है कि मेरा ज्ञान (तत्वज्ञान) इतना भारी (सत्य) है कि जैसे सुई लोटे के जल को बाहर निकालती हुई नीचे जाकर रूकी है। इसी प्रकार मेरा तत्वज्ञान आपके असत्य ज्ञान (लोक वेद) को निकाल कर आपके हृदय में समा जाएगा।

महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा प्रश्न करो। एक बहु चर्चित विद्वान को जुलाहों (धाणकों) के मौहल्ले (कॉलोनी) में आया देखकर आस-पास के भोले-भाले अशिक्षित जुलाहे शास्त्रार्थ सुनने के लिए एकत्रित हो गए।

पूज्य कविर्देव ने प्रश्न किया :

कौन ब्रह्मा का पिता है, कौन विष्णु की माँ।
शंकर का दादा कौन है, सर्वानन्द दे बताए।।

उत्तर महर्षि सर्वानन्द जी का : - श्री ब्रह्मा जी रजोगुण हैं तथा श्री विष्णु जी सतगुण युक्त हैं तथा श्री शिव जी तमोगुण युक्त हैं। यह तीनों अजर-अमर अर्थात् अविनाशी हैं, सर्वेश्वर - महेश्वर - मृत्युजय हैं। इनके माता-पिता कोई नहीं। आप अज्ञानी हो। आपने शास्त्रों का ज्ञान नहीं है। ऐसे ही उट-पटांग प्रश्न किया है। सर्व उपस्थित श्रोताओं ने ताली बजाई तथा महर्षि सर्वानन्द जी का समर्थन किया।

पूज्य कबीर प्रभु (कविर्देव) जी ने कहा कि महर्षि जी आप श्रीमद्देवी भागवत पुराण के तीसरे स्कंद तथा श्री शिव पुराण का छटा तथा सातवां रूद्र संहिता अध्याय प्रभु को साक्षी रखकर गीता जी पर हाथ रख कर पढ़ें तथा अनुवाद सुनाऐं। महर्षि सर्वानन्द जी ने पवित्र गीता जी पर हाथ रख कर शपथ ली कि सही-सही सुनाऊँगा।

पवित्र पुराणों को प्रभु कबीर (कविर्देव) जी के कहने के पश्चात् ध्यान पूर्वक पढ़ा। श्री शिव पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार) में पृष्ठ नं. 100 से 103 पर लिखा है कि सदाशिव अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग (पति-पत्नी व्यवहार) से सतगुण श्री विष्णु जी, रजगुण श्री ब्रह्मा जी तथा तमगुण श्री शिवजी का जन्म हुआ। यही प्रकृति (दुर्गा) जो अष्टंगी कहलाती है, त्रिदेव जननी (तीनों ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी) की माता कहलाती है।

पवित्र श्री मद्देवी पुराण (गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादक श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी) तीसरे स्कंध में पृष्ठ नं. 114 से 123 तक में स्पष्ट वर्णन है कि भगवान विष्णु जी कह रहे हैं कि यह प्रकृति (दुर्गा) हम तीनों की जननी है। मैंने इसे उस समय देखा था जब मैं छोटा-सा बच्चा था। माता की स्तुति करते हुए श्री विष्णु जी ने कहा कि हे माता मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शिव तो नाशवान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है।

आप प्रकृति देवी हो। भगवान शंकर ने कहा कि हे माता यदि ब्रह्मा व विष्णु आप से उत्पन्न हुए हैं तो मैं शंकर भी आप से ही उत्पन्न हुआ हूँ अर्थात् आप मेरी भी माता हो।

महर्षि सर्वानन्द जी पहले सुने सुनाए अधूरे शास्त्र विरुद्ध ज्ञान (लोकवेद) के आधार पर तीनों (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) को अविनाशी व अजन्मा कहा करता था। पुराणों को पढ़ता भी था फिर भी अज्ञानी ही था। क्योंकि ब्रह्म (काल) पवित्र गीता जी में कहता है कि मैं सर्व प्राणियों (जो मेरे इक्कीस ब्रह्मण्डों में मेरे अधीन हैं) की बुद्धि हूँ। जब चाहूँ ज्ञान प्रदान कर दूं तथा जब चाहूँ अज्ञान भर दूं। उस समय पूर्ण परमात्मा के कहने के बाद काल (ब्रह्म) का दबाव हट गया तथा सर्वानन्द जी को स्पष्ट ज्ञान हुआ। वास्तव में ऐसा ही लिखा है। परन्तु मान हानि के भय से कहा मैंने सर्व पढ़ लिया ऐसा कहीं नहीं लिखा है। कविर्देव (कबीर परमेश्वर) से कहा तू झूठा है। तू क्या जाने शास्त्रों के विषय में। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। फिर क्या था, सर्वानन्द जी ने धारा प्रवाहिक संस्कृत बोलना प्रारम्भ कर दिया। बीस मिनट तक कण्ठस्थ की हुई कोई और ही वेदवाणी बोलता रहा, पुराण नहीं सुनाया।

सर्व उपस्थित भोले-भाले श्रोतागण जो उस संस्कृत को समझ भी नहीं रहे थे, प्रभावित होकर सर्वानन्द महर्षि जी के समर्थन में वाह-वाह महाज्ञानी कहने लगे। भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर (कविर्देव) जी को पराजीत कर दिया तथा महर्षि सर्वानन्द जी को विजयी घोषित कर दिया। परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी ने कहा कि सर्वानन्द जी आपने पवित्र गीता जी की कसम खाई थी, वह भी भूल गए। जब आप सामने लिखी शास्त्रों की सच्चाई को भी नहीं मानते हो तो मैं हारा तुम जीते।

एक जमींदार का पुत्र सातवीं कक्षा में पढ़ता था। उसने कुछ अंग्रेजी भाषा को जान लिया था। एक दिन दोनों पिता पुत्र खेतों में बैल गाड़ी लेकर जा रहे थे। सामने से एक अंग्रेज आ गया। उसने बैलगाड़ी वालों से अंग्रेजी भाषा में रास्ता जानना चाहा। पिता ने पुत्र से कहा बेटा यह अंग्रेज अपने आप को ज्यादा ही शिक्षित सिद्ध करना चाहता है। आप भी तो अंग्रेजी भाषा जानते हो। निकाल दे इसकी मरोड़। सुना दे अंग्रेजी बोल कर। किसान के लड़के ने अंग्रेजी भाषा में बीमारी की छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र पूरी सुना दी। अंग्रेज उस नादान बच्चे की नादानी पर कि पूछ रहा हूँ रास्ता सुना रहा है बीमारी की छुट्टी की प्रार्थना - पत्र। अपनी कार लेकर माथे में हाथ मार कर चल पड़ा। किसान ने अपने विजेता पुत्र की कमर थप-थपाई तथा कहा वाह पुत्र मेरा तो जीवन सफल कर दिया। आज तुने अंग्रेज को अंग्रेजी भाषा में पराजीत कर दिया। तब पुत्र ने कहा पिता जी माई बैस्ट फ्रेंड (मेरा खास दोस्त नामक प्रस्ताव) भी याद है। वह सुना देता तो अंग्रेज कार छोड़ कर भाग जाता। इसी प्रकार कविर्देव जी पूछ कुछ रहें हैं और सर्वानन्द जी उत्तर कुछ दे रहे हैं। यह शास्त्रार्थ ने घर घाल रखे हैं।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा कि सर्वानन्द जी आप जीते मैं

हारा। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा लिख कर दे दो, मैं कच्चा कार्य नहीं करता। परमात्मा कबीर (कविर्देव) जी ने कहा कि यह कृपा भी आप कर दो। लिख लो जो लिखना है, मैं अंगूठा लगा दूंगा। महर्षि सर्वानन्द जी ने लिख लिया कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द विजयी हुआ तथा कबीर साहेब पराजीत हुआ तथा कबीर परमेश्वर से अंगूठा लगवा लिया। अपनी माता जी के पास जाकर सर्वानन्द जी ने कहा कि माता जी लो आपके गुरुदेव को पराजीत करने का प्रमाण। भक्तमति शारदा जी ने कहा पुत्र पढ़ कर सुनाओ। जब सर्वानन्द जी ने पढ़ा उसमें लिखा था कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द पराजीत हुआ तथा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) विजयी हुआ। सर्वानन्द जी की माता जी ने कहा पुत्र आप तो कह रहे थे कि मैं विजयी हुआ हूँ, तुम तो हार कर आये हो। महर्षि सर्वानन्द जी ने कहा माता जी मैं कई दिनों से लगातार शास्त्रार्थ में व्यस्त था, इसलिए निंद्रा वश होकर मुझ से लिखने में गलती लगी है। फिर जाता हूँ तथा सही लिख कर लाऊँगा। माता जी ने शर्त रखी थी कि विजयी होने का कोई लिखित प्रमाण देगा तो मैं मानुँगी, मौखिक नहीं। महर्षि सर्वानन्द जी दोबारा गए तथा कहा कि कबीर साहेब मेरे लिखने में कुछ त्रुटि रह गई है, दोबारा लिखना पड़ेगा। साहेब कबीर जी ने कहा कि फिर लिख लो। सर्वानन्द जी ने फिर लिख कर अंगूठा लगवा कर माता जी के पास आया तो फिर विपरीत ही पाया। कहा माता जी फिर जाता हूँ। तीसरी बार लिखकर लाया तथा मकान में प्रवेश करने से पहले पढ़ा ठीक लिखा था। सर्वानन्द जी ने उस लेख से दृष्टि नहीं हटाई तथा चलकर अपने मकान में प्रवेश करता हुआ कहने लगा कि माता जी सुनाऊँ, यह कह कर पढ़ने लगा तो उसकी आँखों के सामने अक्षर बदल गए। तीसरी बार फिर यही प्रमाण लिखा गया कि शास्त्रार्थ में सर्वानन्द पराजीत हुए तथा कबीर साहेब विजयी हुए। सर्वानन्द बोल नहीं पाया। तब माता जी ने कहा पुत्र बोलता क्यों नहीं? पढ़कर सुना क्या लिखा है। माता जानती थी कि नादान पुत्र पहाड़ से टकराने जा रहा है। माता जी ने सर्वानन्द जी से कहा कि पुत्र परमेश्वर आए हैं, जाकर चरणों में गिर कर अपनी गलती की क्षमा याचना कर ले तथा उपदेश ले कर अपना जीवन सफल कर ले। सर्वानन्द जी अपनी माता जी के चरणों में गिर कर रोने लगा तथा कहा माता जी यह तो स्वयं प्रभु आए हैं। आप मेरे साथ चलो, मुझे शर्म लगती है। सर्वानन्द जी की माता अपने पुत्र को साथ लेकर प्रभु कबीर के पास गई तथा सर्वानन्द जी को भी कबीर परमेश्वर से उपदेश दिलाया। तब उस महर्षि कहलाने वाले नादान प्राणी का पूर्ण परमात्मा के चरणों में आने से ही उद्धार हुआ। पूर्ण ब्रह्म कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने कहा सर्वानन्द आपने अक्षर ज्ञान के आधार पर भी शास्त्रों को नहीं समझा। क्योंकि मेरी शरण में आए बिना ब्रह्म (काल) किसी की बुद्धि को पूर्ण विकसित नहीं होने देता। अब फिर पढ़ो इन्हीं पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी तथा पवित्र पुराणों को। अब आप ब्राह्मण हो गए हो। ''ब्राह्मण सोई ब्रह्म पहचाने'' विद्वान वही है जो पूर्ण परमात्मा को पहचान ले। फिर अपना कल्याण करवाए।

विशेष :- आज से 550 वर्ष पूर्व यही पवित्र वेदों, पवित्र गीता जी व पवित्र पुराणों में लिखा ज्ञान कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी ने अपनी साधारण वाणी में भी दिया था। जो उस समय से तथा आज तक के महर्षियों ने व्याकरण त्रुटि युक्त भाषा कह कर पढ़ना भी आवश्यक नहीं समझा तथा कहा कि कबीर तो अज्ञानी है, इसे अक्षर ज्ञान तो है ही नहीं। यह क्या जाने संस्कृत भाषा में लिखे शास्त्रों में छूपे गूढ़ रहस्य को। हम विद्वान हैं जो हम कहते हैं वह सब शास्त्रों में लिखा है तथा श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के कोई माता-पिता नहीं हैं। ये तो अजन्मा-अजर-अमर-अविनाशी तथा सर्वेश्वर, महेश्वर, मृत्युजय हैं। सर्व सृष्टी रचन हार हैं, तीनों गुण युक्त हैं। आदि आदि व्याख्या ठोक कर अभी तक कहते रहे। आज वे ही पवित्र शास्त्र अपने पास हैं। जिनमें तीनों प्रभुओं (श्री ब्रह्मा जी रजगुण, श्री विष्णु जी सतगुण, श्री शिव जी तमगुण) के माता-पिता का स्पष्ट विवरण है। उस समय अपने पूर्वज अशिक्षित थे तथा शिक्षित वर्ग को शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान नहीं था। फिर भी कबीर परमेश्वर (कविर्देव) के द्वारा बताए सत्यज्ञान को जान बूझ कर झुठला दिया कि कबीर झूठ कह रहा है किसी शास्त्र में नहीं लिखा है कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी के कोई माता-पिता हैं। जब कि पवित्र पुराण साक्षी हैं कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी का जन्म-मृत्यु होता है। ये अविनाशी नहीं हैं तथा इन तीनों देवताओं की माता प्रकृति(दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन काल रूपी ब्रह्म है।

आज सर्व मानव समाज बहन-भाई, बालक व जवान तथा बुजुर्ग, बेटे तथा बेटी शिक्षित हैं। आज कोई यह नहीं बहका सकता कि शास्त्रों में ऐसा नहीं लिखा जैसा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) साहेब जी की अमृत वाणी में लिखा है।

अमृतवाणी पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रियदेवन की उत्पति भाई।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारूण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।

गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरें पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टी रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टी की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़)की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

"भटकों को सतमार्ग"

''बहन ईशवंती की दर्द भरी आत्म कथा''

मैं भक्तमति ईश्वंती देवी पत्नी श्री भक्त सुरेश दास अहलावत पुत्र श्री प्रताप सिंह अहलावत, पाना गंजा, गाँव-डीघल, जिला-झज्जर में रहती हूँ। हे बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी ! मैं और मेरा परिवार आपके चरणों की धूल हैं। आपने हमें वो सुख दिया जिसकी हम अपने इस जीवन में कभी कल्पना भी नहीं कर सकते थे। आज मैं अपनी आप बीती यहाँ लिख रही हूँ जिसकी आपने हम पर कृपा बख्शी है ताकि हमारी इस दुःख भरी कहानी को पढ़कर हमारे की तरह दुःखी परिवार भी आपके आशीर्वाद से कल्याण करवा सकें। हमारा जीवन बिल्कुल अंधकारमय था, अगर आपके चरणों में नहीं आते तो आज हम जीवित नहीं होते।

मैं असाध्य रोग से पीड़ित थी। मेरा भाई भापड़ौदा निवासी ओमप्रकाश पुत्र श्री दयानन्द राठी जो हरियाणा पुलिस में नौकरी करता था, भी इसी बीमारी से मृत्यु को प्राप्त हो गया था। मैं भी इस स्टेज पर पहुँच चुकी थी। मैं इस हालत में पहुँच चुकी थी कि हाथ पैर बिल्कुल लकवेग्रस्त जैसे हो गये थे। आवाज निकलनी बंद हो गई थी। जगह-जगह डॉक्टरों व स्यानों को दिखाया लेकिन सब जगह निराशा ही हाथ लगी। मेरे पति इतनी शराब पीते थे कि जब घर आते तो बच्चे डर के मारे चारपाई के नीचे छुप जाते थे। घर के बर्तन तक शराब के लिए बेच डाले और सिर पर कर्जा चढ़ा लिया। पड़ोसी भी तंग थे। एक दिन तो नशे की हालत में ये मुझको उठा कर डालाण पान्ने के कूएँ में डालने चल पड़ा था। महापाप ओपरी हवा ने कहा कि किसकी क्या पोरस चलेगी मैं इस घर को बर्बाद करके छोडूंगा। मेरे भाईयों ने मेरे ऊपर ढेर सारा पैसा स्यानों व डॉक्टरों के चक्कर में बर्बाद कर दिया लेकिन मुझे कोई फायदा नहीं हुआ। मेरा पति शराब पीता था तथा बच्चे छोटे-छोटे थे। ससुराल में कोई सहारा नहीं था। मेरा भाई सुखबीर जो डी.टी.सी. में ड्राइवर है, उसने परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले रखा है, उसने कहा कि बहन को संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश दिलवा देते हैं, मरना तो इसको है ही ये आखिरी उपाय कर लेते हैं, इस पर मेरे पिताजी श्री दयानन्द राठी ने कहा कि क्या कोई नाम उपदेश से ठीक होता है? इस पर मेरे भाई ने इन सबको नाम उपदेश की महिमा के बारे में समझाया। इसके बाद सब ने कहा कि देख लेते हैं। यह कह कर मुझे संत रामपाल जी महाराज के चरणों में लेकर गए। उस वक्त सतगुरुदेव गाँव पंजाब खोड़ दिल्ली में सत्संग कर रहे थे। पूरा परिवार मुझे लेकर रात 10 बजे महाराज जी के चरणों में गए। ये बात 25 दिसम्बर 1996 की है।

मेरे भाई ने पूज्य रामपाल जी महाराज को मेरी दुःखदाई कथा बताई। गुरु जी ने रात 10 बजे सत्संग में ही नाम उपेदश की कृपा बख्शी थी। उससे पहले मेरी जुबान भी बंद हो चुकी थी, जीभ नहीं उठती थी। जब 26 दिसम्बर की सुबह मैं

उठी तो अपने आपको बेहतर हालत में बोलते पाया तथा अपने भाई को बताया कि इतने वर्षों बाद मुझे लग रहा है कि मैं अपने शरीर में हूँ तथा मेरे शरीर से जैसे कोई भार उतर गया है। मुझे बोलते देखकर मेरा भाई सुखबीर हैरान रह गया तथा कहा कि महाराज रामपाल जी तो साक्षात कबीर परमेश्वर आए हैं। मैं बीड़ी पीती थी। उसी दिन छोड़ दी। घर आए तो मेरे पति भक्त सुरेश ने कहा कि तुम क्या नाम लेकर आए हो, मैं देखता हूँ, तुम्हारे नाम में इतनी क्या शक्ति है? अपनी माँ से बोला कि ये अच्छा नाम लेकर आए बच्चे सुबह गुड मॉर्निंग की जगह 'सत् साहेब' बोलने लगे हैं। भक्त सुरेश एक साल तक ऐसे ही शराब पीता रहा तथा घर में झगड़ा करता रहा।

एक दिन यह बन्दी छोड़ कबीर साहेब, गरीबदास जी साहेब व सतगुरु देव संत रामपाल जी महाराज की तस्वीरों को तोड़ने के लिए खड़ा हो गया। तब मैंने हाथ जोड़कर बन्दी छोड़ से प्रार्थना की कि आप ही इनकी बुद्धि को कंट्रोल में कर सकते हैं। तब बन्दी छोड़ आपने ही इनको ऐसा चमत्कार दिखाया कि मेरे पति सुरेश ने पूजा स्थल पर वापिस फोटो रख दिए तथा उलटे पांव जाकर दण्डवत् प्रणाम किया, तब से लेकर आज तक उन्होंने शराब, बीड़ी आदि सब बुराईयों को त्याग दिया। इन सबका गवाह पाना गंजा व डीघल गाँव है। मुझे पुनर्जन्म मिला देखकर मेरे दुःख में दुःखी मेरे भाई राजेन्द्र सिंह राठी डी.एस.पी. (हरियाणा) व भाई प्रेम प्रकाश राठी एडवॉकेट (दिल्ली) सहित पूरे परिवार ने भी नामदान ले लिया। नाम उपदेश लेने के बाद कबीर परमेश्वर ने ऐसे-ऐसे सुख दिये जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमारी भैंस ने सर्प खा लिया था। भैंस का बिल्कुल बुरा हाल था। डॉक्टर को दिखाया तो उन्होंने बताया कि इसने कोई जहरीली वस्तु खा ली है तथा 10 इंजेक्शन लगा दिए। अगले दिन भैंस की आँखों से नीला पानी बहना शुरु हो गया तथा भैंस अंधी हो गई। डॉक्टर भी हाथ खड़े कर गए। तब रात में स्वपन में सतगुरु देव रामपाल जी महाराज नजर आए, उन्होंने भैंस के शरीर पर हाथ फेरा। सुबह उठे तो हमने तथा पड़ोसियों ने अपनी आँखों से भैंस के मुंह में सांप को देखा तथा उसको निकाला। भैंस स्वस्थ हो गई तथा पूरा दूध देने लग गई। ऐसे-ऐसे पता नहीं कितने सुख आपने हमें दिये हैं। कल तक हमारे पास 10 रूपये तक नहीं थे, लेकिन आज उन्हीं खेतों में धन उपजता है तथा किसी के आगे हाथ फैलाने की जरूरत नहीं। पड़ोसी कहते हैं कि तुम्हारे गुरु जी ही तुम्हारे लिए राम हैं। अज्ञानियों द्वारा बहकाया हुआ भोला-भाला समाज क्या जाने आपकी महिमा को ? संत रामपाल जी महाराज के विरोधी तो सिर्फ कीचड़ उछालना जानते हैं। जिसके साथ गुजरती है वही बता सकता है, उसको आपसे क्या कुछ मिला है ? हम आपसे यही प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने चरणों में ही रखना तथा आप हजारों वर्ष ऐसे ही दुःखियों का सहारा बने रहें। सतगुरु रामपाल जी महाराज पूर्ण परमात्मा के अवतार आए हैं।

आपका नाम लेने के बाद हमारे घर में इतना सुख मिला परमेश्वर जो कि हम वर्णन नहीं कर सकते। फिर भी वर्णन करने की कोशिश कर रही हूँ। मैंने आपसे

सन् 1996 में नाम उपदेश लिया। उसके करीब डेढ़ साल के बाद एक घटना घटी जो इस प्रकार है -

एक रात मुझे यह सब दिखाई पड़ा कि मैं गाँव में शमशान पूछ रही हूँ कि कहां है? मुझे बताया व दिखाया कि आपने कल यहाँ पर आना है। वह मुण्डाण पाने का शमशान था। जब सुबह हुई तो मुझे हैजा हो गया, मुझे इतना ज्यादा सिर में दर्द हो गया कि टक्कर मार कर मर जाऊं। मौत के सभी कारण पूर्ण हो गए। डॉक्टर को बुलाया गया तो उन्होंने इंजेक्शन लगाया। उसके बाद डॉक्टर ने बताया कि यह तो मर चुकी है, उसके बाद चार दूत दिखाई दिए। फिर उन्होंने मुझे दोनों तरफ से पकड़ लिया और बोले कि हमें भगवान ने भेजा है, आपको लेकर जायेंगे, आपका समय पूरा हो गया है। मैंने कहा कि मेरे गुरु जी नहीं लेकर जाने देंगे। फिर उन्होंने कहा कि आपके गुरु जी क्या करेंगे ? आपका समय पूरा हो गया। हम ऐसा करेंगे कि आपके हाथ से ही आपकी मौत करवा देंगे। उसके बाद मेरे दोनों हाथों ने गले को बड़ी जोर से दबाया जिससे मेरे प्राण आँखों में आ गए। मैं किसी से बोल नहीं सकी। बन्दी छोड़ कहते हैं कि ''आ जम तेरे घट ने घेरैं, तू राम कहन नहीं पावेगा'' वह स्थिति मेरे साथ हो गई। उसके बाद कबीर साहेब कमल के फूल पर मेरे पास प्रकट हुए। उसके बाद मेरे अंदर से पूज्य सद्गुरु रामपाल जी महाराज की आवाज आई कि इस लड़की को आप कैसे लेकर जाओगे, इसे हम नहीं जाने देंगे, इसे तो हम चाहेंगे तब लेकर जायेंगे। इसका अगर पैर भी काट दोगे तो हम वह भी जोड़ देंगे, साथ में गुरु जी ने काफी बातें कहीं जो सब वर्णन नहीं हो पा रही हैं। उसके बाद यम के दूत भाग गये। उसके बाद गुरु जी ने मुझे कहा कि बेटी डर मत, तेरी मौत को हमने टाल दिया है, अब हम चाहेंगे तब लेकर जायेंगे।

हमारी एक भैंस जिसका ब्याने का समय नजदीक था, वह एक दिन बिल्कुल बुत की तरह हो गई। डॉक्टर को बुलाकर लाए तो डॉक्टर ने टाईम से पहले ही हाथों से बच्चा निकाला, उसके बाद भैंस ने जेर नहीं डाली, किसी के कहने पर हमने जो थोड़ी-सी जेर बाहर होती है उस पर ईंट बांध दी, तो वह जेर टूट गई, जेरे के टूट जाने पर भैंस की हालत बहुत बुरी हो गई, सभी कहने लगे यह भैंस अब मरने से बच नहीं सकती। हम घबरा कर रात को ही पाँच डाक्टरों के पास गए। मगर एक भी डॉक्टर नहीं आया, कहते कि यह केस निपटाना हमारे वश की बात नहीं है। अब परमात्मा ही बचा सकता है। उसके बाद बहुत दुःखी होकर मैंने आशा छोड़ दी कि आज भैंस को कोई नहीं बचा सकता। फिर मैंने कहा कि भक्त जी आशा मत तोड़ों, हमारे बन्दी छोड़ सब ठीक करेंगे, उसके बाद बन्दी छोड़ के सामने दण्डवत् प्रणाम किया व प्रार्थना की। उसके बाद सुबह एक डॉक्टर के पास गए तो उसने आकर देखा तो कहा यह बचेगी नहीं। ऐसे ही हमारी भैंस के साथ हुआ था तो बड़े डॉक्टर ने भरपूर कोशिश की मगर नहीं बच पाई। उसके बाद कहने लगे कि परमेश्वर की दया से बच भी गई तो दूध नहीं देगी। उसके सात दिन बाद गुरु जी दिखाई दिये कि भैंस की आंतड़ियों में से जेर निकाल रहे हैं। सुबह

भैंस ने जेर डाली तथा वह स्वस्थ हो गई और पंद्रह किलो दूध पर आ गई। यह हमारे बन्दी छोड़ की कृपा है। जबकि चार-पाँच पड़ोसियों की भैंस इसी बीमारी से मर चुकी थी।

मेरा छोटा लड़का जिसकी उम्र 14 साल है, नाम नवनीत है - इसे बचपन (छः महीने का था तब) से ही निमोनिया हो गया था और 5 साल तक इसकी बीमारी खत्म नहीं हुई। मेरे हर सम्भव प्रयास करने पर तथा डॉक्टर के मना करने पर भी मैंने हार नहीं मानी। एक दिन मैंने उसे सतगुरुदेव रामपाल जी महाराज से नाम दान दिलावाया, उसी दिन से मानों मेरे बच्चे को कोई बीमारी थी ही नहीं। अब वह बच्चा आज अपनी उम्र के सभी बच्चों से तंदरूस्त है। यह सभी चमत्कार हमारे सतगुरुदेव रामपाल जी महाराज की असीम कृपा से हुए हैं।

एक दिन पूर्णिमा के सत्संग के समय वर्ष 2004 में बरसात के न होने के कारण हमारी धान (चावल) की फसल सूख रही थी और नहर भी आकर चली गई थी। एक महीना पश्चात दोबारा नहर आनी थी। वहाँ पर ट्यूबल से पानी देने का साधन नहीं था, हम सिर्फ नहर पर ही आश्रित थे।

परन्तु पूर्णिमा के दिन हम आश्रम से सत्संग समापन के बाद जब खेत को देखने गये तो हमारे ढाई एकड जमीन (धान वाली) घुटनों-घुटनों पानी से भरी हुई थी। यह कभी स्वपन में भी न होने वाला कार्य हमारे सतगुरुदेव की कृपा से हो गया और सारे खेत के पड़ोसियों ने अफसोस किया कि यह नहर तो तुम्हारे सतगुरुदेव ने तुम्हारे लिए सिर्फ तुम्हारे लिए ही बुलवाई है। सभी लोगों की फसल में ज्यादा से ज्यादा 10 मन धान ही हुई जबकि सतगुरु देव जी की कृपा से हमारी 40 मन प्रति एकड़ हुई।

अनेकों अनेकों सुख हमारे बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी ने हमें दिए हैं। मेरे दोनों पुत्र (भक्त अमित तथा नवनीत) मई 2010 को दिल्ली पुलिस में नौकरी लग गए। मेरी तथा मेरे परिवार की तरफ से सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि आप अति शीघ्र सतलोक आश्रम करौंथा में आकर संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त नाम प्राप्त करें। मनुष्य जीवन व्यर्थ न करें। कबीर परमेश्वर कहते हैं -

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में प्रलय होएगी, बहूर करोगे कब।।

सत साहेब ! जय बन्दी छोड़ ! सतगुरु रामपाल जी महाराज की जय !

‘‘उजड़ा परिवार बसा‘‘

मैं भक्त रमेश पुत्र श्री उमेद सिंह, गाँव-पेटवाड़, त. हांसी, जिला हिसार का रहने वाला हूँ अब एम्पलाईज कॉलोनी, जेल के सामने जीन्द में सपरिवार रहता हूँ।

नाम लेने से पहले हम भूतों की पूजा करते थे। हमारे गाँव में बाबा सरिया की मान्यता थी, जिस पर हम प्रत्येक महीने की पूर्णिमा को ज्योति लगाने जाते थे। हम शुक्रवार, जन्माष्टमी, शिवरात्री का व्रत भी करते थे। पित्तरों का पिंड दान और श्राद्ध भी निकालते थे। फिर भी हमारा घर बिल्कुल उजड़ चुका था। जब मैं बारह वर्ष का था तब मेरे पिता जी की मृत्यु हो गई थी। घर में तीन सदस्य थे, तीनों

की आपस में लड़ाई रहती थी, तीनों को भूत-प्रेत बहुत दुःखी किया करते थे और तीनों बहुत ज्यादा बीमार रहते थे। पहले डाक्टरों को दिखाया पर कोई आराम नहीं हुआ, फिर सेवड़ों के पास गए, कोई कहता तुम 5000 रूपये दे दो मैं तुम्हें बिल्कुल ठीक कर दूँगा, कोई कहता तुम 10000 रूपये दे दो।

हम बिल्कुल उजड़ चुके थे। परन्तु कोई आराम नहीं हुआ। मेरे रिश्तेदार भक्त रघुबीर सिंह गाँव कौंथ कलां, वाले के बार-2 कहने से मेरी माता जी ने सन् 1996 में संत रामपाल जी महाराज से नाम ले लिया। मेरी पत्नी को पाँच वर्ष ऊपरांत भी कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई थी। मेरी माता जी के कहने से मेरी पत्नी ने भी संत रामपाल जी महाराज से नाम ले लिया। नाम दान लेते ही वर्ष के अन्दर मेरी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया। मेरा भगवान से विश्वास उठ चुका था। इस कारण मैंने नाम नहीं लिया तथा अपनी माता व पत्नी को भी संत जी के पास जाने से मना करता था। मेरा लड़का जो पंद्रह दिन का था, बहुत ज्यादा बीमार हो गया। डाक्टरों ने कह दिया कि यह लड़का सुबह तक मर जायेगा, इसे ले जाओ। शाम को एक भक्त ने बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के बारे में बताया कि आश्रम जीन्द में आए हैं वे पूर्ण संत हैं और वे ही इस बच्चे को ठीक कर सकते हैं। हम डाक्टरों और सेवड़ों के पास जा-जाकर थक चुके थे। मेरा भगवान से विश्वास उठ गया था। मैंने उस भक्त को मना कर दिया। किंतु उसने दोबारा फिर प्रार्थना की कि वे स्वयं बन्दी छोड़ भगवान ही धरती पर आए हुए हैं। यदि वे दया कर दें तो यह लड़का ठीक हो सकता है। उस भक्त के इतने विश्वास के साथ कहने पर मैंने अपनी माता जी को अनुमति दे दी। मेरी माँ ने लड़के को ले जाकर सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में रख दिया और रोते हुए प्रार्थना की कि महाराज जी यह बच्चा मर चुका है। अब आप ही इसे ठीक कर सकते हैं। तब बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने कहा कि कबीर परमेश्वर की रजा से यह ठीक हो जाएगा। अगले दिन जब बच्चे को मरना था वह ठीक हो गया। ।।बोलो बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की जय।।

हमारा उजड़ा हुआ घर बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की कृपा से दोबारा बस गया। इतना चमत्कार देखकर भी पाप कर्मों की वजह से मैंने नाम नहीं लिया और पूर्व वाली पूजा तथा भूतों की पूजा ही करता रहा। हमारे घर पर बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी का पाठ संत रामपाल जी महाराज करते थे और मैं बाहर जाकर शराब पीता था। फिर एक वर्ष बाद एक दिन हमारे घर पाठ हो रहा था तब शाम को बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने सत्संग किया। तब मैंने सत्संग सुना और नाम भी ले लिया। फिर हमारे घर में दुःख नाम की चीज नहीं रही। मेरी माता जी ने किसी के बहकावे में आकर नाम खण्डित कर दिया। कुछ समय पश्चात सन् 2000 में मेरी माँ को अचानक पैर में जलन होने लगी। डाक्टरों को दिखाया। उन्होंने बताया कि इसे ब्लड़ कैंसर है। यह दस-पंद्रह दिन में मर जायेगी। अगर पी.जी.आई. चण्डीगढ़ में ले जाओ तो वहाँ डेढ़ लाख रूपये

लग कर यह ज्यादा से ज्यादा एक साल तक जीवित रह सकती है। परन्तु दर्द कम नहीं होगा। बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज ने बताया कि आपकी माता जी ने नाम खंडित कर दिया है। जैसे बिजली का बिल न भरने से कनेक्शन कट जाने से विद्युत से मिलने वाला लाभ बंद हो जाता है। उसे फिर सुचारु करवाना पड़ता है। मेरी माता जी ने अपनी गलती की क्षमा याचना की। महाराज जी ने दोबारा नाम दिया तथा सिर पर हाथ रखा। सिर पर हाथ रखते ही पैर की जलन व दर्द बन्द हो गया। फिर लगभग दो वर्ष के बाद जाड़ पड़वाने की वजह से जाड़ में से खून निकलने लगा। डाक्टर ने दवाई दी और टांके भी लगाए, परन्तु खून निकलना बंद नहीं हुआ। फिर डॉक्टर ने इसकी बीमारी चैक की और बताया कि इसे ब्लड कैंसर है और अब वह फूट चुका है। अब यह ठीक नहीं हो सकती। इसे घर ले जाओ। यह खून निकलने से दो दिन में मर जायेगी। फिर अगले दिन इसके पेशाब और लैटरिंग में से भी खून आना शुरु हो गया। तब मैंने सतगुरु रामपाल जी महाराज को फोन से बताया कि डाक्टर ने कहा है कि ये दो दिन में मर जायेगी। तब सतगुरु रामपाल जी महाराज ने कहा कि बन्दी छोड़ जो करेंगे ठीक करेंगे। फिर अगली रात को दो बजे यमदूत उसे लेने के लिए आए। मेरी माँ ने कहा कि तेरे पिता जी (वे दस वर्ष पहले गुजर चुके थे) मुझे लेने के लिए आये हुए हैं। इतना कहते-कहते वह यमदूत मेरी माँ के अन्दर प्रवेश कर गया और कहने लगा कि मैं इसे लेकर जाऊँगा, इसका समय पूरा हो चुका है। मेरे को चाय पिलाओ। तब हमने उसके लिए चाय बनाने के लिए रखी ही थी, इतने में वह यमदूत कहने लगा कि पता नहीं तुम्हारे घर में कितनी बड़ी शक्ति है, वह मुझे मार रही है, मैं यहाँ और नहीं रूक सकता, मुझे जल्दी से चाय पिलाओ, मैं जा रहा हूँ और गर्म चाय ही पी गया। जाते हुए कहने लगा कि तुम्हारे घर में पूर्ण परमात्मा खड़े हैं। मैं इसे नहीं ले जा सकता, यह कहते हुए वह चला गया। एक मिनट के बाद ही खून बिल्कुल बंद हो गया, जीभ और दाँत जो काले हो चुके थे, बिल्कुल साफ हो गए और बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की कृपा से वह पूरी तरह से पहले से भी स्वस्थ हो गई। परमात्मा कबीर साहेब जी ने मेरी माता जी की पाँच वर्ष आयु बढ़ा दी। 24 जुलाई 2005 को सत्य भक्ति करके सतलोक प्रस्थान किया। बोलो बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की जय। सत साहेब।

''गुर्दे ठीक करना व शैतान को इंसान बनाना''

मैं भक्त जगदीश पुत्र श्री प्रभुराम, गाँव-पंजाब खोड़, दिल्ली-81 । डी. टी. सी. (दिल्ली ट्रांस्पोर्ट कॉर्पोरेशन) में मकैनिक हूँ। मुझे शराब ने राक्षस वृत्ति का इन्सान बना दिया था। शराब पीना, मुर्गे खाना, सिगरेट पीना, हुक्का पीना।

मैं नौकरी से शाम को लगभग 7 या 8 बजे आता था। कई बार घर आने में शराब ज्यादा पीने पर 9 या 10 भी बज जाते थे। शराब में पागल हुए एक बार इधर एक बार उधर लड़खड़ाते हुए पैरों से घर में घुसता था। आते ही पत्नी व

बच्चों को पीटना शुरु कर देना, हर रोज घर में कहर होता था। जिन बच्चों को प्यार के साथ अपनी छाती से लगाना चाहिए था वे मासूम बच्चे मुझको देखकर चारपाई के नीचे घुस जाते थे। बच्चे अपने पिता जी के घर आने की राह देखते हैं कि पापा जी आएगें, हमारे लिए खाने की चीजें लाएगें। परन्तु मैं खाने की चीजों की बजाय शराब में पागल हुए लाल आँखों से उनको मारने लग जाता था।

दूसरी तरफ मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी अपने दुःखी जीवन के साथ खतरनाक बीमारी से जूझती हुई स्वांस पूरे कर रही थी। उसके दोनों गुर्दे खराब हो चुके थे। डॉक्टरों ने कह दिया था कि दवाई खाते रहो। लेकिन छः महीने से ज्यादा यह जीवित नहीं रह सकती। ऑल इंडिया मैडीकल और डॉ. राम मनोहर लोहिया हॉस्पिटल दिल्ली से भी यह रिपोर्ट मिली कि गुर्दे खराब हो चुके हैं और यह छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रह सकती और साथ में दवाई भी अंत समय तक खाते रहना होगा। उन मासूम बच्चों का क्या हाल होगा जिनका पिता शराब पीता हो, माँ मृत्युशैय्या पर हो। कोई वजन का कार्य नहीं कर सकती। तो उन बच्चों को जब यह पता चला कि तुम्हारी मम्मी (माता जी) भी छः महीने से ज्यादा जीवित नहीं रहेगी तो उन बच्चों की आँखों से आंसु बहते रहते थे। एक तो पिता जी शराबी और दूसरी तरफ हमारी माता जी जानलेवा बीमारी से पीड़ित, हमारा क्या होगा? तीन लड़के तथा एक लड़की अपनी माता जी के पास गिरकर रोने लगे तथा कहा कि हे भगवान हम सब को भी हमारी माता जी के साथ ही अपने पास बुला लेना। यहाँ किसके सहारे जीयेंगे ?

परमात्मा ने उन बच्चों की भी पुकार सुनी और हमारे भी शुभ कर्म उदय हुए कि हमारे पड़ोस में ही भक्तमति निहाली देवी ने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज की आज्ञानुसार 30-31-1 जनवरी 1997 को सतगुरु गरीबदास जी महाराज की अमृतमयी वाणी तीन दिन का अखण्ड पाठ अपने घर करवाया। जिसमें संत रामपाल जी महाराज ने 31 दिसम्बर 1996 को रात्री में 9 से 11 बजे तक सत्संग किया। मेरी धर्मपत्नी सुमित्रा देवी भी पड़ोस में सत्संग सुनने के लिए चली गई। थोड़ी देर बाद मैं (जगदीश) भी अपनी नौकरी से घर आ गया। घर आने पर बच्चों से पता चला कि हमारी माता जी पड़ोस में माई निहाली देवी के घर सत्संग सुनने के लिए गई है। यह सुनकर मैं बहुत क्रोधित हुआ और मैंने कहा कि कहाँ पाखण्डियों के पास चली गई ? मैं अभी उसको पीटते हुए घर लाता हूँ। यह विचार कर मैं भक्तमति निहाली देवी के घर चला गया। मैंने शराब पी रखी थी। जब मैं निहाली माई के घर पहुँचा तो संत रामपाल जी महाराज सत्संग कर रहे थे। बहुत संख्या में भक्तजन सत्संग सुन रहे थे। उन सभी को देखकर मैं कुछ नहीं बोला और चुपचाप सबसे पीछे बैठ गया। मैंने सत्संग सुना। सत्संग में महाराज जी ने बताया कि :-

शराब पीवैं कड़वा पानी, सत्तर जन्म श्वान के जानी।
गरीब, सो नारी जारी करैं, सुरापान सो बार।

एक चिलम हुक्का भरैं, डूबैं काली धार।।
कबीर, मानुष जन्म पाय कर, नहीं भजैं हरि नाम।
जैसे कुआ जल बिना, खुदवाया किस काम।।

महाराज जी ने सत्संग में बताया कि जिन बच्चों को पिता जी ने सीने से लगाना चाहिए, उस शराबी व्यक्ति को देख कर बच्चे चारपाई के नीचे छुप जाते हैं। शराबी व्यक्ति आप भी दुःखी, धनहानि, समाज में इज्जत समाप्त तथा परिवार तथा पड़ौस व रिश्तेदारों तक को परेशान करके बद दुआऐं प्राप्त करता है। जैसे शराबी की पत्नी व बच्चे तो कहर का शिकार होते ही हैं। परन्तु पत्नी के माता-पिता, भाई-बहन आदि भी दिन-रात चिन्तित रहते हैं। सर्व पाप का भार उस नादान शराबी के शीश पर आता है। मनुष्य जन्म प्रभु ने भक्ति करके आत्म कल्याण करने को दिया है, इसको शराब आदि में नष्ट नहीं करना चाहिए। जैसे बच्चा स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं करता, आवारा गर्दी में घूमता रहता है। वह शिक्षा से वंचित रह जाता है। फिर सारी आयु मजदूरी करके जीवन निर्वाह करता है। फिर उसे याद आता है कि यदि में आवारागर्दी न करता तो आज अन्य सहपाठियों की तरह बड़ा अधिकारी होता। परन्तु अब क्या बने, यह तो उस समय सोचना था।

कबीर साहेब कहते हैं कि - अच्छे दिन पीछे गये, गुरु से किया न हेत। अब पछतावा क्या करे, जब चिड़ियां चुग गई खेत।।

इसी प्रकार यदि मनुष्य जन्म में जो प्राणी प्रभु भक्ति नहीं करता वह पशु-पक्षियों की योनियों को प्राप्त होता है। जो व्यक्ति शराब पीता है, वह शराब के नशे में खाने की भरी थाली को लात मारता है। भक्ति न करने से भिन्न-भिन्न प्राणियों की योनियों में कष्ट उठाता है। कभी वह कुत्ते की योनी धारण करता है। कुत्ता सारी रात सर्दी में भी गली में रहता है। ऊपर से वर्षा तथा सर्दियों की रात्री में महाकष्ठ उठाता है। सुबह भूख सताती है। किसी घर की रसोई में घुसने की चेष्टा करता है। घर वाले डण्डा या पत्थर मारते हैं। कुत्ता बहुत देर तक चिल्लाता रहता है। फिर अन्य घर में घुसता है, वहाँ न जाने रोटी मिलेगी या सोटी (डण्डा)। यदि वहाँ भी डण्डा नसीब में हुआ तो वह शराबी जो अब कुत्ता बना है, गाँव के बाहर जाता है। भूख से व्याकुल हुआ मनुष्यों का मल खाता है। यदि वह नादान प्राणी जब मनुष्य शरीर में था, सत्संग में आता, अच्छे विचार सुनता, बुराई त्यागकर अपना कल्याण करवाता तथा बच्चों को अच्छी शिक्षा तथा प्रभु की दीक्षा प्रदान करवाता, सदा सुखी हो जाता। शराब का नशा कुछ समय रहता है। परमात्मा के नाम भजन से हुए सुख का आनन्द सदा साथ रहता है।

उपरोक्त सत्संग आदरणीय संत रामपाल जी महाराज का सुन कर मेरी शराब छू मंत्र हो गई। आँखों से आंसु बह चले। घर चला गया, नींद नहीं आई। 1 जनवरी 1997 को दोपहर 1.30 बजे अपनी पत्नी को साथ लेकर संत रामपाल जी महाराज के पास गया, उनसे आत्म कल्याण के लिए उपदेश प्राप्त किया। उसके बाद आज (2005) तक शराब, तम्बाकु तथा मांस छुआ भी नहीं। मेरी पत्नी ने भी सतगुरु

रामपाल जी से उपदेश लिया। उस दिन के बाद वह बिल्कुल स्वस्थ है। डॉक्टरों के ईलाज तथा बीमारी की एक्स-रे आदि की रिपोर्ट आज भी हमारे घर रखी है। जन-जन को दिखाते हैं।

मेरी सर्व से प्रार्थना है कि आप भी प्रभु के चरणों में आओ। संत रूप में आए परमेश्वर के संदेश वाहक संत रामपाल को पहचानों। मुफ्त नाम उपदेश प्राप्त करके कृप्या अपना कल्याण करवाऐं। सत साहेब।

भक्त जगदीश

"भूतों व रोगों के सत्ताए परिवार को आबाद करना"

भक्तमति अपलेश देवी पत्नी श्री रामेहर पुत्र श्री माँगेराम, गाँव-मिरच, तहसील चरखी दादरी, जिला भिवानी (हरियाणा)।

मैं अपलेश देवी अपने दुःखी जीवन की एक झलक आपको बता रही हूँ। मैं और मेरे बच्चे - राहूल और ज्योति हैं जो बीते समय के बुरे हालातों को याद करके सिहर जाते हैं। जिनका वर्णन करते समय कलेजा मुंह को आता है।

6 दिसम्बर 1995 की रात्री में बदमाशों ने मेरे पति को ड्यूटी के दौरान जान से मार दिया था। लेकिन इस पूर्ण परमात्मा (कबीर साहिब) ने हमारा ध्यान रखा और मेरे पति को जीवन दान दिया जो आज हमें परिवार सहित बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज की दया से पूर्ण परमात्मा के चरणों में स्थान मिल गया है। हमारे परिवार में मेरे पति को साफ कपड़े पहनाते जो कुछ देर बाद अन्डर वियर के ऊपर के हिस्से पर जहाँ पर रबड़ या नाड़ा होता है वहाँ चारों ओर खून से कपड़े रंगीन हो जाते थे, तथा बच्चों को भी बलगम के साथ खून आता था और मैं भी एक वर्ष से हार्ट (दिल) की बीमारी से बहुत परेशान हो चुकी थी। जिसके लिए वर्षों से दवाईयाँ खा रही थी। मेरे पतिदेव दिल्ली पुलिस में हैं। मेरे सारे शरीर पर फोड़े-फुन्सी हो जाते थे। घर में परेशानियों के कारण मेरे पति रामेहर का दिमागी संतुलन भी बिगड़ गया था।

हमने इन परेशानियों के लिए सन् 1995 से जुलाई 2000 तक एक दर्जन से भी ज्यादा लंगड़े, लोभी व लालची गुरुवों के दरवाजे खट-खटाए तथा भारत वर्ष में तीर्थ स्थानों जैसे जमुना, गंगा, हरिद्वार, ज्वाला जी, चामुन्डा, चिन्तपूरनी, नगर कोट, बाला जी, मेहन्दी पुर व गुड़गाँवा वाली माई तथा गौरख टीला राजस्थान वाले प्रत्येक स्थानों पर बच्चों सहित काफी बार चक्कर लगाते रहे लेकिन हमें कोई राहत नहीं मिली।

इस प्रकार हमारे परिवार की हालत यहाँ तक आ चुकी थी कि हम होली व दिवाली भी किसी मस्जिद में बैठकर बिताने लग गये थे।

हम बड़े खुशनसीब हैं जो हमें संत रामपाल जी महाराज के द्वारा परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण मिल गई। अब कहाँ गये वे काल के दूत तथा वे हमारी बीमारियाँ जिनका ईलाज आल इण्डिया हॉस्पीटल में चल रहा था, जो सतगुरुदेव

के चरणों की धूल के आगे टिक नहीं पाई।

25 फरवरी 2001 को एक काल की पूजा करने वाले स्याने ने फोन करके पूछा कि अपलेश तुम्हारा नाम है। मैंने कहा कि हाँ, आप अपना नाम बताओ। तब वह स्याना कहता है कि यह बलवान कौन है, आपका क्या लगता है? मैंने कहा कि तुम कौन हो, आपका क्या नाम है तथा यह सब क्यों पूछना चाहते हो ? तब वह स्याना कहता है कि बेटी तुम मेरा नाम मत पूछो। मैं बताना नहीं चाहता तथा मैं हांसी से बोल रहा हूँ। यह बलवान तथा इसके साथ एक आदमी आए और दोनों मुझे 3700 रूपए तुम पर घाल घलवाने के लिए दे गए थे। मैंने तुम्हारा फोन नं. भी बलवान से लिया था कि मैं पूछूंगा कि उनकी दुर्गति हुई या नहीं। मेरे पास आपका फोन नं. नहीं था, बलवान ने ही दिया था। जो मैंने यह बुरा कार्य रात्री में किया। लेकिन जैसे ही मैं सोने लगा तो मुझे सफेद कपड़ों में जिस गुरु की तुम पूजा करते हो वे दिखाई दिये, जिन्होंने मुझे बतला दिया कि इसका परिणाम तुम खुद भोगोगे। यह परिवार सर्व शक्तिमान सर्व कष्ट हरण परम पूज्य कबीर परमेश्वर की शरण में है। आपकी तो औकात ही क्या है ? यहाँ का धर्मराज भी अब इस परिवार का कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

गरीब, जम जौरा जासै डरै, मिटें कर्म के लेख।
अदली अदल कबीर हैं, कुल के सद्गुरु एक।।

परम पूज्य कबीर परमेश्वर जी से जम (काल तथा काल के दूत) तथा मौत भी डरती है। वे पूर्ण प्रभु पाप कर्म के दण्ड के लेख को भी समाप्त कर देते हैं। इसके बाद उस स्याने ने कहा कि बेटी तुम्हें यह बतला दूँ कि तुम जिस देव पुरुषोत्तम की पूजा करते हो, वे बहुत प्रबल शक्ति हैं। मैं 25 वर्ष से यह घाल घालने का कार्य कर रहा हूँ। न जाने कितने परिवार उजाड़ चुका हूँ। परन्तु आज पहली बार हार खाई है। बेटी इस शक्ति को मत छोड़ देना, नहीं तो मार खा जाओगे। आपके विनाश के लिए बलवान आदि घूम रहे हैं। मैंने कहा कि हम पूर्ण परमात्मा की पूजा करते हैं, बलवान मेरे पति का बड़ा भाई है। हमारा जानी दुश्मन बना है।

हम आज इतने खुशनसीब हैं कि हमारे दिल में किसी वस्तु या कार्य की आवश्यकता होती है उसको यह सतगुरुदेव, सत कबीर साहिब पूर्ण कर देते हैं। आज गुरु गोविन्द दोनों खड़े, हम किसके लागे पाय। हम बलिहारी सतगुरुदेव रामपाल जी के चरणों में जिन्हें परमेश्वर दिया मिलाय।

हे भाईयों और बहनों हम सारा परिवार मिलकर आपको यह सन्देश देते हैं कि अगर आपको सतलोक का मार्ग, पूर्ण मोक्ष व सर्व सुख प्राप्त करना हो और सांसारिक दुःखों से छुटकारा पाना हो तो बन्दी छोड़ संत रामपाल जी महाराज से सतनाम प्राप्त कर लेना और अपना अनमोल मनुष्य जन्म सफल कर लेना।

।। सत साहिब।।

भक्तमति अपलेश देवी

"भक्त सतीश की आत्मकथा"

मैं भक्त सतीश दास 193 सेक्टर 7, आर.के.पुरम. नई दिल्ली का रहने वाला हूँ। उपरोक्त पंक्तियाँ हमारे जीवन में चरित्रार्थ होती हैं। क्योंकि सतगुरु बन्दी छोड़ रामपाल जी महाराज का दिसम्बर सन् 1997 को प्रीतमपुरा दिल्ली में सत्संग हुआ था तो हम अपने एक मित्र के कहने पर सत्संग सुनने गए, परन्तु पारम्परिक पुजाऐं छोड़ने की बातें सुनने के बाद सत्संग में दिल नहीं लगा। सतगुरु जी शास्त्रों में पढ़-पढ़कर हमें समझा रहे थे तो हमारे मन में आया कि किताबों को तो हम घर में ही न पढ़ लेंगे। इस प्रकार ज्योति निरंजन (काल) ने हमारी बुद्धि स्थिर कर दी और हमारा भक्ति वाला चैनल बंद कर दिया।

सतगुरु हमें समझाते हैं कि -

गुरु बिन किन्हें न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भूस छड़े किसाना।
गुरु बिन भरम ना छूटें भाई, कोटि उपाय करो चतुराई।।

इस प्रकार हमारी बुद्धि स्थिर होने की वजह से हम ईधर-उधर की बातें करते हुए घर वापिस आ गए। सन् 1999 में मेरी पत्नी श्रीमति मंजू को ब्रेन ट्यूमर (दिमागी कैंसर) हो गया, जिसका हमें सफदरजंग हॉस्पीटल में निरीक्षण व ईलाज के समय पता चला। इसके बाद मैंने उसको पंत हॉस्पीटल तथा A.I.I.M.S. नई दिल्ली और इसके बाद अपोलो हॉस्पीटल नई दिल्ली में भी डॉक्टर को दिखाया। सभी डॉक्टरों ने तुरन्त ऑप्रेशन की सलाह देते हुए कहा कि ऑप्रेशन के दौरान इसके एक हाथ में पैरालाईसिस हो सकता है। अपोलो हॉस्पीटल के डॉक्टर ने तो रिपोर्ट देखने के बाद यहाँ तक कहा कि इसकी दोनों आँखें अभी तक ठीक कैसे हैं ? और उसी समय आई स्पेशलिस्ट से टैस्ट करवाने के लिए कहा। मैंने तभी चैक करवाई। तब आई स्पेशलिस्ट और न्यूरो सर्जन ने सलाह दी कि हर पंद्रह दिन बाद इसकी आँखों की जाँच करवाते रहना, कभी भी खत्म हो सकती है, क्योंकि ब्रेन ट्यूमर ऐसी जगह पर है। मेरी पत्नी व मैं दोनों ही पैरों से विकलांग हैं और हाथ व आँखें खत्म होने की बात सुनकर स्वांस ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे रह गया, लेकिन कोई चारा न पाकर अंत में पंत हॉस्पीटल नई दिल्ली में ऑप्रेशन करवाने की सोची और डॉक्टर के कहने पर INMAS हॉस्पीटल तिमारपुर दिल्ली से M.R.I करवा ली और अन्य सारे टैस्ट भी करवा लिए। केवल ऑप्रेशन की तारीख लेनी थी। हमें पूर्ण परमात्मा तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के पहले सुने सत्संग की ये पंक्तियां याद आई -

जिन मिलते सुख उपजे, मिटें कोटि उपाध।
भुवन चतुर्दश ढूंढियों, परम स्नेही साध।।

और हमारा भक्ति चैनल परमेश्वर ने ऑन कर दिया और मन में भावना उत्पन्न हुई कि ऑप्रेशन से पहले नाम लेकर देख लेते हैं। फिर अपने दोस्त के साथ प्रीतमपुरा दिल्ली में जाकर 4 फरवरी 2001 को पूर्ण परमात्मा तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया। पूर्व वाली सभी पूजाऐं छोड़ दी। सतगुरु

जी ने अखण्ड पाठ करवाने की सलाह देते हुए कहा कि परमात्मा ने चाहा तो ऑप्रेशन टल जायेगा और सब कुछ ठीक हो जायेगा। हमने सतगुरु की आज्ञा अनुसार घर पर तीन दिन का अखण्ड पाठ करवाया और इसके बाद डॉक्टर से ऑप्रेशन की तारीख लेने पंत हॉस्पिटल नई दिल्ली गये। जो डॉक्टर पहले ऑप्रेशन की सलाह दे रहे थे, वही डॉक्टर दूसरे एम.आर.आई. को देखकर कहने लगा की अभी ऑप्रेशन की कोई जरूरत नहीं है। तब सतगुरु की वाणी याद आई कि -

सतगुरु दाता हैं कलि माहिं, प्राण उधारण उतरे सांई।
सतगुरु दाता दीन दयालं, जम किंकर के तोड़ें जालं।।

और हम सतगुरु को याद करके फूट-फूट कर रोने लगे कि हे परमेश्वर हम आपकी महिमा को किन शब्दों में व्याख्यान करें। इस प्रकार पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब के अवतार तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज की कृप्या से हमारा ऑप्रेशन टल गया और उसके बाद हमने एक पैसे की गोली दवाई भी नहीं खाई है और सुखमय जीवन जी रहे हैं।

20 नवंबर 2004 को रात को काल के झपट्टे के कारण मेरी पत्नी मृतक समान हो गई थी, परमेश्वर का अमृत जल पिलाने के बाद होश आया। फिर हम उसे सतगुरु जी के पास लेकर आए तो सतगुरु जी ने बताया कि आज इनकी मृत्यु होनी थी। कबीर परमेश्वर ने इनकी उम्र बढ़ा दी है और अब उसको भक्ति करनी है।

फिर 22 नवंबर 2004 को मेरी पत्नी को सोनीपत सत्संग में ही लकवे (पैरालाईसिस) का अटैक पड़ा और उसकी वजह से उसके हाथ की ताकत समाप्त होने लगी और उसी समय सतगुरु जी का हाथ अपने हाथ में दिखाई देने लगा और लगभग पाँच मिनट तक दिखाई देता रहा। जब लकवे (पैरालाईसिस) का असर समाप्त हो गया तब सतगुरु जी का हाथ अदृश्य हो गया और आज तक वह बिल्कुल ठीक है।

सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जो कबीर परमेश्वर के ज्यों के त्यों अवतार आए हैं ने हमारे को सिद्ध कर दिया कि

गरीब जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के अंक।
कागज कीरें दरगह दई, चौदह कोटि न चंप।।

भक्त सतीश मेहरा,
RLF-907/17, राज नगर-II, पालम कालोनी,
नई दिल्ली। मो. 09718184704

''भक्त रामस्वरूप दास की आत्मकथा'

बन्दी छोड़ कबीर साहेब की जय

मैं भक्त रामस्वरूप पुत्र मंगत राम गांव बड़ौली जिला-अम्बाला का रहने वाला हूँ। मैंने 13 साल से धन-धन सतगुरु से नाम ले रखा था। 6 साल पहले मेरे हाथ-पांव काम करना छोड़ गये थे। कमर से नीचे जैसे मेरा सारा शरीर मृत प्राय हो गया था। मेरे दोनों लड़के मेरे को अम्बाला सरकारी हस्पताल में लेकर गये फिर

प्राईवेट डाक्टरों को भी दिखाया। इसके बाद मुझे 2 साल तक ईलाज के लिये इधर-उधर ले जाने के बाद मुझे P.G.I. चण्डीगढ़ भी लेकर गये वहां एक साल में मेरे दो बार टेस्ट किये गये। क्योंकि जिस मशीन से मेरे टेस्ट होते थे उसमें मेरा नम्बर एक महीने में आता था। उसकी टेस्टींग फीस छः हजार रूपये थी। वहां पर मेरे को दोनों बार की टेस्टींग में बीमारी के कारणों का पता नहीं लगा तो दोनों बार मेरे सिर का आप्रेशन करने को कहा गया जिसमें मेरी जान का खतरा बताया और पूर्ण ठीक होने की कोई गारन्टी नहीं है ऐसा कहा। उसके बाद घर वाले मुझे बाबा रामदेव के योग आश्रम में भी लेकर गये वहां मेरा कुछ दिन इलाज होता रहा कोई आराम न होने से मेरे को घर ले आये। फिर मुझे झाड़-फूंक करने वालों के पास पंजाब हरियाणा आदि स्थानों पर लेकर गये वहां भी मेरे को कोई आराम नहीं हुआ। हमने सोच लिया कि अब जीवन ही थोड़े दिन का है। जब मैं सभी ओर से निराश हो गया तो मेरे को मेरी लड़की जिसकी शादी शाहपुर (अम्बाला) में हुई थी उसने मेरे को वहां पर बुलाया गया। मेरे जमाई संजू ने कुकू - भगत के बारे में बताया। जो 15 अगस्त 2008 को मेरे को लेकर बरवाला आश्रम में सतगुरु बंदी छोड़ रामपाल जी महाराज के पास लेकर आये 16 अगस्त 2008 को मैंने नामदान लिया। उसके बाद मेरे को आराम होने लगा। गुरू जी की कृप्या से अब मैंने अपने खेत में आप ट्रेक्टर चलाया और अपनी सारी जमीन की बुवाई का काम किया महाराज के आशीर्वाद से मेरे को दुबारा जीवन दान मिला। महाराज बन्दी छोड़ ने जो कप्या की उसको जुबान से ब्यान नहीं कर सकता। गुरु जी आप सतलोक से मेरा जीवन दान देने के लिए आए हो मेरा कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम है।

जय बन्दी छोड़ की।

आपका दास
भक्त राम स्वरूप दास
गांव - बड़ौली, जिला - अम्बाला

''भक्त बहीद् खाँ की आत्मकथा''

बन्दी छोड़ कबीर साहेब की जय

बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में कोटी-कोटी दण्डवत् प्रणाम, मैं बहीद् खाँ पुत्र मुन्शी खाँ गाँव व तहसील - मेहगाँव जिला भिण्ड (मध्यप्रदेश) का रहने वाला हूँ। मैं 3 साल से सख्त बीमार था। मेरी दोनों किडनी खराब थी। मैनें 2 साल ग्वालियर में बड़े-बड़े M.B.B.S. डाक्टरों से इलाज करवाया परन्तु कोई राहत नहीं मिली। उसके बाद ग्वालियर के डाक्टरों ने मुझे दिल्ली A.I.M.S. (ऑल इण्डिया मेडिकल) के लिए रैफर कर दिया। वहां डाक्टरों ने सभी जाचों के बाद बताया कि 3 बोतल खून चाहिए पहले आपका खून फिल्टर होगा फिर आपके परिवार से किसी सदस्य की किडनी निकालकर आपको आपरेशन द्वारा लगाई जाएगी आपरेशन का खर्च 4 लाख लगेगा। मैं रूपये देने में असमर्थ था।

इसलिए दिल्ली से अपने घर वापिस आ गया तथा असहाय होकर मृत्यु का इन्तजार करने लगा। क्योंकि में खाने-पीने, चलने-फिरने व उठने-बैठने में असमर्थ हो चुका था।

फिर किसी व्यक्ति द्वारा पता चला कि हरियाणा में बरवाला जि. हिसार के अन्दर परमात्मा आए हुए हैं। जो असाध्य रोगों को परमात्मा की भक्ति से ठीक करते हैं। ये शब्द सुनकर 24-7-09 को आपके चरणों में पहुँच कर नाम दान ले लिया। नाम दान लेने के बाद मुझे आराम होना शुरू हो गया और धीरे-धीरे एक महीना भी नहीं लगा। मैं आपकी कृप्या से बिल्कूल ठीक हो गया। मेरे सतगुरु! प्रमाण के लिए मेरी बीमारी के सभी टैस्ट व कागजात मेरे पास मौजूद हैं। हे परम पिता परमेश्वर आपने जो जीवन मेरे को दिया उसका अहसान मैं कभी नहीं उतार पाऊँगा। मेरे सतगुरु ''अपने दास पर कृप्या करके ऐसे ही अपने चरणों में लगाए रखना।''

आपका दास

भक्त बहीद् खाँ पुत्र मुन्शी खाँ
गाँव, डाकखाना व तहसील -मेहगाँव,
जिला - भिण्ड (मध्यप्रदेश)

''भक्तमति तारा कट्टा पर असीम कृपा हुई''

बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के चरणों में कोटि-२ दण्डवत् प्रणाम मैं तारा कट्टा जयपुर निवासी, संस्कृत में एम.ए. हूँ। राजस्थान यूनिवर्सिटी से बी.ए. व संस्कृत में स्वर्ण पदक प्राप्त है। मैंने छः लेखकों की गीता, उपनिष्द, पुराण व सारे दर्शन शास्त्र व सभी गुरुओं के प्रवचन सुने परन्तु संतुष्टि नहीं हुई। एक बार जयपुर में भास्कर भक्ति चैनल पर सतगुरु रामपाल जी महाराज का प्रोग्राम देखा तथा 30 नवम्बर 2003 में नाम उपदेश लिया। उस समय में बहुत बिमारियों से परेशान थी। मई 1991 में मुझे बायोपसी टैस्ट के माध्यम से पता चला कि मुझे अल्सरेटिव कोलाइटिस (Ulcerative Colitis) नामक बिमारी बताई। इसमें बड़ी आंत में छाले हो जाते है तथा लैटरिंग में खून आता है तथा इसके बारे में डाक्टर ने बताया कि इसका कही पर भी इलाज नहीं है। मुझे 3-6-2002 में आंत में अल्सर 75cm तक बढ़ गए थे। 10-4-08 में गुरु जी के कहने पर मैंने दवाई बंद कर दी। इसमें 4 टेबलेट्स तो ऐसी थी जिनके बारे में डा० ने कहा था कि अगर जीवित रहना है तो पूरी जिंदगी खानी पड़ेंगी। 23-4-04 में मेरे Iungs (फेफड़ों) में Infection हो गया। जब मैं डा० के पास इलाज के लिए गई तो डा० ने मेरे एक्स रे देख कर कहा कि आप ऐसी बिमारी से ग्रसित हो जिसमें आपको बुखार होना चाहिए, वजन कम होना चाहिए तथा खून की कमी होनी चाहिए। लेकिन आप बिल्कुल स्वस्थ हो, मैंने कहा यह मेरे सतगुरु रामपाल जी महाराज की कृपा है कर्म

की मार तो मुझ पर आना चाहती है। लेकिन मेरे गुरुदेव कर्म की उस मार को मुझ पर प्रभावी नहीं होने दे रहे। इसी प्रकार अपने भक्त की परमात्मा रक्षा करते हैं। इससे डा० काफी प्रभावित हुआ। एक बार Jan/09 में प्रचार के लिए जाना था। रात भर खून की पिचकारी चली सुबह सोचा मरना तो है ही प्रचार करते-२ मर जाऊं। तीसरे दिन में बिना दवा ठीक हो गई। डा० ने एक बार बोला कि कोरटिसून सटीराइड (Cortisone Steroid) शरीर को चलाने के लिए रोज लेनी पड़ेगी। लेकिन सतगुरु रामपाल जी महाराज के कहने पर मैंने सारी दवाई छोड़ दी। मैंने एक भी दवाई नहीं ली और अब मैं सतगुरु रामपाल जी महाराज की दया से बिलकुल स्वस्थ हूँ। इतने लम्बे समय से चल रही बीमारी गुरुदेव की शरण में आने से बिल्कुल ठीक हो गई। मेरा कहना है कि ऐसा सत्यज्ञान व सत्य भक्ति मार्ग पृथ्वी पर और कहीं नहीं है। सतगुरु रामपाल जी महाराज साक्षात् पूर्ण परमात्मा हैं। सत साहेब।

सतगुरु के चरणों में दण्डवत् प्रणाम्।
भक्तमति तारा कट्टा
फोन नं. - 09772312335

''गुरुकृपा की महिमा''

मैं त्रिलोक दास बैरागी ग्राम ढीमरखेड़ा जिला - कटनी, मध्यप्रदेश का निवासी हूँ। मैंने दिनांक 27-06-10 को नाम दान लिया था जब मैंने नाम दान लिया था तब मुझे मालूम नहीं था कि नाम दान नहीं बल्कि अमृत ले रहा हूँ। मेरी बात आपको अतिसयोक्ति लगेगी। लेकिन कसम मुझे गुरुदेव के चरणों की। इसमें मैंने जो भी अनुभव किये हैं या जो भी प्रमाण मेरे सामने हुए, मैंने कल्पना भी नहीं की थी कि मेरे साथ ऐसा चमत्कार होगा नाम दान लेने से छः माह बाद मेरा पुत्र बिमार होता है जिसका जन्म पांच पुत्रियों के बाद हुआ था। मैं अपने पुत्र का इलाज लगातार एक माह तक एम.बी.बी.एस. डाक्टरों से करवाता रहा मगर एक माह तक बालक ठीक नहीं हुआ। अचानक मेरे बालक ने एक दिन सुबह 09:00 बजे आंख बंद कर ली, मतलब बेहोश हो गया। मैं उसे लेकर उमरियापान भागा वहां के सभी डाक्टरों ने इलाज करने से मना कर दिया। मैं उसे लेकर सिहोरा गया सभी जगह एम.बी.बी.एस. डाक्टर हैं मगर पुत्र की हालत देखकर सभी ने इलाज करने से मना कर दिया मानों वो बताना चाहते थे कि तुम्हारे पुत्र की मृत्यु हो चुकी है पुत्र की उम्र सिर्फ एक वर्ष थी हिम्मत बांधकर एक डाक्टर ने कहा कि अगर उसे आक्सीजन मिल जाये तो शायद कुछ हो सकता है मैंने तत्काल एक फोर व्हीलर रिजर्व की और जबलपुर के लिये भागा जो कि बच्चों का रिसर्च सेन्टर है। वहां के डाक्टर ने बच्चे की हालत देखकर कहा कि इसमें कहीं कोई हलचल नहीं हो रही है कहीं भी सूई लगाता हूं इसको कुछ मालूम ही नहीं हो रहा है भर्ती करना मेरे लिये रिस्क की बात है। मैंने कहा भर्ती करो और भर्ती करके इलाज शुरू करो बाकी सब

परमात्मा पर छोड़ दो डाक्टर ने कहा अगर इसे छः घण्टे में होश आ गया तो शायद बच जाये नहीं तो मुश्किल है सुबह नौ बजे से रात्रि के नौ बज चुके थे परन्तु बालक होश में नहीं आ रहा था। लड़के की मां ने और मैंने रोना शुरू कर दिया मेरा ध्यान अचानक ''ज्ञान गंगा'' और ''भक्ति सौदागर को संदेश'' में लिखे हुये चमत्कारों की तरफ गया जो भक्तों के साथ हुये हैं। मैंने अपने आप को संभाला और अपने आपको गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया कहा गुरु जी मेरे पुत्र की रक्षा करो और मुझे जो विश्वास था गुरु की महिमा पर उसकी लाज रखो। लगभग 12 बजे जब डाक्टर राउन्ड पर आया तो कहता है कि बच्चे की हालत मैं क्या सुधार है मैंने कहा जैसा सुबह था वैसा अभी भी है डाक्टर ने इंजेक्शन मंगाया और बालक की जांघ पर लगाया इंजेक्शन लगते ही बालक रोने लगा जैसे वो खुद इंजेक्शन गुरुजी ने लगाया हो पूरे हाल में खुशी की लहर दौड़ गई डाक्टर ने मेरे सिर पर हाथ रखकर कहा अब तुम्हारा बालक होश में आ गया है ऐसे मर्ज वाले बालक बहुत कम होश में आते हैं।

विचारणीय बात यह है कि इन्जैक्शन का असर तो दस या बीस मिनट के बाद होता है। लड़का इन्जैक्शन की सूई के दर्द से ही रो उठा। इस से स्पष्ट है कि यह सर्व कमाल परमेश्वर कबीर जी का है।

''सतगुरु शरण में आने से आई टलै बला, जै भाग्य में मृत्यु हो कांटे में टल जा''

गुरुजी कहते हैं कि कसक के साथ मन्त्र जाप करने से जो चमत्कार हुआ। मैं दंग रह गया मैं हास्पिटल में गुरुजी के चरणों की वंदना की और धन्यवाद देते हुए रो पड़ा। डाक्टर ने कहा कि इसे लगातार आठ दिन के इलाज की आवश्यकता है चौबीस घण्टे का पांच हजार लग रहा था। मैंने डाक्टर से कहा मुझे सुबह छुट्टी चाहिए डाक्टर ने कहा इसे अगर आप घर ले गये तो ये बालक मर सकता है क्योंकि अभी होश में आया है। मैंने कहा जो होगा देखा जायेगा, बस मुझे छुट्टी चाहिए आज बालक को छः माह से ऊपर हो गये उसे बुखार भी नहीं आ रहा है। ऐसी महिमा देखकर मैं धन्य हो गया। मेरी साईकिल लेने की हिम्मत नहीं होती थी। क्योंकि मेरी पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं थी। अचानक स्टेट बैंक के मैनेजर ने कहा क्या आप बैंक से लोन लेना पसंद करेगें मैंने कहा अगर मिल जाये तो इससे बढ़ के क्या है, मेरी पारिवारिक स्थिति सुधर जायेगी। बैंक मैनेजर ने मुझे डेढ़ लाख रूपये का लोन दे दिया। साईकिल ना खरीद पाने वाला आदमी अचानक 55000 रूपये की हीरो होण्डा गाड़ी ले आया। आज मैं शान से गाड़ी में घूमता हूं मैं शासकीय स्कूल में चपरासी के पद पर कार्यरत था। नौकरी करते मुझे 16 वर्ष गुजर चुके थे। लेकिन मेरी पारिवारिक स्थिति ठीक नहीं हुई। जबलपुर संभाग से प्रमोशन हुये और मेरा सिंगल प्रमोशन हुआ मैं चपरासी से बाबू हो गया, जमाने को कुर्सी रखने वाला आदमी खुद साहब बनकर कुर्सी पर बैठ गया। मेरा वेतन इतना हो गया जितना मैंने सोचा नहीं था। मेरा छोटा भाई बी.एड. का आसरा छोड़कर मायूस हो गया था। एक दिन अचानक उसके पास कांउसलिंग लेटर आया उसे विश्वास

ही नहीं हुआ क्योंकि उसे 29 अंक मिले हुए थे और बी. एड. करने के लिए 33 अंक से ऊपर चाहिऐ लेकिन इस बार 28 अंक वालों को ले लिया गया। जिस कारण से 29 अंक होने की वजह से उसे मौका मिल गया और आज वो बी. एड. कर रहा है। ये चार चमत्कार ऐसे हुये जिनके बारे में मैंने कभी सोचा नहीं था। मगर रामायण में लिखी मुझे वो याद आ गई कि 'मात-पिता गुरु की वाणी, बिना विचार करो शुभ जानी' ये सभी चमत्कार एक वर्ष के भीतर हुये है। प्रमाण के लिये :-

1 - भारत हॉस्पिटल सेन्टर के सभी डाक्यूमैंट

2 - गाड़ी के सभी कागजात

3 - प्रमोशन का आदेश

4 - बी. एड. का काउंसलिंग लेटर

ये सभी चमत्कार नाम दान लेने के छः माह बाद हुये है। लेकिन सिर्फ नाम दान लेने से फायदा नहीं होता बल्कि गुरु के बताये मार्ग पर चलना पड़ता है।

''हरि रूठै गुरु ठौर है, गुरु रूठै नहीं ठौर''

गुरु देव जी के चरणों में शिष्य के अनुभव सादर समर्पित हैं।

भक्त त्रिलोक दास बैरागी
सहा. ग्रेड - 3
शास. उच्च. माध्यमिक विद्यालय, मुरवारी
तह.-ढीमरखेड़ा, जिला-कटनी (म.प्र.)

''11000 वोलटेज के तार से छुड़वाना''

मैं भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम निवासी गांव धनाना, जिला सोनीपत जो कि फिलहाल शास्त्री नगर रोहतक (हरियाणा) का निवासी हूँ। सतगुरु जी से नाम उपदेश लेने से पहले मेरे घर की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी, परिवार का कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जो कि कभी बीमार न रहता हो, मेरी पत्नी को भूत-प्रेत बहुत ही ज्यादा परेशान करते थे। इतना कष्ट रहने के बावजूद हम देवी देवताओं की बहुत पूजा करते थे तथा मेरी हनुमान जी में बहुत ज्यादा आस्था थी। लेकिन घर में संकट पर संकट आते जा रहे थे। किसी भी काम में बरकत नहीं हो रही थी। पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी मेरे परिवार के होने के कारण हम उनको पूर्ण परमात्मा नहीं मान पाये जिसका खामियाजा हमें कई वर्षों तक झेलना पड़ा। तभी गांव सिंहपुरा निवासी भक्त विकास ने मुझे बताया कि आपके घर में पूर्ण परमात्मा जगत् गुरु रामपाल जी महाराज आये हुए हैं और आप कहां सोये पड़े हो, तो मैंने कहा कि काल ने हमें कष्ट ही इतना दे रखा है कि हमें वहां के बारे में जानने का टाईम ही नहीं मिला। सारा समय डाक्टरों के चक्कर काटने में चला जाता है। ऊपर से आर्थिक तंगी भी बहुत रहती है। उस भक्त ने मुझे काफी समझाया, पूर्ण परमात्मा की ऐसी दया हुई कि मैं संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने के लिए अक्तूबर 2010 में सतलोक आश्रम बरवाला में

पहुँचा। नाम उपदेश लेने के बाद सतगुरु जी ने अपना दया का पिटारा खोल दिया और मुझे वो सुख अनुभव होने लगे जिनका वर्णन इस जुबान से कर पाना बहुत मुश्किल है।

मेरी पत्नी को भूत-प्रेत सता रहे थे। सतगुरु देव जी की दया से अब वह पूर्ण रूप से ठीक है। 7 सितम्बर 2011 को मेरा लड़का मोहित उम्र 12 साल जो कि मेरे कहने पर मिस्त्री को बुलाने के लिए गया था। मेरा लड़का मिस्त्री के मकान की छत पर चढ़ गया तथा छज्जे पर चला गया। छज्जे के साथ ऊपर 11000 (ग्यारह हजार) वोलटेज के बिजली के तार थे। लड़के तथा तारों के बीच में केवल एक फीट की दूरी थी। जब वह उनके नजदीक गया तो तारों ने लड़के को खेंच लिया और लड़के के सिर पर तार चिपक गया तथा एक इन्च गहरा घुस गया व मुंह जल गया और बिजली सारे शरीर में प्रवेश करके पैर के अंगूठे की हड्डी को तोड़ कर निकलने लगी। उसी समय सतगुरु रामपाल जी महाराज आकाश मार्ग से आए तथा मेरे लड़के को बहुत ही चमकदार (तेजोमय) शरीर सहित दिखाई दिये जैसे हजारों ट्यूबों का प्रकाश हो रहा हो। उन्होंने लड़के का हाथ पकड़ कर बिजली से छुड़ाकर छज्जे पर लिटा दिया। फिर लड़के की सतगुरु जी से बहुत बातें हुई तथा जब सतगुरु जी जाने लगे तो लड़के ने पूछा कि गुरु जी कहां जा रहे हो तो गुरु जी ने कहा कि बेटा मैं तेरे साथ हूँ तू घबरा मत। उस समय मेरे लड़के मोहित की माता जी भी वहीं पर थी। उसने यह दृश्य अपनी आँखों देखा तथा वह बहुत घबरा गई। क्योंकि लड़के के शरीर से बिजली के लपटें निकल रही थी।

उसके बाद हम लड़के को पी. जी. आई. रोहतक हॉस्पिटल में लेकर गये। वहां पर भी लड़के को गुरु जी दिखाई दिये व मेरे लड़के ने कहा कि गुरु जी मेरे साथ हैं। आप घबराओ मत। यदि आज हम गुरु जी की शरण में नहीं होते तो हमारा लड़का आज जिंदा नहीं होता तथा मेरी पत्नी को भी प्रेत मार डालते, हम उजड़ने से बच गये। यह सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की ही दया है।

सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि मेरी सत्यकथा को पढ़कर आप जी भी सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की शरण में आकर अपना समय रहते कल्याण कराऐं तथा प्रारब्ध में लिखे कर्मों के कारण जो घटनाऐं घटनी होती हैं उन से पूर्ण रूप से बचोगे। सतगुरु रामपाल जी महाराज के सतसंग वचनों में मैंने सुना था कि पूर्ण परमात्मा कबीर जी बन्दी छोड़ हमारे सर्व पापों को नाश कर देते हैं। ऐसा ही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 161 मंत्र 2 में तथा मण्डल 9 सुक्त 80 मंत्र 2 में भी लिखा है कि यदि किसी रोगी की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी है तथा उसकी आयु भी शेष न रही हो तो उसके प्राणों की रक्षा करूं तथा उसे सौ वर्ष आयु प्रदान करके अर्थात् उसकी आयु बढ़ा कर साधक को सर्व सुख प्रदान करता हूँ।

सज्जनों सतगुरु रामपाल जी महाराज ने अपने अमृत वचनों में यह भी बताया है कि प्रत्येक प्राणी अपने किए कर्मों के अनुसार ही सुख व दुःख प्राप्त करता है। दुःख तो पाप कर्मों का फल है तथा सुख पुण्य कर्मों का फल है। अभी तक सर्व सन्त, आचार्य, गुरु यही कहते रहे हैं कि जो प्रारब्ध कर्म का भोग है वह तो प्राणी को भोग कर ही समाप्त करना होगा। हे सभ्य पाठकों ! सतगुरु रामपाल जी महाराज

कहते हैं कि पाप कर्म से दुःख होता है। यदि पाप कर्मों का नाश हो जाए तो दुःख का स्वतः अन्त हो जाता है। यदि भक्ति करते-२ भी पाप कर्म का फल (दुःख) भोगना ही पड़े तो भक्ति की आवश्यकता ही समाप्त हो जाती है। 7 सितम्बर 2011 को हमारे प्रारब्ध कर्म के पाप के कारण मेरे पुत्र मोहित की मृत्यु होनी थी। हमारे सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा से परम पुज्य कबीर परमेश्वर जी ने हमारे पाप का नाश कर दिया तथा मेरे बच्चे की जीवन रक्षा करके आयु बढ़ा दी। यदि 7 सितम्बर 2011 को प्रारब्ध कर्म के फलस्वरूप मेरा बेटा मर जाता तो हम सर्व परिवार के सदस्य भक्ति त्याग देते तथा नास्तिक हो जाते। क्योंकि हमें उस समय परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं था। अब भगवान पर अत्यधिक विश्वास हो गया है। यह भी विश्वास हो गया कि परम पूज्य कबीर जी ही परमेश्वर हैं। ये पाप नाशक सर्व सुखदायक व पूर्ण मोक्षदायक हैं तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज उन्हीं के भेजे उनके अवतार आए हैं। अतः आप जी से पुनः प्रार्थना है कि अविलम्ब सतलोक आश्रम बरवाला में पहुँचे तथा उपदेश लेकर कल्याण कराऐं। आप जी से प्रार्थना करने का मेरा उद्देश्य यह है कि मेरे जैसे दुःखीया बहुत हैं। मेरी उपरोक्त आत्मकथा को पढ़कर विचार करके वे भी मेरे की तरह संकटों का निवारण करा सकेंगे तथा सुखी हो सकेंगे।

यह संसार समझदा नाहीं, कहंदा शाम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे (समय) नूं।।

प्रार्थी

भक्त सुरेश दास पुत्र श्री चाँद राम,
शास्त्री नगर, हिसार बाई पास, रोहतक
मोब. नं. 09829588628

''भक्त दीपक दास के परिवार की आत्म कथा''

।। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की दया ।।

मुझ दास का नाम दीपक दास पुत्र श्री बलजीत सिंह, गांव महलाना जिला सोनीपत है। हम तीन पीढ़ियों से राधास्वामी पंथ डेरा बाबा जैमल सिंह से नाम उपदेशी थे। सबसे पहले मेरी दादी जी की माता जी यानि मेरे पिता जी की नानी जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा था। उसके बाद मेरे दादा-दादी जी और फिर मेरे माता-पिता जी ने भी राधास्वामी पंथ के संत गुरविन्द्र सिंह जी से नाम लिया हुआ था। हम भी गुरविन्द्र जी महाराज को पूर्ण पुरूष मानते थे तथा इस पंथ में पूर्ण श्रद्धा यह सोच कर रखते थे कि यह संसार में प्रभु प्राप्ति का श्रेष्ट पंथ है और उनके विशाल डेरे और विशाल संगत समूह को देखकर विशेष आकर्षित थे और सेवा करने के लिए डेरा बाबा जैमल सिंह व्यास (पंजाब) में तथा छत्तरपुर पूसा रोड़ दिल्ली भी जाते रहते थे। लेकिन इस पंथ में उम्र विशेष में नाम दिया जाता है इसलिए अभी मैं इस पात्रता के लिए अयोग्य था।

मेरे माता-पिता जिस दिन छत्तरपुर से नाम लेने के लिए गये हुए थे उसी दिन मेरे छोटे भाई (उम्र 5) के हाथ से पड़ोस के एक बच्चे की आँख में कोई वस्तु अनजाने में लग गई। जब शाम को नाम उपदेश लेकर मेरे माता-पिता वापिस आए। उसी दिन से हमारा व हमारे पड़ोसियों का वैर हो गया कि आपके बेटे ने हमारे बेटे की आँख में जानबूझ कर चोट मारी है और उसी दिन से हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ा।

उसी दौरान मेरे दादा जी का बीमारी के कारण देहांत हो गया जब मेरे दादा जी का पार्थिक शरीर दूसरे कमरे में रखा हुआ था तो उस समय मेरी दादी जी, जिनका देहांत हुए 12 वर्ष हो चुके थे, मेरी बुआ प्रेमवती में प्रेत की तरह प्रवेश करके बोली। (मेरी दादी ने भी राधास्वामी पंथ से प्राप्त पाँच नामों की बहुत ज्यादा साधना कर रखी थी। वे नियमित रूप से तीन बजे ही व दिन में भी भजन व सुमरन करने के लिए बैठ जाती थी और घण्टों राधास्वामी पंथ के बताये नामों का जाप व अभ्यास किया करती थी।) कि आज तुम्हारे दादा जी का जीवन संस्कार समाप्त हो गया इसलिए मैं तुम्हें संभालने आई हूँ। मेरी दादी जी को जीवित अवस्था में सांस की बीमारी के कारण खांसी रहती थी वे बारह साल के बाद भी ज्यों की त्यों ही खांस रही थी। तब हमने पूछा कि ''दादी जी आप तो बहुत दुःखी दिखाई दे रही हो, क्या आप सतलोक नहीं गई''। तब मेरी दादी ने कहा कि ''बेटा मैंने गलत साधना के कारण अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ कर दिया और अब मृत्यु के पश्चात् भूत योनि में कष्ट उठा रही हूँ। मैं कहीं सतलोक में नहीं गई'' मेरी माता जी ने घोर आश्चर्य के साथ पूछा कि ''माँ ! क्या आपको आपके गुरू

चरण सिंह जी महाराज ने नहीं संभाला? तब मेरी दादी जी ने अत्यंत दुःख के साथ कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं कि और मैं आज भी ऐसे ही दुःखी हो रही हूँ''।

उस घटना के दो साल बाद एक दिन मेरी दूसरी बुआ कमला देवी के अंदर मेरे दादा जी प्रेतवत् प्रवेश करके बोले और कहा कि ''मैं तो बहुत दुःखी हूँ तथा मेरी कोई गति नहीं हुई, मैं नहाना चाहता हूँ''। यह सुनकर मेरी माता जी ने दुःख व आश्चर्य से कहा कि ''आप तो सतलोक में गए थे, क्या वहाँ पर नहाने के लिए पानी भी नहीं है''? लेकिन दादा जी ने कोई जवाब नहीं दिया। फिर मेरी माता जी मेरे दादा जी (यानि जो कि मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) को नहलाने लगी तो वह कहने लगे कि ''बेटी मैं अपने आप नहा लूंगा'' तो मेरी माता जी ने दादा जी को हालांकि वह मेरी बुआ जी में प्रवेश थे, इसलिए बुआ वाले कपड़े ही पहना दिये, तो मेरा दादा जी बोले ''बस बेटी मेरी धोती ले आओ, मैं बांध लूंगा''। मेरी माता जी ने ऐसे ही एक चद्दर पकड़ा दी, जो उन्होंने कपड़ों के ऊपर से ही लपेट ली। फिर कहा कि ''मेरे लिए चाय बनाओ और जल्दी-२ में ही चाय पी ली''। मैंने पूछा कि दादा जी! आप सतलोक नहीं गए तो उन्होंने कहा कि ''बेटा मैं तो बहुत कष्ट में हूँ''। मेरी माता जी ने फिर पूछा कि आप तो राधास्वामी हजूर चरण सिंह जी महाराज से नाम उपदेशी थे, भक्ति भी करते थे, क्या उन्होंने आपकी कोई संभाल नहीं की? तब मेरे दादा जी (जो मेरी बुआ कमला देवी में प्रेतवत् प्रवेश थे) ने कहा कि ''उन्होंने मेरी कोई संभाल नहीं की, मैं तो ऐसे ही धक्के खाता फिर रहा हूँ।''

उसी दौरान मेरी आँखें भी इतनी कमजोर हो गई थी कि मुझे कम दिखाई देने लग गया था और चश्मा बार-बार बदलवाना पड़ा था। मैं एक दोस्त के साथ पढ़ने के लिए उसके पास जाता था। वहाँ पर भक्त संतराम जी ने मुझे पूर्ण ब्रह्म के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज की महिमा सुनाई तथा कहा कि आप सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो आपकी आँखें ठीक हो जाएगी तथा कहा कि इन्हीं कष्टों और दुःखों से हम जीवों को निकालने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब संत का रूप धारण करके आते हैं। मैंने कहा कि ''मेरे माता पिता जी ने राधास्वामी पंथ से नाम उपदेश ले रखा है।'' भक्त संतराम जी ने कहा कि ''वह पंथ पूर्ण नहीं है, उनकी भक्ति साधना से न तो सतलोक प्राप्ति होगी और न ही जीवन में कभी कर्म की मार टल सकेगी, उसे तो सिर्फ कबीर साहेब का नुमाईदा पूर्ण संत ही टाल सकता है।''

मेरे पिता जी को साँस की बिमारी थी, दस कदम चलने पर ही वे बेहाल हो जाते थे और सांस की बीमारी के कारण दम फूलने लगता था, हाई और लो ब्लड प्रैशर की भी बीमारी थी। मेरे पिता जी को इलैक्शन डयूटी के दौरान हार्ट अटैक

हुआ पर कर्म संस्कार वश वे बच गये, लेकिन तब हम यह सोचते रहे कि राधास्वामी पंथी संत गुरविन्द्र सिंह जी महाराज ने हार्ट अटैक से बचा लिया, बड़ी रजा की।

लेकिन उसके बाद तो हमने सर्दियों की एक-एक रात में अपने पिता जी का एक-एक साँस टूटते देखा है, बिल्कुल मृत प्राय हो जाते थे और सिवाय बैठ कर रोने के हम कुछ नहीं कर पाते थे, क्योंकि दवाईयों का भी आखिर आ चुका था, डाक्टर जितनी ज्यादा से ज्यादा डोज दवाई की बढ़ा सकते थे, बढ़ा चुके थे। इससे ज्यादा वे खुराक को नहीं बढ़ा सकते थे। मेरी माता जी डेरे बाबा जैमल सिंह से लाया हुआ प्रशाद उन्हें खिलाती और राधास्वामी पंथी गुरूविन्द्र सिंह जी महाराज की मूर्ति के सामने बैठ कर प्रार्थना करती और रोती। उसी समय मेरे छोटे भाई को ओपरे (प्रेत प्रकोप) की शिकायत रहने लगी। वह रात को चमक कर उठ जाता था तथा कहता था कि ''कोई मेरा पैर पकड़ कर खींच रहा है और मुझे सोने नहीं दे रहा है'' वह भी बहुत बीमार रहने लगा। पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर जी की दया से मुझ दास को 8 अक्तूबर 1998 को सतगुरू रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की असीम कृपा से बीस दिन के अंदर ही मेरा चश्मा उतर गया तथा मैंने दवाई खाना भी छोड़ दिया। मुझे सतगुरू रामपाल जी महाराज पर पूरा विश्वास हो गया था। भक्त संतराम जी ने घर पर आकर मेरे माता पिता जी को भी समझाया कि आप पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब के नुमाईदे पूर्ण संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लो, आपके सर्व कष्टों का निवारण हो जाएगा।

उसके बाद मैंने भी अपने माता पिता को समझाया तो वे बोले ''हम पहले तो राधास्वामी थे, अब सन्त रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेगें, दुनिया क्या कहेगी''? तब मैंने कहा कि ''पिता जी, यदि एक डाक्टर से इलाज नहीं हो रहा तो क्या दूसरा डाक्टर नहीं बदलते?'' परन्तु दुःखी बहुत थे, कुछ समय बाद कबीर परमेश्वर जी की शरण में आ गये और राधास्वामी पंथ के उन पांच नामों का त्याग करके, पूर्ण संत सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश ले लिया।

सतगुरू कबीर साहेब जी कहते हैं ''शरण पड़े को गुरू संभाले जान के बालक भोला रे'' ***सारे परिवार के नाम लेने के साथ ही हमारे अच्छे दिन शुरू हो गये। मेरे भाई का ओपरा (प्रेतबाधा) ठीक हो गया, पिता जी का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक हो गया, पहले वे दस कदम भी नहीं चल सकते थे, अब एक आदमी के साथ लग कर चीनी की बोरी को उठा देते हैं। आज हमारा परिवार पूर्ण परमात्मा के अवतार सतगुरू रामपाल जी महाराज जी की शरण में उनकी दया से पूर्ण सुखी है।***

परन्तु हमारे दादा-दादी व पिता जी की नानी जी के मनुष्य जीवन का जो नुकसान हुआ उसकी भरपाई किसी भी प्रकार से नहीं हो सकती। यदि किसी

आदमी की जान बचाने के लिए लाखों और करोड़ों रूपये खर्च कर दिए जाए और उसकी जान बच जाए तो उसे उस खर्च हुए पैसे का कोई मलाल नहीं होता, और सोचता है कि चलो जान तो बची। लेकिन आज चाहे कितनी भी कीमत चुकाने पर भी मेरे दादा-दादी का जीवन जो कि शास्त्रविरूद्ध साधना (राधास्वामी पंथ द्वारा बताए पांच नामों की साधना) करने से बिल्कुल व्यर्थ चला गया (वे भूत और पितर की योनियों में कष्ट भोग रहे हैं), वापिस नहीं आ सकता। जो घिनौना मजाक ये नकली सन्त और पंथ सर्व समाज के साथ कर रहे हैं, क्योंकि चौरासी लाख योनियाँ भोगने के पश्चात् मिलने वाले अनमोल मनुष्य जीवन को, जो पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है उसे बरबाद कर रहे हैं। इस महाक्षति की आपूर्ति किसी भी कीमत से नहीं की जा सकती।

हे बंदी छोड़ सतपुरूष रूप सतगुरू रामपाल जी महाराज आपने बड़ी दया कि हम तुच्छ जीवों पर जो अपना सत्य ज्ञान देकर अपनी शरण में बुला लिया अन्यथा हम भी पीढ़ी दर पीढ़ी से प्राप्त इस शास्त्रविरूद्ध साधना में अपने मनुष्य जन्म को समाप्त करके कहीं भूत और पितरों की योनियों में चले जाते और इस शास्त्रविधियुक्त सत्भक्ति से वंचित रह जाते।

सर्व बुद्धिजीवी समाज से प्रार्थना है कि अभी भी समय है। इस सत्य ज्ञान को समझे तथा निष्पक्ष होकर निर्णय करें। बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर सत्भक्ति प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन का कल्याण करवाएं।

।।सत साहेब।।

सतगुरु चरणों का दास
भक्त दीपक दास
मोब. +919992600853

सत कबीर साहेब जी की दया

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की जय

यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 में प्रमाण है कि पूर्ण परमात्मा पापी से भी पापी व्यक्तियों के भी सम्पूर्ण पापों का नाश करके भयंकर रोगों से भी मुक्त कर देते हैं। जिसका मैं जीता जागता उदाहरण हूँ।

मैं केशव मैनाली पुत्र श्री इन्द्र प्रसाद मैनाली गाँव विकास समिति हरिऔन, जिला सर्लाही, नेपाल का निवासी हूँ और वर्तमान में काठमाण्डू उपत्यका टिमी भक्तपुर में घर बनाकर रहता हूं। मैं चुरे भावर (नेपाल) नाम के राजनैतिक पार्टी का अध्यक्ष एवं पूर्व सभासद हूँ। मेरा मोबाईल नं. +00977-9841892583 है। मेरे ऊपर सतगुरू रामपाल जी महाराज ने चमत्कारी कृपा कर मुझे और मेरे परिवार के सम्पूर्ण दुःखों को नाश कर सुखी बना दिया।

संसार की नजर में मैं सुखी और सम्मानित जीवन जी रहा था परन्तु मैं अपनी बीमारियों के कारण बहुत ही दुःखी था। मैं पिछले 20 बर्षो से खूनी बवासीर से पीड़ित था और शौच करते समय अत्यधिक पीड़ा सहन करनी पड़ती थी साथ ही 8 वर्षो से क्रोनिक ब्रोंकाइटिस से पीड़ित था। राजनैतिक कर्मी होने के कारण बहुत लोगों से मिलना पड़ता था और हमेशा मुख पर कपड़ा या हाथ रखकर बोलना पड़ता था। मैंने अपने रोगों के इलाज के लिए अच्छे से अच्छे डाक्टरों को दिखाया। परन्तु कोई फायदा नहीं हुआ। जबकी मैंने धर्म के नाम पर अज्ञानी संतो के चक्कर में पड़कर अपने जीवन के 62 वर्ष बर्बाद चुका था।

मुझे यह बातें सतगुरू रामपाल जी महाराज जी से नाम उपदेश लेने के बाद पता चला। नेपाल संसद का सभासद होने के कारण सरकारी खर्चों पर मैं संसार के किसी भी डाक्टर से अपने रोग का ईलाज करवा सकता था। परन्तु नेपाल के मेडिकल बोर्ड ने इसके लिए सिफारिश नहीं की क्योंकि उनके अनुसार मेरा रोग लाईलाज था और कोई भी डाक्टर मुझे ठीक नहीं कर सकता। अब तो मुझे लगता था कि जीवनपर्यन्त दुःख भोगना पड़ेगा और हमेशा दवा खाते रहना पड़ेगा।

एक दिन मैं शोकमग्न बैठा था मुझे मेरे मित्र भक्त भोला दास जो कई वर्षो से सतगुरू रामपाल जी महाराज का शिष्य था मेरे दुःखों को सुनकर सतगुरू जी से उपदेश लेने पर आपके दुःखों का अवश्य नाश होगा। यह कहकर विश्वास दिलाने लगा। मैं तथाकथित बड़े-बड़े संतों की संगत करके थक चुका था। उस मित्र की वाणी मेरे लिए अंधेरे में दीपक के प्रकाश के समान मेरे मन को छू गयी। मैं तीसरे दिन ही सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड बरवाला, जिला हिसार, हरियाणा (भारत) के लिए चल दिया तथा अपनी पत्नी को भी लिया क्योंकि घुटने की हड्डी घिस जाने के कारण वह भी बहुत परेशान थी और उसकी आँखों में जल बिन्दु नामक एक लाईलाज रोग था तथा अपने छोटे पुत्र की पत्नी को भी साथ में ले लिया। मुझे रास्ते में नेपाल के कई भक्तजन मिल गए जो सतलोक आश्रम में जा रहे थे इस प्रकार मैं बिना कोई परेशानी सतलोक आश्रम आ गया।

मैं संतो व महंतो के स्वार्थ से परिचित था तथा सतगुरू रामपाल जी महाराज का कोई पुस्तक व प्रवचन नहीं सुना था, किसी के कहने मात्र से आ गया था। अतः आते ही नाम उपदेश लेने के लिए तैयार नहीं था। मेरा सौभाग्य ही था कि मेरा आना ही सतसंग समागम के समय हुआ और मुझे सतगुरू देव का सतसंग सुनने को मिला जिसमें मुझे पता चला कि इस संसार के सभी धर्मगुरू, सभी पंड़ित, सभी पुरोहित अपने निजी स्वार्थ के लिए धर्म के नाम पर लोगों को काल-जाल में फँसाकर हम भोली-भाली आत्माओं को नरक भेजने का प्रपंच रच रहे हैं वे न तो कभी परमेश्वर से मिले है और न ही उन्हें परमेश्वर की सत्यभक्ति का ज्ञान है और यह काम वे चन्द रूपयों तथा समाज में सम्मान पाने मात्र के लिए कर रहे हैं।

परन्तु मैं फिर भी नाम उपदेश लेने के लिए तैयार नहीं हुआ लेकिन मेरी पत्नी तुरन्त नामदान के लिए तैयार थी। क्योंकि नाम दान लिए बिना गुरू दर्शन तथा गुरू का आर्शीवाद मिलना संभव नहीं था। यह शायद मुझ पर राजनीति का ही रंग शेष था जो मैं किसी का विश्वास नहीं करता था। फिर भी आपस में सलाह मशवरा करके हम तीनों ने नाम उपदेश तारीख 2 मई 2012 को लिया और गुरू जी के दर्शन के लिए गया। वहाँ पर दया के सागर हम पर कृपा दृष्टि करने के लिए जैसे तैयार खड़े थे। जैसे ही मैंने अपने रोगों के बारे में कहा तो सतगुरू देव जी बोले "सब ठीक हो जाएगा" का आर्शीवाद मेरे सिर पर हाथ रखकर दिया और मेरे साथ चमत्कार हो गया। सुबह शौच जाने पर पाखाने से खून गिरा और उसके साथ ही बवासीर मानो समाप्त ही हो गया। दो दिन आश्रम में रहने पर क्रोनिक ब्रोंकाइटिस करीब 80 प्रतिशत ठीक हो गया था जो अब पूरा ठीक हो चुका है। मात्र महीने दो महीने में कभी-कभी कुछ खाँसी हो जाती है। पत्नी के घुटने का रोग भी ठीक हो गया। काठमाण्ड़ो आने पर काठमाण्डू के उसी अस्पताल में उनकी आँख का पुनः परीक्षण करवाया। डाक्टर भी यह देखकर आश्चर्यचकित हो गए कि उनकी आँखो में जल बिन्दु नामक रोग का कोई नामो निशान भी नहीं है और आँखे पूर्णतया ठीक हैं।

मेरा रोग मुक्ति का चमत्कार परिवार, रिश्तेदारी तथा पड़ोस में चारों तरफ फैल गया। मेरे परिवार के अन्य सदस्य भी किसी न किसी रोग से परेशान थे। जैसे मेरे बड़े भाई जो खुद एक डाक्टर है उनका सारा शरीर फूल (Swelling) जाता था। मेरी बेटी को महीनावारी (मेनसेज) के समय असाध्य रूप से पेट में दर्द होता था। मेरी दूसरी बेटी जो पेशे से वकील है साइटिका और गले की हड्‌डी घिसने के रोग से जीवन से निराश हो चुकी थी तथा मेरी बहन का पति भी जल बिन्दु रोग से पीड़ित था। सभी मेरे ऊपर सदगुरूदेव की कृपा से बहुत ही प्रभावित हुए। तब तक मैं आश्रम के नियमों और भक्ति भाव से थोड़ा बहुत परिचित हो गया था। मैंने सभी को "ज्ञान गंगा" पुस्तक अच्छी तरह पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अगली बार जब मैं आश्रम आने लगा तो सभी को साथ ले लिया। उन लोगों को नाम उपदेश लेने में कोई दुविधा नहीं थी। सभी ने नाम उपदेश लिया विश्वास के साथ भक्ति की। आज सभी रोग मुक्त होकर सुखी जीवन जी रहे हैं।

सतगुरू रामपाल जी महाराज पूर्ण परमात्मा के प्रतिरूप नहीं "पूर्ण परमात्मा" ही हैं जो अपने को छुपाकर रख रहें हैं और अपने को "पूर्ण परमात्मा का दास" कहते हैं और धरती पर फँसे हुए जीवों को बन्धन मुक्त करके सतलोक ले जाने के लिए आए हैं। हमारे सदग्रन्थों में प्रमाण है कि जब कलयुग का पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा तो तारणहार संत, जग तारण के लिए धरती पर आऐंगे।

"कबीर, पाँच हजार अरू पाँच सौ पाँच जब कलयुग बीत जाए

महापुरूष फरमान तब जग तारण को आए"।।

सर्व प्रेमी भक्तों! समय आ गया है, पूर्ण संत भी आ गए हैं और ज्ञान अमृत वर्षा कर रहें हैं। वर्तमान के सभी नकली संत महंत रूपी ठगों से बचो और जल्द से जल्द सदगुरू के चरण में आकर निःशुल्क नाम उपदेश लेकर अपना कल्याण कराओ और पूर्ण मोक्ष प्राप्त करों।

।। सत साहेब ।।

केशव प्रसाद मैनाली (दास),
काठमांण्डू (नेपाल)
फोन नं. +00977-9841892583

सतगुरुदेव जी की अमृतमय दया की वर्षा

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की जय

मैं भक्त श्याम दास (श्याम सापकोटा) हूँ। मैं मधवलिया-8 कोटिहवा, रूपन्देही नेपाल का निवासी हूँ तथा पेशे से मैं नेपाल सरकार के उपसचिव **(Under Secretary)** *पद में भू तथा जलाधार संरक्षण विभाग ववरमहल, काठमांण्डू नेपाल में कार्यरत हूँ। विक्रम सवंत् 2060/8/92 तक कार्यकाल है। मैं कई रोगों से परेशान था तथा साथ-साथ "ओम्" मंत्र का जाप तथा ध्यान भी करता था। ओम् शान्ति (ब्रह्म कुमारी राजयोग) का सात दिन का तालिम भी ले रखा था, परन्तु अस्पताल आना जाना चलता ही रहा। ध्यान में बैठते वक्त श्री गणेश जी, ब्रह्मा सावित्री, विष्णु लक्ष्मी, शिव पार्वती, विभिन्न मानवों, जानवरों और जंगल, नदी-नाला आदि के दृश्य कभी-कभी दिखाई देते थे। फिर भी मेरे रोगों की सख्या बढ़ती ही चली गई। जो रोग मुझे थे उनका विवरण निम्न है:-*

1. मेनियाँ- मैं साइकेटीक होकर दो बार हास्पिटलाइज हुआ था दोनों बार बहुत सारे टैबलेट दिए गए, जिन्हें दिन में तीन बार खाना पड़ता था।

2. हाथकाँपना- मेरे दोनों हाथ बड़ी जोर से काँपते थे। जिसके वजह से में दस्तखत भी सही ढ़ंग से नहीं कर पाता था।

3. आँखो की कमजोरी - मैं -2.5 (माईनस 2.5) का पावर लेन्स पहनता था।

4. पाईल्स (बवासीर) - दो तीन वर्षों से इस रोग से परेशान था। आयुर्वेदिक तथा होम्योपैथिक दवाइँया ली थी पर कुछ समय ठीक होता था और फिर **Bleeding** *शुरू हो जाती थी।*

5. यूरिक एसिड- दोनों घुटनों और ज्वाइन्टस में तीव्र पीड़ा होती थी, रोग निवारण हेतु मैंने एलोपैथिक तथा आयुर्वेदिक दवा भी ली।

6. गैस्ट्रीक- बहुत पहले से छाती तथा पेट में जलन होती थी ड्राइफूट तथा तेल का खाना, चाय या ठण्डा खाना खाने से तुरन्त जलन शुरू हो जाती थी। मैं

परेशान हो जाता था और एलोपैथिक औषधियाँ खाता रहता था।

7. बड़ा पेट- बड़ा पेट होने की वजह से पैदल चलने से बहुत जल्दी थक जाता था और चढ़ाई पर तो 5 मिनट चलना भी बहुत कठीन होता था। निम्नलिखित रोगों और घरेलू विविध समस्याओं से हैरान परेशान था।

एक बार में अपनी ससुराल (उदाहरण-4 बाज गंगा, कपिलवस्तु) से घर वापस आ रहा था तो (हाइवे नम्बर 4, 4 बाजगंगा, कपिलवस्तु) नेपाल में "ज्ञान गंगा" पुस्तक का प्रचार-प्रसार हो रहा था, मेरी पत्नी ने एक पुस्तक ले ली। मैंने पुस्तक को ध्यान लगा के दो तीन बार पढ़ा और संस्कृत श्लोकों को सम्बन्धित वेद एवं श्रीमद्भगवत गीता से मिला कर देखने के लिए इंटरनेट से ढूढकर परीक्षण करने की कोशिश भी की, मुझे ज्ञान बहुत अच्छा लगा। इसलिए मैंने सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड बरवाला जिला हिसार हरियाणा में पहुँचकर जगत गुरू तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जी से प्रथम मंत्र दीक्षा दिनांक अप्रैल 2012 को तथा सतनाम मंत्र दीक्षा 2 नबम्वर 2012 में प्राप्त की।

*अब मैं मेनियाँ रोग का एक टेबलेट दवाई (ऐलोपेथिक **Lithium 400 mg**) प्रत्येक शाम को खाता हूँ। परमेश्वर कि कृपा से अब मुझे साइक्रोटिक सिम्टम नहीं है तथा मेरा हाथ काँपना बन्द हो गया है और अब मैं अच्छे-खासे अक्षर लिख लेता हूँ। अब मेरी आँखों का चश्मा भी हट गया है। अब मुझे पत्रिका पढ़ने के लिए चश्मे की जरूरत भी नहीं पड़ती है, पाईल्स (बवासीर) भी 5-6 महीनों से ठीक है तथा अब मैं यूरिक एसिड की दवा खाना और परहेज करना छोड़ चुका हूँ। एक बार मेरी छाती और पेट में बहुत जलन हुई मैंने जनवरी 29-2013 की रात को जगत गुरू तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जी का स्मरण किया, तभी सतगुरू का एक श्रीचरण मेरी छाती व पेट के ऊपर चलता हुआ दिखाई दिया। उसके कुछ ही देर बाद मेरी छाती व पेट की जलन समाप्त हो गई। मैंने उसकी कोई भी दवाई नहीं खाई।*

मेरा सर्व भक्त आत्माओं से त्रम निवेदन है कि आप पवित्र पुस्तक "ज्ञान गंगा" और "धरती पर अवतार" को पूर्ण श्रद्धा के साथ पढ़ें तथा परमात्मा के तत्वज्ञान को समझकर सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड़, बरवाला जिला हिसार, हरियाणा (भारत) में आकर नाम दीक्षा लेकर अपना आत्मकल्याण करवाऐं तथा रोग, शोक, चिन्ता आदि सर्व दुःखों का नाश करा कर इसी जन्म में सुस्वास्थय और सुख समृद्धि प्राप्त करते हुए अपनी सत्यभक्ति पूर्ण करके अपने निजधाम सतलोक (जहां से हम आये थे) को पुनः प्राप्त करें।

।। सत साहेब ।।

भक्त श्याम दास

सत कबीर की दया

बन्दी छोड़ सतगुरू रामपाल जी महाराज की जय

मैं श्याम कुमार पुत्र लोटन यादव, वार्ड नं. 5 कचुड़ी धनुषा का निवासी हूँ। मैं पेशे से इलैक्ट्रीकल इन्जिनियर नेपाल में बतौर विद्युत प्राधिकरण विभाग, काठमाण्डू में उपप्रबन्धक के पद पर कार्यरत हूँ। मैं श्याम कुमार अपने पूर्व के दुःखी जीवन कि झलक आपको बताना चाहता हूँ। मैं आज भी अपने बीते हुए बुरे समय को याद करके सिहर जाता हूँ और वर्णन करता हूँ तो कलेजा मुहँ को आ जाता है।

मैं विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण पहले नास्तिक प्रवृति का था। मेरे इन्जिनियर बनने के बाद भी वही सिलसिला जारी रहा मैं मौजमस्ती करना ही जिन्दगी समझता था। लेकिन 34 वर्ष कि उम्र में ही मुझे शुगर (डायबिटीज) की बिमारी हो गई थी। जिससे मेरा दिमाग कम काम करने लगा और मैं चिन्तामय जीवन जीने लगा, लेकिन एक ऐसी घटना घटी जिससे मेरा झुकाव आध्यात्मिकता की ओर हो गया। मैं दाड़ जिले में सेवारत था, तब अजीब घटना घटी एक बस में माओवादी लड़ाकू और शसस्त्र नेपाली प्रहरीयों में गोली बारी हुई उसमें मेरे एक दोस्त के सिर में गोली लग कर पीछे की ओर से निकल गई और बहुत से लोगों की गोली लगने से मौत हो गई। लेकिन जो मेरे मित्र के सिर में गोली लगी थी। उसका इलाज लखनऊ में करवाने से वह बच गया। लखनऊ से लौटने के बाद हमें पता चला कि उस समय एक अन्य व्यक्ति जिसके हाथ व पैरों में गोली लगी थी उसकी मृत्यु हो गई थी, उसी दिन से मुझे विश्वास हो गया कि इस दूनिया को चलाने वाली कोई अदृश्य शक्ति है और मुझे भगवान होने का एहसास हुआ लेकिन उस शक्ति को कैसे पाया जाए ये मुझे मालूम नहीं था।

इसी दौरान मैंने ओम् शांती से भक्ति साधना शुरू की फिर योगी विकाशनन्द जी, स्वाती जी, रामदेव जी महाराज से ज्ञान लेकर 2 वर्ष तक योग साधना की एवं दिल्ली के कुमारस्वामी जी महाराज के पास नियमानुसार पैसे पहुंचाकर विशेष कृपा भी प्राप्त करने की कोशिश की लेकिन मेरी शुगर (डायबिटीज) में कोई फायदा नहीं हुआ। मुझे किसी भी तरह परमात्मा पाने का कोई भी उपाय हाथ नहीं लगा।

इसी दौरान मुझे "भक्ति के सौदागर को संदेश" पुस्तक प्राप्त हुई और मैंने उसे पढ़ना शुरू किया, जिसे पढ़कर मुझे पता चला कि श्री ब्रह्माजी का पिता, श्री विष्णु जी कि माता एवं श्री शंकर जी का दादा कौंन है, इस प्रश्न का उत्तर मिला तो मेरा सिर चकरा गया। मैंने "भक्ति के सौदागर को संदेश" पुस्तक को 9 दिन में कई-कई बार पढ़ी और मुझे पढ़ते-पढ़ते ऐसी उत्सुकता उत्पन्न हुई की मैं वेब

साइट पर चला गया तो मुझे ज्ञान की भूख लगी मैंने कई पुस्तकों को पढ़ा उसमें मुझे "गहरी नजर गीता", "आध्यात्मिक ज्ञान गंगा", "करौंथा काण्ड़ का रहस्य" से लेकर सम्पूर्ण हिन्दी पुस्तकें 2 वर्ष तक पढ़ता रहा। प्रमाण के तौर पर श्री देवी पुराण, महाभारत, रामायण, गरूड़ पुराण, श्रीमद्भगवत गीता को पढ़कर देखा ज्यों का त्यों ही प्रमाण मिला उसके बाद मुझे सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला जिला- हिसार हरियाणा (भारत) आने कि चाह बन गई, मुझे सभी धर्म गुरू जो शास्त्रविरूद्ध साधना करवा रहे थे ढोगी लगने लगे। इस कारण से मैंने सभी आन उपासना छोड़ दी।

मुझे कर्वीदेव (कबीर साहेब) की कृपा से नेपाल सरकार में दफ्तर के काम से भारत के पंजाब राज्य के भटिण्डा शहर में आना हुआ। मैंने जीन्द से हिसार आना चाहा। लेकिन उस समय किसान आन्दोलन के चलने से मैं जीन्द से भटिण्डा चला गया और फिर अमृतसर से लौटते समय आश्रम में फोन किया कि मैं आश्रम में कैसे आ सकता हूँ तो उन्होंने बताया कि आप अम्बाला से बस द्वारा बरवाला (सतलोक आश्रम) आ जायें, ये रास्ता खुला है। लेकिन तब तक हम आगे आ चुके थे, फिर कुरूक्षेत्र से आकर और अपने तीन साथियों को वहीं छोड़ कर किराये का साधन करके मुझे परमात्मा स्वरूप दूत शाम तक सतलोक आश्रम बरवाला लेकर आये, आश्रम में आकर मैंने देखा कि यहाँ पर नामदान (दीक्षा) भी मुफ्त दी गई एवं खाने-पीने व ठहरने कि व्यवस्था भी मुफ्त थी, फिर मैं संत रामपाल जी महाराज जी से नाम उपदेश व आर्शीवाद लेकर फिर अपने कार्य हेतु दिल्ली से होकर काठमांण्डू, नेपाल चला गया, उसके बाद मैंने परमात्मा (पूर्ण ब्रह्म) का चमत्कार देखा कि चैकअप करवाने पर मेरी शुगर (डायबिटीज) एकदम नॉरमल पाई, उसी दिन से मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है, कि पूर्ण ब्रह्म परमात्मा स्वंय कबीर साहेब जी ही संत रामपाल जी महाराज के स्वरूप में सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला जिला- हिसार हरियाणा (भारत) में विराजमान हैं।

उसी दिन से मैं पूर्ण श्रद्धा से सतगुरू रामपाल जी महाराज जी कि कृपा से भक्ति मन लगाकर करने लगा। उसके बाद मैंने अपनी पत्नी एवं पुत्र को भी सतलोक आश्रम बरवाला में लाकर नाम दीक्षा दिलाई। उसके बाद मेरे साथ एक अद्भुत चमत्कार हुआ कि मेरा ट्रांसफर काठमांण्डू शहर में हो गया और परमात्मा की सेवा जो कि नेपाल में "ज्ञान गंगा" पुस्तक के प्रचार के रूप में चल रही थी उसमें सहयोग करने लगा। धीरे-धीरे भक्त समाज पर सदगुरू जी की अमृत दया बरसने लगी और नेपाल में सतगुरु देव के ज्ञान का प्रसार जोर शोर से होने लगा तथा अनेक भक्त जन सतलोक आश्रम पहुंचकर नाम उपदेश प्राप्त करने लगे।

मैं सभी भाई-बहन एवं भक्त समाज से हाथ जोड़कर निवेदन करना चाहता हूँ कि नकली अधूरे गुरू एवं महामण्डलेश्वर, स्वामी इत्यादि के चक्कर में न पड़कर

ज्ञान को समझ कर विवेकपूर्ण निर्णय लेते हुए पूर्ण परमात्मा कि भक्ति के लिए सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला जिला- हिसार हरियाणा (भारत) में आयें व अपना बहुमुल्य समय खराब न करकें जल्दी से जल्दी नाम दीक्षा (उपदेश) प्राप्त करें और अपना आत्मकल्याण करवायें। मेरा सर्व भक्तसमाज से अनुरोध है कि आप "धरती पर अवतार" नामक पुस्तक एवं C.D/D.V.D देखें और साधना चैनल पर प्रतिदिन साँय 7:55 पर सतसंग सुने, और निष्पक्ष ढ़ंग से मनन करें, शास्त्रों में प्रमाण देखे कि जो सद्ग्रन्थों के आधार पर सत्य ज्ञान बताते हैं वे ही तत्वदर्शी संत हो सकते हैं और वो तत्वदर्शी संत सतगुरू रामपाल जी महाराज सतलोक आश्रम चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला जिला- हिसार, हरियाणा (भारत) में बैठे है, उनसे नामदान लेकर अपना एवं अपने परिवार का आत्मउद्धार करवायें।

"कबीर, समझा है तो सिर धर पांव, बहुर नहीं रें ऐसा दांव"

वर्तमान में 21 ब्रह्माण्ड में एकमात्र जगत्गुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज जी ही मोक्ष मंत्र प्रदान करने के अधिकारी हैं, जो शास्त्र विधि अनुसार साधना बताते हैं। ।।सत साहेब।।

भक्त श्याम दास
काठमांण्डू नेपाल
सम्पर्क सूत्र-+00977-9851009099

सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की कृपा

मैं भक्त हरिगोबिन्द दास गा. वि. स. मिर्चैया वार्ड नं. 3 थाना चौक, जिल्ला सिरहा, अंचल जनकपुर, नेपाल का निवासी हूँ। मेरे जीवन में बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज के आशीर्वाद से हुए चमत्कार को कुछ शब्दों में व्यक्त करने की कोशिश करने की घृष्टता करना चाहता हूँ।

मैं वि. सं. 2067 ज्येष्ठ 21 गते (तदनुसार 2010-6-07) को अपने आम बगीचे से आम तोड़ कर उतर रहा था कि करीब 7 फिट ऊंची एक डाली पर मैं खड़ा था। वह अचानक टूट गई और मैंने गिरते हुए भी दूसरी डाली पकड़ ली परन्तु मेरे शरीर के वजन से वह डाली भी टूट गई तथा मैं जमीन पर गिर गया। हालांकि खेत की जमीन बलुआ थी और मैं बहुत ऊंचे से भी नहीं गिरा था। फिर भी मेरी हड्डी टूट गई। मुझे उठाकर स्थानीय हड्डी के डाक्टर के पास लेकर जाया गया। एक्सरे के बाद पता चला कि मेरी रीढ़ की हड्डी पूरी तरह से टूट गई है। और तुरंत मुझे स्ट्रेचर पर लेटा दिया गया। डाक्टर ने कहा ऐसे केस में तुरंत पेरालाईसिस (लकवा) हो जाता है परंतु आश्चर्य है कि तुम्हारा पैर चलता है। मुझे रात में ही एम्बुलैंस से काठमांडू ले कर जाया गया। काठमांडू के बीर हस्पताल में मेरा छोटा साला डाक्टर है और अन्य विशेषज्ञ डाक्टर भी उपलब्ध हैं। रास्ते में आते

समय बार बार मेरा साला पूछ रहा था कि पैर चलता है कि नहीं परन्तु मेरे दोनों पैर काम कर रहे थे। अस्पताल पहुँचने पर फिर से एक्सरे किया गया। रीढ़ की हड्डी टूटने पर भी पैर काम कर रहा है यह देखकर डाक्टर भी आश्चर्य कर रहे थे। क्योंकि सामान्यतया रीढ़ की हड्ी टूटने पर पैर लकवाग्रस्त हो जाते हैं। परन्तु मैं ठीक था। डाक्टरों को शंका हुई की शायद हड्डी में ही कुछ खराबी तो नहीं इतनी कम ऊंचाई से गिरने पर रीढ़ की हड्डी नहीं टूटनी नहीं चाहिए। इसलिए मेरी हड्डी की विशेष जांच कराई गई। परंतु मेरी हड्डी में कोई खराबी नहीं थी। डाक्टरों ने तीन महीने तक लेटे रहने का आदेश दिया। मुझे लेटे लेटे ही खाना, नहाना और पाखाना व पेशाब करना पड़ता था। इस स्थिती में मैं अपने को घोर नरक में पड़ा महसूस कर रहा था। मुझे फिर एम्बूलैंस से घर लेकर जाया गया।

मेरा एक सुखी परिवार था। मैं स्थानीय राजनीती के साथ छोटा मोटा व्यापार करता था। मेरे दादा धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति थे और सात बीघा जमीन देकर पैतृक गांव मनहवी में राम जानकी मंदिर का निर्माण कराया था। मेरे पिता जी भी वैष्णव थे और पूजा पाठ में विश्वास रखते थे। मैं भी वैष्णव था परन्तु राजनीति में आने के बाद कुछ वर्षों से मांस मछली खाना शुरू कर दिया था पत्नी भी मांसाहारी मिली। मैं अपने को बहुत ही सुखी समझता था। मेरे आदरणीय ससुर जी (भक्त रामचरित्र +00977-9841684061, 9809432888) सन् 2008 अगस्त में ही सतगुरु रामपाल जी महाराज के शिष्य हो गये थे। उनकी प्रेरणा से ही मेरी पत्नी ने सतगुरु जी से नाम दान ले लिया था। परंतु मैं पसंद नहीं करता था। अब मेरे घर में कलह शुरू हो गया था। घर में स्थानिय पर्व, त्योहार, देवी-देवताओं की पूजा बंद हो गई थी और मेरे मांस मछली खाने में भी दिक्कत हो गई और मैं रामपाल जी महाराज का घोर विरोधी हो गया। मेरे ससुर जी मुझे सी. डी. देखने तथा पुस्तक ''भक्ति सौदागर को संदेश'' (जिसका वर्तमान का नाम ''ज्ञान गंगा'' है) पढ़ने की सलाह देते तो मुझे बहुत बुरा लगता था।

उपरोक्त घटना के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मेरी यह दुर्गति मेरे ससुर जी तथा पत्नी के कारण हुई है क्योंकि मेरे घर में गृह देवता तथा अन्य देवताओं की पूजा बंद हो जाने के कारण घटनायें हो रही हैं। मैं थोड़ा सा उग्र स्वभाव का होने के कारण अपने ससुर जी को दुरवचन बोलने लगा, पत्नी से बिना कारण झगड़ा करने लगा तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज जी को भी अपशब्द कहने शुरु कर दिए। इस घटना के उपरांत मैं जीवन से निराश हो चुका था। मुझे लगता था कि अब मैं जीवन में कभी भी अपने सहारे नहीं चल सकता। मेरे तीन लड़के पढ़ रहे थे। मैं परिवार में अकेला ही कमाने वाला था मेरा व्यापार भी चौपट हो रहा था। मुझे लगने लगा इस नरकपूर्ण जीवन जीने से तो मरना ही अच्छा। मैंने निराशा में घिरे घिरे खाना खाना कम कर दिया। वास्तव में कुछ खाने की चाह

ही समाप्त हो गई। परंतु पूर्ण ब्रह्म सतगुरु रामपाल जी महाराज जी की लीला तो कुछ और ही थी।

इसी दौरान एक दिन मेरे ससुर जी मेरे घर आये। उन्होंने मेरी पत्नी को समझाया कि किसी तरह इसे ''भक्ति सौदागर को संदेश'' पुस्तक का अंश ''भटकों को मार्ग विषय'' खुद सुनने का बहाना बनाकर पढ़वाओ। उसने वैसा ही किया। ''भटकों को मार्ग विषय'' पढ़ने पर लगा कि यदि परमात्मा की कृपा हो जाये तो मैं भी ठीक हो सकता हूँ। मेरे जीवन जीने की इच्छा अचानक बलवती हो गई, मैंने पूरी किताब बड़े ध्यान से पढ़ी। मेरे ससुर जी जब सतगुरु दर्शन के लिए सतलोक आश्रम बरवाला जाने लगे तो उन्होंने अपनी बेटी (मेरी पत्नी) को फोन किए। लेकिन मैंने तो महिनों पहले ही अपने ससुर जी से बोलना और फोन पर बात करना छोड़ दिया था। लेकिन उस दिन मैंने खुद ही उनको फोन करके कहा कि मैंने '' भक्ति सौदागर को संदेश'' (वर्तमान का नाम 'ज्ञान गंगा') पूरा पढ़ लिया है। अब मुझे सब बातें समझ में आ गई हैं, मैं गलती पर था। मुझे क्षमा कर दिजिए और पूज्य गुरुदेव जी से भी मेरे लिए क्षमा मांग लिजिएगा, मैं भी उनकी शरण में जाऊंगा। जब वे लौटकर आए तो मुझसे मिलने आए। मैंने इसी हालत में उनसे सतलोक आश्रम बरवाला में चलने के लिए आग्रह किया। परंतु उन्होंने डाक्टरों के निर्देशानुसार तीन महिने से पहले सतलोक आश्रम जाने के लिए मना कर दिया।

इस घटना से पहले मैं पलंग पर करवट नहीं बदल सकता था। परंतु अब मैं करवट बदलने लगा था, तीन महिने बाद मैं उठ कर बैठ गया। दो आदमीयों के सहारे खड़ा भी हुआ। परंतु मेरे दोनों पैर फूलने लगे और पूरे शरीर में जोरों का दर्द होने लगा। डाक्टरों ने कहा कि शुरू में वैसा ही होगा और एक सप्ताह में ठीक हो जायेगा। स्थानीय डाक्टर ने कहा कि अब तुम एक वर्ष तक बेल्ट लगाओ और तुम ज्यादा चल फिर नहीं सकते। किसी किस्म का वजन कभी उठा नहीं सकते, मोटर साईकिल तो चला ही नहीं सकते। मेरे ससुर जी मुझे बरवाला ले जाने के लिए आए तो सबने जाने से मना कर दिया। काठमाण्डू के डाक्टर और स्थानीय डाक्टर ने भी नहीं जाने का निर्देश दिया, क्योंकि हड्डी ठीक से अभी तक नहीं जुड़ी है बस से सफर करने का रिस्क मत लो। अगर रास्ते में कुछ हो गया तो जीवन भर अपने को माफ नहीं कर सकोगे। परन्तु मेरे ससुर जी ने कहा कि सतगुरुदेव टूटे हुए को जोड़ देते हैं तो चिन्ता किस बात की। फिर मुझे तो सतगुरु रामपाल जी महाराज ने ''ले कर आओ'' का आदेश भी दिया है। इस प्रकार मैं सतगुरु रामपाल जी महाराज जी के पास आने के लिए घर से चल पड़ा मैं दो आदमीयों के सहारे मैं बस में चढ़ा, फिर ट्रेन और जीप से बरवाला पहुँच गया। सतगुरु जी की कृपा से मुझे रास्ते में कोई दिक्कत नहीं हुई। सतलोक आश्रम

आकर मैंने नामदान ले लिया। आश्रम में आने पर पूज्य सत्गुरुदेव का प्रथम बार दर्शन हुआ और उनके आशीर्वाद देते ही दर्द समाप्त हो गया। मैं रो रोकर अपने किए कर्मों के लिए क्षमा मांगने लगा। परंतु पूज्य गुरुदेव जी ने कहा कि मैंने तो तुम्हें पहले ही क्षमा कर दिया है बेटा! ठीक हो गया, भक्ति करो। रात में मुझे हाजत लगने पर जब मैं ट्वॉइलेट गया तो एकाएक स्वतः बैठ गया और आते समय ट्रेन में मैंने खड़े खड़े ही ट्वाइलेट किया था। मैं पैंट नहीं पहन सकता था। लेकिन आश्रम में मेरे पैरों की सूजन समाप्त हो गई और स्वयं पैंट पहनने लगा। आश्रम से चलते समय मैंने पूज्य सतगुरु देव जी से मोटर साईकिल चलाने का आर्शीवाद मांगा तो पूज्य गुरुदेव ने कहा कि जाओ बेटा! खूब चलाना, सब ठीक हो गया। पांचवे दिन घर आते ही मैं मोटर साइकिल चलाने लगा। गांव के सारे लोग आश्चर्य चकित हो गये। अब मैं पूरी तरह ठीक हो गया था। मुझे लकवा न होने का कारण अब समझ में आया कि मेरी पत्नी पहले ही नाम दान लेकर जाप करती थी। जिसके प्रभाव से मेरी मृत्यु भी टल गई थी और लकवा भी नहीं हुआ।

अब मैं पूरी तरह से स्वस्थ हूँ 35-40 किलो वजन उठाने में भी कोई दिक्कत नहीं होती। अब मेरा पूरा परिवार सद्गुरुदेव से नाम दान लेकर सुखी है। दुकान भी पहले से बहुत अच्छी चल रही है। मेरे सुख को देखकर मिर्चैया क्षेत्र के बहुत से दुःखी लोग सत् गुरुदेव से नाम दान लेकर सुखी हो रहे हैं। प्रेमी पाठको! सतगुरु रामपाल जी महाराज को रामपाल जी मत समझना। वे तो साक्षात् पूर्ण ब्रह्म कबीर परमेश्वर ही हैं। कबीर साहेब जी की वाणी है :-

कबीर, पाँच सहंस अरू पाँच सौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरूष फरमान तब, जग तारन को आय।।

कबीर सागर कबीर वाणी पृष्ठ नं. 136-137 पर वाणी लिखी है कि :-

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाये ठिकाना।।
बारहवै पंथ प्रगट होवै वानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
बारहें पंथ हमही चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक ही पंथ चलावै।।

अतः प्रेमी पाठकों! वर्तमान में श्री सतलोक आश्रम, चण्डीगढ़ रोड़ बरवाला, हिसार में बन्दी छोड़ सत्गुरु रामपाल जी महाराज से मुफ्त नाम दान प्राप्त कर अपना जीवन सफल करें, आनन्दमय जीवन जिए और जीवन मरण रूपी चक्कर से छूटकर मोक्ष प्राप्त करें। सत्गुरुदेव जी की जय।

विनित
भक्त हरिगोविन्द दास
मिर्चैया-3, सिरहा, नेपाल
+00977-9804766755
+00977-9842836877

ओ३म्

सच्चिदानन्दायेश्वराय नमो नमः

भूमिका

सत्यार्थप्रकाश को दूसरी वार शुद्ध करके छपवाया है क्योंकि जिस समय मैंने यह ग्रन्थ **'सत्यार्थप्रकाश'** बनाया था, उस समय और उससे पूर्व संस्कृतभाषण करना, पठन–पाठन में संस्कृत ही बोलने और जन्मभूमि की भाषा गुजराती थी, इत्यादि कारणों से मुझ को इस भाषा का विशेष परिज्ञान न था। अब इसको अच्छे प्रकार भाषा के व्याकरणानुसार जानकर अभ्यास भी कर लिया है, इस समय इसकी भाषा पूर्व से उत्तम हुई है। कहीं--कहीं शब्द वाक्य रचना का भेद हुआ है, वह करना उचित था, क्योंकि उसके भेद किए विना भाषा की परिपाटी सुधरनी कठिन थी, परन्तु अर्थ का भेद नहीं किया गया है, प्रत्युत विशेष तो लिखा गया है। हाँ, जो प्रथम छपने में कहीं–कहीं भूल रही थी, वह वह निकाल शोधकर ठीक–ठीक करदी गई है।

यह ग्रन्थ १४ समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में रचित हुआ है। इसमें १० दश समुल्लास पूर्वार्द्ध और चार उत्तरार्द्ध में बने हैं, परन्तु अन्त्य के दो समुल्लास और पश्चात् स्वसिद्धान्त किसी कारण से प्रथम नहीं छप सके थे, अब वे भी छपवा दिये हैं।

१२ सत्यार्थप्रकाशः

यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे, तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझता हूं और अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूं। इसको देख दिखला के मेरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मुझ वा सब महाशयों का मुख्य कर्त्तव्य कर्म है।

सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे।

।। अलमतिविस्तरेण बुद्धिमद्वरशिरोमणिषु।।

।। इति भूमिका।।

स्थान महाराणाजी का उदयपुर **(स्वामी) दयानन्द सरस्वती**

भाद्रपद सम्वत् १९३९

यह फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका के सम्बंधित विवरण की है।

शंका समाधान :- (1) कुछ विरोधी व्यक्ति जो महर्षि दयानन्द की फोकट महिमा सुना कर तथा उनके द्वारा रचित पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' को बेचकर निर्वाह कर रहे थे। वे कहते है कि पुस्तक ''ज्ञान गंगा'' में ''शास्त्रार्थ विषय'' नामक

अध्याय में लिखा है कि महर्षि दयानन्द सन् 1882 (संवत् 1939) तक संस्कृत में भाषण देते थे। यह उचित नहीं है क्योंकि महर्षि दयानन्द ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' की भूमिका में स्पष्ट कर रखा है कि सन् 1874 (संवत् 1931) में जिस समय ''सत्यार्थ प्रकाश'' को प्रथम बार लिखा था। उससे पहले संस्कृत में भाषण देते थे। फिर हिन्दी को जान लिया था।

शंका समाधान :- ऊपर फोटो कापी सत्यार्थ प्रकाश के सम्बंधित विवरण की है। जिसमें महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट किया है। कि जिस समय सत्यार्थ प्रकाश बनाया था। उस समय मुझे हिन्दी भाषा का विशेष ज्ञान नहीं था। अब अर्थात् संवत् 1939 (सन् 1882) में उदयपुर में स्थान महाराणाजी का उदयपुर भाद्रपद (संवत् 1939=सन् 1882) को दूसरी बार छपवाया तब तक महर्षि जी को हिन्दी भाषा का विशेष ज्ञान नहीं था। सन् 1882 में विशेष ज्ञान होने पर सत्यार्थ प्रकाश को शुद्ध करके छपवाया। इससे भी सिद्ध है कि महर्षि दयानन्द जी सन् 1882 (संवत् 1939) तक भी संस्कृत में शास्त्रार्थ किया करते थे।

दूसरा कारण यह है कि दो विद्वान आपस में चर्चा करते थे तो संस्कृत में करते थे। क्योंकि सर्व शास्त्र संस्कृत भाषा में लिखे थे। उनका हिन्दी अनुवाद महर्षि दयानन्द कर ही नहीं सकते थे। क्योंकि वे स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि सन् 1882 (संवत् 1939) तक मुझे हिन्दी भाषा का विशेष ज्ञान नहीं था। सन् 1883 (संवत् 1940) में महर्षि जी की मृत्यु हो गई। इससे सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द सन् 1882 (संवत् 1939) तक संस्कृत भाषा में ही शास्त्रार्थ किया करते थे तथा उनकी हार जीत का निर्णय संस्कृत भाषा में अपरिचित श्रोता किया करते थे। जिस कारण से दयानन्द जैसे व्यक्ति महर्षि कहलाते रहे।

जबकि महर्षि दयानन्द तथा कृष्णानन्द के शास्त्रार्थ में कृष्णानन्द जी का पक्ष दृढ़ था। जिसमें कृष्णानन्द ने श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 7 का प्रमाण देकर साकार परमात्मा सिद्ध किया था। ''यदा, यदा, हि, धर्मस्य, ग्लानिः, भवति, भारत,---------इसका अर्थ गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद्भगवत् गीता में इस प्रकार लिखा है :- हे भारत! जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है तब-तब ही मैं अपने रूप को रचता हूँ अर्थात् साकार रूप से लोगों के सम्मुख प्रकट होता हूँ।

ध्यान रहे महर्षि दयानन्द द्वारा विषय बदल कर संस्कृत बोलने के कारण संस्कृत भाषा से अपरिचित श्रोंताओ ने अपनी हंसी से वेद ज्ञानहीन दयानन्द को विजयी घोषित कर दिया। महर्षि दयानन्द तो विजेता ऐसे हुआ, जैसे एक जमींदार का पुत्र सातवीं कक्षा में पढ़ता था----शेष वर्णन कृपा पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 263 पर।

❑❑❑

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा ।।
धरती पर अवतार
भारतवर्ष का वह छोटा सा गांव धनाना जहां पर परमेश्वर के अवतार सन्त रामपाल दास जी महाराज का जन्म हुआ।
हरि आये हरियाणे नूं
मां की गोद में अवतार
परमात्मा से अवतार रुप में पुत्र प्राप्त होने का धन्यवाद करते हुए पिता नन्दाराम व माता इन्द्रावती
कबीर, पांच सहंस अरु पांच सौ, जब कलियुग बित जाय।
महापुरुष फरमान तब, जग तारन को आय।।